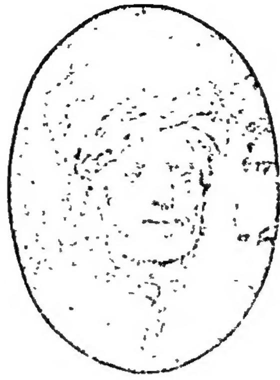
देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला—७



मुहणोत नैणसी की ख्यात

प्रथम भाग

अर्थात्

नैणसी की मारवाड़ी भाषा की ख्यात से गुहिलोत
(सीसोदिया) चौहान, सोलंकी (चौलुक्य)
पड़िहार (प्रतिहार) और परमार
(पँवार) वंशों के इतिहास का
हिंदी अनुवाद



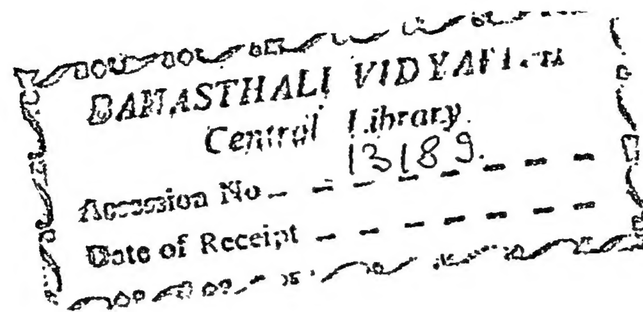
अनुवादक तथा संपादक

रामनारायण दूगड़



काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण १०००   संवत् १९८२   मूल्य २॥-



कवर टाइ० और प्रथम दो फार्म, ग० कृ० गुर्जर द्वारा श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस,
काशी में मुद्रित और शेष दुर्गाप्रसाद मैनेजर द्वारा श्री सुखदेव
सहाय जैन प्रिंटिङ्ग प्रेस, अजमेर में मुद्रित ।

भूमिका

मुहणोत नैणसी की ख्यात मुख्यतः राजपूताने और सामान्य रूप से गुजरात, काठियावाड़, कच्छ, मालवा, बुंदेलखंड और बघेलखंड के (मुसलमानों के समय के) राजपूतों के इतिहास के लिये बड़े महत्त्व की होने पर भी सर्व साधारण को उसका मिलना दुर्लभ था; और अनुमान २७५ वर्ष पूर्व की मारवाड़ी भाषा में होने के कारण उसको ठीक समझना भी सुलभ न था। काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने उसके अनुमान चौथाई अंश का यह हिंदी अनुवाद प्रकाशित कर राजपूताने आदि के इतिहास से प्रेम रखनेवालों के लिये अमूल्य सामग्री उपस्थित कर दी है। मूल ग्रंथ का यह अनुवाद उदयपुर निवासी बाबू रामनारायणजी दूगड़ ने किया है। इसमें मूल पुस्तक के कुछ अंशों का क्रम पलटना पड़ा है, जिसका कारण यह है कि उसमें एक ही वंश से संबंध रखनेवाला सारा वर्णन एक ही शृंखला में नहीं आया; कहीं कहीं भिन्न भिन्न स्थानों में भी लिखा गया है, जिससे उसको एक ही सूत्र में गूँथना पड़ा; तथा उसमें भी भूगोल संबंधी वृत्तान्त को पहले स्थान दिया गया है, फिर इतिहास को। नैणसी का लिखा इतिहास वि० सं० १३०० के पीछे का विस्तार से है; और उससे पहले का वृत्तांत अपूर्ण और कहीं कहीं अशुद्ध भी है। अतएव जहाँ तहाँ टिप्पणी देकर उसको ठीक करने का उद्योग भी किया गया है। इससे ग्रंथ की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। मूल पुस्तक में वंशावलियाँ वंशवृक्षों के रूप में नहीं, किंतु अंक संकेत के साथ चलती पंक्तियों में दी हैं; और कहीं कहीं नामों के साथ उनका विशेष परिचय भी दिया है। यह क्रम आधुनिक पाठकों को सर्वथा रुचिकर नहीं हो सकता; जिससे वंशावलियाँ वंशवृक्षों के रूप में बदल दी गई हैं; और उनमें से जिस किसी नाम के संबंध में जो कुछ लिखा है, वह नीचे टिप्पणी में दिया गया है। टिप्पणियाँ दो प्रकार के टाइपों में हैं। मूल ग्रंथ की त्रुटियाँ बतलाने या अधिक परिचय देने के लिये जो टिप्पणियाँ दी गई हैं, वे पुस्तक की अपेक्षा छोटे टाइप में हैं; और बड़े (ः । क) टाइप में केवल वेही टिप्पणियाँ हैं, जो वंशावलियों के कुछ नामों का अधिक परिचय करानेवाले मूल ग्रंथ का ही अंश होने पर भी वंशवृक्षों में नामों के साथ आ नहीं सकती थीं। टिप्पणियों के इन दो प्रकार के टाइपों से पाठकों को विदित हो जायगा कि टिप्पणियों में मूल का अंश कौन सा है और संपादक की टिप्पणियाँ कौन सी हैं। संपादक की असावधानी से पृष्ठ ११६ के टिप्पणियाँ, जो बड़े टाइपों में होनी चाहिए थीं, छोटे में छप गई हैं। सो पाठक उन्हें मूल का अंश ही समझें।

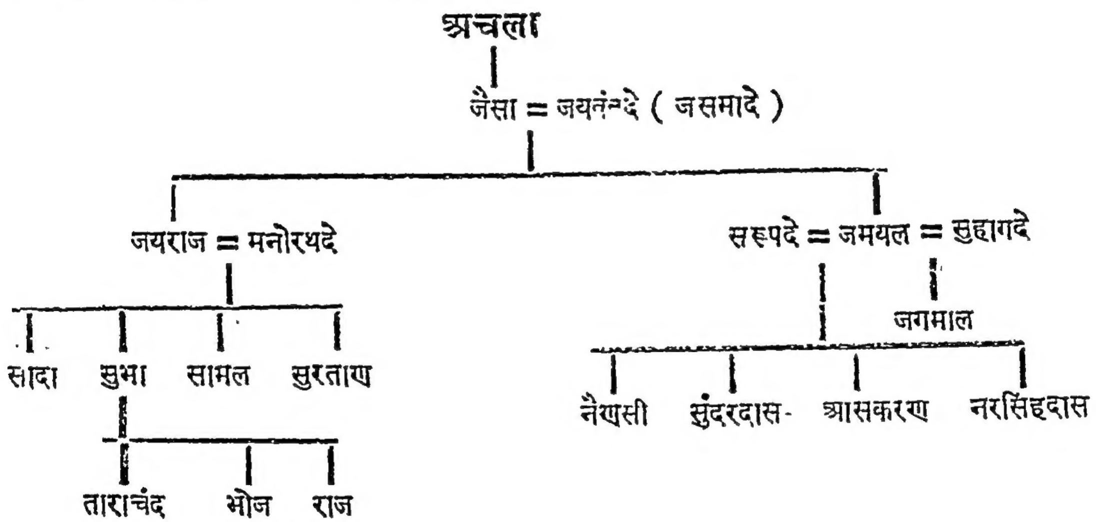
अजमेर
ता० १२-१-१९२६ ई० }

गौरीशंकर हीराचंद ओझा।

मुहणोत नैणसी

वंश-परिचय

मुहणोत नैणसी ओसवाल जाति के मुहणोत * वंश का महाजन था। इस वंश के महाजन जयसलमेर से जोधपुर आकर उक्त राज्य की समय समय पर सेवा करते रहे। नैणसी, साह अचला का प्रपौत्र, जैसा का पौत्र और जयमल का पुत्र था। जैसा के जयवंत दे (जसमादे) से दो पुत्र—बड़ा जयराज और छोटा जयमल—उत्पन्न हुए थे। जयमल की दो स्त्रियाँ—बड़ी सरूपदे और छोटी सुहागदे थीं। सरूपदे से नैणसी, सुंदरदास, आसकरण और नरसिंहदास ये चार पुत्र हुए, और सुहागदे से जगमाल। नैणसी के पूर्व पुरुषों का वृत्तांत विशेष रूप से हमें नहीं मिल सका। तो भी पाली (जोधपुर राज्य) के नोलखा के मंदिर के वि० सं० १७०० माघ सुदी १२ बुधवार के जैन लेख, तथा जालोर (जोधपुर राज्य) के महावीर जी के मन्दिर के तीन जैन लेखों से, जो वि० सं० १६८३ आषाढ़ वदी ४ गुरुवार के हैं, तथा वहीं के चौमुखजी के मंदिर के वि० सं० १६८१ प्रथम चैत्र वदी ५ गुरुवार के जैन लेख से नैणसी के कुटुंब का वंशवृक्ष नीचे लिखे अनुसार होता है—



नैणसी का जन्म

नैणसी का जन्म संवत् १६६७ मार्ग शीर्ष सुदी ४ शुक्रवार को हुआ था। वि० सं० १७१४ में जोधपुर के महाराज जसवन्तसिंह (प्रथम) ने नैणसी को अपना बनाया था। कई वर्षों तक राज्य की सेवा करके विशेष अनुभव प्राप्त किए हुए बुद्धिमान्

* मुहणोत के स्थान में मूता या मेहेता भी लिखते हैं, परंतु शुद्ध नाम मुहणोत ही है, जिसका अर्थ मुहण (मोहन) की संतति है।

पुरुष का जोधपुर जैसे बड़े राज्य का दीवान बनाया जाना उचित ही था। इसलिये दीवान बनने के समय नैणसी की अवस्था यदि ४७ वर्ष की थी फिर ऊपर लिखे हुए वि० सं० १६८१ के लेख में जयमल के तीन पुत्रों—नैणसी, सुंदरदास और आसकरण का विद्यमान होना लिखा हुआ है, जिससे स्पष्ट है कि उक्त संवत् से पूर्व नैणसी के दो छोटे भाई भी उत्पन्न हो चुके थे। इन संवतों का परस्पर सामंजस्य है। अतएव इनके संबंध में संदेह का स्थान नहीं है।

मुहणोत वंशियों का राजसेवा

नैणसी का पिता जयमल, जोधपुर के महाराज जयसिंह का विश्वासपात्र सेवक था और वि० सं० १६८६ में वह दीवान बनाया गया था। उसके पूर्व सं० १६७७ में जब

जयमल

महाराज जयसिंह के मन्सब में बादशाह जहाँगीर ने एक हज़ार ज़ात और एक हज़ार सवारों की तरक्की दी, तो उसकी तनख्वाह में जालौर का परगना उनको मिला। उस समय महाराज ने मुहणोत जयमल को वहाँ का शासक नियत किया था। वि० सं० १६८३ में महाराज गजसिंह के कुँवर अमरसिंह को नागौर मिलने पर जयमल नागौर का हाकिम बनाया गया था।

मुहणोत नैणसी भी जोधपुर राज्य की सेवा में रहा और वीर प्रकृति का पुरुष होने के कारण, वि० सं० १६८९ में मगरा के मेरों का उपद्रव बढ़ता देखकर महाराज गजसिंह ने

नैणसी

मेरों को सजा देने के लिये उसको सेना सहित भेजा। उसने मेरों को सजा दी और उनके गाँव जलाए। वि० सं० १७०० में महेचा महेसदास बाग़ी होकर राड़धरे के गाँवों में बिगाड़ करता रहा, जिस पर महाराज जसवंतसिंह ने नैणसी को राड़धरे भेजा। उसने राड़धरे को विजय कर वहाँ के कोट (शहरपनाह) और मकानों को गिरवा दिया तथा महेचा महेसदास को वहाँ से निकालकर राड़धरा अपनी फौज के मुखिया रावल जगमाल भारमलोत (भारमल के पुत्र) को दिया। सं० १७०२ में रावत नराण (नारायण) सोजत की ओर के गाँवों को लूटता था, जिससे महाराज ने मुहणोत नैणसी तथा उसके छोटे भाई सुंदरदास को उस पर भेजा। उन्होंने कूकड़ा, कोट, कराणा, माँकड आदि गाँवों को नष्ट कर दिया। वि० सं० १७१४ में महाराज जसवंतसिंह (प्रथम) ने मियाँ फ़रासत की जगह नैणसी को अपना दीवान बनाया। महाराज जसवंतसिंह और औरंगज़ेब के बीच अनबन होने के कारण वि० सं० १७१५ में जैसलमेर के रावल सबलसिंह ने फलोदी और पोकरण जिलों के १० गाँव लूटे, जिस पर महाराज ने अहमदाबाद जाते हुए, मार्ग से ही मुहणोत नैणसी को जैसलमेर पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी। इस पर वह जोधपुर आया

और वहाँ से सैन्य-सहित चढ़कर उसने पोकरण में डेरा किया। इस पर सबलसिंह का पुत्र अमरसिंह, जो पोहकरण ज़िले के गाँवों में था, भागकर जैसलमेर चला गया। नैणसी ने उसका पीछा किया और जैसलमेर के २५ गाँव जलाकर, जैसलमेर से तीन कोस की दूरी के गाँव वासणपी में वह जा ठहरा। परंतु जब रावल क़िला छोड़कर लड़ने को न आए, तब नैणसी वासणी कोट को लूटकर लौट गया।

वि० सं० १७११ में पंचोली बलभद्र राघोदासोत (राघोदास का पुत्र) की जगह नैणसी का छोटा भाई सुंदरदास महाराज जसवंतसिंह का ख़ानगी दीवान नियत हुआ।

सुंदरदास

वि० सं० १७१३ में सिंधल बाघ पर महाराज जसवंतसिंह ने फौज भेजी। उस समय बाव ४०१ राजपूतों के साथ लड़ने को सजित होकर तैयार बैठा था। महाराज की फौज में ६९१५ पैदल थे, जिनके दो विभाग किए गए। एक विभाग का, जिसमें ३५४३ सैनिक थे, अध्यक्ष राठौड़ लखधीर विट्ठलदासोत (विट्ठलदास का बेटा) था। दूसरे विभाग के, जिसमें ३३७२ सैनिक थे, अध्यक्षों में मुख्य मुहणोत सुंदरदास था। सिंधलों से लड़ाई हुई, जिसमें बहुत से आदमी मारे गए और महाराज की विजय हुई। वि० सं० १७२० में महाराज जसवंतसिंह की सेना ने बादशाह औरंगज़ेब की तरफ से प्रसिद्ध मराठा वीर शिवाजी के अधीन के गढ़ कुंडाँणे पर चढ़ाई कर गढ़ पर मोरचे लगाए। इस चढ़ाई में सुंदरदास जयमलोत मरना निश्चय कर लड़ने को गया था; परंतु गढ़वालों के अरावों की मार से महाराज को अपनी फौज वापस लेनी पड़ी।

वि० सं० १७१५ में महाराज जसवंतसिंह बादशाह शाहजहाँ की तरफ़ से उज्जैन के पास शाहजादे औरंगज़ेब से लड़े और वहाँ से हारकर जोधपुर लौट आए। इस लड़ाई के

करमसी

समय करमसी महाराज के साथ था और उन्हीं के साथ जोधपुर लौटा था। वि० सं० १७१८ में जब बादशाह औरंगज़ेब ने गुजरात का सूबा महाराज जसवंतसिंह से लेकर उसके एवज में हाँसी हिसार के परगने दिए, तब महाराज की तरफ से मुहणोत करमसी और पंचोली बछराज उन परगनों के शासक नियत किए गए थे।

नैणसी की मृत्यु

संवत् १७२३ में महाराज जसवंतसिंह औरंगाबाद में थे और मुहणोत नैणसी तथा उसका भाई सुंदरदास दोनों उनके साथ थे। किसी कारण वशात् महाराज उनसे अप्रसन्न हो रहे थे, जिससे पौष सुदी ९ के दिन उन दोनों को क़ैद कर दिया। महाराज के अप्रसन्न होने का ठीक कारण ज्ञात नहीं हुआ। परन्तु जनश्रुति से पाया जाता है कि नैणसी ने अपने

रिश्तेदारों को बड़े बड़े पदों पर नियत कर दिया था और वे लोग अपने स्वार्थ के लिये प्रजा पर अत्याचार किया करते थे। इसी बात के जानने पर महाराज उससे अप्रसन्न हो रहे थे।

वि० सं० १७२५ में महाराज ने एक लाख रुपया दंड लगाकर इन दोनों भाइयों को छोड़ दिया; परंतु इन्होंने एक पैसा तक देना स्वीकार न किया। इस विषय के नीचे लिखे हुए दोहे राजपूताने में अब तक प्रसिद्ध हैं—

लाख लखाराँ नीपजे, बड़ पीपल री साख।
नटियो मूँतो नैणसी, ताँबो देण तलाक॥ १॥
लेसो पीपल लाख, लाख लखाराँ लावसो।
ताँबो देण तलाक, नटिया सुन्दर नैणसी* ॥ २॥

नैणसी और सुंदरदास के दंड के रुपए देना अस्वीकार करने पर वि० सं० १७२६ माघ बदी १ को फिर वे दोनों क़ैद कर दिए गए और उन पर रुपयों के लिये सख़्तियाँ होती रहीं। फिर क़ैद की हालत में ही इन दोनों को महाराज ने औरंगाबाद से मारवाड़ को भेज दिया। दोनों वीर प्रकृति के पुरुष होने के कारण इन्होंने महाराज के छोटे आदमियों की सख़्तियाँ सहन करने की अपेक्षा वीरता से मरना उचित समझा। वि० सं० १७२७ की भाद्रपद बदी १३ को इन्होंने अपने अपने पेट में कटार मारकर मार्ग में ही शरीरांत कर दिया। इस प्रकार महापुरुष नैणसी की जीवनलीला का अंत हुआ और महाराज की बहुत कुछ बदनामी हुई।

नैणसी के पुत्र और पौत्र

नैणसी और सुंदरदास के इस प्रकार वीरता के साथ प्राणोत्सर्ग करने की ख़बर जब महाराज को हुई, तब उन्होंने नैणसी के पुत्र करमसी और उसके अन्य बाल बच्चों को जो क़ैद किए गए थे, छुड़वा दिया। महाराज के अत्याचार को स्मरण कर वे लोग जोधपुर छोड़कर नागौर के स्वामी रायसिंह के पास चले गए, जो जोधपुर के महाराज गजसिंह के पौत्र और बादशाह शाहजहाँ के दरबार में सलाबतख़ाँ को मारनेवाले प्रसिद्ध वीर राठौड़ अमरसिंह के पुत्र थे। रायसिंह ने अपने ठिकाने का सारा काम करमसी के सुपुर्द कर दिया। इस पर महाराज ने मुहणोतों को जोधपुर राज्य की सेवा में नियत न करने की शपथ खाई। परंतु उनकी प्रतिज्ञा का पीछे से पालन न हुआ; क्योंकि पीछे भी महाराज बखतसिंह, मानसिंह आदि के समय में मुहणोत वंशी मुसाहिब रहे हैं।

---

* लखाराँ = लखेरों के यहाँ। साख = शाखा। नटियो = नट गया। ताँबो = ताँबे का एक भी पैसा। देण = देना। तलाक = अस्वीकार किया। लेसो = लोगे। लावसो = लाओगे।

महाराज रायसिंह वि० सं० १७३२ आषाढ़ वदी १२ को दक्षिण के गाँव सोलापुर में दो चार घड़ी बीमार रहकर अचानक मर गए। तब उनके मुत्सद्दियों आदि ने उनके गुजराती वैद्य से पूछा कि रायसिंह अचानक कैसे मर गये? इस पर उसने गुजराती भाषा में उत्तर दिया—"करमाँ नो दोष छे" (भाग्य का दोष है) जिसका अर्थ रायसिंह के मुसाहिबों आदि ने यह समझा कि "करमा (करमसी) ने इनको मारा है"। फिर उस (करमसी) पर विष देने का झूठा सन्देह कर उसको वहीं ज़िन्दा दीवार में चुनवा दिया गया, और नागौर लिखा गया कि इसके जो कुटुंबी वहाँ हैं, उन सब को कोल्हू में डालकर कुचल डालना। इस हुक्म के पहुँचने पर करमसी का पुत्र परतापसी अपने कई रिश्तेदारों के साथ मारा गया और करमसी की दो स्त्रियों ने अपने पुत्र सावंतसिंह और संग्रामसिंह के साथ भागकर किशनगढ़ (कृष्णगढ़, राजपूताना) में शरण ली। फिर वहाँ से वे लोग बीकानेर में जा रहे।

नैणसी के ग्रन्थ

मुहणोत नैणसी जैसा वीर प्रकृति का पुरुष था, वैसा ही विद्यानुरागी, इतिहास-प्रेमी और वीर कथाओं पर अनुराग रखनेवाला नीति-निपुण पुरुष था। उसका मुख्य ऐतिहासिक ग्रंथ 'ख्यात'* नाम से प्रसिद्ध है। यह ग्रंथ रायल अठपेजी हजार पृष्ठ से अधिक बड़ा और राजपूताने, गुजरात, काठियावाड़, कच्छ, बघेलखंड, बुंदेलखंड और मध्यभारत के इतिहास के लिये विशेष उपयोगी है।

नैणसी की इतिहास पर बड़ी रुचि होने के कारण उसने चरणों, भाटों, अनेक प्रसिद्ध पुरुषों, कानूनगो आदि से जो कुछ ऐतिहासिक वृत्तांत मिल सका, उससे तथा उस समय मिलनेवाली ख्यातों आदि सामग्री से अपनी ख्यात का संग्रह किया। जोधपुर के दीवान नियत होने के पहले से ही उसको ऐतिहासिक बातों के संग्रह करने की रुचि थी। और ऐसे प्रतिष्ठित राज्य का दीवान होने के पीछे तो उसको अपने काम में और भी सुबीता रहा होगा। उसने कई जगह पर, जिन जिन से जो कुछ वृत्तान्त प्राप्त हुआ, उसका संवत्, मास सहित उल्लेख भी किया है। जैसे उदयपुर के सम्बन्ध की एक बात (वृत्तान्त) वि० सं० १७१९ भाद्रपद सुदी ९ को चारण आसिया गिरधर ने लिखाई। वहीं के इतिहास के सम्बन्ध का कुछ और वृत्तान्त जाँझण वीठू से प्राप्त हुआ। राणा उदयसिंह और पठान हाजी ख़ाँ के बीच की लड़ाई का वृत्तान्त वि० सं० १७१४

ख्यात की सामग्री

* राजपूताने की भाषा में 'ख्यात' (ख्याति) का अर्थ 'इतिहास' है और 'बात' (वार्ता) का अर्थ 'वृत्तांत' है। नैणसी ने स्थल स्थल पर 'बात' शब्द का प्रयोग किया है।

के वैशाख में दधवाडिया (चारण) खेमराज ने लिख भेजा था। वि० सं० १७२२ की पौष बदी ५ को सिसोदियों की चुंडावत शाखा का वृत्तान्त खड़िया (चारण) खींवराज ने लिखवाया था। पड़िहारों के २६ शाखाओं की नामों की सूची भाट खंगार ने लिख भेजी थी। कछवाहों की पीढ़ियाँ भाट राजपाण ने लिखवाईं थीं। वि० सं० १७०७ में नैणसी का छोटा भाई नरसिंहदास डूँगरपुर गया, जहाँ से उसने रावल पुंजा के बनवाये हुए मंदिर की प्रशस्ति से डूँगरपुर के राजाओं की विस्तृत वंशावली लिख भेजी थी। बूँदी राज्य का कुछ वृत्तान्त वि० सं० १७२१ के ज्येष्ठ महीने में रा० रामचंद्र जगन्नाथोत ने लिखाया था। नैणसी ने सं० १७२२ में परबतसर में रहते समय वहाँ के दहिया राजपूतों का वृत्तान्त संग्रह किया था। वि० सं० १७१७ के भाद्रपद में सिरोही के देवड़ों का कुछ हाल देवड़ा अमरा चाँदावत के प्रधान बाघेला रामसिंह ने नैणसी को गुजरात से लौटते समय जालौर में लिखवाया था। उदयपुर के राजाओं की अशुद्ध वंशावली तथा कुछ वृत्तान्त पुष्करणा ब्राह्मण कवीश्वर जसवन्त के भाई जोसी मनोहरदास ने लिखवाया था। वि० सं० १७१० में बुंदेला बरसिंह देव के राज्य का वर्णन बुंदेला शुभकर्ण के सेवक चक्रसेन से संग्रह किया। बुंदेलों का कुछ वृत्तान्त कवि दास की कविप्रिया से भी उद्धृत किया था। जैसलमेर का कुछ हाल विट्ठलदास से लिया था।

इन थोड़े से अवतरणों से स्पष्ट है कि नैणसी अपने इतिहास की सामग्री संग्रह करने में कितनी रुचि रखता था और किस प्रकार उसे एकत्र करता था। ऊपर दिए हुए संवतों से पाठकों को यह भी ज्ञात हो जायगा कि वि० सं० १७०७ से पहले से ही वह संग्रह करता था और वि० सं० १७२२ के पीछे भी संग्रह करता रहा था।

ख्यात की उपयोगिता

नैणसी की ख्यात मुख्यतः राजपूताने और सामान्य रूप से ऊपर लिखे हुए अन्य देशों के इतिहास का एक बड़ा संग्रह है। उसमें उदयपुर, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा और प्रतापगढ़ राज्यों के सीसोदियों (गुहिलोतों), रामपुरा के चन्द्रावतों (सीसोदियों की एक शाखा), खेड के गोहिलों (गुहिलोतों), जोधपुर, बीकानेर, और किशनगढ़ के राठौड़ों, जयपुर के कछवाहों, सिरोही के देवडा चौहानों, बूँदी के हाडों तथा बागड़िया, सोनगरा, साँचोरा, बोडा, काँपलिया, खीची, चीबा, मोहिल आदि चौहानों की भिन्न भिन्न शाखाओं, यादवों और उनकी सरवैया, जाड़ेचा आदि कच्छ और काठियावाड़ की शाखाओं, गुजरात के चावड़ों तथा सोलंकियों, गुजरात और बघेलखंड के बघेलों (सोलंकियों की एक शाखा), काठियावाड़ और राजपूताने के झालों, दहियों, गोडों, कायमखानियों आदि का इतिहास मिलता है। इसी प्रकार इतिहास के अतिरिक्त गुहिलोतों (सीसोदियों), परमारों, चौहानों, पड़िहारों, सोलंकियों, राठौड़ों आदि वंशों की भिन्न भिन्न शाखाओं के नाम

तथा अनेक किले आदि बनाने के संवत्, तथा पहाड़ों, नदियों और ज़िलों के विवरण भी मिलते हैं। उक्त ख्यात में चौहानों, राठौड़ों, कछवाहों, और भाटियों का इतिहास तो इतने विस्तार के साथ दिया गया है कि जिसका अन्यत्र कहीं मिलना सर्वथा असंभव है। वंशावलियों का तो ख्यात में इतना संग्रह है, जो अन्यत्र मिल ही नहीं सकता। उसमें अनेक लड़ाइयों के वर्णन, उनके निश्चित् संवत् तथा सैंकड़ों वीर पुरुषों के जागीर पाने या लड़कर मारे जाने का संवत् सहित उल्लेख देखकर यह कहना अनुचित न होगा कि नैणसी जैसे वीर प्रकृति के पुरुष ने अनेक वीर पुरुषों के स्मारक अपनी पुस्तक में सुरक्षित किए हैं। वि॰ सं॰ १३०० के बाद से नैणसी के समय तक के राजपूतों के इतिहास के लिये तो मुसलमानों की लिखी हुई फ़ारसी तवारीखों से भी नैणसी की ख्यात कहीं कहीं विशेष महत्व की है। राजपूताने के इतिहास में कई जगह जहाँ प्राचीन शोध से प्राप्त सामग्री इतिहास की पूर्ति नहीं कर सकती, वहाँ नैणसी की ख्यात ही कुछ कुछ सहारा देती है। यह इतिहास का एक अपूर्व संग्रह है। स्वर्गीय मुंशी देवीप्रसादजी तो नैणसी को

का अब्बुलफ़ज़ल' कहा करते थे, जो अयुक्त नहीं है। ख्यात की भाषा लगभग

औ॰

२७५ ५५ पूर्व की मारवाड़ी है, जिसका इस समय ठीक ठीक समझना भी सुलभ नहीं है। नैणसी ने जगह जगह राजाओं के इतिहास के साथ कितने ही लोगों के वर्णन के गीत, दोहे, छप्पय आदि भी उद्धृत किए हैं, जो डिंगल भाषा में हैं। उनमें से कुछ तो ३०० वर्ष से भी अधिक पुराने हैं। उनका समझना तो कहीं कहीं और भी कठिन है।

ख्यात की त्रुटियाँ

नैणसी की ख्यात में बहुत सी त्रुटियाँ भी अवश्य हैं; क्योंकि वि॰ सं॰ १५०० के पूर्व की वंशावलियाँ बहुधा भाटों आदि की ख्यातों से उद्धृत की गई हैं। इसलिए उनमें दिये हुए नामों आदि में से थोड़े ही शुद्ध हैं। परन्तु प्राचीन शोध से उनकी बहुत कुछ शुद्धता हो सकती है। नैणसी ने एक ही विषय के सम्बन्ध की जितनी भिन्न भिन्न बातें मिल सकीं, वे सब दर्ज की हैं, जिनमें कुछ ठीक हैं और कुछ नहीं। कहीं कहीं संवतों में भी अशुद्धियाँ हैं और कहीं लेखक-दोष से भी अशुद्धियाँ हो गई है।

ख्यात का क्रम

नैणसी की ख्यात जिस क्रम से इस समय उपलब्ध है, उसके देखने से अनुमान होता है कि नैणसी ने प्रारंभ में किसी क्रम से नहीं, किन्तु ज्यों ज्यों जो कुछ वृत्तान्त मिलता गया, वह एक पुस्तक रूप में संग्रह किया हो; क्योंकि हमारे संग्रह की हस्तलिखित पुस्तक का प्रारंभ सीसोदियों की 'बात' से शुरू होता है और दूसरे पत्रे में सीसोदियों के सम्बन्ध की दूसरी बात के प्रारंभ में ही लिखा है—"एक बात तो ऊपर के पृष्ठ ४९७ में लिखी है और एक (अर्थात् यह) पोकरण ब्राह्मण कवीश्वर जसवन्त क

भाई जोसी मनोहरदास ने लिखाई"। इससे निश्चित है कि वर्तमान ख्यात के प्रारंभ की सीसोदियों की बात, (जो प्रारंभ के ही पत्रों में है) मूल संग्रह के पृष्ठ ४९७ में थी। पीछे से उक्त मूल संग्रह से वंशक्रम के अनुसार यह ख्यात लिखी गई। परन्तु वंश-क्रम पूरा निभा नहीं; क्योंकि एक ही वंश से सम्बन्ध रखनेवाला सब वृत्तान्त एक ही साथ नहीं आया; किंतु कुछ कुछ छूट गया, जो जहाँ तहाँ लिख दिया है।

ख्यात की हस्त-लिखित पुस्तक

नैणसी के पौत्र प्रतापसिंह के मारे जाने पर उसके दो भाई सावंतसिंह और संग्रामसिंह अपनी दोनों माताओं सहित किशनगढ़ और वहाँ से बीकानेर जा रहे। नैणसी की लिखी ख्यात भी वे अपने साथ बीकानेर ले गए; और सुना जाता है कि नैणसी के वंशजों ने वह मूल पुस्तक (या उसकी नकल) बीकानेर दरबार को भेंट कर दी। कर्नल टॉड के समय तक उस पुस्तक की प्रसिद्धि न हुई। यदि उनको वह पुस्तक मिल जाती, तो अवश्य उनका 'राजस्थान' दूसरे ही रूप में लिखा जाता। कर्नल टॉड के स्वदेश लौट जाने के बाद आज से अनुमान ८०-९० वर्ष पूर्व* उसकी सुंदर अक्षरों में लिखी एक प्रति बीकानेर राज्य की तरफ़ से महाराणा उदयपुर के यहाँ पहुँची, जो वहाँ के राजकीय 'वाणीविलास' नामक पुस्तकालय में विद्यमान है। उदयपुर के बृहत् इतिहास 'वीरविनोद' के लिखे जाने के समय उक्त पुस्तक का उपयोग कई स्थलों में हुआ। जब मैंने उसका महत्व देखा, तो अपने लिये उसकी एक प्रति तैयार करने का विचार किया। परंतु ऐसी बड़ी पुस्तक की नकल करना कई महीनों का काम था; और इतने समय के लिये राज्य की ओर से उसका मिलना असंभव देखकर मैंने जोधपुर के कविराजा मुरारीदान जी को लिखा—"नैणसी की ख्यात की मुझे बड़ी आवश्यकता है। यदि आप कहीं से उसकी प्रति नकल करवा भेजें, तो बड़ी कृपा होगी"। इसके उत्तर में उन्होंने लिखा—"नैणसी की ख्यात की मूल प्रति बीकानेर दरबार के पुस्तकालय में थी, जहाँ से कर्नल पाउलेट (रेज़िडेंट जोधपुर) उसे ले आए। और जिस समय वे स्वदेश लौटने लगे, उस समय मैंने वह प्रति उनसे माँगी; तो कृपाकर उन्होंने वह मुझे बख़्श दी, जो मेरे यहाँ विद्यमान है। उसकी नकल कराकर मैं आपके पास भेज दूँगा।" फिर उन्होंने अपने ही व्यय से उसकी नकल कराना शुरू किया; और ज्यों ज्यों नकल होती गई, त्यों त्यों उसका थोड़ा थोड़ा अंश वे मेरे पास भेजते रहे। इस प्रकार जब सारी पुस्तक सं० १९५९ में मेरे पास पहुँच गई तब मैंने उसका 'वाणीविलास'

---

* उदयपुर राज्य की प्रति में उसके भेजे जाने का संवत् भी दिया; परंतु गत २३ वर्षों में मैंने उसको फिर नहीं देखा; अतएव ठीक संवत् का स्मरण न होने से उसके लिखे जाने का यह आनुमानिक समय लिखना पड़ा।

की प्रति से मिलान किया, तो दोनों पुस्तकें ठीक मिल गईं। फिर मैंने उसका सूचीपत्र बनाकर उसकी जिल्द बँधवा ली। दूसरे वर्ष जब कविराजा जी का उदयपुर आना हुआ, तब मैंने वह पुस्तक उनको दिखलाकर उनकी इस बड़ी कृपा के लिये उन्हें धन्यवाद दिया। उन्होंने उसी समय एक छप्पय बनाकर अपने ही हाथ से उसमें लिख दिया जो नीचे लिखे अनुसार है—

छप्पय

"मंत्री मुरधर तणौ नैणसी मैहतो नाँमी।
ख्यात इल्ल अेकठा किया कर खाँत अमाँमी॥
बिक्रम-पुर-पत हूँत करम्रल पौलट पाया।
दीधा मो हित दाख समय जिण सदन लिधाया॥
जौहरी मिल्यो गवरीसँकर पंडत अक्षर-लिपि-पढण।
मुरारै भेट कीधा जिकण कवराजा कीमत कढण* ॥

हस्ताक्षर जोधपुर निवासी कविराजा मुरारदान। संवत् १९६० फागण वद ८"

ऐसा सुना है कि कविराजा जी के पास की प्रति इस समय जोधपुर के पंडित रामकर्ण जी आसोपा के पास है। मेरी प्रति से मेरे तीन चार मित्रों ने उसकी प्रतिलिपियाँ करवाईं और उन्हीं में से एक के आधार पर बाबू रामनारायणजी दूगड़ ने उसके एक अंश का यह हिंदी अनुवाद किया है। नैणसी की संपूर्ण ख्यात को प्रसिद्धि में लाने का यश उक्त कविराजाजी को ही है। नैणसी की इस ख्यात के कुछ कुछ अंश भिन्न भिन्न लोगों के पास भी हैं, जिस से कोई कोई यह भी अनुमान करते हैं कि नैणसी की ख्यात एक नहीं किंतु कई एक हैं। परंतु यह अनुमान निर्मूल है; क्योंकि भिन्न भिन्न लोगों के पास जो कुछ है, वह बीकानेरवाली मूल प्रति का अंश मात्र है। मुंशी देवीप्रसादजी को भी इसका कुछ अंश मिला था, जिसका उन्होंने अपने लिये उर्दू में खुलासा किया था, जो उन्होंने मुझे भी दिखलाया था। उन्होंने इस पुस्तक के महत्व के विषय में एक छोटा सा लेख सन् १९१६ ई० के अगस्त की सरस्वती (पृष्ठ ८२-८५) में प्रकाशित कर यह लिखा था—"मूता नैणसी के घरवाले तो अब इस ग्रंथ को, जो कई लोगों के पास है, मूता नैणसी का बनाया हुआ ही नहीं बताते। वे कहते हैं कि मूता का बनाया हुआ असल ग्रंथ तो हमारे पास है। मगर जब कोई उनसे

---

* मुरधर (मरुधरा) = मारवाड़। तणौ = का। खाँत = अनुराग; उत्कंठा। अमांमी = बड़ा; बड़ी। बिक्रमपुर-पत-हूँत = बीकानेर के स्वामी से। मो = मेरा। दाख = देखकर। जिण = जिस। जिकण = जो; जिनको। कढण = निकालने को; निश्चय करने को।

देखने को माँगता है, तब इधर उधर एक दूसरे के पास होना बताकर टाल जाते हैं।" इस कथन से यही पाया जाता है कि या तो उनके पास कोई प्रति है ही नहीं; और यदि है, तो बीकानेरवाली प्रति या मूल संग्रह से वह भिन्न नहीं हो सकती।

नैणसी का दूसरा ग्रंथ जोधपुर राज्य का सर्वसंग्रह (गज़ेटियर) है, जिसमें जोधपुर राज्य के उन परगनों का वृत्तांत है, जो उस समय जोधपुर राज्य में थे। नैणसी ने पहले तो एक एक परगने का इतिहास लिख कर यह दिखलाया है कि परगने का वैसा नाम क्यों पड़ा, उसमें कौन कौन राजा हुए, उन्होंने क्या क्या काम किए और वह कब और कैसे जोधपुर राज्य के अधिकार में आया। इसके बाद उसने एक एक गाँव का थोड़ा थोड़ा हाल दिया है कि वह कैसा है? फ़सल एक ही होती है या दो; कौन कौन से अन्न किस फ़सल में होते हैं; खेती करनेवाले किस किस जाति के लोग हैं; जागीरदार कौन हैं; गाँव कितनी जमा का है; पाँच वर्षों में कितना कितना रुपया बढ़ा है; तालाब, नाले और नालियाँ कितनी हैं; उनके इर्द गिर्द किस प्रकार के वृक्ष हैं आदि। इस तरह इस विभाग की पूर्ति हुई है। यह कोई चार पाँच सौ पत्रों का ग्रंथ है। इसमें जोधपुर के राजाओं का इतिहास, राव सियाजी से महाराज जसवंतसिंह (प्रथम) तक का है। यह ग्रंथ प्रादेशिक होने पर भी जोधपुर राज्य के लिये कम महत्व का नहीं है।

गौरीशंकर हीराचंद ओझा।

सूचीपत्र

प्रकरण पहला

गुहिलोत (सीसोदिया) वंश ११००

- दीवाण (महाराणा उदयपुर) की धरती की विगत १
- घाटियों व रास्तों का वर्णन २
- च्यार छप्पन ३
- उदयपुर से बड़े नगरों का अंतर ३
- चित्तौड़ से दूसरे नगरों का अंतर ३
- मेवाड़ के पहाड़ ४
- बनास नदी का निकास ९
- गुहिलोत वंश १०
- पीढ़ियों का क्रम ११
- सीसोदिये कहलाने का कारण १३
- बात राणा चित्तौड़ के स्वामियों की १३
- कवित्त रावल खुम्माण (बापा के पुत्र) का १७
- कवित्त रावल आलू (महेंद्र के पुत्र) का १८
- कवित्त राजा बैरड (बैरट) के २०
- राणा खेतसी (क्षेत्रसिंह) २२
- राणा लाखा (लक्षसिंह) २३
- राणा लाखा के पुत्र २५
- राणा मोकल २५
- राणा कुंभा २८
- सीसोदिया राघोदेव (राघवदेव) की बात २९
- चुंडावत सीसोदियों की शाखा ३३
- खेतसी चुंडावत की बात ३७
- बात राणा कुंभा के चित्त-भ्रम होने की ३९

राणा रायमल ४१
पात सोलंकी राव सुरताण हरराजोत की ४४
राणा साँगा (संग्रामसिंह) ४६
राणा रत्नसिंह ४९
राणा विक्रमादित्य ५३
राणा उदयसिंह ५६
राणा उदयसिंह के पुत्र ६१
शक्तावतों का वंशवृक्ष ६६
राणा प्रताप ६८
राणा अमरसिंह ७०
राणा अमरसिंह के पुत्र ७३
राणा कर्णसिंह ७६
राणा जगत्सिंह ७६
राणा राजसिंह ७६
गुहिलोतों की चौवीस शाखाएँ ७७
डूँगरपुर का गुहिलोत वंश ७८
बाँसवाड़े का गुहिलोत वंश ८६
देवलिया (प्रतापगढ़) का गुहिलोत वंश ९३
चंद्रावत सीसोदिये ९७

प्रकरण दूसरा

चौहान वंश १०१
बूँदी का चौहान वंश १०१
सिरोही का चौहान (देवड़ा) वंश ११७
चीबा शाखा के देवड़े १५१
जालौर के सोनगरे चौहान १५२
बागड़िये चौहान १६९
बावसूई के चौहान १७१
सांचोर के चौहान १७१
बोड़े चौहान १८२

कांपलिये चौहान १८३

खीची चौहान १८४

मोहिल चौहान १८९

कायमखानी १९६

बात पताइ रावल की १९६

प्रकरण तीसरा

सोलंकी (चौलुक्य) वंश २०१

पाटण (अणहिलवाड़े) के सोलंकी २०१

वाघेले सोलंकी २१३

मेवाड़ के देसूरी के सोलंकी २१७

खैराड़े सोलंकी २१८

टोड़े के सोलंकी २१८

नाथावत सोलंकी २२०

प्रकरण चौथा

पड़िहार (प्रतिहार) वंश २२१

प्रकरण पाँचवाँ

परमार (पँवार) वंश २२६

आबू के परमार २२९

परमारों की वंशावली २३१

साँखला परमार २३३

रूण के साँखले २३५

जाँगलू के साँखले २३८

ऊमरकोट के सोढ़े परमार २४१

पारकर के सोढ़े २५३

भायले परमार २५४

मुंहणोत नैणसी लिखित मारवाड़ी ख्यात का हिंदी भाषांतर।

प्रकरण पहला।

उदयपुर का गुहिलोत वंश।

दीवाण (मेवाड़ के महाराणा) की धरती की विगत कोस और दिशा से—

वायव्य कोण में उत्तर से वांई तरफ मारवाड़, अजमेर से कोस ६० व्यावर राणा की, समेल खापसा (वावरा?) अजमेर का, मानपुर का घाटा, सारण, घाटावल, जहाजपुर से सीमा मिलती है। रामपुरे से कोस ४५ तथा ५० तक सीम—पूर्व से दाहिनी कोण गांव जारोड़ा रामपुरे का, देवलिये से सीमा कोस ४२; दक्षिण की वांई ओर दीवाण का गांव धीरावद (धरियावद), आगे देवलिया से कोस ५ बीच में छोटा गांव, भैंसरोड़ दीवाण की, और बून्दी कोस ६५ तथा ७०; पूर्व से कुछ वांई ओर मन्दसोर की तरफ सीमा कोस २५ तथा २७; दक्षिण से वांई तरफ रूपरास, मीमच (नीमच) दीवाण की, लीखमंडी दसोर (मन्दसोर) की। डूंगरपुर से सीमा कोस १६ दक्षिण खरक की ओर सोमनदी सीमा कोस १६। सलूंबर सेवाड़ी आसपुर, ईडर से कोस ३० खरक (ईशान) कोण में पानरवा भीलों के मेवास (छोटे गांव या पल्ली, पाल) राणा के, गांव छाली राणा की, दलोला ईडर की। डूंगरपुर बांसवाड़ा वीच जवास भीलों का मेवास है सो राणा के आधीन है। सिरोही से सीमा कोस २५ पश्चिम ओर, वांसवाड़ा उदयपुर से कोस ४०, बीच डूंगरपुर, कांकड़ (सीमा) नहीं। ईडर उदयपुर से ५० कोस, इस मार्ग में ६ कोस सूली-गडिया, ३ कोस चन्द्रवासा, ४ आहोर, ७ भीम का ओड़ा, ७ पानोरा (पानरवा) भीलों का, ६ छाली पूतली राणा की, ३ दलोल कलोल ईडर की। ईडर (में?) उदयपुर की हवेली के निकट के गावों का सीआली

साख (खरीफ) का हासिल तीसरे हिस्से तक और उन्हाली (रबी) में आधा, जिसके तीन विभाग होते हैं।

उदयपुर के आस पास पांच कोस तक गिरवा (गिरिवा) कहलाता है जिसमें ५२ गांव देवड़ों के देशावास (रहने के मूल स्थान या वतन) थे, जिनमें उदयपुर बसा और वे (गांव) टूट गये। उनके हल किसान अबतक भी उन गांवों में हैं। एकलिंगजी उदयपुर से उत्तर में कोस ५, देहरा मगरे (पहाड़ी) पर है। गांव देलवाड़ा झाला कल्याण का एकलिंगजी से एक कोस, देवी राठासण (राष्ट्रश्येना) का मंदिर पहाड़ पर दो कोस दूर है। एकलिंगजी का मंदिर दोनों तरफ पहाड़ों की नाल में है, मंदिर के चारों ओर छोटासा कोट है और (निज) मंदिर चौमुखा है, अर्थात् उसके चार दरवाज़े हैं। ऊपर दण्ड कलश सुवर्ण के हैं। आस पास और भी मंदिर हैं और उदयपुर की तरफ मंदिर के पास ही एक कुण्ड है। एकलिंगजी से एक कोस उदयपुर की तरफ नागदा (नागद्रह या नागह्रद) गांव है जिसके नाम से सीसोदिये नागद्रहे कहलाते हैं[1]। गांव की पूर्व ओर बड़ा तालाब और अच्छे व टूटे फूटे कई एक मंदिर हैं। इसी गांव में सीसोदियों के पुरुषा रहे थे। तालाब उदयसागर उदयपुर से कोस ३ पूर्व दिशा में देवारी की घाटी के पास है। यह तालाब बहुत बड़ा और (पूरा) भरने पर क़रीब २० (?) कोस के फैलाव[2] में हो जाता है और पानी इसमें गोघूंदे और कुम्भलमेर के पहाड़ों से आता है, और तालाब में जल न्यूनाधिक सदा बना रहता है। इसके नाले से बेड़च नदी निकलती है। तालाब के चारों ओर पहाड़, और २०० तथा २०५ पावण्डों (क़रीब ६३० फ़ुट) की पक्की पाल बन्धी हुई है। नाला मोरीरूप में बहता है। यहां राणा जगत्सिंह के बनाये हुए महल भी हैं।

घाटियों व रास्तों का वर्णन—देवारी की घाटी नगर से ३ कोस, केवड़ों की नाल शहर से कोस ७, (दक्षिण पूर्व) में। उदयपुर से ४ कोस डूंगरपुर बांसवाड़ा जाते गुजरात के मार्ग में पर्वतों की नाल कोस सात की है। केवड़ा गांव नाल के दूसरे ढाल पर है। नगर से चार कोस दक्षिण और चावण्ड के मगरों के मार्ग में जावर की नाल है जहां दीवाण के आपत्काल में रहने के बड़े २ पर्वत हैं।

(१) विक्रम की ग्यारवीं शताब्दी के आरम्भ तक नागदा ही गुहिलोतों की प्राचीन राजधानी रहा था।

(२) उदयसागर की लंबाई २॥ मील और चौड़ाई २ मील है।

विपत्ति निवारण का दारमदार इन्हीं पर्वतों पर है। जावर में चांदी की खान है जिसकी प्रति दिन की आय ४००) तथा ५००) रु० की है और उसमें से जस्ता और चांदी निकलते हैं। पश्चिम दिशा में गोघूंदा उदयपुर से कोस ८ दाहिनासा, मार्ग घाटे में होकर जाता है। खमणोर का घाटा शहर से ३ कोस ईशान कोण में है। मारवाड़ की ओर जाने के घाटे—सायरे का घाटा कोस १४, उत्तर पश्चिम में आवड़ सावड़ के बड़े पहाड़ हैं। घाटे के ढाल पर राणपुर का मन्दिर श्री-आदिनाथ (ऋषभदेव) का साह (संघवी) धरणा का बनाया हुआ बडा प्रासाद है। पहले यहां ऊदा कुम्भावत का वसाया हुआ वड़ा नगर था जो अब तो ऊजड़ पड़ा है। राणपुर से कोस ३ आगे सादड़ी की वस्ती है। घाणेराव का घाटा उदयपुर से कोस १९ वायव्य कोण में कुम्भलमेरु के पास है। जीलवाड़े का घाटा नगर से २३ कोस है। मानपुरे का घाटा ४० कोस दूर है।

च्यार छप्पन—उदयपुर से कोस (३५ के क़रीब) छप्पनिये राठौड़ों का वतन है। ये राठौड़ सोनिंग के वंशधर वड़े भूमिये थे। राणा उदयसिंह ने इनके मेवासे तोड़ने आरम्भ किये और राणा प्रताप के समय में जाकर टूटे थे, परन्तु छूटे नहीं। छप्पनिये अबतक छप्पन के गांवों में हैं परन्तु मेवास कोई नहीं रहा। च्यारों छप्पन के गांव २२४ जिनमें झाड़ोल के ताल्लुक़ ५६, सलूम्बर के ताल्लुक़ ५६, लेमारी ताल्लुक़ ५६, और चावण्ड के ताल्लुक़ ५६ हैं।

उदयपुर से दूसरे बड़े नगरों का अन्तर—चित्तोड़ २१ कोस, सोजत ४० कोस, कुम्भलमेर २० कोस, अहमदाबाद ४० (८०) कोस, सिरोही ३५ कोस, ईडर ४५ कोस, डूंगरपुर ३० कोस, देवलिया ४० कोस, मंदसोर ५२ कोस, जोजा-वर ३५ कोस, नीमच ४० कोस, कपासण २० कोस, ताणा २० कोस, मोही १७ कोस, जोधपुर ६७ कोस, मेड़ता ६० कोस, जालौर ५० कोस, मालपुरा ६० कोस, अजमेर ६५ कोस, बदनोर ४५ कोस, वांसवाड़ा ३० कोस, उज्जैन ९० कोस, मांडलगढ़ ४५ कोस, बून्दी ४० कोस, करहेड़ा ३५ कोस, गोघूंदा १२ कोस, (१६ मील के क़रीब है) और ऊँटोलाव (ऊँटाला) ११ कोस।

चित्तोड़ से दूसरे नगरों का अन्तर—उदयपुर २१ कोस, बून्दी का गढ़ रणथम्भोर ४० कोस, पुर १३ कोस, बदनोर ३५ कोस, बांसवाडा ५० कोस, कोठा-रिया २४ कोस, मन्दसोर २७ कोस, फूलिया २५ कोस, उज्जैन ६० कोस, मांडल-गढ़ १७ कोस, मेड़ता ६७ कोस, वेगम (वेगूं) १५ कोस, मांडल १७ कोस, ईडर-

गढ़ ७० कोस, देवलिया ३० कोस, नीमच १५ कोस, झालपुरा ५७ कोस, और सिरवाड़ा ५४ कोस।

मेवाड़ के पहाड़—रूपजी के निकट का पर्वत देश की सीमा पर है। रूपजी से तीन कोस पूर्व रीछेड़ वाघेरे की खास (मोड़) में है। जीलवाड़ा और रीछेड़ के बीच आसलमाल का बड़ा पर्वत ५ कोस लम्बा है। उसके इधर केलवा और वाघेरे के आगे घाटा नामक गांव है। उसके परे भोरड़ का मगरा उत्तर दक्षिण ५ कोस लम्बा है। भोरड़ और मछावला के मध्य समीचा गांव कुम्भावत सीसोदियों का निवास स्थान है। समीचा उदयपुर से १७ और रूपजी से १२ और कुम्भलमेर से १० कोस के अन्तर पर है। उसके आगे मछावला का मगरा सात कोस लम्बा है जिसके आस पास ६ गांव वसते हैं—समीचा, मदारड़ा, वरहाड़ा, बरणा, गमरा आदि। मछावले पर वृक्षावली और जल की बहुतायत है। उसके आगे बरवाड़ा जहां से बर और बनास नदियां निकलती हैं। आगे घासेर का पहाड़ एक कोस लम्बा और उसके परे पिण्डरझांप का पर्वत है। घासेर और पिण्डरझांप के बीच वांसवाड़ा कोतारा (?) २ कोस और उससे आगे पूमण पहाड़ों के पास लोहसींग नाम का गांव है, जिसके समीप ही एक छोटी नदी का निकास है। पूमण की लम्बाई उत्तर दक्षिण २ कोस और उसके आगे ईस-वाल नामी मगरा और कड़ी नाम का गांव है। यह मगरा गिरवे के पहाड़ों से जा लगा है और उदयपुर से ५ कोस पश्चिम उत्तर की ओर है। जीलवाड़े से कोस ५ और देसूरी से कोसेक घाणेरा (घाणेराव) कुम्भलमेर की तलहटी में है। जिससे दो कोस के अन्तर पर कुम्भलमेर का पर्वत १५ कोस के घेरे में सादड़ी, राणपुर, सेवाड़ी तक चला गया है। सेवाड़ी गांव कुम्भलमेर से ७ कोस पर है, इसके आगे राहंग का मगरा बहुत ही विकट, वहां जल पुष्कल और २५ गांव उसके आसपास वसते हैं। इस पहाड़ की लम्बाई १६ कोस और विपत्तिकाल में राणा के ठहरने की अच्छी ठौड़ है। वह सिरोही की सरणुवा पहाड़ियों से जा लगा है। (चौड़ाई) उसकी कोस १५ और घेरा ३० कोस का है। निकट के गांवों में सीरवी, पटेल, कुनबी, ब्राह्मण और बनियों की बस्ती है। गांवों की विगत—भाटोही, भूणोद, माल्हण, सुनाहणी, बहड़ी, पाद्रोड़, पिण्डवाड़ा सिरोही का, वेकरिये का घाटा जहां जुही नदी है। राहंग में वालीचों का वतन है। जरगा और राहंग के बीच के स्थल को देसहरो (?) देश कहते और वहां खरबड़,

चन्देल, वोडाणा, चंदाणा राजपूत सासणीक के तौर बसते हैं परन्तु भोग दूसरी प्रजा की भांति देते हैं। इस भूमि में आम के झाड़ हैं और चांवल, गेहूं, चणा, उड़द् वहुतायत के साथ पैदा होते हैं। मछावला और जरगा के वीच की भूमि कुहाड़िया नला कहलाती है जो दस कोस की लम्वाई में उदयपुर से वीस कोस के अन्तर पर है। जरगा का पहाड़ कुहाड़िये नले से दाहिनी ओर है और उसकी दूसरी तरफ केलवाड़ा और दक्षिण में रोहेड़ा गांव है। ऊपर लापरा, आंतरी, गुढ़ा, कांकरवा, किसोर, गूंदाली आदि गांव वसते हैं। जरगा पर्वत पर राजा हरिश्चन्द्र की स्थापन की हुई गुसांईपादुका और त्रिशूल हैं। इस पर्वत पर जल वहुतायत के साथ है। रोहेड़े से आगे ७ कोस उसीसे सम्वन्ध रखनेवाली नाहेसर (नाहर) और भांडेर की अति विषम और विकट भूमि है। वहां गांव वहुत, मेवाड़ और सिरोही राज्यों की सीमा और उदयपुर से सिरोही जाने का मार्ग है। गांव ढोल, कलोल, सिंघाड़, वोखड़ा और गोघूंदा हैं। इस पहाड़ से इधर भांडेर से कोस ४ उदयपुर की ओर दक्षिण दिशा में बहुत से गांव हैं। ठगरावड़ी, झल, आहोर, नाहेसर, पानड़वा, भांडेर, पई मथाड़ा और देवहर के पहाड़ भी वहुत वड़े हैं। इनके आगे माचण के पहाड़, १५ कोस, में भीलों की वस्ती है। आगे ईडर की ओर गंगादास की सादड़ी के पहाड़ों में भी भील वसते और परे छाली पूतली और ढोल कलोल के पहाड़ ईडर से सात कोस इधर हैं। डूंगरपुर और देवगदाधर के वीच जवास के मगरों में भी भील ही रहते हैं। ईडर डूंगरपुर से दस कोस है। छप्पन, चावण्ड और जवास व जावर के बीच उदयपुर से १७ कोस पीपलदड़ी और सीरोड़ के पहाड़ हैं, जहां चांवल और गेहूं पैदा होते और झाड़ पहाड़ की इतनी अधिकता है कि उनकी आड़ से रविबिम्ब के भी दर्शन दुर्लभ हो जाते हैं। वारा वारड़ा के शैलों में भी भील निवास करते और वहां भी साल, गेहूं की पैदा-यश और आम्रवृक्ष व नानाप्रकार के जंगली पुष्पों की वहुतायत है। इनके आगे पर्वतीय भूमि है। डूंगरपुर से वांई ओर वांसवाडा है। वांसवाड़े और देव-लिये के मध्य मेवाड़ के गांव छप्पन और राजा का जगनेर है। यह देश मण्डल कहलाता है। गांव धर्यावद वड़वाल परगने का जहां वड़े पहाड़ और सघन वृक्ष हैं। बस्ती वहां छपनिये राठौड़ और चहुवाणों की है। धर्यावद के पश्चिम मेवल के मगरे और ये गांव हैं—सलूम्बर चूंडावतों का वतन, वाह-

रड़ो (बाठरड़ा) सलूम्बर से १२ कोस, बंभोरा सारंगदेवोतों का वतन। बाठरड़े और सलूम्बर के बीच में बड़े बड़े पहाड हैं। बाठरड़े से ३ कोस पश्चिम में उदयसागर का ताल और इस ताल से एक कोस देवारी, देवारी से २ कोस आहड़ और आहड़ से एक कोस उदयपुर है। (राणा) के महल पीछोला (झील) के तट पर बने हैं। उदयपुर से ५ कोस सिगड़िया नाम का बड़ा पहाड़ पश्चिम की ओर है। आगे उदयपुर से तीन कोस धार की पहाड़ी और लाखाहोली (लखावली) उत्तर में है। उसी दिशा में चीरवे का घाटा और आंबेरी गांव है। चीरवे से दो और उदयपुर से पांच कोस पर एकलिङ्गजी और वहां से एक कोस राठासण की पहाड़ी दो कोस के घेरे में है, जहां जल नहीं है। एकलिङ्गजी से एक कोस झालों का देलवाड़ा और देलवाड़े से सात और उदयपुर से १२ कोस चहुवाणों का कोठारिया है। देलवाड़े और कोठारिये के बीच हल की पहाड़ियां कोठारिये के पूर्व में हैं। देलवाड़ा मेवाड़ के मध्य में है। कोठारिये से २५ कोस चित्तोड़ पूर्व दिशा में, और चित्तोड़ से एक कोस पर अरवण के बड़े पहाड़ हैं परंतु उन पर जल नहीं। अरवण के पहाड से दो कोस पथार की पर्वत श्रेणी हैं, वहां पर जो गांव बसते हैं उनकी विगत—पथार के गांव ४४, खैरव (खैराड़) के गांव ८४, जिनमें प्रजा गूजर और ब्राह्मण हैं। रत्नपुर की चौरासी चूंडावतों की ठौड़ है जिसमें ६४ गांव का बेगूं का बड़ा इलाक़ा है। वहां बड़ी पनवाड़ी और गेहूं व चने पैदा होते हैं। बेगूं से सात कोस पंवार इन्द्रभाण का ठिकाना बींझोली (विन्ध्यावली) है। महानाल (मैनाल) तीर्थ मांडलगढ़ से ७ कोस है। बींझो-ली के गांव २४ ऊपरमाल के हैं (पहाड के ऊपर की समतल उर्वरा भूमिको ऊपरमाल कहते हैं)। बींझोली से नौ कोस भैंसरोड़गढ़ में बड़े बड़े पहाड़ हैं। भैंसरोड़गढ़ से ६ कोस कोटा पलाइता हाडों का, और एक कोस पर बूंदी (की सीमा) है। चार कोस पर ऋषि बीसलपुर का मेवास है जहां भील बसते हैं। भैंसरोड़ पांचालदेश में २५ गांव लगते और बारा गांव हवेली के हैं। उसके आगे ४५ गांव कुण्डाल के महल माकडा पर्गने के नाम से प्रसिद्ध हैं। उदयपुर से ५० और भैंसरोड़ से २० कोस दक्षिण रामपुरे का पर्गना है। रामपुरे की तरफ़ १२ कोस तक भैंसरोड़ की सीमा और भैंसरोड के नीचे चम्बल नदी बहती है। वहां कोट एक पक्का और दूसरी खाई गढ़ीरूप बनगई है। कोट के भीतर ४०० घरों की वस्ती है। कोट के चारों ओर चम्बल ब्राह्मणी, और पगधोई नामकी तीन नदियां फिर गई हैं।

मेवल मेरों की, वम्भोरे के सारंगदेवोत सीसोदियों की जागीर में है। इन का एक गांव उदयपुर से ६ कोस उदयसागर के नाले के पास भी है। देवलिये से ३ कोस पर बड़ा मेरवाड़ा था, बुरड वरगट, बुजमाल, डमर शाखा के मेर यहां १४० गांवों में निवास करते थे। उनको एक बार राणा जगतसिंह ने निकाल दिया था, फिर झाला कल्याण ने राणा से प्रार्थना कर उनको पीछे बसाये। अभी राणा राजसिंह ने सब मेरों को निकाल कर उनके सब गांवों में सीसोदिये, चूंडावत, शक्तावत, राणावत राजपूतों को बस्ती समेत बसा दिये हैं और मेर देवलिये के मेरवाड़े में जा रहे हैं। वहां वे लोग बहुत उजाड़ बिगाड़ करते हैं। देवलिये और मेवल के बीच की भूमि को मण्डल का देश कहते हैं जिसमें मुख्य स्थान धर्यावंद है, जहां भी मेर ही बसते थे जो प्रजा या मेवासी की रीति पर चलते थे। यहां मेरों के गांव १४० थे उनको राणा राजसिंह ने निकाल कर सारंगदेवोत राजपूतों को उन गांवों में बसाया, परंतु यहां का पानी रोगजनक होने से वस्ती वढ़ी नहीं[1]।

नवसौ नाहेसर के स्वामी भील, राणा के पक्के स्वामीभक्त सेवक हैं। उनके पुरुषा रावत कहलाते थे। अभी ये गांव रावत नरसिंहदास के आधीन हैं। पहाड का नाम नाहेसर और पर्गना जूड़ा कहलाता है जो उदयपुर से २५ कोस

---

(१)–प्रसंगागत यहां मेरों का प्राचीन हाल संक्षेपरीति से लिखा जाता है। ये लोग उत्तरी हिन्दुस्तान से आई हुई शक जाति की क्षत्रप शाखा में हैं जिनका सन् ईसवी की दूसरी शताब्दी में या उससे कुछ पूर्व इधर आना पाया जाता है। मेद, मेव, मेर, मैत्रक, मेहरा या मेहर पर्यायवाची शब्द हैं। इण्डियन् ऐंटीकेरी जिल्द ७ पृष्ठ ३२४ में कुड़ा की गुफा के लेख पर प्रोफेसर जेकोबी की माण्डव नाम पर दीहुई टिप्पणी पर प्रोफेसर व्हुलर लिखता है कि बृहत्संहिता में मेद वा मेरों के साथ माण्डव्य नाम की भी एक जाति मध्यभारत में बतलाई है। इन्हीं मेवों को फारसी मुवर्रखों ने मण्ड नाम से लिखा है। संस्कृत कोषों में उनको म्लेच्छ और ऐरावत कुल के नागवंशी कहे हैं। ये लोग सूर्य के उपासक थे और पहले सिन्धुनद के तटपर आकर बसे और फिर धीरे २ गुजरात, काठियावाड़ और राजपूताने के प्रदेशों में फैल गये। मेवाड़ या मेदपाट, मेवात, मेवल, मण्डोवर आदि नामों से स्पष्ट है कि मेर या मेव जाति के यहां बसने से उनके नामपर ये प्रदेश प्रसिद्ध हुए। मेर लोग अपने को हिन्दू मानते और राजपूत कहते हैं ऐसे ही राजपूत भी इस कथन को स्वीकारते हैं कि मेर पहले राजपूत ही थे; परन्तु उनमें भक्ष्याभक्ष्य का विचार न रहने और नाता आदि की प्रथा

गोधूंदे के इलाके और सिरोही के पर्गने भीतरोट से मिला हुआ है। नाहेसर पर्वत के पूर्वी ढाल में नाहेसर पर्गना और पश्चिम में सिरोही का भीतरोट है। अम्बाव से कोस दस या बारह नाहेसर के गांव नौसो की कहावत प्रसिद्ध है। यहां प्रजा भील, कुनबी, वनिये और गूजर हैं। भांडेर का पहाड दस कोस लम्बा और दो कोस चौडा है। नाहेसर बारह कोस लम्बा और दो कोस चौडा, उसमें जूड़े का पर्गना है। एक एक गांव में पांचसौ तथा सातसौ बीघे भूमि कृषि के योग्य, और दूसरी सब पहाड़ों के तले दबी हुई है। बड़े वृक्षों में आम, रायण, (खिरनी) और इमली के पेड़ बाहुल्यता के साथ हैं। खेती धान, साल, गेहूं, चणा, मक्का, उड़द की बहुत होतीं, और बालणककड़ी भी बहुतायत के साथ पैदा होती है। विपत्काल में यह स्थान दीवाण (मेवाड़ के महाराणा की पदवी) के लिये बड़ा सुरक्षित है। नवसौ नाहेसर में नरसिंहदास के २०० गांव पानरवा में, राणक दयालदास भील के ६४ गांव, गंगादास की सादड़ी में गंगादास के वंशजों के १४० गांव, झाड़ोली टंगरावटी में, जो झालों के पट्टे में है, भील प्रजा होके रहते, २५ गांव छाली पूतली, ईडर दलोल कलोल से लगते हुए और २५ गांव जवास के हैं जिनमें भील रहते हैं। डूंगरपुर की पुश्तपनाह में भील खंगार भगोरा निवास करता है। इन १५० कोसों में भीलों ही की वस्ती है।

प्रचलित होने से अब उनका सम्बन्ध राजपूतों से नहीं रहा है। बाम्बे गैजेटीयर जिल्द १ में इन लोगों के हालमें लिखा है कि वहां (बाम्बे इहाते में) अब भी मेहर या मेर जाति के २४००० मनुष्य हैं जिनका सम्बध अर्से से जेठवा राजपूतों के साथ है। मेरों में बारह शाखा हैं जिनमें से पांच यादव, पांच तंवर, एक कछवाहा और एक बड़गूजर कहलाती हैं। राजपूताने के मेरवाड़े में ३३० गांवों में मेरों की वस्ती है। वे अपने को चहुवाण, परमार, गुहिलोतादि शाखाओं के बतलाते और कहते हैं कि हमारे एक पुरुषा जोध लाखण चहुवाण ने राजपूतानी के धोखे से एक मीणी (मियानी) स्त्री से विवाह करलिया था, उसके आनल व अनूप दो पुत्र हुए। जब जोध लाखण को मालूम हुआ कि मेरी पत्नी राजपूतकुल की नहीं है तब उसने पुत्रों समेत उसे निकाल दिया और वह ब्यावर के पास चांग गांव में आ ठहरी। आनल व अनूप से चीता व बरड़ दो शाखें मेरों की निकलीं। चीता मेरों में एक शाखा महरात है जिसमें काठा गोत्र के मेर यद्यपि मुसलमान हो गये हैं तथापि अपने हिन्दु भाइयों के साथ उनका भोजन व्यवहार बना है। इनमें पहले राजकुली और सर्व साधारण का भेद भी था। पहले तो ये लोग चोरी और डकैती भी किया करते थे परन्तु अब ब्रिटिश सरकार के सुप्रबन्ध से बहुत कुछ सुधर गये हैं। मेवातके मेव रंगड़ नामसे आजतक प्रसिद्ध हैं; उन्हों ने एक अर्से से मुहम्मदी मत ग्रहण कर लिया है।

बनास नदी का निकास और वे स्थान जहां होकर वह बहती है—बनास उदयपुर से २६ कोस जरगा के पहाड़ से निकलकर राजा हरिश्चन्द्र के बसाये हुए रोहेड़े गांव को आती, और वहां से दो कोस मेवाड़ के गांव धरवाड़े आकर आगे कठाड़, सदारड़े और गांव माछु में होती हुई घसार के पहाड़ के बीच निकलकर कामलकराही गांव को आती है। वहां से फिर उदयपुर से १२ कोस खमणोर गांव के नीचे वहती कोठारिये के पास आ निकलती है और वहां से आगे तंवरों के गांव मोही होकर कुरज मीरमी पहवै को जाती है। वहां से आगे गांव बाकरलापुरा है जहां से ६ कोस वहकर पुर के पास आती, फिर मांडलगढ़ के आकोले होकर नंदराय के बीच में से बहती हुई बीहली को आती है जहां चंबेलेरे के पार्श्वनाथ का मन्दिर है। फिर जहाज़पुर के गांव पाडलोली के निकट बहती हुई जहाज़पुर पहुंच कर सांवल के गांव देवली में होती टोडे की टापर में जा निकलती है। यहां बदनोरवाली खारी नदी का बनास से सङ्गम होता है। फिर टोडे से ४ कोस गोकर्ण नाम तीर्थ में आती जहां रावण और मधुकैटभ ने तपस्या की थी। गोकर्ण से आगे टोडे के गांव बीसलपुर टापर को सींचती है। यहां सीसोदिया रायसिंह के बनवाये हुए महल हैं[1]। आगे बणड्डे होकर टंक (टोंक) और मलारणा के गांव झोंपड़खेड़े, सोहड़, भगवन्तगढ, ससे, भाजे, मलारणा के बीछूंदे, और हाडोती के गांव डूयरे में बहती हुई खण्डारगढ़ के पास चम्बल में जा मिलती है। वहां बरवासण देवी का मन्दिर है।

---

(१)—राजा रायसिंह राणा अमरसिंह प्रथम के एक पुत्र भीमसिंह का बेटा था। भीमसिंह बादशाही चाकरी में जा रहा और बादशाह जहांगीर ने उसको टोडे का पर्गना जागीर में देकर राजगी का ख़िताब दिया था। बनास नदी के तटपर एक नगर बसाकर राजमहल की इमारत राजा भीम ने बनवाई थी। रायसिंह को भी शाहजहां ने राजगी की पदवी और पांच हज़ारी मंसब तक पहुंचा दिया था। स० १६७२ ई० में राजा रायसिंह मरा, उसके पुत्र मानसिंह, महासिंह और अमरसिंह बादशाह औरंगज़ेब की सेवा में थे।

सीसोदियों की ख्यात।

सीसोदिये पहले गुहिलोत कहलाते थे। एक वार्ता ऐसी सुनी है कि इनका राज्य पहले दक्षिण में नासिक त्र्यंम्बक में था। इनका एक पूर्वज सूर्य्य की उपासना करता था, और स्तुति करने पर दिवाकर देव प्रत्यक्ष होकर दर्शन देते थे। इस से कोई उस राजा को युद्ध में नहीं जीत सकता था। वह बहुत सी पृथ्वी का स्वामी महाराजा हो गया, परन्तु उसके कोई पुत्र नहीं था। तदर्थ सूर्य से प्रार्थना की तो भगवान मार्तण्ड ने कहा कि मेवाड़ और ईडर की सीमा पर अम्बा देवी है उसकी जात बोल और मानता कर तो आशा पूर्ण होगी। तदनुसार राजा ने जात (यात्रा) बोली। राणी के गर्भ रहा तब राजा राणी दोनों अम्बा देवी की यात्रा को चले। चलते समय राणी सूर्य के आवाहान का मंत्र वहीं भूल आई, उसको आसियों (भाई बेटों) ने निकाल लिया, उनका दांव लगा, सूर्य की उपासना मिटी और सब आसियों ने मिल कर राजा पर चढ़ाई की। राजा लड़कर मारा गया और गढ़ पीछे आसियों के हाथ आया। राणी अम्बा देवी की जात समाप्त कर नागदा गांव में एक ब्राह्मण के घर आ ठहरी। जहां राजा की मृत्यु के समाचार और उसकी पाघ राणी के पास पहुंची, तब वह सत करने को तैयार हुई। चिता चुनकर उसमें बैठना चाहती थी कि गांव के ब्राह्मणों ने उसे समझाया कि गर्भवती स्त्री को सती होना उचित नहीं है, तुम्हारा प्रसवकाल निकट है। पंद्रह बीस दिन पीछे राणी के पुत्र हुआ और पंद्रह दिवस तक माता ने उसका पालन किया, तदुपरांत न्हा धोकर पुत्र को गोद में लिये आग में जलने को चली। जहां जलने को जाती थी वहां कोटेश्वर महादेव का मंदिर था और विजयादित्य नामी एक विप्र पुत्रकामना से शंकर की सेवा करता था। राणी ने उसको अपने पास बुलाया और वस्त्र में लपेट कर अपना पुत्र उसको सौंप दिया। ब्राह्मण ने जाना कि कुछ माल है सो लेलिया। इतने में बालक रोया तब वो ब्राह्मण चौंककर बोला कि मैं इस राज पुत्र को लेकर क्या करूं, क्योंकि यह बड़ा होकर आखेट करेगा, जीव मारेगा, संसार से वैर बढ़ावेगा, तो मेरा धर्म कर्म जावेगा, अतएव यह दान मुझ से नहीं लिया जाता। राणी बोली कि जो तू कहता है वह सत्य है, परन्तु जो मैं सच्चे मन से सती होती हूं तो मेरा यह वचन है कि इस बालक के वंशज राजा

होकर भी दस पीढ़ी तक तेरे कुलाचार का पालन करेंगे और तुम्हें बहुत सुख देंगे। ब्राह्मण ने बालक को लेलिया और उसके साथ बहुतसा नक़द व आभूषण भी राणी ने ब्राह्मण को दिया। राणी तो सती हो गई व विजयादित्य पुत्रवत् उस बालक का लालन पालन करने लगा। राणी के वचनानुसार उस बालक के वंशज दस पीढ़ी तक ब्रह्मकर्म करते रहे और नागदहे (नागदा) ब्राह्मण कहलाये।

पीढ़ियों का क्रम—विजयादित्य, सोमादित्य, सूर्य्यवन्शी, गुहिलोत, शीलादित्य, ब्रह्मादित्य, केशवादित्य, नागादित्य, भोगादित्य, देवादित्य, आशादित्य, भोजादित्य, गुहदत्त और बापा। रावल बापा गुहदत्त का जिसने हारीत की सेवा की और प्रसन्न होकर ऋषीश्वर ने उसको मेवाड़ का राज्य दिया। जब हारीत विमान में बैठ चलने लगा (मरते समय) तब उसने बापा को बुलाया, वह कुछेक देर से पहुँचा जब कि विमान थोड़ा ऊपर उठ चुका था। ऋषि ने बापा की बांह पकड़ी, उसका शरीर दस हाथ ऊँचा होगया, तब अपना तम्बोल ऋषि बापा के मुख में उसका शरीर अमर करने को डालते थे, परन्तु थूक उसके मुंहमें न गिरकर पांवों पर पड़ा। ऋषि बोले कि यदि यह पीक मुख में जाता तो तू अमर हो जाता, परंतु फिर भी मेवाड़ का राज्य तेरे वंश के पांवों तले सदा बना रहेगा, और यह भी कहा कि अमुक स्थान में १५ क्रोड़ सोनय्ये (सुवर्ण मोहर) गड़े हैं, उन्हें निकाल कर अपना सामान सजाना, और मोरी राजा को जीत कर चितोड़गढ़ ले लेना। ऋषि की आज्ञानुसार बापा ने वह धन निकाल लिया और उससे सेना इकट्ठी कर चितोड़ पर अधिकार किया।

रावल बापा ने हारीत ऋषि की सेवा की और मेवाड़ का राज्य लिया; उसकी साक्षी के कवित्त।

आदमूल उतपत्ति, ब्रह्म पिण सभी जाणां,
आणन्दपुर सिणगार, नयर आहोर बखाणां।
दल समूह स राण, मिलै मंडलीक महाभड़,
मिलै सव्व भूपत्ति, गरुअ गहलोत नरेसर।
एकल मल धूज्यूं अचल, कहै राज बापै कियो,
एकलिंगदेव आहूठमा, राजापद छणपर दियो॥
छपनकोट सोभरण, रिष्य हारीत समप्पै,

लैं देही सूग गयो. राय रायां उथप्पै।
अन्तरीख ले अमृत, सिद्ध पण अरधो कीन्हो,
भयो हाथ दस देह, सस्त्र वज्रमह दीन्हो।
आवध अंग लगै नहीं, आद देव यो वर दियो,
गुहदत्त तनय भैरव भणी, मेदपाट इण पर लियो ॥
हर हारीत पसाय, सात वीसां वर तरणी,
मंगलवार अनेक, चैत विद पंचम वरणी।
चित्रकोट कैलास. आप वस परगह कीधो,
मोरी दल मारेय, राज रायां गुर लीधो।
बारह लख बहतर सहस, हयदल पंयदल यूं वणै,
नित पूड़ो मीठो ऊपड़ै, भूंजाई बापा तणै ॥
खड़ग धार परहार. जित्त भैंसा दुय भंजै,
करै आहार झाला चार, ताम भोजन मन रंजै।
पटोल पैंतिस हाथ, पहरण पहरीजै,
सोलह हाथ पिछोड़, तेण तन नहीं ढकीजै।
पय तोडर तोल पचास मण, खड़ग बतीसां मण तणो,
बापा सेन समुह चलै, तिण भय कांपे गज्जणो ॥
जालन्धर कसमीर, सिन्ध सोरठ खुरसाणी,
ओडीसा कनवज्ज, नगर ठट्टा मुलताणी।
कोकण नै केदार, दीप सिंघल मालोरी,
द्राबड़ सावड़ देस, आण तिलगाणै फेरी।
उतर दिखण पूरब पछम, कोई पाण न दक्खवै,
छमत एक इक्याणवै, बापा समो न चक्कवै ॥
राव जुहारै बार, राव घर पाणी आणै,
राव करै मांजणो, राव भोजड़ियां ताणै।
राव पानगृह रहै, राव पोहरै नित जागै,
राव तुरंग गहि धुलै, राव छुळ पांवे लागै।
गजढढ़ रथढढ़ तुरिय चढ़, रायन को भाडन्त रिण,
चितवै चरण चक्कवइतणा, सहू राव बापा सरिण ॥

सीसोदिये कहलाने का कारणः—सीसोदा गांव (उदयपुर से कोस १५ उत्तर में सीधे मार्ग से, और राजनगर से ८ मील पश्चिम में है) में बहुत दिनों तक रहे इसलिए गांव के नाम से सीसोदिये कहलाये। नागदा में बहुत रहने से नागदहे भी कहे जाते हैं। एक बात ऐसी भी सुनी है कि पहले ये (सीसोदिये) ब्राह्मण थे। राजा परीक्षित के वैर में जनमेजयने (सर्पयज्ञ रच) नागों को होमा, वह यज्ञ इन्होंने किया (अर्थात् उसमें ऋत्विज ये थे)। नागदा गांव एकलिंगजी से एक कोस है। सीसोदियों का विरुद 'आहूठमानरेश' कहा जाता है जिसका रहस्य आढा महेशदास ने संवत् १७०६ (वि०) में इसप्रकार कहा-" एकतो आहूठ हाथ, अर्थात् सब मनुष्यों के स्वामी, और एक आहूठ कोड़ पृथिवी उस सब के स्वामी[1]"। कई दिन केलपुरे में रहने से केलपुरे, और आहाड़ में बसने से आहाड़ा भी कहलाते हैं।

बात राणा चित्तोड़ के स्वामियों की—एक तो ऊपर लिखी है और दूसरी पुष्करणे ब्राह्मण कवीश्वर जसवन्त के भाई जोसी मनोहरदास ने इस तरह लिखवाई। इनका (सीसोदियों का) विजैपान गोत्र है। विजैपान ब्रह्मा का पुत्र था सीसोदिये उसके वंश के हैं। बहुत दिनों तक ब्राह्मण रह कर वे बड़े ऋषीश्वर हुए, बड़ी तपस्या की, और इतनी पीढ़ियों तक तो शर्म्मा कहलाये— ब्रह्मा, विजैपान, देवशर्मा अग्निशर्मा, विजयशर्मा, क्षेमशर्मा, ऋषिशर्मा, जगशर्मा, नरशर्मा, गजशर्मा, वायुशर्मा, दत्तशर्मा, जयशर्मा, वास्तुशर्मा, केशवशर्मा, जामशर्मा, धीरशर्मा, विजयशर्मा, लेखशर्मा, राजशर्मा, विराजशर्मा, हरखशर्मा, पीवशर्मा, मेदशर्मा, हृदयशर्मा, फलशशर्मा, जनशर्मा, लिलाटशर्मा, वास्तुशर्मा, नरशर्मा, हरशर्मा, धर्मशर्मा, सुकृतशर्मा, सुभैन्यशर्मा, सुबुद्धिशर्मा, विश्वशर्मा, वरदेवशर्मा कामपतिशर्मा, नरनाथशर्मा, पीतशर्मा, हेमवर्णशर्मा, जनकारशर्मा, राजशर्मा, गालवदेवशर्मा, गल्वशर्मा, गालसुरशर्मा, पालवदेवशर्मा, हरजनकारशर्मा, दर्मादशर्मा, गोविन्दशर्मा, गोवर्द्धनशर्मा, गोदसीशर्मा, वात्स्यशर्मा, विराटशर्मा,

(१)—आहूठमा का अर्थ स्पष्ट नहीं, शायद लेखक दोष से शब्द अशुद्ध लिखा गया हो परन्तु यहां प्रसंग नाम पड़ने का कारण बतलाने का है अतः आश्चर्य नहीं कि उनका विरुद 'आहूठमा नरेश' नहीं किन्तु या तो आहोर नरेश हो, क्योंकि नैणसी ने उदयपुर से ११ कोस कालों की सादड़ी के पास आहोर को राणा की प्राचीन राजधानी बतलाई है, या 'आहाड़ नरेश' से अभिप्राय हो।

वेगशर्मा, नित्यानन्दशर्मा और वनशर्मा। पीछे इतनी पीढियों तक राणा के पूर्वज दित्य ब्राह्मण कहलाये–गोदसीदित्य, अजादित्य, ब्रह्मादित्य, माधवादित्य, जलादित्य, बिजलादित्य, कमलादित्य, गौतमादित्य, भोगादित्य, जालमादित्य, पद्मादित्य देवादित्य, कृष्णादित्य, यमादित्य, हेमादित्य, कलादित्य, मेघादित्य, वेणादित्य, रामादित्य, कामादित्य, हर्षमादित्य, देवराजादित्य, विक्रमादित्य, जनकादित्य, नेमकादित्य, रामादित्य, केशवादित्य, करणादित्य, यमादित्य, महेन्द्रादित्य, गंजमादित्य, गंगाधरादित्य, गोविन्दादित्य, गंगादित्य, गोवर्धनादित्य, मेरादित्य, माधवादित्य, मदनादित्य, धनादित्य वेणादित्य वीकादित्य, नारायणादित्य, क्षेमादित्य, खेकाकदित्य, विजयादित्य, केशवादित्य, नागादित्य, भोगादित्य ब्रह्मादित्य, देवादित्य, अस्वादित्य, और भोगादित्य। राजा परीक्षित को (तक्षक) सर्प ने डसा उसके वैर में परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने नागों से द्वेष कर सारे ब्राह्मणों को इकट्ठे किये और कहा कि मेरे पिता का वैर लेने के वास्ते मैं सर्पों को होमना चाहता हूं। किसी ऋषि या ब्राह्मण ने राजा की बात को नहीं स्वीकारा तब राणा के पूर्वज ने इस काम को करना मंजूर किया, और उदयपुर से ६ कोस, मेवाड़ में नागदा गांव में नागों का होम किया, सो वे होम कुण्ड अब तक वहां हैं। नागों का होम होने से गांव का नाम नागद्रह पड़ा[1]।

बात-- श्रीएकलिंगजी के पास राठासण देवी है वहां हारीत ऋषि ने १२ वर्ष तक बड़ी तपस्या की थी। वहां बापा रावल एक ब्राह्मण का पुत्र बछड़े चराया करता था। उसने बारह वर्ष तक हारीत की बहुत सेवा की। जब ऋषीश्वर की तपस्या पूर्ण हुई तब उसने वहां से चलने की ठानी, परन्तु साथ ही बापा को भी कुछ देने का विचार किया। उस समय हारीत ने देवी पर कोप

(१)—यह वंशावली बिल्कुल् कृत्रिम है, इसमें ब्रह्मा के पुत्र से लगा कर भोगादित्य तक ११० नाम दिये हैं, उनकी कल्पना करनेवाले ने गप्पतरंग चलाते समय इतना भी विचार न किया कि आर्य्यों की कालगणना के अनुसार यह नामावली ब्रह्मा से कैसे जा मिलाता हूं। हमारे शास्त्रों में एक महायुग में कृत, त्रेता, द्वापर और कलि च्यार युग माने हैं, जिनमें ४३२०००० वर्ष होते हैं। ऐसे ७१ महायुग का एक मन्वंतर और १४ मन्वतर अर्थात् ४३२००००००० वर्षों का ब्रह्मा का दिन होता, और उतने ही वर्षों की रात। अब हम उपरोक्त वंशावली के प्रत्येक राजा की आयु कितनी मानें? और जनमेजय के सर्पयज्ञ की महाभारत में दी हुई कथा के नाम ठाम आदि से इस कथा का मिलान करें तो स्पष्ट हो जायगा कि यह निरी कपोल कल्पना ही है।

कर उसे कहा कि मैंने बारह वर्ष तक तेरे निकट तप किया तूने कभी मेरी खबर तक नहीं ली। देवी ने प्रत्यक्ष होकर पूछा कि मुझे क्या आज्ञा देते हो। ऋषी बोला कि इस लड़के (बापा) ने मेरी बहुत सेवा की है सो इसको यहां का राज देना चाहिये। देवी ने कहा कि राज तो महादेवजी की सेवा के विना नहीं मिल सकता सो तुम उनको प्रसन्न करो। तब हारीत ने शंकर का ध्यान धर उग्र स्तुति की जिससे पर्वत व पृथ्वी को फाड़कर श्रीएकलिंगजी का ज्योतिर्लिङ्ग प्रकट हुआ। हारीत ने फिर स्तुति की, सदाशिव प्रसन्न हुए, और कहा क्या मांगता है? ऋषि ने बापा रावल के लिये विनती की कि इसको मेवाड़ का राज्य दीजिये। तब महादेव व देवी राठासण ने प्रसन्न होकर कहा कि 'एवमस्तु'! यही कारण है कि अब राणा को आशीर्वाद देते समय ऐसा कहते हैं कि "हर हारीत प्रसन्न"।

महादेव को प्रसन्न करके हारीत आश्रम पर आया; इतने में बापा भी आन उपस्थित हुआ। ऋषि ने उस से कहा कि तूने मेरी बहुत सेवा की है इसलिये मैंने महादेव व देवी को प्रसन्न कर तुझे मेवाड़ का राज्य दिलाया है। यहां एकलिंग प्रकट हुए हैं, और देवी राठासण का स्थान भी है। उन दोनों की तू सदा सेवा करता रहना, तेरा राज अविचल रहेगा, अब एक घड़ी रात पिछली रहे तू फिर मेरे पास आना तुझे कुछ कहना है सो उस समय कहूंगा। बापा घर जाकर सो रहा, उसके उठने में कुछ देरी हो गई, उठते ही दौड़ता हुआ ऋषि के पास पहुंचा, उस वक्त हारीत विमान में बैठ चुका था। विमान थोड़ा ऊपर उठा तो हारीत ने बापा की बांह पकड़ी जिससे उसकी देह दस हाथ बढ़ गई। ऋषि ने अपने मुख का तम्बोल बापा के मुख में डालना चाहा, परन्तु वह उसके पावों पर गिरा। हारीत बोला कि यदि यह मुख में गिरता तो तेरा शरीर अमर हो जाता, परन्तु अब भी मेवाड़ का राज्य तेरे पगों से कभी न जावेगा, और अमुक ठौड़ ५६ कोटि सुवर्ण मुद्रा है सो तू लेकर अपना सामान दुरुस्त कर चित्तोडगढ़ पर जाना। वहां मोरी राजा राज्य करता है उसको मार कर राज्य अपने अधिकार में लाना। कहते हैं कि सम्वत् ५० में बापा को वरदान हुआ था। बापाने मौर्य्यों को मार कर चित्तोड़गढ लिया और इतनी पीढ़ियों तक ये रावल कहलाये १ भोजादित्य, २ बापा रावल, ३ खुमांण रावल, ४ गोयन्द रावल, ५ सिंह रावल, ६ आलू रावल, ७ सीहड़ रावल, ८ शक्तिकुमार रावल, ९ शालिवाहन रावल, १० नरवाहन रावल, ११ अस्बपसाव रावल, ११ बिंबपसाव रावल, १३ नरबिम्ब

रावल, १४ नरहर रावल, १५ उत्पलराज रावल, १६ कर्णादित्य रावल, १७ भाऊ रावल, १८ गात्र रावल, १९ हंस रावल, २० योगराज रावल, २१ वड़सिंह रावल २२ वीरसिंह रावल, २३ समरसिंह रावल, २४ रत्नसिंह रावल पद्मिनीवाला, २५ श्री पुञ्ज रावल, २६ कर्ण रावल। यहां तक चित्तोड़ के स्वामी रावल कहलाये [1]।

---

(१)—नैणसी ने बापा रावल से लेकर रावल रत्नसिंह तक मेदपाट के महाराजाओं की केवल वंशावली देने के अतिरिक्त और कुछ भी वर्णन उनका नहीं किया और न उनका समय ही दिया है। देता भी कहां से क्योंकि बड़वे भाटों की ख्यातें और दन्तकथाएं पुरातत्व पर बहुत ही धुंधला प्रकाश डालतीं, और जो कुछ कहा भी तो विशेषतः अशुद्ध और कपोलकल्पित होता है। उदाहरण में राज प्रशस्ति आदि में दी हुई प्राचीन वंशावलियों का देख लीजिए कि उस समय के इतिहासवेत्ताओं को प्राचीन वृत्त कहां तक ज्ञात थे। हां महाराणा कुम्भाजी के शिलालेखों में वंशावली आदि वृत्त कुछ शोध के साथ लिखे गये हैं। कहते हैं कि शाहंशाह अकबर को इतिहास विद्या के साथ पूरा प्रेम था, और उसकी आज्ञानुसार उसके प्रधान मन्त्री अबुलफ़ज़ल ने राजपूत वंशों का हाल लिखना आरम्भ कर प्रत्येक राजवंशी राजा को अपने वंश परम्परा का इतिहास उपस्थित करने को कहा। राजा महाराजा तो उसको बिल्कुल भूले हुए थे, उन्होंने अपने अपने बड़वे व चारण भाटों को ताकीद की कि हमारी ख्यातें उत्पत्ति से आज तक की लिखवाओ, परन्तु जब वे स्वयं ही अनजान थे तो बतलाते क्या। उन्होंने कुछ तो वंश परम्परागत दन्तकथाओं, जनश्रुतियों, और क़िस्से कहानियों के आधार पर और विशेषतः कल्पित बातें लिखकर दे दी गईं। आईन अकबरी में दी हुई वंशावलियां भी रद्दी सी ही हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में कई विद्वानों के प्रशंसनीय उद्योग और परिश्रम से प्राचीन शिलालेख, दानपत्र, सिक्कों आदि की खोज होने लगी, प्राचीन लिपियां पढ़ी गईं, तब भारत का प्राचीन इतिहास कुछ अंधकार में से निकल कर प्रकाश में आया, जिससे स्पष्ट है कि बड़वे भाटों की दी हुई वंशावलियां और कथाकलाप विश्वास योग्य नहीं हैं।

हम निश्चय रूप से नहीं कहसके कि बापा के विषय में दी हुई ये कहानियां कहां तक सत्य हैं, और गुहिलवंश का मूल पुरुष गुहदत्त, जिसके नाम पर वंश विख्यात हुआ वास्तव में कहां का निवासी था और किस समय में हुआ। परन्तु आगरे के पास गुहिल नामांकित दो सहस्र सिक्के मिलने और उसके वंशज बापा का सुवर्ण का सिक्का उपलब्ध होने व कतिपय प्राचीन शिलालेखों और वंश परम्परागत ख्यातों के आधार पर यह अनुमान किया जासकता है कि नागदा में राजधानी स्थापन करने के पूर्व भी गुहिलवंशी प्रतापी और समृद्धिशाली नरेशों की गिनती में हों और देश के एक बड़े विभाग पर शासन करते हों। इस विषय में मैंने अपना मत अपने बनाये हुए 'राजस्थान रत्नाकर' के तरंग दो में गुहिल वंश के इतिहास में कुछ विस्तार के साथ लिखा है, तथा नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग १,

कवित्त रावल खुमांण (बापाके पुत्र) का।

विने लक्ख पायक्क, लक्खमत्ता तोखारह,

सहस एक छत्र पत्त, हयगय मह दरबारह।

अंक ३ में रायबहादुर पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा ने बापा रावल के सोने के सिक्के पर जो निबन्ध लिखा है उसके पढ़ने से पाठकों को बहुत कुछ सही हाल जान पड़ेगा।

रावल शब्द राजकुल का प्राकृत रूप है और गुहिल वंशी नरेशों के नाम के साथ यह उपाधि ग्यारवीं शताब्दी के पीछे जुड़ी हुई मालूम होती है। प्राचीन लेखों में उनको सूर्यवंशी या रघुवंशी नरपति नृप या नरनाथादि उपाधियों से विभूषित किया है।

नीचे प्राचीन शिलालेखादि के आधार पर मेदपाट के गुहिलोत नरेशों की शुद्ध वंशावली दीजाती है:—

(१) गुहदत्त-इसके वंशज गुहिल गुहिलोत या गहलोत कहलाये।

(२) भोज (३) महेन्द्र (४) नाग, शायद नागहृद या नागदा इसीने बसाकर राजधानी बनाई हो। (५) शील या शीलादित्य इसका एक लेख सं० ७०३ वि० का, और एक तांबे का सिक्का भी मिला है जिसका संवत् शायद (७१२) हो। (६) अपराजित, इसका सं० ७१८ वि० का लेख मिला है।

(७) महेन्द्र दूसरा (८) काल भोज (बापा रावल इसी का विरुद् हो)

(९) खुमाण या खुंमाण—सं० ८१० वि०

(१०) मत्तट (११) भर्तृभट (१२) सिंहजी (१३) खुमांण दूसरा।

(१४) महायक (१५) खुमांण तीसरा (१६) भर्तृभट दूसरा. सं० १००० वि०

(१७) अल्लट—आघाटपुर या आहाड़ में राजधानी स्थापन की। सं० १०१० वि०

(१८) नरवाहन-सं० १०२८ वि० (१९) शालिवाहन।

(२०) शक्तिकुमार सं० १०३४ वि०। (२१) अम्बाप्रसाद (२२) शुचिवर्म्म (२३) नरवर्म्म (२४) कीर्त्तिवर्म (२५) योगराज (२६) बैरट (२७) हंसपाल (२८) बैरिसिंह (२९) विजयसिंह, सं० ११६४-११७७ वि० (३०) अरिसिंह (३१) चौंडसिंह (३२) विक्रमसिंह (३३) रणसिंह।

यहां तक मेवाड़ के स्वामी राजा या नृप कहलाये। यहां से दो शाखें फटीं, जिनमें से बड़ी शाखा वाले चित्तोड़ के स्वामी रहे और रावल कहलाए और छोटी शाखा वाले राणा उपाधिके साथ सीसोदे की जागीर पाए।

(३४) क्षेमसिंह (३५) सामन्तसिंह-जालोर के चहुवाण राव कीतू ने इसका राज छीना जब बागड़ में जाकर डूंगरपुर का राज्य स्थापन किया।

(३६) कुमारसिंह-खोया हुआ मेवाड़ का राज पीछा लिया।

(३७) मथनसिंह या महणसिंह (३८) पद्मसिंह।

(३९) जैत्रसिंह—सं० १२७०-१३०९ वि०। (४०) तेजसिंह सं० १३१७-२४ वि०।

खड़े सेन खरहड़ु, धुण लीधी धर सारह,
पमार दल पहट्ट, दीघ प्रसणां पारह।
पचास लाख मालवपती, मेवाड़े सोह गांजियो।
खूमांण राव वादै तणै, सिद्धराव सड़ भांजियो[1] ॥

कवित्त रावल आलू (महेंद्र के पुत्र ?) का।

तीन लक्ख तोखार, सबलो तीन तंयासी,
पांच लक्ख पायक्क, करै ओळग मेवासी।
आहोर नैर धर नरेश, माल मांडव डभावै,
घर बैठा डरहूंत, भेट गुज्जरह पठावै।
आठ ही पोहर आलू भये, नयण नींद कोय न करै,
गहलोत राजा दल चालतां, अवर राय ओझक मरै ॥

राव आलू (अल्लट) का बनाया हुआ गढ़ आहोर जो उदयपुर से दस कोस भालों की सादड़ी के पास है। उस आहोर वालों की वंशावली—रावल आलू, सीहो, शक्तिकुमार, शालिवाहन, नरवाहन, अम्बोपसाव (अम्बाप्रसाद), कीरतब्रह्म, नरदेव, उत्तम, करणादत्त, भाडू, गाजड़, हंस, जोगराज, वैरड, वैरसी, श्रीपुञ्ज, करण रावल। करण के दो बेटे हुए। राहप को चित्तोड़ का राज व राणा पद दिया, माहप को रावल पद के साथ वागड़ का राज दिया[2]।

---

(४१) समरसिंह—सं० १३३०-५८ वि०।
(४२) रत्नसिंह-सं० १३६० वि० में दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तोड़ लिया, फिर सीसोदे की राणा शाखा वाले चित्तोड़ के स्वामी हुए।

(१) यह कवित्त पीछे का बना हुआ है, क्योंकि रावल खुमांण के समय में सिद्धराज कहां से आया। वह तो खुमांण से कई सौ वर्ष पीछे गुजरात का राजा हुआ था। (सं० ११४९)।

(२) राणा शाखा की सीसोदे की वंशावली—
(१) राणाराहप (२) नरपति (३) दिनकर्ण (४) जसकर्ण (५) नागपाल (६) पूर्णपाल (७) पृथ्वीपाल (८) भुवनसिंह (९) भीमसिंह (१०) जयसिंह (११) लक्ष्मसिंह, अलाउद्दीन खिलजी के हमले के समय रावल रत्नसिंह की सहायता को आये। रत्नसिंह के वीर गति प्राप्त होने पीछे चित्तोड़ की गद्दी के लिये लड़कर अपने ७ पुत्रों सहित काम आये। (१२) राणा अरिसिंह, लक्ष्मसिंह का पुत्र, पिता के मारे जाने पर, दुश्मन के मुकाबले

रावल कर्ण के दो पुत्र थे, माहप और राहप। अपने ज्येष्ठ कुँवर माहप को सेना साथ देकर रावल ने मेड़ते के राणा को विजय करने के वास्ते भेजा। गर्मी का मौसम था, कुँवर जाकर पर्वतों में कहीं शीतल छाया और झरने देखकर ठहर गया और साथ के सब उमरावों को यह कहकर अपने अपने घर जाने की विदा दी कि अभी गर्म ऋतु है सो एक मास पीछे थोड़ी वर्षा होने पर मेड़ते पर चढ़ाई करेंगे। राणा कर्ण इधर बाट निहार

में मारे गये। (१३) महाराणा हमीरसिंह—सं० १३८३ वि० के लगभग, मुसलमानों से चित्तोड़ छीन लिया। देहान्त सं० १४२१।

(१४) महाराणा खेत्रसिंह सं० १४२१–३९ वि०।

(१५) ,, लखसिंह या लाखाजी इनके (देहान्त का संवत् निश्चित नहीं परन्तु सं० १४६८ वि० के पीछे तक भी विद्यमान होना पाया जाता है)।

(१६) ,, मोकल—देहांत सं० १४९० वि०।

(१७) ,, कुम्भकर्ण—१४९०–१५२५ वि०।

(१८) ,, रायमल्ल—सं० १५३०–१५६५ वि० (५ वर्ष कुंभाजी के बड़े पुत्र उदयकर्ण ने राज्य किया)

(१९) ,, संग्रामसिंह या सांगाजी—सं० १५६५–८४ वि०।

(२०) ,, रत्नसिंह—सं० १५८४—८८ वि०।

(२१) ,, विक्रमादित्य—सं० १५८८—९४ वि०।

(२२) ,, उदयसिंह—सं० १५९४—१६२८ वि०।

(२३) ,, प्रतापसिंह—सं० १६२८—५३ वि०।

(२४) ,, अमरसिंह—सं० १६५३—७६ वि०।

(२५) ,, कर्णसिंह—सं० १६७६—८४ वि०।

(२६) ,, जगतसिंह—सं० १६८४—१७०९ वि०।

(२७) महाराणा राजसिंह—सं० १७०९–३७। नैणसी ने यहीं तक वंशावली दी है, हम आगे भी विद्यमान महाराणा साहब तक की वंशावली यहीं लिख देते हैं ताकि पाठक एक ही स्थान पर उसे पूर्णरूप में देख सकें।

(२८) महाराणा जयसिंह—सं० १७३७—५५ वि०।

(२९) ,, अमरसिंह दूसरे—१७५५—६७ वि०।

(३०) ,, संग्रामसिंह दूसरे—१७६७—९० वि०।

(३१) ,, जगतसिंह दूसरे—१७९०—१८०८ वि०।

(३२) ,, प्रतापसिंह दूसरे—१८०८—१८१० वि०।

(३३) ,, राजसिंह ,, —१८१०—१८१७ वि०।

(३४) ,, अरिसिंह (अरसीजी) दूसरे—१८१७—२९ वि०।

रहा था कि इतने दिन हुए कुँवर की तर्फ से कुछ समाचार तक नहीं आये इस का क्या कारण है ? कुँवर माहप पाटवी और प्रीतिपात्र सुहागण राणी का पुत्र था इसलिये वास्तविक वृत्तान्त जानते हुए भी किसी प्रधान, खवास या पासवान ने यह भेद रावल पर प्रकट न किया । रावल बार बार आतुर हो कहने लगा कि कुँवर की खबर नहीं आई । तब किसी ने निवेदन किया कि कुँवर तो गर्म ऋतु होने के कारण मेड़ते नहीं गया, वर्षा होने पर जावेगा, साथ के सर्दारों को भी घर जाने की छुट्टी दे दी है, अतः आपके पास पत्र कहां से आवे । यह सुनकर रावल बहुत दुःखी हुआ और मन ही मन जान लिया कि माहप राज्य करने के योग्य नहीं है । फिर उसने दूसरी सेना अपने छोटे पुत्र राहप को दे मेड़ते भेजा । राहप तत्काल चढ़ धायर, शत्रु को जा दबाया और विजय का डंका बजाता मेड़ते के राणा को बंधुआ बना अपने पिता के सन्मुख लाया । रावल करण राहप पर बहुत प्रसन्न हुआ । मेड़ते के राणा की राणा पदवी राहप को दी और उसे अपना पाटवी बनाया । माहप को रावलाई देकर डूंगरपुर बांसवाड़े का प्रदेश जागीर में दिया, जहां उसकी सन्तान अबतक राज करती है[1] । राहप के वंशज चित्तोड़ के स्वामी हैं ।

कवित्त राव बैरड (बैरट) जोगारो (जोगराज का पुत्र) ।

गुज्जर वैंनह नमै, नमै वहं डाहल रायह ।
डाहालू सव विमित, लीध सैंभर वैंचायह ॥

---

(३५) ,, हमीरसिंह—१८२६—३४ वि० ।
(३६) ,, भीमसिंह—१८३४—८५ वि० ।
(३७) ,, जवानसिंह—१८८५—९५ वि० ।
(३८) ,, सर्दारसिंह—१८९५—९९ वि० ।
(३९) ,, स्वरूपसिंह—१८९९—१९१८ वि० ।
(४०) ,, शम्भूसिंह—१९१८—१९३१ वि०
(४१) ,, सज्जनसिंह—१९३१—१९४१ वि० ।

विद्यमान महाराणा साहिब श्री सर फतहसिंहजी बहादुर, महाराज कुमार श्री सर भूपालसिंहजी बहादुर ।

(१)—विक्रम की तेरवीं शताब्दी में रावल सामन्तसिंह से डूंगरपुर की शाखा चली ।

बारहसत पंचास, गुड़ै गैंवर गल गंजै।
लक्ख एक तोखार, ठिल्ल अरियण घड़ भंजै॥
पाताल सेस पड़िहारियो, दूसरवे राव डंडवै।
बांकड़ो राव वैरड़ बसुह, सुरास हेक मेवाड़वै॥

राणा राहप, राणा दिनकर, राणा जसकर (जसकर्ण), राणा नागपाल।

दोहा—नागपाल रायांसुगुर, जिण भंजे खुरसाण।
चक्रवत सो चेला किया, हेम सेत लग आण॥

राणा पुनपाल, राणा प्रथम (पृथ्वीपाल), राणा भूणगसी (भुवनसिंह), राणा जयसी, राणा गढ़ मण्डलीक लखमसी, राणा अरसी, राणा हमीर, राणाखेता, राणा लाखा, राणा मोकल, राणा कुम्भा बावन विसन (विष्णु) का अवतार, राणा रायमल, राणा सांगा, राणा उदयसिंह[1], राणा प्रताप, राणा अमरसिंह, राणा करण, राणा जगतसिंह, राणा राजसिंह।

रत्नसी अजयसी का, भड़ लखमसी का भाई, पद्मणी के मामले में अलावदी (अलाउद्दीन) से लड़कर काम आया। (रत्नसिंह, अजयसी का पुत्र नहीं किन्तु महारावल समरसिंह का पुत्र था जो उनके पीछे चित्तोड़ की गद्दी पर बैठा था)। एकबार तो बादशाह ने चित्तोड़ से कूच कर दिया था, परन्तु रत्नसी लखमसी ने पुर के डेरों से पीछा बुलाया। लखमसी के बारह बेटों ने गढ़ से उतर कर बारी बारी सुलतान के साथ युद्ध किया तेरवें दिन जौहर हुआ, राणा लखमसी, रत्नसी व करणसिंह गढ़ से उतर कर शत्रु के साथ युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। लखमसी का एक पुत्र अनतसी जालौर व्याहा था वहां कान्हड़देव (चहुवाण) के साथ (सुलतान अलाउद्दीन खिलजी की सेना के मुकाबले में) मारा गया। जहां अनतसी काम आया वह स्थान अनतडूंगरी के नाम से प्रसिद्ध है[2]।

---

(१) नैणसी ने राणा रत्नसिंह और उनके भाई राणा विक्रमादित्य के नाम यहां नहीं दिये हैं जो राणा सांगाजी के पीछे क्रमवार चित्तोड़ की गद्दी पर बैठे थे।

(२) एक प्राचीन रूपक में लखमसिंह के पुत्रों के नाम ये दिये हैं—

प्रथम कुंवर हरिसिंह, सिंह जिम समहर लग्गो,
नरसिंघ जिम नरसिंघ, बड़ा दल मांहिं विलग्गो।
अनतसीह बड़ कटक, अनत भाग विच पैसे,
अभयसिंह अरविद्ध, कटक दळिया चित वैसे।

राणा अरसी भी चित्तोड़ के शाके में मारा गया उसके पुत्र राणा हमीर ने ६४ वर्ष, ७ महीने १ दिन चित्तोड़ पर राज किया। वंश रक्षा के हेतु अजयसी गढ़ के बाहर भेज दिया गया था, वह चित्तोड़ का राणा हुआ। एक अभयसी पिता के साथ मरा जिसके वंशज कुम्भावत। कुक्कड़ भाकड़ काम आये, ओभड़, पेथड़, जिसके वंश के भाखरोत। इतने राणा चित्तोड़ पाट बैठे-राहप राणा करण रावल का पुत्र, दहूराणो, नरू राणो, हरसू राणो, जसकर्ण, नागपाल, पुनपाल, पेथड़ (पृथ्वीपाल), भूणसी (भुवनसिंह), भीमसिंह, अजयसिंह, अड़लखमसी जो चित्तोड़ पर बारह बेटों सहित युद्ध में काम आया, अरसा। हमीर अरसी का पुत्र, माता का नाम देवी सोनगिरी, कई दिन तक खमणोर के पास ऊनवा गांव में अपने मामा के यहां रहा था[१]।

राणा खेतसी या क्षेत्रसिंह[२]—एक बार चित्तोड़ का सौदा बारहट बारू बूंदी गया था, तब लालसिंह (हाड़ा जिसकी कन्या राणा खेतसी को ब्याही थी) ने बात कहते हुए दीवाण (राणा) के लिये कुछ अपशब्द कहे, जिससे बारू पेट में कटार मारकर मर गया। कोई कहते हैं कि कमल पूजा की (मस्तक काटा)। हाड़ा सीसोदियों में वैर पड़ा, बहुत दिनों तक शत्रुता चलती रही और उसकी आग खूब भड़की, परन्तु सीसोदिये प्रबल और हाड़ा निर्बल थे अतएव

समहरी राण सोकल सहस, समरसिंह कुक्कड़ बसी,
आवियो काम मक्कड़ सहित, गढ़ मण्डलीक लखमसी॥

(१) ये चित्तोड़ के राणा नहीं, परन्तु सीसोदे की शाखा के सामन्त थे। नैणसी ने इनकी वंशावली पहले भी कुछ अन्तर के साथ दी है। शुद्ध वंशावली के वास्ते देखो नोट पृष्ठ १८-१६-२०

(२) राणा खेतसी ने दिल्ली के नगर लूटे, ईडर के राव रणमल को क़ैद कर चित्तोड़ लाये और मालवे के सुलतान अमीशाह (दिलावरखां गोरी का पहला नाम) को बाकरोल (हमीरगढ़ का पुराना नाम) के मुक़ाम युद्ध में पराजित किया था। अमीशाह के युद्धका एक पुराना रूपक मुझे एक सेवक के पास से मिला है:—

जो दळ पन्च जोजन, माण सेलाण पड़न्तो,
जो दळ नदी निझरण, पूर चण मांह पिवंतो।
जो दळ रायां मण्डल, गयो गाहन्तो गिरवर,
जु दळ तणी रज खेह, उडै छायो रव अम्बर।
एतलो कटक अमीशाह को, खेतल भंजे खड्ग बल,
अड्वेग वळन्तो दीठ में, रहस तरोवर एक तल॥

उन्होंने सीसोदियों के बारह सर्दारों को अपनी बेटियां व्याह कर बूंदी, मांडलगढ़ के बीच के २४ ग्राम दहेज में दिये—जीलणी, धनवाड़ा, बंका बाजणा, खिणीया, भीलड़िया आदि (ख्यात में इतने ही नाम दिये हैं)। राणा खेतसी के पुत्र—लाखा, भाखर के भाखरोत, भूचर के भूचरोत, सलखा के सलखणोत, महिपा, सिखरा के सिखरावत। चाचा पासवान का जिसकी सन्तान दक्षिण के भोंसले साहजी शिवा हैं[1]। मेरा खातण के पेट का।

राणा लाखा (लक्षसिंह)—मंडोर के राव चूंडाने अपनी राणी मोहिल (जाति की) के कहने से अपने पुत्र रिणमल (रणमल) को देश निकाला दिया तब अच्छे अच्छे राजपूत उसके साथ हो लिये और ५०० सवारों से रिणमल चित्तोड़ आया जहां राणा लाखा राज करता था और चूंडा उसका पाटवी कुंवर था। चित्तोड़ उस वक्त हिन्दुस्तान में बड़ा राजस्थान था, और छत्तीस ही वंश (राजपूतों के ३६ वंश प्रसिद्ध हैं) वहां चाकरी करते थे। रिणमल भी दीवाण का चाकर रहा। एक दिन राणा लाखा शिकार को निकला, कुंवर चूंडा भी साथ था, नगर के दर्वाज़े में घुसते हुए राणा ने देखा कि एक कुम्भार विवाह करके आ रहा है। दीवाण वहीं ठहर गये और कहा कुम्भार को आने दो। फिर उसे देख कर एक निःश्वास छोड़ा जिसको चूंडा ने ध्यान में रक्खा। जब आखेट कर पीछे महल पधारे, उमराव सब अपने अपने घर गये, तब दीवाण ने कुंवर को कहा कि बेटा तुम भी जाओ सुख करो। चूंडा ने हाथ जोड़ कर विनती की कि दर्वाज़े से निकलते समय दीवाण ने निःश्वास क्यों डाला? दीवाण बोले, बेटा इस विचार में मत पड़। चूंडा ने फिर निवेदन किया कि दीवाण इसका कारण फर्मावें तब ही तो मेरा जीवन सार्थक है (अर्थात् नहीं तो शरीर त्याग दूंगा)। तब दीवाण कहते हैं—चूंडा यों किसी राजपूत की बेटी व्याहली उसमें क्या, विवाह होना तो तब ही कहा जा सक्ता है जब अपने सगों की बेटी वरे[2]। चूंडा ने कहा

---

(१) कर्नल टॉड ने शिवाजी को राणा अजयसी के एक पुत्र सज्जनसिंह का वंशज लिखा है। (टॉड राजस्थान अंगरेज़ी 'ऑक्सफर्ड' संस्करण जिल्द १ पृष्ठ ३१४)।

(२) एक और भी ऐसी ही कथा थोड़े अन्तर के साथ प्रसिद्ध है। राव रणमल ने अपनी बहन का सम्बन्ध चूंडा के साथ करने को नारियल भेजे थे, परन्तु वह उस वक्त चित्तोड़ में नहीं था कहीं शिकार को गया हुआ था। राणा ने हंसी में कह दिया कि जब हम जवान थे तो हमारे लिये भी ऐसे ही सम्बन्ध आया करते थे, अब बूढ़े हुए हमें कौन

वहुत अच्छा। दूसरे दिन सब उमरावों (सामन्तों) को इकट्ठे कर पूछा, ठाकुरों! किसी के युवावस्था की कन्या है? उनमें से एक ने उत्तर दिया कि वड़ी कन्या रणमलजी की वहन है। चूंडा ने रणमल को कहा कि आप हमें गोठ देवें। उसने कहा कि वहुत खूब। फिर रणमल ने मदारिये के चालीस पचास बकरे मंगवाये, वहुत से गेहूं पिसवाये, नाना प्रकार के व्यंजन वनवाये और चूंडाजी को कहलाया कि गोठ तैयार है पधारो। (चूंडा भले २ सर्दारों सहित रणमलजी के डेरे पर गया) और सब ठाकुरों के सन्मुख उनसे कहा कि रणमलजी (अपनी वहन) दीवाणजी को परणा दो। रणमल ने उत्तर दिया कि दीवाण वृद्ध हैं, मैं अपनी वहन आपको व्याह दूंगा। चूंडा कहता है "रणमलजी! तुम हमारे वड़े सगे हो; हमसे सम्बन्ध जोड़ो!" वहुत हठ की परन्तु रणमल ने न माना, चूंडा ने भी अपनी टेक न छोड़ी, दो पहर इसी में वीत गये, तब चूंडाने पूछा कि अरे! इनके कोई विश्वासपात्र चारण ब्राह्मण भी है? उत्तर मिला कि खिड़िया चारण चानण (चंदन) है। उसको बुला कर कहा कि तूं अपने ठाकुर को समझा कि एक छोरू मर ही गया ऐसा जान लेना। चारण वोला कि दीवाण के चूंडा वेटा है; अव खाली (निरर्थक) वात करने से क्या लाभ, तुम्हारे कहने पर हम वाई का विवाह कर भी देवें और जो कभी उसके पुत्र हो जावे तो? चूंडा ने कहा कि जो बेटा हो गया तो चित्तोड़ का स्वामी वही होवेगा। चारण कहता है—"राज! (साहव) चित्तोड़ की साहिवी (राज्य) कौन छोड़ता है"। तव तो चूंडा ने शपथ खाई, (सचमुच चूंडा ने यहां देवव्रत भीष्म सा काम किया)। चारण ने रणमलजी को जाकर कहा आप क्या करते हैं, पुराने सगों से ही संवंध करना चाहिये,

---

नारियल भेजे। पिता के इन बचनों की भनक चूंडा के कानतक पहुंच गई और उसने वह सगपण करना स्वीकार नहीं किया तब राणा ने स्वयं नारियल झेल विवाह किया और पिता की आज्ञानुसार चूंडा ने अपना राज का हक़ छोड़ कर मोकल को दिया।

राणा लाखा ने गया तीर्थ में जाकर उसको यवनों के अत्याचार से बचाया, हिन्दुओं का कर छुड़ाया, और सं० १४७५ वि. के लगभग शरीर त्यागा हो। कई विद्वानों ने राणा लाखा का सं० १४५४ वि. (सन् १३९७ ई०) में देहांत लिखा है, परन्तु वह सही नहीं है क्योंकि राणा लाखा का एक लेख आवू पर अचलेश्वर के मंदिर के त्रिशूल पर सं० १४६८ वि० का, और दूसरा गोडवाड़ में कोट सोलंकियों के एक जैन मंदिर का लेख सं० १४७५ वि. का मिला है। राणा लाखा के अज्जा नामी पुत्र भी था जिसके बेटे सारंगदेव के वंशज कानोड़ के रावत सारंगदेवोत कहलाते हैं। एक पुत्र दूला था जिसके वंशज दूलावत राजपूत हैं।

नया तो किस काम का, दीवाण को कन्या व्याह दो! सारांश कि चारण ने बड़ी कठिनता से रणमल को राज़ी कर लिया। तुरन्त दीवाण के पास नारियल भिजवाये और उसी दिन दीवाण ने आकर विवाह किया और उनकी बड़ी खातिर की गई। तेरह मास पीछे मोकल पैदा हुआ, वह पांच वर्ष का था कि दीवाण का देवलोक वास होगया। राणियां सती होने को निकलीं, राठोड़ राणी हंसबाई ने भी सती होने की तैयारी की, तब चूंडा जाकर पांवों पड़ा और कहने लगा माताजी! यह क्या करती हो, आपको तो राजमाता का तिलक मिलेगा। राणी बोली "जहां चूंडा विद्यमान है वहां मेरे बेटे को राज कौन देगा"। चूंडा ने कहा, माता! राज मोकल का है, चूंडा तो उसका चाकर है; और तत्काल मोकल को बुलाकर अपने सिर की पाघ चूंडा ने उसके मस्तक पर धर दी और उसकी पाघ आप ने पहनली, छोटे भाई को मुजरा किया, तब तो दूसरे सब सामंतों ने भी मोकल को तसलीम (झुककर नमन करना) की। मोकल की माता ने चूंडा को आशीष देकर कहा "बेटा जैसा तूने किया वैसा दूसरा कौन कर सकता है, यह चित्तोड़ का राज मेरे पुत्र को तूने दिया है, और जो मैं सती हूं तो मेरा यही वचन है कि मेवाड़ की धरती तुम्हारे वंश में सदा बनी रहेगी"। राठोड़ राणी के ये वचन आजतक निभाये जाते हैं। चूंडा के वंशजों की अब तक वैसी ही खातिर होती है।

राणा लाखा के पुत्र—चूंडा, जिसके वंश के चूंडावत; मोकल; राघवदेव पितृ हुआ; ऊदा के ऊदावत; दूलाके दूलावत; गजसिंह के गजसिंहोत; और डूंगर व भांडा के भांडावत।

राणा मोकल—(मण्डोर के) राव चूंडा की बेटी हंसबाई के पेट का, जिसे राणा खेता के पासवानिये खातण के पुत्र चाचा व मेरा ने मारा। फिर वे (चाचा मेरा) पई के पहाड़ों में जा छिपे। राव रणमल ने पहाड़ को घेर कर उनको मारा। राणा मोकल के पुत्र—१ राणा कुम्भा, २ खींवा (खेमकर्ण) जिसकी संतान देवलिया प्रतापगढ़ में राज करती है, ३ सूआ के सूआवत, ४ (सत्ता के पुत्र) कीता के कीतावत, ५ अडू के अडूओत, ६ गडू के गडूओत और ७ बीरम।

राव रणमल ने मण्डोर जीतकर अपने कुंवर जोधा को दी और आप नागोर आ रहा[1]। एक दिन वह कहने लगा, "ठाकुरों! बहुत दिन हुए चित्तोड़ से कोई

(१) राव चूंडा राठोड़ ने मंडोर का राज अपनी राणी मोहिल के, जो उसकी प्रिया थी, कहने से अपने पुत्र कान्हा को देकर राव रणमल को बाहर भेज दिया। रणमल अपने पुत्र

समाचार नहीं आये इसका क्या कारण है"। थोड़े ही दिन पीछे एक आदमी आया और राव को पत्र देकर कहा कि मोकल मारा गया। राव बोला। "हैं! मोकल मारा गया।" पत्र पढ़वाया, जलांजलि दी, और चित्तोड़ जाने की ठानी। इकवीस पावण्डे भरे, और फिर ठहरकर बोला "भाई! मोकल का बैर लेने के

जोधा सहित चित्तोड़ में राणा लाखा के शरण आ रहा और राणा ने उसे ४० गांव जागीर में देकर अपने अव्वल दर्जे के उमरावों में दाख़िल किया। राणा मोकल की बाल्यावस्था में रणमल ने अपना अधिकार अवसर पाकर बढ़ाया और चूंडा को चित्तोड़ से अलग करवा कर आप स्वतन्त्रता के साथ राजकाज करने लगा। चूंडा मांडू (मालवा) के सुलतान दिलावरखां गोरी के पास चला गया और वहां सुलतान ने उसे अच्छी जागीर देकर बड़ी खातिर के साथ रक्खा। रणमल की बहन (मोकल की माता) की आंख खुली, भाई की नीयत में फर्क़ देख उसने चूंडा को पीछा गुप्त रीति से बुलाया। चूंडा ने आकर राव रणमल को मरवाया।

मंडोर पर राव कान्हा ने ५ साल राज किया, उसके पीछे उसका भाई सत्ता गद्दी पर बैठा। वह शराब बहुत पीता था। राज का काम उसका भाई रणधीर करता था। सत्ता के पुत्र नरबद और रणधीर में अनबन होजाने से रणधीर चित्तोड़ आकर राव रणमल को राणा की फौज समेत मंडोर लेगया। रणमल ने नरबद को युद्ध में पराजित कर मंडोर पर अधिकार किया और नरबद अपने पिता सहित राणा मोकल की शरण में आरहा।

मोकलजी ने गुजरात के सुलतान अहमदशाह से लड़ाइयां ली थीं। नागोर के हाकिम फीरोज़खां को पराजित कर उसके पुत्र मौदूद व मस्तीखां को मारे और बूंदी वालों से बंबावदा आदि छीन लिये थे। फीरोज़खां के साथ राणा मोकल के युद्ध का एक प्राचीन कवित्त भी मिला है—

"श्रीमोकल महाराण, हुए ईसर अवतारी।"
"जेण तणै सर गंग, आप सुरसरी पधारी॥"
"सबल शाह पीरोज, माण गाळ्यो धर मच्छर।"
"मरु मालव मेवात, अवरलीधी धर गुज्जर।"
"खगपत राण खेताहरै, श्रीलखपत नरपत्तसुअ।"
"नवखण्ड मांह दीठो न को, मोकल सम बड़ अवरभुअ।"

फीरोज़ गुजरात के पहले सुलतान मुज़फ्फरशाह का भतीजा था। नागोर उसके पिता शम्सखां की जागीर में था। महाराणा मोकल के साथ सं० १४७० वि० (सन् १४१३ ई०) के आसपास फीरोज़ की दो लड़ाइयां हुई थीं। पहली लड़ाई में महाराणा की हार हुई परन्तु दूसरे जावर के पास के युद्ध में फीरोज़ शिकस्त खाकर भागा था। गुजरात के सुलतान अहमदशाह के साथ भी सं० १४८६ वि० (सन् १४३३ ई०) में मोकलजी का युद्ध हुआ। तारीख़ फ़िरिश्ता व मिराते सिकन्दरी में भी इस युद्ध का वर्णन है।

पीछे और काम करूंगा, सीसोदियों की बेटियों को इस वैर में अब राव चूंडा (राठोड़) के भाई बेटों को परणाऊं तो मेरा नाम रणमल।" फिर वह सेना सजकर चित्तोड़ गया। सीसोदिये (चाचा मेरा आदि) यह समाचार सुनकर पई के पहाड़ों में जा छुपे और उन्होंने नाकेबन्दी कर ली। रणमल ने पहाड़ का घेरा डाला और ६ मास तक वहां पड़ा रहा, परन्तु पर्वत हाथ न आया। उन्हीं पहाड़ों में बसनेवाले किसी मेर को सीसोदियों ने निकाल दिया था, वह आकर रणमल से मिला और कहने लगा जो दीवाण का पर्वाना होजावे तो मैं आन मिलूं। रणमल ने पर्वाना कर दिया और ५०० शस्त्रबन्द सिपाही साथ लेकर मेर के साथ चलने को तय्यार हो गया। मेर बोला "आप एक मास और ठहरावें" रणमल ने पूछा क्यों! उसने उत्तर दिया कि "वहां मार्ग में एक नाहरी ब्याई है"। रणमल ने कहा, अरे! सिंहण का हमें भय नहीं, तू चल! फिर उस मीणे (मेर) को आगे कर चलने लगे। जब उस स्थान के निकट पहुंचे जहां नाहरी ने बच्चे दिये थे तो मीणा वहीं खड़ा रहगया और बोला कि "आगे नाहरी है।" रणमल ने अपने कुंवर अरड़कमल को कहा "बेटा जाकर बाघण को ललकार!" ललकार सुनते ही सिंहण लपककर आई, परंतु कुंवर ने कटार से उसका पेट चीरकर उसे वहीं ढेर कर दिया। मीणे ने उन्हें पर्वतों में लेजाकर चाचा मेरा के झोंपड़े के आगे जा खड़ा किया, कितनेक आदमी तो घर की छत पर चढ़े और रणमल महपा[1] के निवासस्थान को गया। रावकी यह प्रतिज्ञा थी कि जिस मकान में पति पत्नी दोनों हों उसके भीतर न जाना, अतएव बाहर ही से आवाज़ दी कि "महपा बाहर आ!" यह शब्द सुनते ही महपा तो स्त्री के वस्त्र पहनकर चुपके से निकल गया। रणमल ने फिर पुकारा "महपा बाहर निकल!" तब भीतर से एक डोमनी बोली-"राज! वे तो मेरे कपड़े पहन कर चले गये और मैं वस्त्रहीन यहां बैठी हूं"। रणमल पीछा फिरा और जाकर चाचा मेरा को मार दूसरे भी कई सीसोदियों का संहार किया और सूर्योदय होते उनके सिर काट कर उनकी एक चौकी बनाई और बर्छों का मंडप खड़ा किया। वहां चंवरी पर सीसोदियों की कन्याओं का राठोड़ों के साथ पाणिग्रहण कराया। इसीतरह

(१) महपा (महीपाल) श्रीनगर का (अजमेर ज़िलेमें) परमार था जो चाचा व मेरा से मिलगया था।

दिनभर विवाह होते रहे फिर मेवासा[1] तोड़ कर मीणों को दिया और अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण कर राव चित्तोड़ आया, वहां कुंभा को पाट बिठाया, कितने ही बलवाई सीसोदियों को दंड देकर देश से निकाल दिये और कुंभा के राज्य में शान्तिस्थापन कर दी जहां वह सुखपूर्वक शासन करने लगा।

राणा कुम्भा—रणमल ने सारे देश को अपने हस्तगत करलिया था, जिसको वह चाहता निकाल बाहर करता था। समय पाकर चाचा का पुत्र राणा कुम्भा से आन मिला, और महपा पंवार भी पहुंच गया और राणा के कान भरने लगा कि धरती राठोड़ों ने ली, देश के स्वामी वे हो गये। एक दिन राणा तो सोता था और एका चाचावत पगचम्पी कर रहा था, उस समय एका की आंख में से आंसू टपक कर राणा के पग पर पड़े, जिससे चौंककर राणा क्या देखता है कि एका रो रहा है। पूछा—क्यों रोता है? उत्तर दिया स्वामिन् धरती सीसोदियों से गई और राठोड़ों ने ली इस बात से मुझे महा दुःख होता है। राणा बोला तो क्या रणमल को मारेगा? एकाने उत्तर दिया कि "जो दीवाण के हाथ मेरी पीठ पर रहे तो उसे मारूंगा"। राणा ने कहा "अच्छा मार"। अब प्रति दिन इसी की सलाह होने लगी। एक दिन रणमल तलहटी आया, वहां उसके सब आदमी इकट्ठे हुए तब राव के डोमने पूछा कि क्या आजकल दीवाण का और आपका विचार किसी पर चूक करने का है? रणमल बोला हमारे तो किसी से चूक नहीं है। डोम कहता है—तब तो दीवाण आप ही पर चूक विचारते हैं, कुंवर जोधाजी को तलहटी में रखना! अब रणमल तो गढ़ पर रहता और उसके सब बेटे तलहटी में। एक दिन राणा ने कहा रावजी! आजकल जोधा नहीं दीखता सो कहां है? रणमल बोला—तलहटी है, घोड़ों को चराता है। राणा ने कहा उसे ऊपर बुलाओ! राव ने उत्तर दिया कि जो हुक्म, बुलाऊंगा, परन्तु जोधा को कहला भेजा कि हम बुलावें तो भी मत आना। एक दिन राणा, महपा पंवार और एका चाचावत ने मिल कर निश्चय कर लिया कि आज रणमल को मारना चाहिये। रात को कुंभा सोया परन्तु नींद नहीं आवे, बार बार महल के बाहर जाकर देखे और पीछा आवे। तब राणी ने पूछा "दीवाण आज क्या मामला है क्या किसी पर चूक है"? राणा ने कहा—हां! राणी ने अर्ज़ की कि हरामखोरों के कहने से

(१) मेवासा (मेव-वासा) मेव, मीणे आदि लोगों के निवास स्थानों को कहते हैं।

कहीं रणमल को मत मरवादेना। राणा ने उत्तर दिया कि हमने तो उसे मरवा दिया। राणी ने कहा कि आपने यह क्या किया, उसने तो आपका देश बसाया, आपके बाप का वैर लिया, आपको पाट बिठाया, आपके साथ बुराई क्या की? जिससे आपने उसे मरवाया। राणी के ऐसे वचन सुनकर दीवाण ने एक दासी को भेजी कि महपा को बुलाला, दासीने जाकर उसको कहा कि दीवाण ने जिस काम के वास्ते फर्माया उसे अभी मत करना, और दीवाण तुमको याद फर्माते हैं। महपाने सोचा कि जो रणमल जीता रह गया तो हम मरे, इसलिये दासी को मोतियों की माला देकर कहा कि तू जाकर पीछी अर्ज़ करदे कि जो काम फर्माया था वह करडाला। दासी ने आकर वही अर्ज़ की। इन्होंने जाकर जागृत अवस्था में लेटे हुए रणमल पर प्रहार किया। रावने एक राजपूत को तो सोते सोते ही कटार से मार गिराया, दूसरे का मस्तक लोटे की मार से तोड़ा, और तीसरे का काम लातों से तमाम किया। इस तरह तीन को मार कर रणमल मारा गया[1]। दासी ने महल पर चढ़ कर पुकारा "राठोड़ों तुम्हारा रणमल मारा गया है!" ये शब्द तलहटी में सुनाई दिये और जोधा, कांधल और दूसरे सब साथी निकल भागे। उनके पीछे फौज भेजी गई, लड़ाई हुई, जिसमें कई सर्दार बरड़ा चंद्रावत, शिवराज, पूना भाटी, ईंदा भीमा, वैरीसाल, बरजांग भीमावत और जोधा का काका भीम चूंडावत आदि मारे गये।

सीसोदिया राघोदेव लाखा के पुत्र की बात—

सीसोदिया राघोदेव लाखावत राणा कुम्भा की धरती में बिगाड़ करता था इसलिये राणाने उसे मारने का विचार किया। एक दिन राघोदेव दरबार में आया, उसके अंगरखे की बांह ढीली होने से हाथ पर उतर आई थी, भीतर पग धरते ही उसकी एक बांह राणाने और दूसरी राव रणमलने पकड़ली और दोनों बगल से कटार धूंसे गये। घाव खाते ही राघोदेव ने दांतों से पकड़ कर अपना

---

(१) कर्नल टॉड लिखता है कि राव चूंडा (लाखावत) ने रणमल का काम तमाम करवाया। वह एक दासी को लिये मस्त सोता हुआ था, दासी ने उसे पलंग से कसकर बांध दिया। घातक अचानक सिरपर आन खड़े हुए, तब पीठ पर बंधे हुए पलंग समेत रणमल किसी ढब से खड़ा हो गया और दो एक को मारकर अन्त में मारा गया।

कटार खींचा (परन्तु वार करने का वार न आया)। उन दोनों ने यह समझ कर, कि कटार काजू लगे हैं वह अब कुछ कर नहीं सकता गिरकर मरजावेगा, उसके हाथ छोड़ दिये। उसी अवस्था में वह जलेवखाने से निकलकर पोलों के बाहर पहुंचा था कि एक राजपूत ने झटका मार उसका सिर धड़से जुदा कर दिया, परन्तु मुण्ड के बिना ही उसका रुण्ड भागने लगा, लोग सारे हटगये, तब रुण्डने अपने सीसको उठा कर कमरबंद में बांधा और अपने घोड़े पर चढ़ घर की तरफ चलता हुआ। प्रभात होते चित्तोड़ से १७ कोस पड़ावली गांव में पहुंचा, तब किसी पनिहारी ने उसे देखकर कहा कि देखो कोई योद्धा बिना सिरके ही घोड़े पर चढ़ा चला आता है। वह स्त्री रजस्वला थी उसकी छाया पड़ते ही राघोदेव घोड़े पर से गिरगया और वहीं उसकी ५ सात पत्नियां (पड़ावली से आकर) सती हुई। वहां राघोदेव सीसोदिया आजतक पूजा जाता है।

साखी का गीत-" राय आंगण राणा कुंभकरण रूठै, हाथां ग्रहे हिंदवेराय।
काढी राघव भली कटारी, दांतां सरसी ऊपर डाय[1] "॥

चित्तोड़ में नापा सांखला राणा कुंभा के दरबार में राव जोधा की तरफ से रहता था उसने (गुप्तरीति से) जोधा को कहलाया कि अभी यहां आओ तो राव रणमल का वैर लेने का अच्छा अवसर है। राव जोधा चढ़ चला। मार्ग में रूण (रूणेचा) के टीकायत सांखला राणा की बेटी के साथ विवाह किया। जब

(१) यहां भी नैणसी का कथन पक्षपात से ख़ाली नहीं है। राघोदेव राव चूंडा (सीसोदिया) का भाई था, चूंडा जाते वक्त उसको महाराणा (कुंभा) की रक्षा के निमित्त चित्तोड़ में छोड़ गया था, क्योंकि राव रणमल के हतखंडे देखकर उसके मन में शंका उत्पन्न हो गई थी कि वह अवश्य राज्य दबाने का दांव खेलेगा। जब राव रणमल चाचा मेरा को मारकर सीसोदियों की जो कन्याएं उनके पास थीं उनको देलवाड़े में लेआया और उन्हें राठोड़ों के घरों में बिठाने लगा, तो राघोदेव ने, जो कटक जोड़ कर वहां पहुंच गया था, इसे पसंद न किया और उन सब बालाओं को अपने डेरे पर लेगया। राव रणमल इससे बहुत चिढ़ा, उस वक्त तो वह कुछ न कर सका, परन्तु उसी दिन से राघोदेव का शत्रु हो गया। चित्तोड़ आकर उसका काम तमाम कर देने का बिचार करने लगा। राणा पर तो उसका प्रभाव पूरा जमा ही हुआ था, दरबार में बुलाकर राणा से राघोदेव को सिरोपाव दिलवाया जिसमें के अंगरखे की दोनों बांहों के मुख राव (रणमल) ने सिलवा कर बंद करवा दिये थे। जब राघोदेव ने बांहों में हाथ डाले तो संकेतानुसार रणमल के दो राजपूतों ने उसपर दोनों तरफ से कटार के वार कर उसे वहीं मारडाला। राघोदेव की पितृ मानकर पूजा की जाती है।

राव जोधा के रवाना होने के समाचार राणा को पहुंचे तो उसने नापा को हुजूर में बुलाकर पूछा कि तेरे पास इन दिनों में रावजी की ओर से कोई पत्र भी आया है। पहले जब कभी राणा ऐसा प्रश्न करता तब तो नापा यही उत्तर देता था कि कोई विशेष बात नहीं सुनी है, परन्तु इस अवसर पर अर्ज़ की कि "दीवाण बात सत्य है, मुझे भी यही समाचार मिले हैं"। ऐसा सुनते ही दीवाणके चहरे का रंग बदल गया, सांखले को कहा कि अब क्या करना चाहिये? उसने निवेदन किया "दीवाण सलामत! राठोड़ों के वैर का मामला बड़ा विकट है और वैर भी राव रणमल का"। तब तो दीवाण बड़े भय में पड़ गये। नापा बोला कि यह सबल वैर धरती देने से मिटना संभव है, यह दी जावे। दीवाण को भी यह मत भाया, नापा डेरे पर आया और तुरन्त राव जोधा के पास दूत दौड़ाया और कहलाया कि यहां कुछ दम नहीं है आप शीघ्र आइए। रावजी की फौजें जहां तहां मेवाड़ में आन घुसीं और लगी देश को उजाड़ने। दीवाण को बड़ा शोच हुआ, नापा को कहा कि किसी प्रकार सन्धि हो जावे तो अच्छा है। नापा ने अर्ज़ की कि भले आदमी इसके लिये रावजी के पास भेजे जावें और वे बातचीत करें। राणा जी के प्रधान रावजी के पास गये और कहा कि जो होनहार था सो तो हो गया, यह देश तुम्हारा ही बसाया हुआ है, तुमही मारोगे तो रखने वाला कौन है? रावजी बोले कि यह तो सच है, परन्तु वैर बांधना सहल और छूटना कठिन है। राणाजी के प्रधानों ने कहा कि तो हमने भूमि दी, परन्तु रावजी के सर्दार बोले कि यह तो ठीक, तथापि कुछ होड़ लगाकर लड़ाई भी होनी चाहिये। दीवाण के भलेमानसों ने इसको स्वीकारा और जाकर दीवाण पर सारी बात विदित की। राणाजी प्रसन्न हुए, दोनों ओर से सेना सजकर आन उपस्थित हुई। रण खेत साफ किया गया, स्तम्भ रुपे, पूर्व में राव जोधा की और पश्चिम ओर राणा की सैन्य खड़ी हो गई। उस वक्त रावजी के प्रधानों ने विचारा, भूमि लीजाय तो अच्छा है, विविध प्रकार से स्वामि को समझाया कि पक्के वाचा वचनादि के साथ इस समय मंडोर का लेलेना ही उत्तम है, युद्ध में तो आपके सन्मुख ये क्या ठहर सकेंगे। राव जोधा भी इससे सहमत हो गया तब उसके सर्दारों ने कहा कि आज्ञा हो तो उभय पक्ष के दो योद्धाओं का द्वन्द युद्ध थाप देवें। एक सामन्त हमारा और एक आपका मैदान में आकर लड़े, जिसके सामन्त की जीत हो वही पक्ष विजयी समझा जावे। (इस द्विमुंही युक्ति से भी इतना तो अवश्य पाया जाता है कि मंडोर

पर राणा का अधिकार था और युद्ध में कुंभाजी पर विजय पाना सुलभ नहीं समझा गया था)। रावजी ! आप के ग्रह ऐसे प्रबल प्रतीत होते हैं कि आपही का सामन्त जीतेगा। दीवाण भी इससे सहमत कर लिये गये, दीवाण की तरफ से उनका बड़ा सामन्त विक्रमायत झाला, और रावजी की ओर से बीजा ऊदावत आया। विक्रम के पास ढाल थी और बीजा बिना ढाल के ही गया था। तब रावजी ने उसको कहा कि बीजा ! तू भी ढाल लेले ! परन्तु उसकी मर्दानगीने उस अस्त्र के वास्ते पीछे फिरना गवारा न किया, आगे साम्हने ही रावजी की सवारी का रथ खड़ा था उसका एक चक्र बीजा ने घोड़े पर चढ़े चढ़े ही निकाल कर ढाल के बदले हाथ में लेलिया और बढ़ कर विक्रम को ललकारा कि पहले तूं ही वार कर ! अपनी मृत्यु के भय से घबराये हुए विक्रम ने घाव किया, परन्तु बीजा ने फुर्ती से उसके हाथ को पहिये पर रोक लिया जिससे पहिया आधा कट गया। फिर बीजाने खड्ग उठाया, झाला उसको न रोक सका, भयभीत हो उल्टे पागड़े (रकाब) ही उतरता था कि इतने में ऊदावत का हाथ पड़ने से झाला कटकर दो टूक हो गया। उस अवसर पर नापा सांखला दीवाण के पास खड़ा था उसने अर्ज़ की कि "दीवाण सलामत ! खांडा एक ही धार से चलाया गया है, जो दशा आपके सामन्त की हुई वही आपकी होती, परन्तु अहोभाग्य कि आपने धरती देकर युद्ध को टाल दिया" इतना सुनना था कि रावजी के घोड़ों की बागें उठीं, दीवाण की सेना ने पग पीछे दिये, तब पिछले ठाकुरों ने बीच में आकर पुकारा कि "सर्दारों ? भागते क्या हो"। रावजी की फौजने दीवाण का देश लूटा और जोधाने मंडोर में आकर फिर जोधपुर बसाया[1]।

---

(१)—यह सब लेख कपोलकल्पित और पक्षपात से भरा हुआ है। जिस रणमल ने आकर महाराणा की शरण ली थी और महाराणा मोकल ही की सहायता से उसको मंडोर का राज मिला था, और उसके मारे जाने पर जोधा भयभीत हो भाग गया था, भला उसका भय महाराणा कुम्भा जैसे प्रतापी महाराजा पर ग़ालिब हो यह कौन मान सकता है। राव रणमल के मारे जाने पर जब जोधा भागा और राव चूंडा (लाखावत) ने जाकर मंडोर पर अधिकार कर लिया तो राव जोधा की भूआ सौभाग्यदेवी (महाराणा कुम्भा की माता) को अपने भतीजे की दशा देख दया आई और अपने पुत्र (महाराणा कुम्भा) को उसकी (राव जोधा की) सिफारिश की। महाराणा ने कहा कि जो मैं प्रत्यक्ष में मंडोर जोधा को देऊं तो चूंडा अप्रसन्न होगा, क्योंकि राव रणमल ने काका राघोदेव को मरवा डाला है, इस लिये आप राव जोधा को कहला दें कि वह मंडोर पर अधिकार कर-

चूंडावत सीसोदियों की शाखा—

सं० १७२२ पोष वदि ५ को खिड़िये (चारण) खींवराज ने लिखाई।

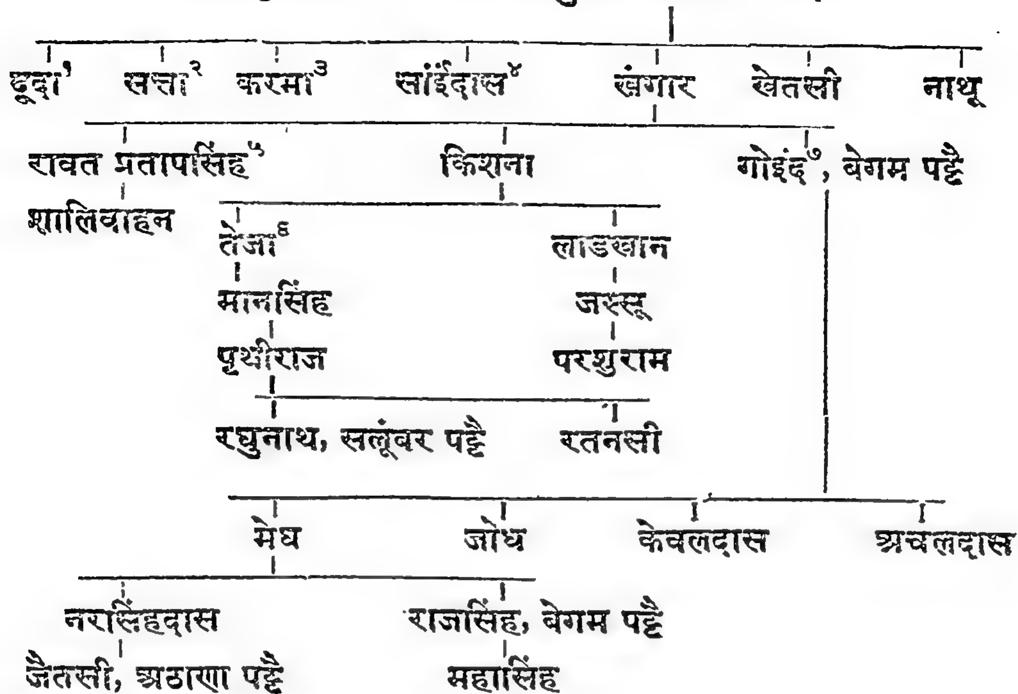
चूंडा लाखावत के पुत्र— १ कांधल, २ कुंतल, ३ मांजा, ४ तेजसी।

१ कांधल (चूंडावत का वंश)—कांधल के पुत्र १ रतनसी, २ सिंघ, ३ नंगा, ४ जग्गा, ५ सांगा।

देवे, मैं इसमें कुछ आपत्ति नहीं करूंगा। महाराणा की माता ने एक चारण के द्वारा यह समाचार जोधा के पास भेजे तदनुसार उसने चूंडा के बेटों (कुंता मांजल) को जो उस वक़्त मंडोर का शासन करते थे, मारकर मंडोर पर अधिकार कर लिया। बारह वर्ष तक मंडोर पर (कोई ७ वर्ष भी कहते हैं) सीसोदियों का झण्डा फहराता रहा था।

(१) चूंडावत शब्द से अभिप्राय "चूंडा का पुत्र" है। राजपूताने में प्रायःपुत्र या वंशज के लिये पिता (या वंशकर्त्ता) के नाम के अन्त में 'वत' जोड़ा जाता है जैसे 'शक्तावत' अर्थात् शक्ता का पुत्र (या वंशज)। नैणसी ने बहुधा ऐसा ही प्रयोग किया है अतः आगे जहां किसी नाम के अन्त में 'वत' लगा हो उसे उस नामवाले का पुत्र समझना चाहिये।

वंशवृक्ष नं० (१) कांधल के पुत्र रतनसी का वंश।



टिप्पण जो मूल टाइप में दिये हैं उनको नैणसी के लेख का भाषांतर ही समझना चाहिये—

(१, २, ३) हाडी करमेती के मामले में चित्तोड़ पर काम आए (युद्ध में मारेगए)।

(४) बेटा नहीं था, पीछे उदयसिंह (राणा) के पुत्र शक्तिसिंह को गोद लिया तो भी उत्तराधिकारी (सांईदास का) भाई खंगार ही हुआ।

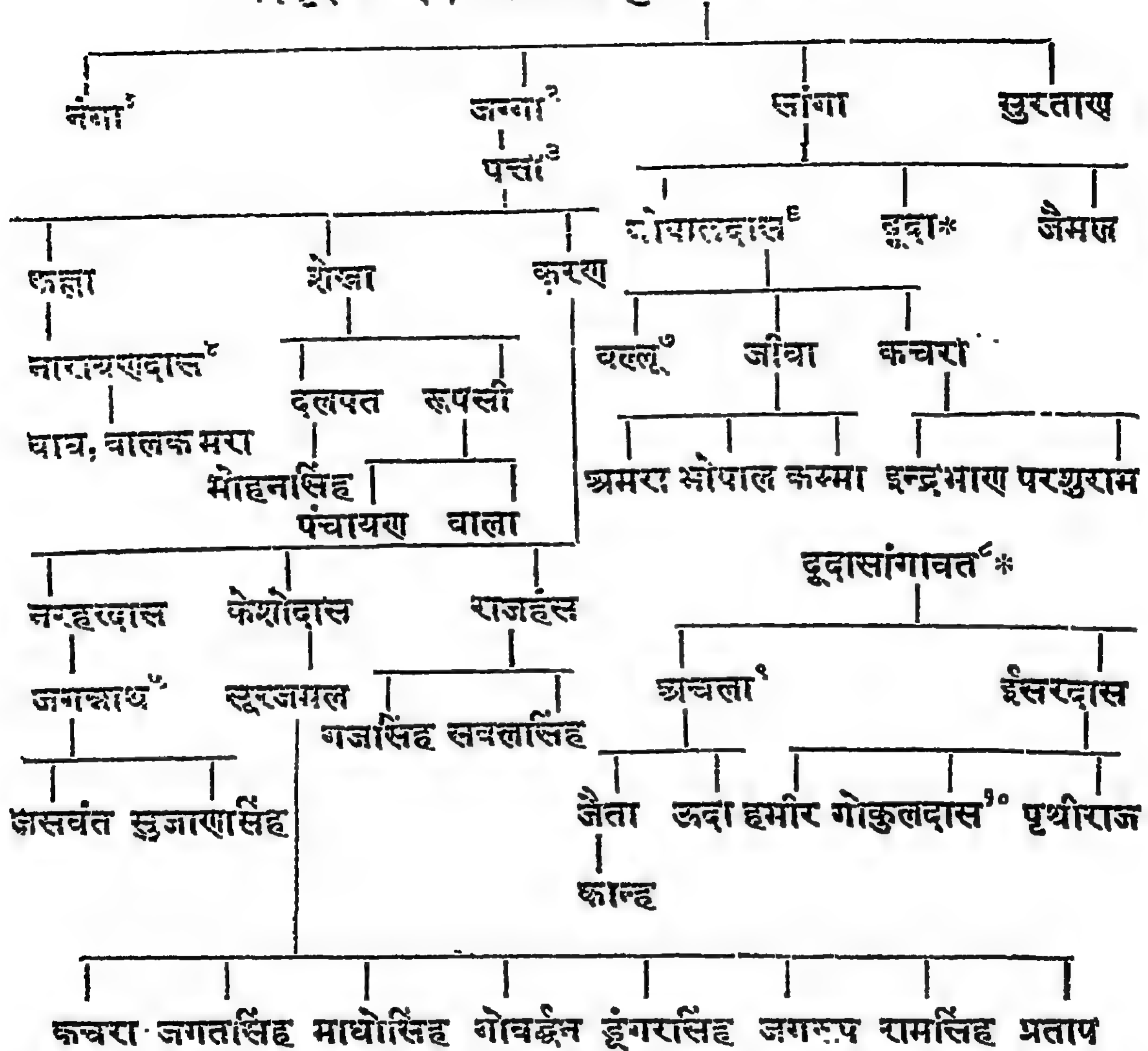
(५) बांसवाड़े काम आया।

(६) ऊंटाले काम आया (राणा अमरसिंह प्रथम के समय में)।

(७) बेगम की जागीर पाई, नानुवै वाघरेड़े काम आया।

खेतसी रतनसीहोत का पुत्र नाथू, नाथू का सहसमल और सहसमल का पुत्र देवीदास था। खेतसी ने सगरा वालीसा को मारा।

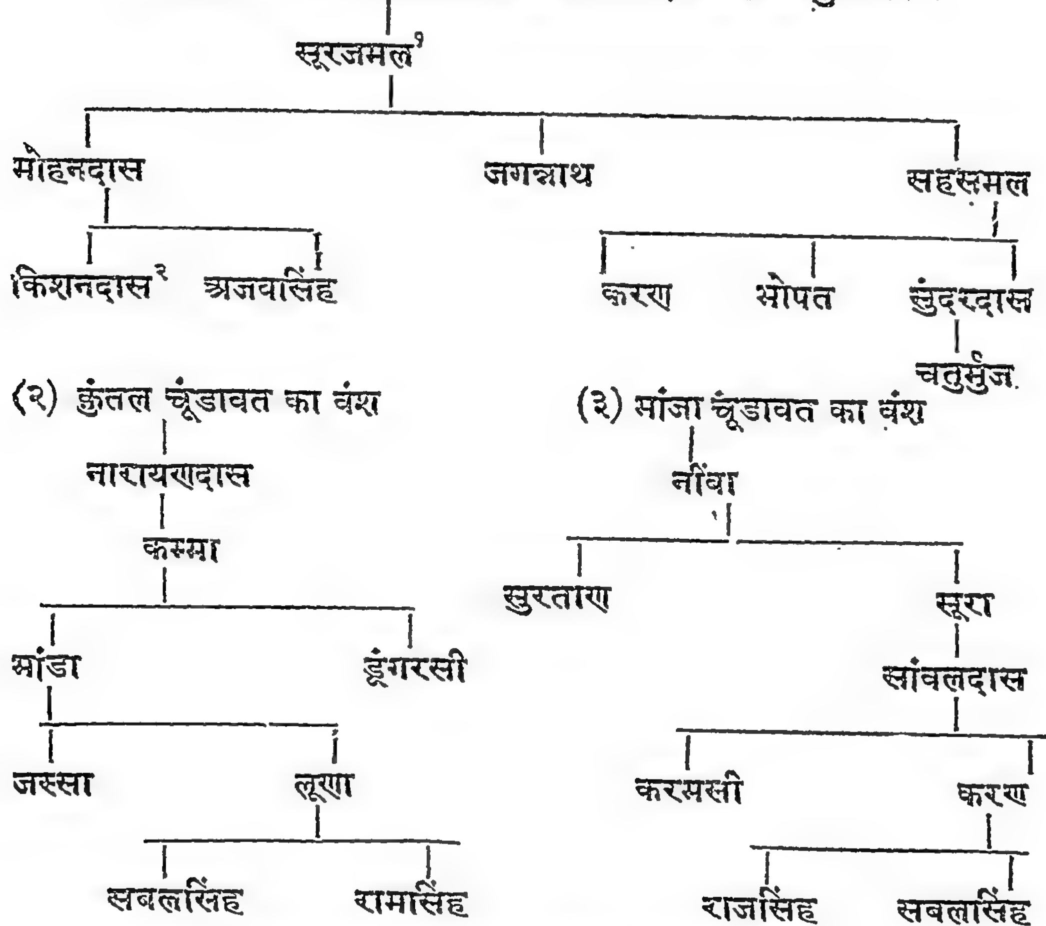
वंशवृक्ष नं० (२) सांवल के पुत्र सिंह का वंश।



(१) हाडी करमेती के मामले में चित्तोड़ पर खड्ग झाड़ता हुआ मारा गया। एक बालक पुत्र था वह जौहर की अग्नि में जल कर मरा। (२) महीनदी पर चहुवाण करमसी ने सांवलदास को मारा वहां काम आया। (३) सं० १६२४ (वि०) में चित्तोड़गढ़ पर (अकबर के शाके में) काम आया (इसके वंशज आमेट के रावत हैं)। (४) राणपुर के युद्ध में काम आया (राणा अमरसिंह प्रथम के समय)। (५) मानसिंह के गोद रहा। (६) बाकरोल के युद्ध में काम आया। (सांगा के पुत्र दूदा के वंशज देवगढ़ के रावत हैं)। (७) (राणा अमरसिंह के) आपत्काल में साथ था, मौत से मरा। (८) राणपुर के युद्ध में मारा गया। (९) मांडल काम आया। (१०) केलवा पट्टै, ४ लाख टकों की रेख।

जयमल सांगावत के बेटे—नारायणदास, पूरा, मानसिंह। नारायणदास के बेटे-गोइन्ददास और गोकुलदास। जयमल बखसी के पहाड़ों की लड़ाई में मारा गया (राणा अमरसिंह के) आपत्काल में । गोकुलदास को वसी का पर्गना जागीर में मिला, रेख टका तीन लाख।

वंशवृक्ष नं० (३) सुरताण (कांधल के बेटे) सिंह के पुत्र का ।



(४) तेजसी चूंडावत का बेटा रावत सांवलदास था।

---

(१) राणपुर की लड़ाई में मारा गया।

(२) (गांव) हडां जागीर में, रेख टके बीस हजार की।

खेतसी चूंडावत की बात—सिंघलवाटी के गांव जाखोरे में रत्नसिंह नाथावत नाम का एक राजपूत रहता था, उसके एक कन्या थी जिसकी सगाई उसके मामा भाना सोनगिरे की मारफत खेतसी (चूंडावत) के साथ हुई थी। पन्द्रह दिन का साहा थापा गया। रावत रत्नसिंह कांधलोत अपने पुत्र खेतसी से सन्तुष्ट नहीं था और न खेतसी के पास कुछ धन था, इसलिये जो ब्राह्मण नारियल लेकर आया उसको विदा में कुछसी न मिला। ब्राह्मण ने बेटी की माता को जाकर कहा कि वर के घर में तो चूहे एकादशी करते हैं। कन्या की माता कहने लगी कि यदि ऐसा है तो मैं अपनी बेटी को लेकर कूए में गिर पड़ूंगी परन्तु ऐसे भूखे घर में उसको कदापि न दूंगी। इसपर (उसी कन्या का सम्बन्ध) सूरजमल बालीसा के पुत्र सगरा के साथ कर वही पन्द्रह दिन के साहे थापे। बालीसे जान की तयारी करने लगे। इधर भाना ने राव रत्नसिंह को कहा कि विवाह का दिन निकट आगया है खेतसी को व्याहने भेजिये। राव बोला " वह खेतसी बैठा लेजाओ ! " भाना ने कहा कि चढ़ने को घोड़ा नहीं सो आपका घोड़ा दें। राव ने घोड़ा तो दिया परन्तु भाना को चिता दिया कि इसे तूं अपने पास रखना केवल तोरण-वन्दन के समय वर को सवार करा देना। चालीस जवान साथ लेकर व्याहने चले, घाटा पार कर राणा के गांव में डेरा दिया और तालाव के पास एक वापी पर गोठ के निमित्त बकरे वध किये। भाना और खेतसी दिशा गये थे, खेतसी शौच से निवृत्त हो वापी के पास वट-वृक्ष की डाल पकड़े खड़ा था कि पनिहारियां वहां पानी भरने को आईं, उनमें से एक ने कहा " यह बनड़ा (दुलहा) व्याहने को तो चला परन्तु इसके ऊपर एक दूसरा वर भी वहां आता है तो कन्या का विवाह इसके साथ होगा या उसके ?"। यह बात खेतसी ने सुनी और जब भाना आया तो उसे कहा कि "भानाजी बधाई देता हूं ! " भाना बोला कि अच्छी सी देना। कहा जिस दुलहन को हम व्याहने जाते हैं उसीके लिये दूसरा वर भी आता है। भाना ने पूछा कि यह किसने कहा तो खेता ने पनिहारी की ओर इशारा किया। भाना ने आवेश में आकर पनिहारी से कहा कि रांड तूं क्या बकती है, तो कहने लगीं कि इस गांव में कुम्भार नहीं है, वेह (व्याह में रखने की मटकियां) हमने घड़ी हैं, हमें निश्चय खबर है कि सगरा सूजावत आवेगा। भाना बोला मैं जाकर अपनी बहन से पूछता हूं कि यह क्या बात है। वह अश्वारोही हो गांव में आया। आगे ढोल बज रहा

था, न्योतिहार आते थे। भाना गया परन्तु उसके साथ किसीने बात तक न की। उसने अपने बहन व बहनोई को जाकर पूछा कि यह क्या मामला है? जान चूंडावतों की आई है। उन्होंनें उत्तर दिया कि हम चूंडावतों को बेटी न ब्याहेंगे। भाना कहता है "ठाकुरों! यह बात ठीक नहीं, मैं बीच में हूं, मुझे कटार खाकर मरना पड़ेगा।" कन्या का पिता कहने लगा भालाजी! तुम्हारी कटार कुन्द है मैंने अपनी कटार कल ही सुधराई है यह लो"! तब तो भाना बिना कुछ कहे सुने लौटकर खेतसी के पास आया और कहने लगा। भाई, फिर चलो, रोटी बाटी खाकर पीछे मुड़ें। तब खेतसी बोला, भानाजी! दो एक कोस तो इस इराकी पर मुझे भी चढ़ने दो, तोरण तो हाथ ही नहीं आया, फिर मुझे इस (घोड़े) पर चढ़ने का अवसर कब मिलेगा। भाना ने खेतसी का दिल विशेष दुखाना उचित न समझकर घोड़ा दे दिया। वह सवार हुआ, दो जलेबदार बाग थाम्हे चलने लगे। जब वे गांव के गोरमे (समीप) आये तो वहां कुछ स्त्रियां खड़ी हुई थीं, खेतसी बोला कि भानाजी! देखो यह कामनियां कहती हैं कि "यो बींद तो रोवतो जाय छै।" मुझे क्यों लज्जित करते हो? तब जलेबदारों ने बाग छोड़दी, इसने घोड़े के एड़ लगाई और दस बीस क़दम आगे जा यह कहते हुए बाग मोड़ी कि "ऐसा कौन है जो मेरी मांग ब्याहे" और घोड़े को सरपट फैंका। भाना हका बका रह गया, साथवालों को कहा कि तुम यहीं ठहरो मैं खेतसी को मना लाता हूं। पीछे पीछे भागता हुआ भाना पुकारता जाता है परन्तु सुने कौन? तब तो भाना बोला कि खेतसी तूं तो चला जाता है परन्तु मुझे मरना पड़ेगा। खेता ठहरा और कहने लगा कि आओ मिललेवें और साथ साथ चलें। सूर्यास्त होते एक सरगरे (तुरही बजाने वाला डोम) को भी च्यार फदिये (चांदी का छोटा सिका) देकर आगे करलिया। बालीसे ५०० सवारों से ब्याहने आये, तोरण पर पहुंचे, समेला हुआ, तीन प्याले मदिरा के पिए। खेतसी और भाना भी तोरण तले जा खड़े हुए, वर-बेहड़ा सन्मुख आया तब वर के लिये "खमा" का शब्द उच्चारण कियागया। खेतसी बोला "खमामो खेतसी नूं" (खमा मुझ खेतसी को) और साथही तलवार म्यान से खींचकर एकही हाथ में बालीसे वर का सिर तन से जुदा कर दिया और चल खड़ा हुआ। बालीसों ने पीछा किया, भाना हाथ आया उसको मार गिराया और खेतसी अछूत निकल गया। बालीसों ने जाना कि खेतसी को मार लिया है परन्तु जब ध्यानपूर्वक देखा तो

सब माना का था। पीछे फिर और कन्या के पिता को फटकारा कि हमें पहले क्यों न बताया कि यह सांग झगड़े की है, अब दुलहन को सगरा के साथ सती करो। कन्या कहने लगी कि " मेरा तो पति खेतसी है यदि वह मरता तो मैं सती होती, सगरा को घसीटकर फेंक दो ! मेरा उसके साथ क्या सम्बन्ध ? " वालीसे लड़ने मारने को तयार हुए । लड़की ने देखा कि माता पिता पर आपत्ति आवेगी और एक मेरे जीव के वास्ते कई आदमियों का कट्टा हो जावेगा, तब वह सगरा के साथ जलमरी और झगड़ा मिटगया ।

हाल राणा कुम्भा के चित्त भ्रम होने की–कोई साहूकार समुद्र यात्रा करने गया था । उसने एक मृतक शरीर देखा और वह बात पीछी राणा को आकर कही, तब राणा बहका हुआ सा हो गया और अण्डवण्ड बातें करने लगा । उन दिनों वह कुम्भलमेरु पर रहता था, जहां मामाकुण्ड नामका एक स्थान है और मामा नामही का एक वट वृक्ष । उसके नीचे राणा अकेला बैठा हुआ था कि उसके पाटवी पुत्र ऊदा ने वहां आकर कटार से अपने पिता का काम तमाम कर दिया और आप राजसिंहासन पर बैठा । इस घटना से राज के सब बड़े बड़े उमराव अप्रसन्न होकर अपने अपने घर बैठ गये, दर्बार में न जावें और अपने भाई बेटों को चाकरी में भेज देवें । राणा कुम्भा का छोटा कुंवर रायमल उस वक्त ईडर में था, उसको सर्दारों ने गुप्त रीति से बुलाया और ऊदा के पास रहनेवाले अपने भाई बेटों को सूचना दी कि तुम किसी ढब से शिकार के मिस ऊदा को बाहर ले निकलो । ऐसा ही हुआ, ऊदा गढ़ से नीचे उतरा, पीछे से सर्दारों ने रायमल को गढ़ पर लेजाकर पाट बिठा दिया और बाजे बजवा कर फिर अपने भाई बेटों को भी ऊदा के पास से बुला लिया । उसे कहला भेजा कि "तूं काला मुंह करके चलाजा, नहीं तो रायमल तुझे मार डालेगा" । ऊदा कई दिन सोजत में जाकर ठहरा और कुछ काल तक बसी के देहुरे (मन्दिर) में रहा । ऐसा भी सुना है कि उसने कुंवर बाघा (राठोड़) की बेटी के साथ विवाह किया और फिर बीकानेर चला गया और वहीं मरा । उसके वंश का कोई है तो बीकानेर की तरफ है[1] ।

---

(१) कर्नल टाड लिखता है कि ऊदा राज्य पीछा लेने को दिल्ली के (ख्यातों में मांडू लिखा है) बादशाह के पास गया और उसे अपनी बेटी ब्याह देना स्वीकारा, परन्तु ज्योंही बुर्गाह के बाहर निकला कि उसपर बिजली गिरी जिससे वह वहीं मर गया ।

दोहा—ऊदा बाप न मारजे, लिखियो लाभे राज।
देस वसायो रायमल, सरयो न एको काज॥

राणा कुम्भा ने कुम्भलमेरु बसाया तब बहुत लोग वहां आन बसे, बड़ी बस्ती हो गई। कहते हैं कि वहां ७०० तो मंदिर थे जहां सात सौ झालर वजती थी और सातसौ घर ही श्रीमाली ब्राह्मणों के थे, जिनमें से प्रत्येक के घर पर ७०० थालियां थीं। राणा उदयसिंह भी कई दिन तक कुम्भलगढ़ पर रहा था। राणा कुम्भा के पुत्र-१ ऊदा (उदयकर्ण), २ नंगा, जिसके वंशज नंगावत, ३ गोयंद, इसके सन्तान नहीं हुई, ४ गोपाल भी निस्सन्तान मरा, और ५ रायमल[1]।

(आक्स फॉर्ड एडीशन जिल्द १ पृष्ट ३३६)। यह कथा पीछे से जुड़ी जान पड़ती है, क्योंकि राजपूत राजाओं के साथ विवाह संबंध अकबर ने जोड़ा था, पहले नहीं था।

(१) महाराणा कुम्भा सं० १४९० वि० (स० १४३३ ई०) में गद्दी बैठे, और अपने राज्य, ऐश्वर्य व बल प्रताप में यहांतक वृद्धि की कि उस वक्त उत्तरी हिन्दुस्तान में दूसरा कोइ क्षत्रिय राजा उनकी बराबरी का न था। दिल्ली मालवा गुजरात के बादशाहों से अनेक लडाइयां लड़कर विजयी कुम्भाजी ने अपने आतङ्क की छाप उनके हृदयपट पर भलीभांति अंकित करदी और उनकी बादशाहत के कई प्रदेश भी जीतकर अपने राज्य में मिलाए। हिन्दू सुरत्राण व राजगुरु की पदवी प्राप्त की। उनकी सेना में एक लक्ष से अधिक सवार पैदल और कई सौ जंगी हाथी रहते थे। राजपूताने के राजा राव तो क्या किन्तु दिल्ली मालवे और गुजरात के प्रबल मुसलमान सुलतान भी सदा उनके साथ मित्रता जोड़ने ही के इच्छुक रहते थे। कई आपत्तिग्रस्त राजा महाराजा आदि आकर उनकी शरण लेते थे। सच तो यह है कि मेवाड़ राज्य को उन्नत दशा में लाने वाले महाराणा कुंभा ही थे, उन्हीं के पराक्रम व नीति निपुणता से महाराणा सांगा तक राज्य का बल प्रताप प्रतिदिन बढ़ता ही गया। महाराणा कुंभा जैसे विजयी वीर व प्रतापशाली थे, वैसे ही अपूर्व विद्वान्, साहित्य संगीत के ज्ञाता और पूर्ण धर्मनिष्ठ भी थे। अनेक महल मंदिर गढ़ कोट और देवालय बनवाये और संस्कृत भाषा में अनेक ग्रन्थों की रचना की और करवाई। चित्तोड़गढ़ पर गगनचुम्बित विशाल जयस्तम्भ उनकी उज्वल कीर्ति का अद्वितीय स्मारक और पौराणिक हिन्दू देवताओं की मूर्तियों का अनुपम भण्डार है। कुंभाजी का इतिहासप्रेमी होना इसीसे सिद्ध होता है कि महान् खोज व परिश्रम के साथ अनेक प्राचीन शिलालेखों को पढ़वाया और उनके आधार पर अपने वंश के प्राचीन वृत्तांत को बड़ी बड़ी शिलाओं पर अंकित करवाया। फारसी तवारीखें भी उनके वीर चरित्रों से रंगी हुई हैं। यहां केवल इतना ही लिखना पर्याप्त है कि अपने ३५ वर्ष के राजत्वकाल में कुंभाजी ने मेवाड़ राज्य को उन्नति के शिखर पर पहुंचा दिया था। अफसोस कि ऐसे शूरवीर साहसी प्रतापी पराक्रमशील और विद्यानुरागी पूज्य पिता को उनके ज्येष्ठ पुत्र ने राज्य लोभ से मारकर सदा

राणा रायमल—चित्तोड़ पाट बैठा । इसके पुत्र बड़े बलाय (शूरवीर) हुए। उनके नाम-१ उडणा पृथ्वीराज, २ जयमल, ३ जैसा, ४ सांगा (संग्रामसिंह), ५ किसना, जिसके वंश के किसनावत, ६ बधा निस्सन्तान मरा, ७ देवीदास निस्सन्तान मरा ८ पत्ता ९ रांपा निस्सन्तान मरा ।

के लिये कलंक का टीका ही अपने मस्तक पर न लगाया किन्तु साथ ही मेवाड़ की उन्नति को भी बड़ा धक्का पहुंचाया ।

(१) महाराणा रायमल अपने भाई (उदयकर्ण) के वैरभाव के कारण ईडर जा रहे थे, वहीं से बुलाये जाकर सं० १५३० वि० (स० १४७३ ई०) में राज सिंहासन पर बिठाए गए । यह भी अपने पिता के समान ही शूरवीर और प्रतापी रहे । उदयकर्ण के बेटे सहसमल व सूरजमल को साथ लिये मालवे का सुलतान गयासुद्दीन मेवाड़ पर चढ़ आया था । रायमल ने उसको परास्त कर भगाया जिसकी साक्षी का प्राचीन गीत—

चढ़ै पूर पावस वपै रायमल रण चँढ़, नवोभाराथ में वीठ रमणा ।
वहै बनास तू काय रातै वरण, जळ अधक पूछियो गंग जमणा ।
कोड़ भड़ कचरिया रायमल कोपियें, जुड़ण मोटी करै कुम्भ जायो ।
रकतऊं रुधर रणभोम रहियो नहीं, कपटै नदी जळ मांह आयो ।
ग्रजड़ मेवाड़ रायजीप मालव तणा, तुरक दळ रहचिया रायमल तीर ।
असुर घड़ तोड़ ओहाल मुंह ऊतरै, नदी नदियां मिलै रातड़ो नीर ।
हुवै हिन्दू घड़ा सेन बेहूं हुवै, सूझ उपकंठ संगराम सातो ।
घणो सीसोदियो वहै आई घड़ा, रुधिर घण मिलै तण नीररातो ।

भावार्थ—गंगा जमना बनास नदी से पूछती हैं कि तेरा जल रक्त वर्ण का क्यों हुआ बनास उत्तर देती है कि कुम्भा के पुत्र रायमल ने रणखेत में मालवे के सहस्रों वीरों को मारे उनके तन से निकला हुआ रुधिर रणखेत से बहकर मेरे जलमें आन मिला इसीसे यह रक्तवर्ण हुआ है ।

मालवे का सुलतान अपनी हार से लज्जित होकर फिर मेवाड़ पर आने का विचार करने लगा । इसके पूर्व उसने अपने मुख्य सेनापति ज़फरख़ां को मेदपाट का पूर्वी भाग लूटने को भेजा था । इस लूटमार के समाचार सुनते ही महाराणा रायमल ने आसेर, रायसेन, चन्देरी, नरवर, बून्दी, आंबेर और अजमेर आदि के राजा व रावों को साथ ले ज़फ़र की ओर अपनी बाग उठाई । मांडलगढ़ के पास युद्ध हुआ, ज़फरख़ां के साथ के कई नामी सर्दार मारे गये और वह हार खाकर भागा । महाराणा ने मांडू तक पीछा किया और खैराबाद लूटा । सुलतान ग़यास ने एलची भेज नज़राना देकर सुलह करली । यह वृत्तांत रायमल रासे " में लिखा है । इस युद्ध की साक्षी का प्राचीन कवित्त—

रायां गुर रायमल्ल, खान जाफर निरमूलण ।
बायां गुर रायमल्ल, सबल रायां उर सूलण ।

(कुंवर) पृथ्वीराज उग्र प्रकृति का था, उसने टोडा और जालौर एक ही दिन में मारे थे। जब यह बात बादशाह के कान तक पहुंची तो उसने उसका नाम 'उडणा पृथ्वीराज' रक्खा। उसने कई लड़ाइयों में विजय प्राप्त की थी। खीड़ू जांभण ने पृथ्वीराज के विषय में यह बात कही कि राणा रायमल के राज में मांडू के बादशाह का मेवाड़ में जिज़िया (एक कर विशेष जो हिन्दुओं से लिया जाता था) लगता था। राणा ने तो सयाना होने पर भी उसपर कुछ ध्यान न दिया परन्तु एक समय पृथ्वीराज आखेट रमण को गया था, मार्ग में एक पनिहारी जलभरा घट सिरपर धरे आती हुई मिली। अनायास पृथ्वीराज की टक्कर लगने से घड़ा गिरकर फूट गया। गोडवाड़ के लोग ओछबोले (वाणी के असभ्य) तो होते ही हैं (पृथ्वीराज को गोडवाड़ का परगना राणा ने दे रक्खा था और वह वहीं रहा करता था)। पनिहारी ने कहा "कुंवरजी! मेरा घड़ा क्या फोड़ा, ऐसे तलवार के धनी हो तो मेवाड़ का जिज़िया छुड़ाओ"। पास खड़े हुए दूसरे मनुष्यों ने स्त्री को रोककर कहा कि ऐसे मत बोल! पृथ्वीराज ने साथवालों से पूछा "ठाकुरों! यह पनिहारी क्या कहती है"? किसीने उत्तर दिया, यह कहती है कि सारी मेवाड़ पर मांडू के बादशाह का जिज़िया लगता है उसको कुंवरजी तुम क्यों नहीं छुड़वाते। कुंवर ने प्रश्न किया कि जिज़िया लेने वाले कौन हैं? कहा वे पादशाही चाकर हैं, दीवाण के चाकर नहीं, और पाहण कोट में रहते और कर उगाहते हैं। दीवाण उसवक्त कुम्भलगढ़ पर रहते थे। कुंवर के मनमें यह बात खटक गई, जब मृगया कर पीछा आया तो साथवालों से कहा कि आज तुर्कों को मारेंगे, सावधान होजाओ! सबने अर्ज़ की कि इस विषय में पहले दीवाण से अर्ज़ करलेना उचित है। कुंवर बोला,

---

रायां गुर रायमल, गाम सोसी ज़ुमकीज़ा।
रायां गुर रायमल, शत्रु मारे जस लीधा।
रायमल राण रायां तिलक, जिहुं जगमें कीरत फिरै।
कुण भांत सुकव जस उच्चरै, रायमल्ल रायां सिरै॥

उपरोक्त पुत्रों के अतिरिक्त उनके पुत्र कल्याण, पत्ता, (प्रतापसिंह) रामसिंह, आदि थे और दो राज कुमारियां दमोदरकुंवर और हरकुंवर थीं।

इन्हीं महाराणा के समय में एकलिंगजी के मन्दिर का जीर्णोद्धार होकर वर्तमान चौमुखी मूर्ति स्थापन की गई।

बहुत ठीक, हम दीवाण के कानपर यह बात डाल देंगे, तुम तो मारो। कोट में पहुंचते ही राजपूत तुर्कों पर टूट पड़े और सबको धराशायी कर दिये। जब यह खबर राणा को पहुंची तो वे पृथ्वीराज से बहुत ही नाराज़ हुए। कुंवर ने अर्ज़ की "दीवाण! आपने बहुत दिनों तक पृथ्वी भोगी, अब हम सयाने हुए हैं, आप विराजे रहें, हम देश की रक्षा करेंगे'।"

मांडू के बादशाह का उमराव लल्लाखान पृथ्वीराज का नाम सुनकर नींद से चमक पड़ता था और उसी के आधीनस्थ जन जिज़िया[1] उगाहने आये थे जिनको पृथ्वीराज ने मारा। यह पुकार लल्ला के पास पहुंची वह तुरन्त चढ़ आया और मेवाड़ के गांव नगरोप व आकोला लूट लिये तथा लोगों को बन्दी बनाये। फर्याद पृथ्वीराज के पास आई, वह सूर्यास्त के समय कुम्भलनेर से सवार हुआ सो दिन निकलते निकलते टोडे पहुंच गया (जो लल्ला की जागीर में था) और खान को मारलिया[2]। फिर साथ वालों से पूछा कि कहो अब सूरजमल खींवावत को कैसे मारें[3]? किसी ने कहा कि सूरजमल प्रति अष्टमी के दिन ऊंदाले गांव में चारण (जाति) देवी के दर्शन करने आता है।

---

(१) यह जिज़िया लगने की बात चारण की कही हुई विश्वासनीय नहीं क्योंकि फ़ारसी तवारीख़ों में कहीं इसका ज़िक्र तक नहीं मिलता है। यदि ऐसा होता तो मुसलमान इतिहास लेखक कभी उसके लिखने में नहीं चूकते। इसके अतिरिक्त जिस राणा रायमल ने मालवे के सुलतान ग़यासुद्दीन की पीठ पर विजय का शब्द लिखा, मालवे के प्रसिद्ध सेनापति ज़फ़रखां को परास्त कर रणभूमि से भगाया, मालवे का इलाक़ा लूटा और सुलतान नें हार मान कर सन्धि करली, वह महाराणा मांडू के बादशाह को अपने देश में जिज़िया उगाहने दे, इस बात को कौन मान सक्ता है?

(२) इसके लिये एक कहावत भी प्रसिद्ध है "भाग लला पृथिराज आयो, सिंह के साथरै स्याल ब्यायो"।

(३) सूरजमल (क्षेमकर्ण का पुत्र और राणा मोकल का पौत्र) देवलिये प्रतापगढ़ वालों का मूलपुरुष था। राणा ने क्षेमकर्ण को बड़ी सादड़ी जागीर में दी थी। पिता का देहान्त होने पर सूरजमल सादड़ी का स्वामी हुआ और राणा से खड़ाखस करने लगा। पृथ्वीराज ने युद्ध में सूरजमल को घायल किया और सादड़ी छीनली, तो सूरजमल के साथी उसे देवलिये की ओर लेभागे। इसका विशेष वर्णन राजप्रतापगढ़ के इतिहास में मिलेगा।

कर्नल् टॉड लिखता है कि सूरजमल ने राणा लाखा के पौत्र (और अज्जा के पुत्र) सारंगदेव से साज़िश की (सारंगदेव के वंशज कानोड़ के राव मेवाड़ के प्रथम श्रेणी के उमरावों में है) और मालवे के सुलतान मुज़फ्फरशाह को चित्तोड़ पर चढ़ा लाया। (मालवे में तो मुजफ्फरशाह नाम का कोई सुलतान नहीं हुआ, शायद वह मांडू का

बात (सोलंकी) राव सुरताण हरराजोत की—राव सुरताण तोडरी छोड़कर राणा रायमल के पास चित्तोड़ आया, राणा ने बदनोरगढ़ का सारा पर्गना उसे जागीर में दिया। कुंवर पृथ्वीराज का विवाह राव सुरताण की पुत्री तारादेवी के साथ हुआ था। पृथ्वीराज के मरने पर राणा ने जयमल को युवराज पद दिया। पृथ्वीराज रायमल के जीते जी ही विष प्रयोग से मर गया था। जयमल राव सुरताण से बहुत बिगड़ा हुआ था। रावने उसको राज़ी करलेने में बहुत परिश्रम किया, परन्तु सब निष्फल। एक वार उसने अपने साले व कामदार सांखला रतना को कुंवर जयमल के पास भेजा। रतना ने बड़ी नम्रता के साथ बातचीत की तिसपर भी जयमल ने कहा कि " तेरी बहन को बग्गियों के घोड़ों की पूंछ से बंधवाऊंगा "। तब तो रतना को भी क्रोध

सुलतान नासिरुद्दीन हो जिसने स० ९०६ हि० (स० १५०३ ई०, स० १५६० वि०) में चित्तोड़ पर चढ़ाई की थी। फ़ारसी तवारीख़ों में तो युद्ध में राणा का हार खाना और नज़र नज़राना देकर सुलह करलेना लिखा है, परन्तु कर्नल टॉड के लेखानुसार राणा के २२ ज़ख्म झगड़े में लगे और वह भागने ही को था कि अचानक पृथ्वीराज गोडवाड़ को सद्दा सोलंकी के सुपुर्द कर एक हजार चुने हुए सवारों सहित ऐन मौक़े पर आन पहुंचा और तुर्क सैन्य पर धावा कर दिया। सूरजमल भागा, सारंगदेव मारा गया और सुलतान की सेना तीन तेरह हो गई।

गोडवाड़ में नाडलाई गांव के आदिनाथ (जैनियों के प्रथम तीर्थंकर) के मन्दिर की प्रशस्ति से जाना जाता है कि राणा श्री रायमल के राजत्व काल में गोड़वाड़ पर महाकुंवर श्रीपृथ्वीराज अनुशासन करता था।

सिरोही के राव लाखा ने सोलंकी भोज को मार कर उसकी जागीर छीन ली तब भोज का बेटा रायमल और पोता शंकरसी आदि पृथ्वीराज के पास आन रहे। मादड़ेचों से देसूरी छीनकर राणाने सोलंकियों को जागीर में दी। भोज के वंशज रूपनगर के सोलंकी ठाकुर मेवाड़ के जागीरदार हैं; देसूरी गोडवाड़ के साथ मारवाड़ राज्य के अधिकार में गई।

पृथ्वीराज की बहिन आनन्दकुंवरी का विवाह सिरोही के राव जगमाल देवड़े के साथ हुआ था। राव ने राणी सीसोदणी के साथ कठोरता का वर्ताव किया जिस पर पृथ्वीराज ने सिरोही जाकर राव को यथोचित दण्ड दिया। उसका बदला लेने की ठान प्रकट में राव ने पृथ्वीराज से मित्रता की और विषमिली पौष्टिक गोलियें दीं जिनके खानेसे कुंवर की मृत्यु हुई।

कुंवर पृथ्वीराज का एक पुत्र भैरूसिंह सं० १५८६ वि० में गुजरात के सुलतान बहादुरशाह के पास जा नौकर हुआ था।

आया और कुछ बोल उठा। कोप से भरा जयमल बदनोर पर चढ़ आया। उसने पहले खबर के वास्ते गुप्तचर भेजे थे, उन्होंने आकर कहा कि गांव तो सुनसान और ऊजड़ हो गया और राव सुरताण अपने परिवार व सालमते को लेकर निकल भागा है। उस वक्त रात्रि होगई थी, जयमल के सर्दारों ने कहा कि अभी तो यहीं ठहर जाइये, प्रभात में चलकर सुरताण के गाडों को जा लेंगे। जयमल तमक कर बोला कि मशालें जलाकर हाथियों पर लेलो और पीछा करते हुए चले चलो। आप भी बग्गी सवार मशालों के प्रकाश में गाडों के खोज देखता हुआ बढ़ा और बदनोर से सात कोस गांव अंटाली के पास सुरताण को जा लिया। तब राव की पत्नी सांखली भयभीत हो कर कहने लगी "भाई रतना! बंध पकड़ीजता दीसै है (अर्थात् क़ैद हो जावेंगे)"। रतना ने उत्तर दिया चित्तोड़ के धणी प्रतापशाली हैं, जो चाहेंगे सो करेंगे। इतनी बात कह उसने असल का मावा चढ़ाया, घोड़े का तंग कसकर खींचा, और सवार हो अकेला कटक की ओर चला। धीरे धीरे राणा की फौज में जा मिला। आधी रात का समय था जयमल बग्गी सवार गांव आकड़सादे और सथाणे के बीच आ रहा था, मेवाड़ के जूझार सब ऊंघते जाते थे। जब जयमल की गाड़ी मशालों के प्रकाश के साथ निकट आई तब रतना अपने अश्व को खुरी कर गाड़ी के बराबर लेगया और जयमल को सम्बोधन कर कहा–"राज! (कुंवर साहब) सांखला रतना मुजरा करता है। और साथही अपना बर्छा उसकी छाती में झोंक दिया। भाला छाती फोड़ कर पार निकल गया, परन्तु उसे खींचकर दूसरी और तीसरी चोट भी करदी, जयमल गिरा और कार्य सरा! साथवालों ने घेर कर रतना को भी मार लिया और फौज वहीं से पीछी फिर गई। आकड़सादे व सथाणे के बीच कुंवर के शव का अग्निसंस्कार किया गया।

बदनोर में पहले मेर व गूजरों की बस्ती थी अब वहां के गांवों में जाट रहते हैं। उन्होंने मुझ से (मुहणोत नैणसी से) कहा कि हम राव सुरताण की बसी के हैं। साखी का छन्द—

"समचढ़ सांखला जुड़ पाख, जैमल प्राण पोरस दाख।
रावरै दल तुहिज रूपक, रूप रतना राख[1]॥

(1) कर्नल टॉड ने लिखा है कि राव की धरती पठानों ने छीन ली थी, राव सुरताण ने प्रण किया था कि जो सर्दार मुझे पठानों से अपनी भूमि पीछी दिलवादे उसीके

जयमल के मारे जाने पर राणा ने अपने पुत्र जैसा (जयसिंह) को टीका-यत किया था, परन्तु जब राणा रायमल रोगग्रस्त हुआ और देखा कि जैसा राज्य के योग्य नहीं है, और राजपूत भी उससे राज़ी नहीं, तब उसने सांगा को बुलाया और वही अपने पिता का उत्तराधिकारी हुआ।

राणा सांगा (संग्रामसिंह) रायमल का—पृथ्वीराज व जयमल के मरने पर टीकायत हुआ, बड़ा भाग्यशाली और प्रतापी महाराजा था, उसने पहले तो बहुत आपत्तियां उठाईं परन्तु पाट बैठने के पीछे उसका प्रताप बहुत बढ़ा, बहुत से देश जीते, ऐसा (प्रतापी) राणा चित्तोड़ पर दूसरा कोई नहीं हुआ। मांडू के बादशाह (महमूद खिलजी) को दो बार क़ैद करके मुक्त किया और पीलेखाल तक (बयाने के पास) अपने राज्य की सीमा बढ़ाई। वहां जाकर बाबर बादशाह के साथ युद्ध किया परन्तु हार खाई। उसने चन्देरी भी फतह की थी, बांधोगढ़ के बाघेले मुकुन्द से उसकी लड़ाई हुई, मुकुन्द पराजित होकर भागा और उसके बहुत से हाथी राणा के हाथ आये (बांधोगढ़ के युद्ध का हाल नैणसी के लेख के सिवा और कहीं नहीं मिला)। यह बात खिड़िया चारण खींवराज ने कही। गीत राणा सांगा का—

आयो आगरै जगड़ की जवनपत, समहर संग सपड़ाणो।
दिलड़ी तकी धराधक धूणै, रोस चईनों राणो।
पारंभ सार पसरिया परखंड, अत साहस ऊलटियो।
ढिलड़ी जोय जपै धवळागिर, हिंदवां राणो हठियो।
नरवर गोपाल निजलते, समपै सिखर सवाई।
हुण सुरताण जुकीनी सांमे, मुकंद तणै घर मांही।
मालतणो सझियो मोगर थट, लोहतणो रखलागो।
पूरवदेश भगाण पड़ँता, भोतण पड़वो भागो ।

साथ अपनी पुत्री तारादेवी का विवाह कर दूंगा। जयमल ने राव की प्रतिज्ञा पूरी न करते गुप्त रीति से तारादेवी के साथ संबंध जोड़ना चाहा, इस पर बिगड़ कर रावने जयमल को मार डाला।

(१) यह गीत अशुद्ध प्रतीत होने पर हमने जोधपुर राज्य के प्रसिद्ध इतिहास-वेत्ता मुन्शी देवीप्रसादजी के पास इसे भेजा था, तो उन्होंने इसे सुधरवा कर इस भांति होना बतलाया—

राणा सांगा का विवाह (मारवाड़ के) कुंवर वाघा सूजावत की पुत्री धनाई (धनबाई) से हुआ था जिसके गर्भ से राणा रत्नसिंह ने जन्म लिया। सांगा का जन्म सं० १५३९ वि० वैशाख वदि ९, गद्दीनशीनी सं० १५६६ जेष्ठ सुदि ५, और सं० १५८४ कार्तिक शुक्ला ५ को सीकरी के खेत में बाबर बादशाह से लड़ाई हारने के उपरान्त थोड़े ही काल तक जीया। (यह युद्ध सं० १५८४ वि० के चैत सुदि १४ को हुआ था।)

रत्नसिंह टीकायत के अतिरिक्त विक्रमादित्य, उदयसिंह, भोजराज, (कहते हैं कि राठोड़ मीरांबाई का विवाह इसके साथ हुआ था) और कर्ण नामी और भी पुत्र राणा (सांगा) के थे। (सुप्रसिद्ध मीरांबाई जिसने भक्तिभाव के कारण राजपूताने ही में नहीं वरन सारे भारतवर्ष में प्रख्याति प्राप्त की और जिसके पद व भजन आजतक देश भर में गाये जाते हैं राणा सांगा के पुत्र भोजराज को व्याही गई थी, न कि राणा कुम्भा को जैसा कि कर्नल् टॉड ने लिखा है)।

राणा सांगा का एक विवाह बूंदी के हाड़ा राव नर्बद की कुंवरी कर्मवती के साथ हुआ था, जिसके पेट से विक्रमादित्य और उदयसिंह ने जन्म लिया। राणा का प्रेम हाडी पर विशेष था। एक दिन राणी ने दीवाण से अर्ज़ की कि दीवाण घणा वर्ष सलामत रहै, परन्तु विक्रमादित्य और उदयसिंह बालक हैं। रावले (आपके) टीकायत और राज्य का स्वामी रत्नसिंह है इसलिये दीवाण विराजे हैं जितने इन बेटों का भी कुछ बन्दोबस्त कर देवें तो अच्छा है। राणा ने पूछा कि क्या चाहती हो? अर्ज़ की कि रत्नसिंह को पूछ कर इनको रण-

---

आखे आगरो जगट की जवनपुर, समर सांगे संपडाणो,
दिलड़ी तकी धराधक धूजे, रोस चड़णो राणो।
पारम्भपूर पसरियो परखण्ड, अतिसाहस ऊलटियो,
ढिलड़ी जोय जपै धवळागर, हिंदवां राणो हठियो।
(तीसरे चरण के पहले दो पदों का अर्थ कुछ नहीं बैठता है)
सुण सुरताण न कीधा सांगे, मेछ तणा घर मांही।
मोकल हर सभिया मोगर थट, लोह तणै रस लाग्गो.
पूरब देस भगाण पड़न्ता, भोतण पड़वो भाग्गो॥

(भावार्थ)—आगरा दिल्लीसे कहता है कि सांगा आया, दिल्ली की धरा धूजती है, राणा के रोस से पराई धरती में पूरा आरम्भ फैला, और साहस बढा, राणा हठ पकड़े हुए है। सुलतान के साथ सांगा ने जो किया उसे सुण कि लोहे के समान कठोर सैन्य सजकर मोकल के प्रपौत्र के आते ही पूर्व देश में भगाण पड़ते पादशाह डरकर भागा।

थम्भोर जैसी कोई ठौड़ दी जावे और हाड़ा सूरजमल (राणी का भाई) जैसे राजपूत को इनका हाथ पकड़ा दिया जावे (अर्थात् शिक्षक व रक्षक बनाया जावे)। राणा ने वह अर्ज़ स्वीकारी। प्रभात होते ही रत्नसिंह को बुलाकर कहा कि विक्रमादित्य व उदयसिंह तुम्हारे छोटे भाई हैं सो इनको कोई ठिकाना देना चाहिये। राणा सांगा एक महा शक्तिशाली राजा था, इसलिये रत्नसिंह कुछ भी न बोल सका, यही अर्ज़ की कि जो दीवाण ने विचारी हो वही जागीर दीजिये। राणा ने कहा कि रणथम्भोर दिया जावे। रत्नसिंह ने उत्तर दिया बहुत खूब। विक्रमादित्य व उदयसिंह को रणथम्भोर का मुजरा करने की आज्ञा हुई, उन्होंने मुजरा किया, उस वक़्त हाड़ा सूरजमल राणा के दर्बार में हाज़िर था। राणा ने उससे कहा "हम विक्रमादित्य उदयसिंह को रणथम्भोर देकर तुम्हारी गोद में रखते हैं। सूरजमल ने अर्ज़ की कि मुझे इससे क्या वास्ता, मैं तो चित्तोड़ के धणी का चाकर हूं। तब राणा ने आग्रहपूर्वक कहा कि ये तुम्हारे दोनों भाञ्जे बालक हैं और बूंदी से रणथम्भोर निकट भी है, तुम भले राजपूत हो, इससे इनका हाथ तुमको पकड़ाते हैं।

सूरजमल बोला दीवाण की आज्ञा शिरोधार्य्य, हम तो हुक्म के चाकर हैं, परंतु दीवाण के सौ वर्ष पूरे हुए पीछे रत्नसिंह हमको मारने को तैयार होंगे, इसलिये वे हमको फर्मा देवें। राणाजी रत्नसिंह की ओर देखने लगे, उसने तुरन्त सूरजमल को कह दिया कि दीवाण फर्मावें वह मंजूर कर लो। ये मेरे भाई हैं, और तुम हमारे सगे हो, मैं कदापि तुमसे बुरा नहीं मानूंगा। तब सूरजमल ने राणा की आज्ञा स्वीकारी और साथ जाकर रणथम्भोर में विक्रमादित्य और उदयसिंह का अमल कराया[1]।

---

(१) नैणसी ने सांगाजी का हाल बहुत ही थोड़ा लिखा है। सचतो यह है कि इन महाराणा ने मेदपाट को उन्नति के ऊंचे से ऊंचे शिखर तक पहुंचा कर हिन्दूपति की पदवी को सार्थक कर दिया था। मालवे, गुजरात और दिल्ली के बादशाहों से कई युद्ध कर उन्हें रण भूमि से भगाये, सुलतान महमूद मालवी को पराजित कर घायल हुए को बन्दी बना चित्तोड़ लाये, और वहां तीन मास बन्दीगृह में रख उसके घावों का इलाज कराया और चंगा होने पर मांडू का तख़्त उसे पीछा दे सलामती के साथ अपनी राजधानी में पहुंचाया। हाथ में आए हुए शत्रु पर ऐसी दया दिखलाना महाराणा सांगा की शूरवीरता और उनके पूर्ण उदार हृदय का परिचय देता है। सच तो यह है कि यदि सांगाजी की जंगी कार्रवाइयों

राणा रत्नसिंह—कुंवर बाघा (राठोड़) का दोहिता धनाई के पेट का, हाडा सूरजमल नारायणदासोत (बूंदी के राव) से लड़कर मारा गया । यह

का वर्णन सविस्तर किया जावे तो एक स्वतंत्र पुस्तक तैयार होजावे । राज्य लोभ से पिता पुत्र, और भाइयों भाइयों में परम शत्रुता बंध कर परस्पर मारकाट होना या अनेक छल छिद्र करके एक दूसरे के प्राणों के गाहक बनजाना तो स्वच्छन्द और स्वेच्छाचारी निरंकुश नरनाथों में एक प्रथा सी चली आती है । तदनुसार पृथ्वीराज, जयमल और सांगा में भी बैर भाव उत्पन्न होकर पृथ्वीराज ने सांगा को मारना चाहा, परन्तु उनके काका सूरजमल के बीच में पड़जाने से सांगा केवल पांच च्यार घाव खाने और एक आंख खोने के उपरान्त वहां से बच कर भागा, और च्यारभुजा का मार्ग पकड़ गांव सेवन्तरी में राठोड़ बीदा जैतमालोत के पास पहुंचा । बीदा वहां रूपनारायण की यात्रा को आया था, और पीछा लौटने को तैयार था कि उसने सांगा को पहचान कर अपने कसे हुए अश्व पर उसे सवार करा आगे को रवाना कर दिया । इतने में जयमल पीछा करता हुआ थान पहुंचा, बीदा ने जयमल को रोका, लड़ाई हुई और बीदा मारा गया । सांगा अजमेर में श्रीनगर के पंवार राजा करमचन्द के पास जा ठहरा ।

उस वक़्त भारतवर्ष में दोही बड़े महाराजाधिराज थे—अर्थात् उत्तर में सांगा, और दक्षिण में बीजानगर के यादव । महाराणा सांगा ने मुसलमान सुलतानों को कैद कर छोड़े जिसकी साक्षी के कई प्राचीन गीत हैं उन में से दो एक यहां उद्धृत किये जाते हैं ।

इबराहिमन (लोदी बादशाह) पूरब दिस उलटे
पछम मदाफर (मुजफ्फ़र गुजराती) न दे पयाण ।
दखणी महमदसाह (मालवी) न छोड़े,
सांगो दामण त्रहुं सुरताण ।
साहयेक दस येकन सासै, बिदसन सासै हेक खण ।
सुजस राण रायमल संभ्रम, ग्रेखळिया पतसाह त्रण ।
सांई सूरा गमण न सासै, लीहन को लोपवै पग ।
बापाहरै बलाक्रम बांध्या, पतसाहां त्रहुं तणा पग ॥
जिण महमंद बांधियों, सुजड़ सहसेन संघारे ।
मुदाफर मय मलै, अंन आविया उतारे ।
गुढ़ापूह गंभिया, भाग लीधा निम्बोड़े ।
गोपालो असगस, एह छूटे तुड़ोड़े ।
रणथम्भ लेण रायमल तनय, बियोन की ब्रोलैनबल ।
संग्राम तुंहिज बांधै समर, चंदेरी चीतोड़ गल ॥

सुलतान अलाउद्दीन खिल्जी की चढ़ाई ने मेवाड़ को जबरदस्त धक्का पहुंचाया था, परन्तु वीर राणा हमीर ने तुर्कों से अपना देश पीछा लेकर उस पांधे को नवांकुरित किया ।

लड़ाई भैंसरोड़ के पास गांव किंवाजणे में हुई थी जो चित्तोड़ से २२ कोस, बूंदी से १० कोस, महनाल से ६ कोस और भैंसरोड़ से दस कोस पर है।

राणा सांगा ने अपने छोटे पुत्र विक्रमादित्य को रणथम्भोर जागीर में देकर हाडा सूरजमल को उसका रक्षक (गार्डियन्) नियत किया था। राव नारायणदास के मरने पर जब सूरजमल गद्दी बैठा तब लाललश्कर नामी घोड़ा रु० २००००) का और मेघनाद नामी हस्ती रु० ६००००) का राणा ने उसके लिये टीके में भेजे थे। रत्नसिंह के सिंहासनारूढ़ होने पर हाडी करमेती अपने पुत्रों को लेकर रणथम्भोर में जारही। राणा रत्नसिंह को वह गढ़ अपने भाइयों के हाथ में रहना अखरने लगा तब उसने पूरबिये पूरणमल और रणमल को भेजे कि विक्रमादित्य और उदयसिंह को चित्तोड़ ले आवें। वे दोनों गये, परन्तु राणी हाडी ने कहा कि मेरे पुत्र तो बालक हैं तुम सूरजमल के पास जाओ, वही जवाब देवेगा। उन दोनों ने बूंदी जाकर सूरजमल से कहा कि राणाजी ने विक्रमादित्य व उदयसिंह को बुलाये हैं। उसने यही उत्तर दिया कि मैं स्वयं हाज़िर होकर दीवाण को सारी बात मालूम करूंगा। पूरणमल ने चित्तोड़ आकर सब वृत्तान्त निवेदन किया और कहा कि दोनों भाई तो आने को तैयार थे, परन्तु सूरजमल ने उनको न आने दिया। यह सुनकर राणा क्रोध के मारे जल उठा।

राणा कुम्भा ने उस नव पल्लवित तरु को भलीभांति सींचकर हरा भरा पुष्प दल संयुक्त उन्नत तरवर बनाया, और सांगा उस में फल लाया। यदि वह बयाने के युद्ध में बाबर पर विजय लाभ करते तो अवश्य मेदपाट राज्य के प्रौढ पादप की छाया तले देहली गुजरात व मालवे के महाराज्य आजाते और वहां के शाहंशाही गढ़ कोटों पर सूर्य्यवंशी राणा का झण्डा फहराता।

युद्ध हारने के थोड़े ही काल पीछे गांव बिसाऊ में उस वीर शिरोमणि का स्वर्गवास होगया, उस वक़्त किसी कवि ने निम्न लिखित शोक सूचक गीत कहा था—

सगां बिणसूर पेहवो अम्बर, दीपक पाखै जिसो दुवार।
पारस बिना जेहवी प्रथमी, सांगा विण जेहवो संसार।
विण दिव धोम कसण जोती विण, धाराहर विण जसी धर।
जैसी हरा जिसो जाणेवो, तो विण प्रथमी कलपतर।
जळहर गयो दुनी जींवाड़ण, फवै नहीं दीपक फरक।
झाहां प्रहया सोखणो सांगो, आथमियो मोटो अरक॥

पहले भी जब सूरजमल एक हाथी व एक घोड़ा टीके में नज़र करने को लाया था तो राणा ने उसे नहीं स्वीकारा और कहा कि जो लाललश्कर अश्व व मेघनाद हस्ती तुम्हें टीके में दिया गया वही पीछा दो। सूरजमल बोला कि मैंने चारण की भांति याचना करके तो हाथी घोड़ा लिये ही नहीं थे सो पीछे ला दूं। बात बहुत बढ़गई और राणा उसे मारने का दांव व अवसर देखने लगा।

सौदों का बारहट चारण भाणा मीसण (मिश्रण), जो चित्तोड़ के गांव राठकोडडिये में रहता था, एक प्रसिद्ध चारण और बड़ा कवि था। वह अपने यजमानों के पास जो बूंदी में रहते थे, आकर मास दो मास रहा करता था। उस अवसर पर वह बूंदी गया तब सूरजमल के मुजरे को भी गया था। एक दिन भाणा को साथ लिये सूरजमल शिकार को गया, दूसरे साथवालों को तो हाके पर भेज दिये और वे दोनों ही एक सूल में बैठ गए। वहां वराह तो कोई न निकला परन्तु दो रींछ मिले। राव उन से बथमबथा होगया और दोनों को कटार से मार गिराए। भाणा यह देखकर चकित होगया, तब सूरजमल ने केवल इतना ही कहा कि "क्या किया जावे जब ज़बर्दस्ती ऊपर आन गिरे तो मारने ही पड़े"। भाणा ने यश कह कह कर राव को बहुत रिझाया, तब सूरजमल ने विचार किया कि राणा ने लाललश्कर घोड़ा और मेघनाद हस्ती पीछा लेने की हठ पकड़ी है और मेरे सर्दार कामदार भी मुझे दबाकर उन्हें राणा को दिलादेंगे, इससे तो अच्छा यही है कि वह घोड़ा हाथी मैं भाणा जैसे पात्र को दान में दे दूं। ऐसा ठान उसने लाख पसाव के साथ वे दोनों पशु चारण को देदिये। राणा रत्नसिंह सूरजमल को मारने का मनोरथ पूर्ण करने के वास्ते मृगया के बहाने विदा हुआ और चित्तोड़ से दस कोस पर आकर डेरा दिया। रावत करमचन्द की पुत्री राणी परमारण भी साथ थी। भाणा चारण वहां राणा के मुजरे को हाज़िर हुआ। दीवाण ने पूछा कि इतने दिन कहां था? अर्ज़ की कि बूंदी में था। तब राणा ने सूरजमल का हाल पूछा। भाणा ने उसकी बहुत प्रशंसा की, वह राणा के मन में न आई और कहा कि तूने सूरजमल में ऐसा क्या गुण देखा जो उसकी इतनी बड़ाई करता है। चारण ने रींछों की सारी कथा कहकर निवेदन किया कि वह बांका राजपूत है, जो कोई उसे मारने की इच्छा करे उसकी कुशल नहीं। उसी वक़्त किसी दूसरे ने पूछा कि भाणाजी तुम सूरजमल का इतना यश कहते हो सो अभी उसने तुमको

क्या दिया। वह बोला कि मुझे लाख पसाव के साथ लाललश्कर घोड़ा और मेघनाद हाथी दिया है। यह सुनते ही राणा की क्रोधाग्नि द्विगुण भड़क उठी और भाणा को आज्ञा दी कि " तूं मेरे देश में मत रह ! बूंदी चला जा "। वह भी तुरन्त पट झाड़ कर उठ बैठा और तत्क्षण बूंदी की ओर प्रस्थान किया।

राणा भी आखेट करता हुआ बून्दी के निकट आता रहा और सूरजमल के पास दूत पर दूत भेजे और कहलाया, कि शीघ्र हाज़िर होवे। वह ताड़ गया कि राणा का मन मैला है और विचार में पड़ा कि जाऊं या न जाऊं। एक दिन उसने अपनी माता खेतू राठोड़ण से जाकर पूछा कि राणा के दूत मुझे बुलाने को आयें हैं, राणा मुझसे बिगड़ा हुआ है, वह मुझे मारेगा, यदि तुम्हारी आज्ञा होतो उसे हाथ बताऊं। माता बोली बेटा ! ऐसी बात क्यों करें, अपने तो सदा से दीवाण के चाकर हैं ऐसा बुरा काम तो आजतक हमसे कोई हुआ नहीं कि जिसके कारण राणा तेरी घात करे। शीघ्र राणा के पास जाओ और अच्छी सेवाकरो ! माता का ऐसा आदेश सुन सूरजमल चला और चित्तोड़ व बून्दी की सीमापर गोकर्ण नामी तीर्थवाले गांव में राणा से मुज़रा किया। राणा के मनमें तो खुटाई भरी थी, परन्तु प्रकट में राव का बड़ा आदर किया, 'सूरभाई' कह कर बातचीत की। एक दिन सूरजमल को कहा कि हमने एक हाथी नया ख़रीदा है, आज उसपर सवारी करके तुमको दिखलावेंगे। जब राणा हाथी सवार हुआ तो सूरजमल भी घोड़े चढ़ कर आगे आगे चलने लगा, एक स्थान पर संकड़ी सी ठौड़ देखकर राव पर कुंजर पेला, परन्तु सूरजमल ने घोड़े के एड़ लगाकर अपने को हाथी के मोहरे से बचालिया और क्रोध के मारे लाल होगया। राणाने कई मीठी मीठी बातें बनाकर उसका क्रोध शमन किया और कहा कि इसमें हमारा दोष नहीं है हाथी अपने आप झपट पड़ा था।

फिर दो एक दिन का अन्तर डालकर राणा ने फर्माया कि वनशूकरों की शिकार को चलेंगे। रावने उत्तर दिया कि " जो आज्ञा "! (इसके पूर्व) राणा ने अपनी राणी पंवार से कहा था कि कल हम एक इकल सूअर को मारेंगे और तुमको भी वह तमाशा दिखलावेंगे। दूसरे दिन राणी गोकर्ण तीर्थ में स्नान करने गई। उससे थोड़े ही समय पहले सूरजमल भी स्नानार्थ गया था। राणी के पहुंचतेही वह चटसे धोती पहनकर पास से निकल गया। राणी की दृष्टि उस पर पड़ी, किसी (दासी) से पूछा कि यह कौन है ? उसने उत्तर दिया कि

बून्दी का स्वामी सूरजमल हाडा है, जिसपर दीवाण का कोप है। तुरन्त राणी ताड़ गई कि दीवाण जिस सूअर के मारने को कहते वह इसीसे अभिप्राय है। रात के वक्त राणी ने फिर वही सूअर की चर्चा छेड़ी, और अर्ज़ की कि उस सूअर को मैंने भी देखा है, दीवाण उसे न छेड़ें। राणा ने पूछा कि कब देखा? तब उसने सब कथा कही और यह भी कह दिया कि उस सूअर को छेड़ने वाले की कुशल नहीं। राणा को यह बात बुरी लगी।

प्रभात होते सूरजमल को साथ ले राणा शिकार को गया, मूलपर बैठे और दूसरे सब लोगों को हटादिये, केवल राणा, पूरणमल पूरबिया, सूरजमल और उसका एक खवास वहां रहे। राणाने पूरणमल को इशारा किया कि "लोह कर" परन्तु उसकी हिम्मत न पड़ी, तब राणा ने अश्वारूढ़ हो स्वयं सूरजमल पर तलवार का वार किया, जिससे उसकी खोपड़ी का कुछ भाग कट गया। यह देख पूरणमल ने भी एक छिछलता हुआ हाथ मारा, वह सूरजमल की जंघापर पड़ा, तब तो लपककर सूरजमल ने पूरण को दे पछाड़ा। वह चिल्लाने लगा, राणा उसको बचाने के निमित्त आया और दूसरा हाथ भी चलाया, उस वक्त सूरजमल ने घोड़े की वाग पकड़ कमर से कटार खींच झुके हुए राणा की गर्दन के नीचे धूंलदी, वह नाभि के नीचेतक चीरती हुई चली गई, राणा घोड़े पर से गिरा, और गिरते ही जल मांगा। सूरजमल बोला "कालरा खाधा हमै पाणी पी सकै नहीं" (काल आन पहुंचा है अब तू जल नहीं पीसकता है)। तद्पश्चात् राणा और सूरजमल, दोनों के प्राण पखेरू उड़ गए[1]। पाटण में राणा को दाग दिया गया और राणी परमारण शवके साथ सती हुई। राणा रत्नसिंह के कोई पुत्र न था इसलिये भाई बेटों आदि ने मिलकर विक्रमादित्य और उदयसिंह को रणथम्भोर से बुलाये और राजतिलक विक्रमादित्य को दिया।

राणा विक्रमादित्य—करमेती हाडी का पुत्र, उदयसिंह का बड़ा भाई, राणा रत्नसिंह के पाट बैठा। सम्वत् १५६६ (सं० १५६६ अशुद्ध लिखा है, सम्वत् १५६१ वि० में यह चढ़ाई हुई थी) जेष्ठ सुदि १२ को बादशाह बहादुर (गुजराती) चितोड़ पर चढ़ आया, गढ़ लिया, हाडी करमेती ने जोहर किया, कई राजपूत मारे गए, फिर हुमायूं बादशाह विक्रमादित्य की सहायता पर चित्तोड़ आया

(१) सं० १५८८ वि० में मारे गए।

और बहादुर को वहां से भगा कर राणा को पीछा गद्दी पर बिठाया। पीछे पुत्तल दासी के पुत्र (बणवीर) ने सोते हुए राणा विक्रमादित्य को मार कर चित्तोड़गढ़ अपने अधिकार में कर लिया।

यही बात चारण आसिये गिरधर ने इसप्रकार कही—सं० १७१६ (लेखक भूल से लिखा गया हो, १५६१ वि० होना चाहिये) भादों सुदि ६ के दिवस मांडू का (भूल से गुजरात के बदले लिखा गया हो या उस वक़्त मालवा व गुजरात के दोनों महाराज्य गुजरात के सुलतान के अधिकार में होने से बहादुर को मांडू का बादशाह लिखा हो) बादशाह बहादुर पहलीबार चित्तोड़गढ़ पर चढ़ आया और गढ़ घेर लिया। राणा विक्रमादित्य बालक था, विक्रमादित्य और उदयसिंह दोनों हाडा नरबद भोजावत की बेटी करमेती के पुत्र थे। कई दिन के घेरे पीछे एक ओर से गढ़ टूटा, सीसोदिये सूठाली (तलवार) के मुख मरे और चौदह बड़े सर्दार काम आये। सन्धि की बातचीत हुई, बादशाह के भले आदमी गढ़ पर गए और राणा के विश्वासपात्र पुरुषों ने तलहटी आकर मामला ठहराया। राणा ने उदयसिंह को चाकरी में भेजना स्वीकारा और क़ौल करार होकर अन्त में बादशाह उसको अपने साथ ले गया। बादशाह बहादुर के कोई बेटा नहीं था, उमराव वज़ीरों ने अर्ज़ की कि अब आप वृद्ध हैं किसी भाई भतीजे को गोद बिठालें तो अच्छा है। बादशाह ने कहा राणा का भाई ठीक है। बड़े घर का लड़का है, इसको मुसलमान बनाकर गोद रख लिया जावेगा। यह बात निश्चय हुई। उदयसिंह के राजपूतों ने जब यह सुना तो उन्होंने उसके कान में बात डाली और विचार बांधकर रात को उसे वहां से ले निकले। प्रभात होते जब बहादुर के कर्णगोचर हुआ कि उदयसिंह भाग गया है तो वह तुरन्त चढ़-धाया और चित्तोड़ आकर गढ़ के घेरा लगाया[1]। विक्रमादित्य और उदयसिंह

(१) बहादुरशाह का उदयसिंह को अपने साथ लेजाने आदि की कथा विश्वास के योग्य नहीं है क्योंकि बहादुर की चढ़ाई के समय राणा विक्रमादित्य और उदयसिंह दोनों उनके ननिहाल बूंदी को भेज दिये गए थे और सं० १५६२ वि० के प्रारम्भ में जब विक्रमादित्य को मार कर बणवीर गद्दी बैठा तो उसके हाथ से उदयसिंह को बचाने के वास्ते अपने पुत्र का भोग देकर—धाय पन्ना उस बालक राजकुमार को कुंभलमेर लेगई थी जहां वह गद्दी बैठने तक गुप्त रीति से रहा। इसके अतिरिक्त फ़ारसी तवारीख़ों में कहीं इसका ज़िकर तक नहीं है।

को सर्दारों ने गढ़ के बाहर भेज दिए। हाडी करमेती अपनी बेटी खीची भारतीचंद की पत्नी, हाडा कल्ला जगमालोत की बेटी राणा विक्रमादित्य की राणी, और राणा देवीदास की बेटी सहित जोहर की अग्नि में जलकर भस्म होगई। इतने राजपूत सर्दार युद्ध में खेत पड़े-रावत दूदा रत्नसिंहोत, सीसोदिया कस्सा रत्नसिंहोत, पंचायण पंवार करमचन्द का, हाडा अर्जुन नरबद का, रावत सत्ता (शत्रुसाल) रत्नसिंह का, सोनगिरा माला बाला का, रावत बाघा सूरजमलोत देवलिये वाला और सोलंकी भैरवदास नाथावत पोल पर काम आया इसलिये चित्तोड़ गढ़ की वह पोल (उसके नाम से) भैरव पोल कहाती है, (भैरव पोल राणा कुम्भा ने बनवाई और वह नाम भी उसका उसी समय में रक्खा गया था)। रावत देवीदास सूजावत, सीसोदिया नंगा सिंहावत जग्गा का भाई, और झाला सिंह अज्जावत।

(गुजरात देश राज वर्णन में नैणसी ने लिखा है)-बादशाह बहादुर सेना सज चित्तोड़ पर चढ़आया, सं० १५८६ (यहां भी १५९१ की जगह १५८६ ग़लत लिखा है) फाल्गुण सुदि १ चित्तोड़गढ़ टूटा, लाखोटा की पोल पर सवार १८००००, व हाथी १४००० थे (शायद लेखक प्रमाद से एक एक बिन्दी आगे लग गई हो या कवि ने अतिशयोक्ति की हो)। राणी करमेती ने जोहर किया, ४००० राजपूत रणांगण में खेत पड़े, सरोवर कूए बाव तलावों में से ३००० बालक जाल डाल डाल कर निकाले गए; सात सहस्र स्त्रियां अपने बच्चों सहित अफीम खाकर मरीं, और असंख्य स्त्री पुरुष बन्दी बनाए गए। बहादुरशाह के गुजरात को लौटने पीछे सीसोदियों नें तुर्कों को चित्तोड़ से मार भगाए[1]।

---

(१) राणा विक्रमादित्य ने अपने अनुचित्त वर्ताव से मातहत सर्दारों को अप्रसन्न कर दिए थे इसी से अवसर पाकर बहादुरशाह ने दो बार चित्तोड पर चढ़ाई की, पहली बार तो माजी हाडी ने सुलतान महमूद मालवी से दण्ड में लिया हुआ जड़ाऊ मुकुट और कमरबंद, मालवे के कई पर्गने, दस हाथी, एक सौ घोड़े और एक क्रोड़ रुपया नक़द देकर संधि करली। इतना पाने पर भी बहादुरशाह ने थोड़े ही अर्से पीछे फिर गढ़ को आन घेरा। देवलिये का राव बाघसिंह महाराणा का प्रतिनिधि बनाया गया (महाराणा गढ़ के बाहर भेज दिए गए थे) और मेवाड़ के बहादुरों ने शत्रु से युद्ध कर वीरगति प्राप्त की। यह चित्तोड़ का दूसरा शाका कहलाता है।

राणा उदयसिंह सांगा का—महा प्रतापशाली राजा हुआ। विक्रमादित्य के मारे जाने पर वह कितनेक समय तक कुम्भलमेर पर रहा था। जब बणवीर ने कुम्भलगढ़ आन घेरा तब उसने (अपने श्वसुर) सोनगिरे अखैराज को कहलाया कि हमारे पर आपत्ति आई है सहायता के निमित्त आओ! उदयसिंह का प्रथम विवाह अखैराज रणधीरोत की कन्या के साथ हुआ था। वह कूंपा महराजोत, राणा अखैराजोत, भद्दा कन्ह पंचायणोत और राजसी भैरवदासोत आदि मारवाड़ के सर्दारों का बहुत सा साथ लेकर आया, गांव माहोली में बणवीर के साथ बड़ा युद्ध हुआ। कोई तो कहते हैं कि बणवीर मारागया और कोई कहते हैं कि भागा। उदयसिंह चित्तोड़ का राजा हुआ। बड़ा उग्रतेज वाला था।

सं० १६२४ वि० में अकबर बादशाह ने चित्तोड़ आन घेरा। राणा उदयसिंह ने चित्तोड़ छोड़ उदयपुर बसाया। जयमल (मेड़तिया वीरमदेवोत) ईसर वीरमदेवोत (मेड़तिया) और सीसोदिया पत्ता जग्गावत और बहुत से राजपूत लड़ाई में काम आये।

उदयपुर के आसपास पहले देवड़ों के ५० (तथा ५२) गांव थे और वह स्थान गिरवा कहलाता था। राणा ने उदयसागर तालाव अपने नाम पर (सं० १६२० या २१ में) बन्धवाया। उदयसिंह का जन्म सं० १५७६ भाद्रपद सुदि

चित्तोड़ पीछा हाथ आने के बाद महाराणा विक्रमादित्य थोड़े ही दिन राज करने पाए थे कि कुंवर पृथ्वीराज के खवासनिये पुत्र बणवीर ने राणा को मारडाला और सम्वत् १५६२ वि० (स० १५३५ ई०) में आप गद्दी पर बैठ गया। राज मिलजाने से उसको बड़ा घमण्ड आगया और राज्यरीति के अनुसार उसने भी भोजन के समय अपना सीथ प्रसाद पंक्ति में जीमने वाले सर्दारों को देना चाहा। कोठारिये के चहुवाण राव खानजी को अपने थाल में से दूना दिया, परन्तु रावने लेने से इंकार किया। सारे सर्दार बिगड़ बैठे कुम्भलगढ़ जाकर उदयसिंह को राजतिलक दिया, और उसे साथ लिए चित्तोड़ को कूच किया। माहोली के पास बणवीर से युद्ध हुआ, वह हार खाकर अपने कुटुम्ब सहित गुजरात की ओर भागा। कर्नल् टॉड लिखता है कि दक्षिण में जाकर वह भोंसलों के वंश का मूलपुरुष हुआ। (एक जगह तो कर्नल् टॉड ने महाराणा अजयसिंह के एक पुत्र सजनसिंह को भोंसला वंश का मूल पुरुष बतलाया और दूसरी जगह बणवीर को (देखो टॉड का ऑक्सफ़ोर्ड एडीशन जि० १ पृष्ठ ३७१)। पांच वर्ष तक बणवीर ने चित्तोड़ का राज किया और अपने नामका सिक्का भी चलाया। उसके दो लेख सं० १५६३ और ६५ के चित्तोड़गढ़ पर हैं।

११ को हुआ था। चित्तोड़ छूटने पर राणा एक बार कुम्भलमेर आया और फिर शीघ्र ही उदयपुर बसाया। अबतक भी २००० देवड़ों के लगभग इन गांवों में रहते हैं। (गांवों की विगत)—पीछोला, पालड़ी की जगह उदयपुर बसाया, आहाड़, देवारी, टींकली, लकड़वास, कलड़वास, मट्टूण, कोठड़ा, तीतरड़ी, अवाणा, अंबेरी, बेदला, रूआंव, छपरोली, लाखाहोली, वेढ़वास, चीकलवास, वड़गांव, देवाली, सुन्डरसोल, वड़ी, थूर, कवीता, वरसड़ा, नाई, बूजड़ा, सियारमा और थार। देवड़ा वल्लू उदयभाणोत—देवड़े दीवाण के चाकर हैं। पांच हजार टका रेख पाते हैं। यहां (गिरवे में) पाधर (वादी या पहाड़ों से घिरी हुई समभूमि) में राणा ने अपने नाम पर उदयपुर नगर बसाया। नगर के निकट ही माछला नाम की छोटीसी पहाड़ी है जिसके उत्तर तरफ शहर दो कोस के घेरे में बसा है। दीवाण के महल पीछोले की पाल पर और पश्चिम में तालाव के निकट ही नगर है, जिसके एक ओर माछला और दूसरी ओर सीयारमे की पहाड़ियां आगई हैं। तालाव जब पूरा भरजाता तब जल इन पहाड़ियों तक पहुंच जाता है। जल की आय माछला और सीयारमे की पहाड़ियों से है। तालाव बहुत बड़ा (लगभग ४ कोस के घेर में है) और उसमें मगरमच्छ रहते हैं। उसकी मोरी से नगर के आस पास की बहुत सी भूमि सींची जाती जिसका अच्छा हासिल आता है और वह जल आहाड़ के पास वेड़च नदी में जा मिलता है। पीछोले के पास ही दीवाण के महल और नगर है। महलों के पास पीछोले में लाखेटे (?) की जगह राणा अमरसिंह का बनवाया हुआ बादल महल और बाग है। तालाव के दूसरी तरफ राणा जगतसिंह का बनवाया हुआ 'मोहन मन्दिर[1]' है। नगरनिवासियों के जलका आधार पीछोले पर ही है, दूसरा ऐसा कोई जलाशय आसपास नहीं है। यह तालाव राणा लाखा के राजसमय में किसी वणजारे ने बन्धवाया था। (राणा उदयसिंह ने उसकी मरम्मत करवाई)। नगर में जैन तथा शैवाम्नाय के मंदिर १५ तथा २० हैं, बस्ती अनुमान बीस हजार घरों की—जिनमें २००० ओसवाल, महेसरी, हूमड़, चित्तोड़ा, नागदा, नरसिंहपुरा, और पोरवाड़ महाजनों के, घर १५०० ब्राह्मणों के, ५०० पंचोलियों भटनागरों आदि के, ६० भोजकों के,

---

(१) यह महल महाराणा जगतसिंह प्रथम के पासवानिये पुत्र मोहनसिंह ने अपने नाम पर बनवाया था।

५०० खांट भीलों के, ५००० महलवाले लोगों के, १५०० राजपूतों के, और ६००० घर दूसरी कमीन जातियों आदि के हैं। उदयसागर तालाव कोस दसके घेर में है, पाल (बन्द) ५०० गज़ लम्बी, २५० गज़ ऊंची, जिसमें से ७० गज़ पानी के भीतर, पक्की बनी हुई है। नाला ५० गज़ की ऊंचाई का १२ गज़ चौड़ा पहाड़ी को काट कर निकाला है।

बात एक खिड़िया (चारण) खींवराज ने ऐसे भी कही कि सं० १६२४ में चित्तोड़गढ़ टूटा उसके पांच दस वर्ष पहले राणा उदयसिंह ने उदयपुर बसाया था और उदयसागर भी पहले ही बनवाया था। चित्तोड़ छूटने के पीछे राणा उदयपुर में आया ही नहीं, गोगूंदे ही रहा और वहीं संवत् १६२६ में काल प्राप्त हुआ।

राणा ने हरमाड़े के मुकाम पठाण हाजीखां से युद्ध किया, जिसका वर्णन दधिवाड़िये खींवराज ने सं० १७१४ के वैशाख में लिख भेजा। राव मालदेव (राठोड़ जोधपुर का) की सेना हाजीखां पर राव पृथ्वीराज जैतावत की सरदारी में अजमेर आई, तब हाजीखां ने अपने भले आदमी राणा उदयसिंह के पास भेजकर कहलाया कि "हमको राव मारता है, हमतो रावले ही (आपके ही) होकर बैठे हैं।" पांच हज़ार सवार साथ लेकर राणा तुरन्त सहायतार्थ अजमेर आन पहुंचा। उस वक़्त सब राठोड़ों ने मिलकर राव पृथ्वीराज से कहा कि राव मालदेव के नामी नामी सुभट सामन्त पहले ही खेत पड़ चुके हैं, अब यदि अपने भी यहां काम आगये तो राज्य निर्बल पड़ जावेगा, अतः देश में जाकर पहले साथ इकट्ठा करलें तब लड़ना मुनासिब है। इस प्रकार समझा बुझा कर राठोड़ उसे पीछा मारवाड़ को लेगये[1] वह लज्जा के मारे बगड़ी की बाड़ियों के बाहर ही उतरा, गांव में न गया। राणा के साथ उस वक़्त इतने सरदार थे-राव

(१) यह हाजीखां शेरशाह सूर का गुलाम था जो पहले अलवर में रहता था। शाहंशाह अकबर के सेनापति नासिरुल्मुल्क पीरमोहम्मद सरवानी से शिकस्त खाकर वह नाड़ौली आया और फिर अजमेर में आरहा था। मारवाड़ का इलाका लूटा करता था इस लिये राव मालदेव ने उस पर चढ़ाई की थी। अजमेर के पास लड़ाई हुई जिस में राव ने हार खाई। यहां ख्यात लिखने वाले ने असली बात छिपाकर बात बनाई है। पृथ्वीराज या तो राणा से पराजित हो या भय खाकर लौट गया और राव मालदेव की भी राणा से लड़ाई लेने की हिम्मत न पड़ी।

सुर्जन (हाडा बूंदी का), राव दुर्गा सीसोदिया, राव जयमल मेड़तिया। इसके पीछे राव मालदेव ने तुरंत ही कटक जोड़ा, वह मेड़तिये राठोड़ों से द्वेष रखता था अतएव मेड़ते की ओर कूच किया। राव के प्रधान पृथ्वीराज ने बहुत कहा कि पहले अजमेर चलकर राणा से युद्ध करना चाहिये, परन्तु राव ने न माना और मेड़ते आया। मेड़तियों से लड़ाई हुई, पृथ्वीराज मारा गया, और राव हार खाकर पीछा लौटा। यह राव (मालदेव) और राणा की बात यहीं समाप्त हुई।

राणा उदयसिंह ने अपने सरदार राव तेजसिंह डूंगरसिंहोत और बालीसा सूजा को फर्माया कि तुम अजमेर जाकर हाजीखां को कहो कि हमने तुम्हें राव मालदेव के हाथ से बचाया है इसलिये तुम्हें चाहिये कि कोई चीज़ हमारे नज़र करो, अर्थात् तुम्हारे अखाड़े में रंगराय नाम की पातर है उसे हमें देदो। उन सरदारों ने राणा से अर्ज़ की कि हाजीखां भला मानस है और आफत का मारा है, दीवाण ने उस पर उपकार किया, परन्तु ऐसी बात कहलाना उचित नहीं है। राणा ने एक भी न सुनी और हठ पूर्वक उनको भेजे। उन्होंने अजमेर जाकर हाजीखां को राणा का सन्देश सुनाया। वह बोला कि मेरे पास इस समय देने को कुछ है नहीं, और पातर तो मेरी स्त्री के समान है। इसी पर राणा व हाजीखां में शत्रुता होगई। सरदारों को विदा कर हाजी ने राव मालदेव के पास अपने दो वकील भेजे और सहायता चाही। राव ने १५०० सवारों के साथ देवीदास जैतावत, रावल मेघराज, लछमण भादावत, जैतमाल जैसावत और दूसरे भी कई सरदारों को अजमेर भेजे[1]। राणा भी स्वयं दस देशपतियों को साथ लिए उदयपुर से पयान कर हरमाड़े आया, हाजीखां भी मुक़ाबले को आन पंहुचा।

---

(१) राव मालदेव और महाराणा उदयसिंह के दर्मियान मनोमालिन्य होने का एक यह भी कारण था कि मेवाड़ के सरदार झाला सज्जा का पुत्र जैतसिंह किसी कारण से महाराणा से रूठ कर राव मालदेव के पास जोधपुर जारहा था जहां उसे खैरवा गांव जागीर में मिला। जैतसिंह की बड़ी बेटी स्वरूपदेवी का विवाह राव मालदेव के साथ हुआ था, और वह चाहता था कि स्वरूपदेवी की छोटी बहन से भी विवाह करे, परन्तु जैतसिंह ने राव के इस प्रस्ताव को मंजूर न किया और उस कन्या का विवाह महाराणा उदयसिंह के साथ कर दिया। इसी झाली राणी के वास्ते महाराणा ने कुंभलगढ़ पर एक महल बनवाया। राव मालदेव कुंभलगढ़ पर चढ़ आया परन्तु हताश होकर पीछा लौटा।

उस समय फिर राव तेजसिंह और वालीसा सूजा ने अर्ज़ की कि लड़ाई न की जावे, क्योंकि पांच हज़ार पठान और हज़ार राठोड़ों को मार लेना कठिन काम है, परन्तु दीवाण ने उनकी बात न मानी, खेत बुहारा गया और अणियां बांट दीं। हाजीखां ने यह दांव खेला कि अपनी दूसरी सेना को तो आगे भेजदी और आप एक हज़ार चुने हुए सवार साथ ले एक पहाड़ी की ओट में जा खड़ा हुआ। हरोल की टुकड़ी में गोल के बीच राणा के आन उपस्थित होने की खबर पाते ही पठानों ने गोल पर धावा कर दिया। राव दुर्गा का घोड़ा कट गया, तब वह हाथी पर चढ़ बैठा। हाजीखां ने हाथी की तरफ तीर चलाना शुरू किया। एक तीर राणा के जा लगा। तब तो राणा की फौज ने पीठ दिखाई। उसके इतने सरदार खेत पड़े—राव तेजसिंह डूंगरसिंहोत, वालीसा सूजा, डोडिया भीम, चूंडावत छीतर और एक सौ दूसरे योद्धा। हाजीखां के १५० पठान मारे गए, और राव मालदेव के ४० आदमी काम आए। इस लड़ाई से मेड़ता राव के हाथ लग गया। पीछे हाजीखां पर बादशाही फौज आई तब राव मालदेव ने उसको जैतारण के गांव लोटोधा की निंबोल में रक्खा। कितनेक दिन वहां ठहर कर वह गुजरात की ओर चल दिया। हाजीखां को शरण देने के अपराध में बादशाह ने सेना सहित हुसैनकुलीखां को मारवाड़ पर भेजा था। जब वह जैतारण पहुंचा तो हाजीखां तो भाग गया और राव रत्नसिंह ने जैतारण ली।

राणा उदयसिंह ने बूंदी का राज तिलक राव सूरजमल के पुत्र राव सुरताण को दिया था परन्तु हाडोती के सरदार उससे राज़ी न थे। नर्बद हाडा का पुत्र अर्जुन तो चित्तोड़ पर (बहादुर शाह के युद्ध में) मारा गया, उसका पुत्र सुर्जन हाडा राणा का चाकर था। उसकी जागीर में १२ गांव थे, पीछे जगनेर में काम पड़ा तब वह राणा की तरफ से लड़कर घायल हुआ था इसलिये दीवाण ने उसको कुछ काल तक फूलिये का परगना भी जागीर में दिया था, फिर फूलिया खालसे होकर बदनोर का पट्टा सुर्जन को दिया गया। इसी अवसर पर राव सुरताण के उपद्रव के समाचार पहुंचे, तब राणा ने बूंदी का राजतिलक सुर्जन को दिया और उसे बड़ा विश्वासपात्र जानकर रणथम्भोर की क़िलेदारी भी उसको सौंपी।

सिरोही के राव दूदा का पुत्र मानसिंह राणा उदयसिंह के पास आनकर चाकरी में रहा था। राव दूदा के मरने पर रायसिंह का पुत्र उदयसिंह सिरोही

की गद्दी पर बैठा, परन्तु थोड़े ही समय में शीतला रोग से उसका शरीर छूट गया। इसके समाचार गुप्त रीति से पहुंचते ही मानसिंह राणा से आज्ञा लिये बिना ही चुपके से सिरोही पहुंच कर गद्दी पर बैठ गया, इसलिये राणा ने सिरोही के कुछ परगनों पर अधिकार करलेने का विचार किया था, परन्तु मानसिंह ने नम्रता पूर्वक विनती कर राणा को राज़ी कर लिया। सं० १६२८ फाल्गुण सुदि १५ को राणा उदयसिंह का गोगूंदे में स्वर्गवास हुआ[1]।

राणा उदयसिंह के पुत्र—१ राणा प्रताप, सोनगिरे अखैराज का दोहिता, अपने पिता के पीछे उदयपुर पाट बैठा। २ कन्ह—करमचन्द परमार का दोहिता, इसके वंशज कानावत। ३ परशुराम, ४ भोजराज, ५ दुर्जनसिंह, ६ रुद्रसिंह के वंशज सिरोही में, ७ नंगा जिसके नंगावत (मालवे में कहते हैं)। ८ श्यामसिंह-इसके पुत्र साहिब, और माधोसिंह जो राणा जगतसिंह को छोड़ कर बादशाही चाकर हुआ। उसको झाला हरीदास ने ताजणे के मामले में मारा, ९ जैतसिंह, १० सुरताण कल्याणमल जयमलोत के पास था, ११ वीरमदेव, १२ लूणा, १३ शार्दूलसिंह, १४ सुजानसिंह, १५ महेश, १६ जगमाल राव लूणकर्ण की बेटी धीरबाई का पुत्र। सगर, अगर, साह, पंचायण और जगमाल सगे भाई थे। जगमाल बड़ा कर्त्ता आदमी था, उसका विवाह सिरोही के राव मानसिंह की बेटी से हुआ था। सिरोही पर भाण का पुत्र राव सुरताण गद्दी बैठा (राणा

---

(१) राणा उदयसिंह जेसलमेर ब्याहने गया जिसका कोई उल्लेख टॉड साहब आदि के इतिहास में नहीं पाया जाता परन्तु एक प्राचीन गीत से इसका पता लगता है—

जेसलगिर चाढ़ संसारो जाणें, सोहड़ तरंगस करे सज ।
उदयासीह भला ओहटिया, रिपगढ़ कटकां तणी रज ॥
तो आगमण गामो सांगातण, रढ रावण मेवाड़ा राण ।
पमगां अणी दुरग पींजरिया, खत्रवट तो खड़तां खूमाण ॥
खेताहरै नत्रीठा खड़िया, रिमहर माथै पमंग रह ।
गहमह खेह घणा गूंदलिया, ससियाणा कोटजा सह ॥
महमा वढ़ी मयंक कुल मंडण, पोह अनवारां प्रभत पढ़ी ।
कटकां तणी दुयणचे कोटे, चोखी रज कांगरै चढ़ी ॥

जगमाल राणी भटियाणी का पुत्र था जिसको महाराणा उदयसिंह ने अपना उत्तराधिकारी बनाया था ।

उदयसिंहने पहले अपने पाटवी कुंवर प्रतापसिंह को अपना उत्तराधिकारी न बनाकर जगमाल को टीकेत कर दिया। राणा की मृत्यु के पश्चात् जगमाल गद्दी बैठा, परन्तु सलूंबर के राव ने उसको अधिकारी न समझ तत्काल ही राज विमुख कर दिया और प्रताप को पाट बिठाया। जिस पर नाराज़ हो जगमाल बादशाह अकबर की सेवा में चला गया उन दिनों में सिरोही का देवड़ा राव सुरताण बादशाह से बाग़ी होरहा था इसलिये बादशाह ने सिरोही का आधा राज्य जगमाल को प्रदान किया। उसने अपना अधिकार वहां जा जमाया। एक दिन उसकी राणी ने ईर्ष्या वश पति से कहा कि मेरे देखते मेरे पिता के महल में दूसरों का रहना असह्य है। तिसपर राव सुरताण की अनुपस्थिति में जगमाल ने धावा कर महल लेना चाहा परन्तु सफलता न हुई, तब सहायतार्थ बादशाह की ख़िदमत में पहुंचा)। बादशाह ने गिरनार सोरठ की सूबेदारी पर महाराज रायसिंह (बीकानेरी) को भेजे थे, जाता हुआ मार्ग में रायसिंह सिरोही ठहरा। राव सुरताण को बीजा देवड़ा हरराजोत ने निकाल दिया था अतः सुरताण रायसिंह से मिला और सब हक़ीक़त कही। राजा ने राव की सहायता कर उसे राज पीछा दिलाया, परन्तु आधी सिरोही बादशाह के भेंट कराली। बादशाह ने वह राज्य जगमाल को दे दिया। वह फर्मान लेकर सिरोही आया, राव सुरताण ने राज बांट दिया, बीजा देवड़ा जगमाल से आन मिला और उसे बहकाने लगा कि तू राणा सांगा का पोता और राव मानसिंह का जमाई है; सुरताण कौन है, सारी सिरोही क्यों नहीं ले लेता? जगमाल ने दो एक दांव घाव महलों पर अधिकार करलेने को किये परन्तु महल हाथ न आये, लज्जित होकर फिर दर्गाह गया और फर्याद की, तब बादशाह ने (मारवाड़ के) राव चंद्रसेन के पुत्र रायसिंह को सोझत देने का क़रार करके जगमाल की सहायता पर भेजा। उनके सिरोही पहुंचने पर राव सुरताण नगर छोड़ कर पहाड़ों में जा छिपा। इन्होंने भी पीछा किया। सं० १६४० में दताणी के मुक़ाम लड़ाई हुई, जगमाल रायसिंह और सिंह कोली तीनों मारे गये। जगमाल का जन्म सं० १६११ आषाढ़ वदि ५ रविवार का था। उसके पुत्र १ रामसिंह, २ शामसिंह। शामसिंह का बेटा मनोहर। ३ रूपसिंह देवीदास जैतावत का दोहिता, और ४ रुद्रसिंह थे।

(१७) सगर राणा उदयसिंह का, जगमाल का सगा भाई। जब राव सुरताण ने जगमाल को मारा तो सगर ने जाना कि हमतो दीवाण की आज्ञा

में हैं, वे अपने भाई का वैर राव से लेवेंगे, परन्तु दीवाण ने कभी राव को उलहना तक न दिलाया और उल्टी उससे प्रीति जोड़कर अपनी पुत्री उसको ब्याहदी। सगर को इससे बहुत सन्ताप हुआ और वह, (कुंवर मानसिंह कछवाहा द्वारा) दर्गाह (बादशाह जहांगीर की सेवा में) चलागया। मेवाड़ की सब बात उसने बादशाह को अर्ज़ की और उसे विजय करलेना सहज बताया। राणा अमरसिंह पर आफत आई, सगर को बादशाह जहांगीर ने राणा बनादिया और चित्तौड़ व मेवाड़ सब उसको बख़्श दिये। इसके अतिरिक्त नागोर अजमेर आदि और भी परगने दिये और बड़ी कृपा जतलाई। उन्नीस वर्ष तक सगर राणा रहा और चित्तौड़ पर राज किया। बड़ा ठाकुर हुआ। सं० १६७२ (सन् १६१३ ई० सं० १६७० वि० होना चाहिये) में बादशाह जहांगीर आप अजमेर आन बैठा और शाहज़ादा खुर्रम उदयपुर आया, तब राणा अमरसिंह उससे मिला और एक हज़ार सवार से सेवा करना स्वीकारा, मेवाड़ पीछी राणा अमरसिंह को दीगई और सगर को रावत पदवी और पूर्व की तरफ जागीर दी। उसने पुष्करजी में वराह का मन्दिर बनवाया। उसका जन्म सं० १६१३ वि० भाद्रपद वदि ३ का था[1]।

सगर के पुत्र (१) इंद्रसिंह शेखावतों का भांजा सगर के जीते जी ही मरगया। (२) मानसिंह रावताई पाया जन्म स० १६३६, (३) मोहनसिंह कटार खाकर मरा

मानसिंह के पुत्र			मोहनसिंह के पुत्र		
हरीसिंह	मोकमसिंह	आसकर्ण	वैरीसाल	रघुनाथ	मदनसिंह

(४) हरीराम राजा रायसिंह के चाकर रहा, इसका पुत्र फतहसिंह। (५) जगतसिंह विट्ठलदास गौड़ की सेवा में काम आया।

---

(१) बादशाह जहांगीर से मेवाड़ का राज्य पाकर भी सगर स्वामिभक्त सीसोदियों को सेवा में न ला सका, बादशाह आप लिखता है कि गढ़ में बैठे रहने के सिवा राना सगरा से कुछ भी न बनपड़ा। कर्नल टॉड लिखता है कि एक बार बादशाह ने भरे दरबार सगर को झिड़का जिसपर वह कटार खाकर मरगया। इस झिड़की का कारण शायद यह हो कि राणा अमरसिंह पर चढ़ाई करने के वक्त सगर ने बादशाह के संमुख राणा को आधीन बनादेने की बात कही थी, परन्तु वह परास्त और लज्जित होकर पीछा लौटा था। पुष्कर तीर्थ में वराहजी का मन्दिर सगरा का बनवाया हुआ है जिसमें एक लाख रुपया खर्च हुआ था, शाहंशाह जहांगीर जब अजमेर से पुष्कर गया और उसने इस मन्दिर और मूरत को देखा तो हुक्म दिया कि इस बुरी मूरत को तोड़ कर तालाब में डाल दो।

(१८) अगर—बादशाही नौकर था।

(१६) जसवन्त—जोधपुर रहा, सोभत की सींव में १२ गांव से सिणला पट्टे में दिया। सं० १६७३ में वे गांव छोड़ दिये और बुरहानपुर में महावतखां के पास जारहा। सं० १६६० में पीछा जोधपुर आया तब ११ गांव सहित धोलहरा का पट्टा पाया, परन्तु महाबतखां ने (जोधपुर के महाराज को) कहलाया कि इसे मत रक्खो, इसलिये वहां से विदा कर दिया। जसवन्त का पुत्र सबलसिंह सं० १६७६ में जोधपुर में था और जालोर पर्गने में ४ गांव कुरडा सहित उसकी जागीर में थे।

(२०) साह (या सीहा) जयसिंह का मामा था, साह का पुत्र मथुरादास (इसके वंशज छापरेड़ में हैं)।

(२१) पंचायण, (इसके वंशज जुलोला खजूरी हाजीवास व पंचाणपुर में हैं)।

(२२) कल्याणदास।

(२३) किशनसिंह।

(२४) बल्लू—चूंडावतों के वैर में मारा गया। उसका पुत्र सूरसिंह, और सूरसिंह का बेटा भीमसिंह था।

(२५) शक्तिसिंह—बादशाही सेवा में था, इसके १२ पुत्र बहुत अच्छे राजपूत हुए और परिवार बहुत बढ़ा। शक्ता की सन्तान की आज बड़ी शाखा है जो शक्तावत कहलाती है[1]।

(नीचे केवल वेही नाम दिये हैं जिनके साथ विवरण मिलता है। पूरी वंशावली के वास्ते शक्तिसिंह के पुत्रों का वंशवृत्त देखो)।

(१) भाणा शक्तावत, मोटेराजा उदयसिंह की बेटी राजकुंवरी व्याहा। भाणा के पुत्र—१ शामसिंह, २ पूरा, ३ मानसिंह, ४ गोकुलदास, ५ केशोदास।

---

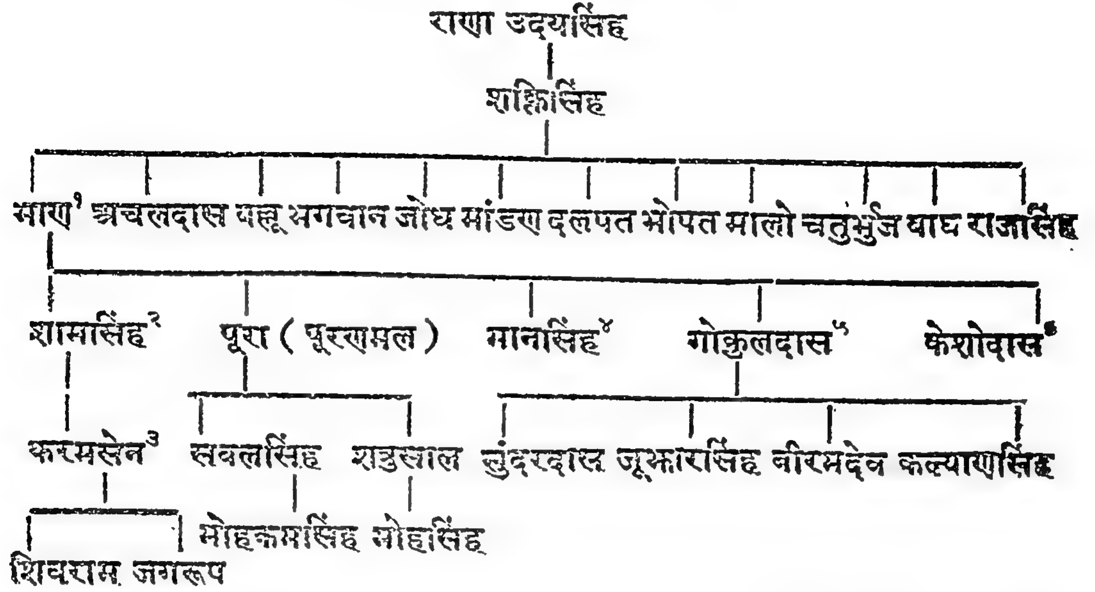
(१) राणा उदयसिंह के ऊपर कहे हुए पुत्रों में से बीरमदेव के वंश में लांगच, श्रांबा, पूंख्या, हमीरगढ़, खैराबाद, महुवा, सणवाड़, मंडप्या और चौगामड़ी आदि मेवाड़ के जागीरदार हैं। इनके सिवा रायसिंह और माछल नामी पुत्र भी थे। एक पुत्री हरकुंवरी थी जिसका विवाह सिरोही के राव रायसिंह के पुत्र उदयसिंह के साथ हुआ था।

(२) अचलदास—बेगम पट्टे, रावत कहलाता है। अपने हाथ से अपना गला काटकर मरा। इसके पुत्र—रावत केसरीसिंह, रावत नारायणदास, राणा सगर का नौकर, सगर ने रावताई दी थी।

(३) बल्लू—राणा अमरसिंह ने ऊंटाले में (बादशाही सेना से) युद्ध किया तब काम आया। इसके पुत्र-लाड़खान, कम्मा, खंगार, रामचन्द्र और सांवलदास।

(४) भगवान, राणा की दी हुई बूढल पट्टे। (५) जोध शक्तावत बड़ा शूर-वीर बांका मजबूत था, राणा का चाकर, जीरण के थाने पर रहता था। देवलिये का स्वामी रावत भाणा मंदसोर के शाही फौजदार (सैय्यद मक्खन) को साथ ले २००० सवार व दो हजार पैदल की भीड़भाड़ से जोध पर चढ़ आया। जोध के पास केवल ६० अश्वारोही थे। खुले मैदान लड़ाई ली और फौजदार और रावत भाणा दोनों को मार कर जोध खेत पड़ा। इसके पुत्र भाखरसी, नाहर-खान और अर्जुन।

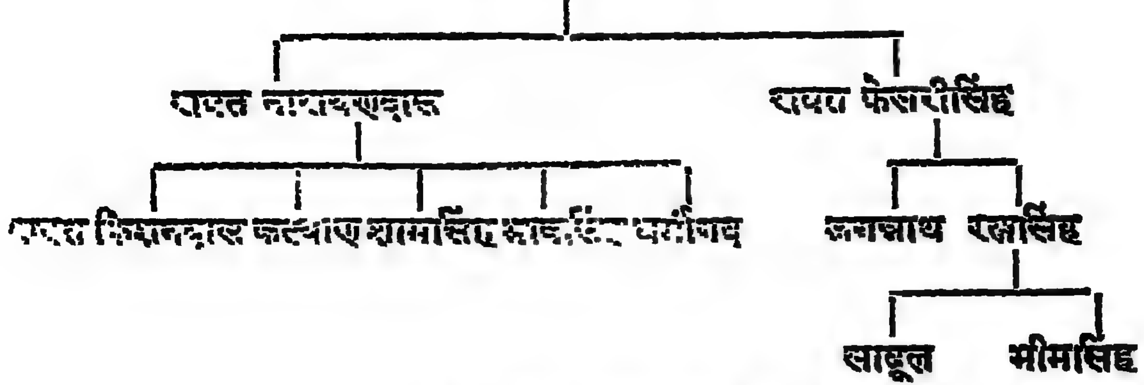
शक्तावतों का वंश वृक्ष ।



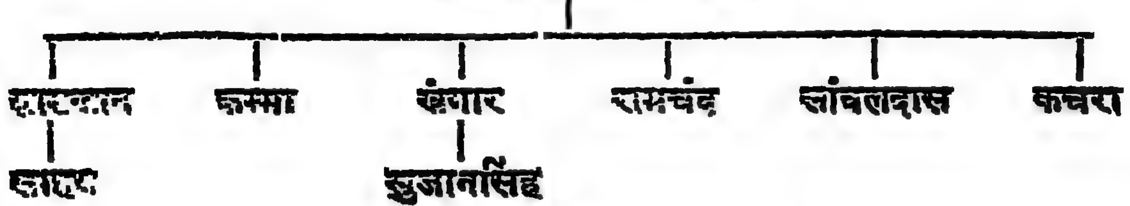
(नीचेके नोटों में नैणसी के लेख का ही भाषांतर है)

(१) मोटे राजा (जोधपुर का उदयसिंह) की पुत्री राजकुमारी ब्याही। (२) महाराज जसवंतसिंह का सगा मामा था। (३) जोधपुर निवास, चंडावल पट्टे। (४) राजा भीम (सीसोदिया) का चाकर, भीम के साथ मारा गया। (५) मोटे राजा (उदयसिंह राठोड़) का दोहिता, राजा भीम (सीसोदिया) का नौकर था। जब भीम युद्ध में (खुर्रम या शाहजहां के पक्ष में पर्वेज़ से लड़कर) मारा गया तब गोकुलदास भी (भीम के साथ में) गहरे घाव खाकर रणखेत में पड़ा था, राजा गजसिंह (राठोड़ जोधपुर के) ने उसे उठाया, घाव बंधवाये, और गांव राहिस रु० २१०००) (वार्षिक आय की) जागीर में देकर अपने पास रक्खा। सं० १६८४ में जब खुर्रम तख्त पर बैठा तब गोकुलदास उसकी सेवा में गया। बड़ा दातार और बड़ा जूझार था। मौत से मरा। (६) मोटे राजा का दोहिता और राजबाई भटियाणी उसकी नानी थी। कितनेक दिन उसके पास जोधपुर में रहा। गांव सरेचां मोटे राजा ने पट्टे में दिया था।

(२) अचलदास शक्तावत का वंश



(३) बल्लू शक्तावत का वंश



(४) भगवान शक्तावत (इसका वंश मूल में नहीं दिया)

(५) जोध शक्तावत का वंश



(६) मांडण शक्तावत (इसका वंश मूल में नहीं दिया)

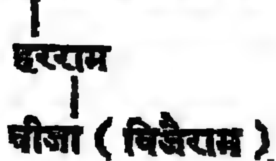
(७) दलपत शक्तावत का वंश



(८) भोपत शक्तावत का वंश



(९) माला शक्तावत का वंश



(१०) चतुर्भुज शक्तावत का वंश



(११) बाघ शक्तावत का वंश
|
जगमाल
|
मोहन
|
कान्ह

(१२) राजसिंह शक्तावत का वंश
|
कीता
|
सूरसिंह

राणा प्रताप राणा उदयसिंह का—सोनगिरा अखैराज का दोहिता, सं० १५९६ जेष्ठ सुदि ३ रविवार को जन्मा था। कछवाहा मानसिंह को कुंवर पदे में अकबर बादशाह ने गुजरात भेजा तब चित्तौड़पति राणा प्रताप ने सोनगिरे मानसिंह अखैराजोत और डोडिये भीम सांडावत को उसके पास भेज बहुत कुछ शिष्टाचार दिखलाया था। जब लौटता हुआ मानसिंह डूंगरपुर आया तो वहां रावल सहसमल ने उसका अतिथि सत्कार किया। वहां से सलूंबर पहुंचा जहां रावत रत्नसिंह के पुत्र रावत खंगार ने महमानदारी की। राणाजी उसवक़्त गोगूंदे में थे। रावत खंगार (शक्तावत) ने कुंवर मानसिंह की सब रीति भांति और रहन सहन का निरीक्षण कर जाना कि इसकी प्रकृति एक ही प्रकार की (अर्थात् यवनों से मिलती जुलती, बन्धन रहित व स्वार्थी) है, तब रावत ने राणाजी को कहालाया कि यह मनुष्य मिलने के योग्य नहीं है, परन्तु राणा ने उसकी बात न मानी। गोगूंदे से आकर (उदयपुर के पास) मानसिंह से मिले और उसे भोजन दिया। जीमने के समय विरस हुआ[1]। मानसिंह ने दर्गाह जाकर राणा पर मुहिम (बादशाह से) मांगी और ४०००० सवार ले चढ़ आया। जब निकट पहुंचगया तो राणा ने पूरबिया दुरस परबतसिंहोत और सीसोदिये नेता भाखरोत को गुप्तचरके तौर भेजे। मानसिंह के कटक के डेरे बनास नदी के तट पर गांव मोलेला में हुए और राणा गांव लोहसींग में आन कर उतरा जो उदयपुर से ६ कोस उत्तर दिशा में है। दोनों अनियों के बीच तीन कोस का

(१) प्रसिद्ध है कि भोजन के समय राणा नहीं आया मानसिंह ने कारण पूछा तो राणा के सर्दार ने पहले तो कहा कि कुछ तबियत ठीक नहीं है, परन्तु जब मानसिंह ने ताने व क्रोध के साथ कुछ शब्द कहे तो उत्तर मिला कि तुर्कों को बहन बेटियां ब्याहने वाले के साथ राणाजी भोजन नहीं करसक्ते। इसपर बिना जीमेही मानसिंह उठकर चलागया और वह रसोई भी कुत्तों को खिला दी गई।

अन्तर था, उस वक़्त मानसिंह एक हज़ार सवार लिये शिकार खेलता हुआ राणा के डेरों से कोसेक की दूरी पर आगया और उसकी सेना दो कोस पीछे रही। तब राणा के गुप्तचरों ने उसको इस अवस्था में देख मनमें विचारा कि यह घात बहुत अनुकूल है, तुरन्त राणा को जाकर अर्ज़ की कि जैसे बैठे हो वैसे ही चढ़ चलिये, मानसिंह अभी भली घात में आगया है। चालीस सहस्र सैन्य पीछे छोड़कर केवल एक हज़ार सवार साथ लाया है। राणा ने कहा कि अहोभाग्य, अभी मारलेते हैं, भागकर कहां जायगा। ऐसा कह कर सवार होने ही को था, परन्तु झाला बीदा ने रोक दिया (बीदा सादड़ी के राज सुलतान झाला का पुत्र था)। दूसरे दिन बनास तट पर खमणोर गांव के पास युद्ध हुआ (प्रसिद्ध हल्दी घाटी की लड़ाई जो सम्वत् १६३३ में हुई थी)। राणा के पास नौ दस हज़ार सवार थे। कछवाहे ने विजय लाभकिया और राणा लड़ाई हारगया[1]।

राणा प्रताप के पुत्रः—

१ राणा अमरसिंह पाटवी। २ शेखा-इसका बेटा चतुर्भुज जोधपुर रहा, सं० १६६६ में सिवाणे (पर्गने) का करमावस गांव ६ गांवों के साथ पट्टे में दिया गया था। ३ कल्याणदास। ४ कचरा (कहीं प्रचुर भी लिखा है)। ५ सहसा (सहसमल) बड़ा ठाकुर हुआ, आपत्काल में राणा अमरसिंह की अच्छी चाकरी की। सहसा का पुत्र भोपत बड़ा दातार था और राणा का भेजा हुआ ६ हज़ार आदमियों से दर्गाह (बादशाही) में चाकरी देता था। और दूसरा पुत्र केसरीसिंह (जिसके वंशज धरियावद के जागीरदार हैं)। ६ पूरा (पूरणमल), जोधपुर रहता था, सं० १६६४ में मेड़ते का गांव और सं० १६६६ में ढाहा पांच गांवों सहित पट्टे में पाया। (इसके वंशज पूरावत मंगरोप, गुरलां, गाडरमाला और आरज्या में हैं)। ७ जसवन्त, ८ हाथी, ९ रामा, १० माना, ११ गोपालदास १२ चन्दा (चन्द्रसिंह), १३ सांवलदास, १४ करमसी, और १५ भगवान।

---

(१) अपनी वंश परंपरा की उज्वल कीर्ति और अपने देश की स्वतंत्रता को स्थिर रखने के लिये अकबर जैसे सम्राट से बराबर लड़ाइयां लेने, सारे सांसारिक सुख को लात मार अपने प्राणों तक की भी पर्वाह न करने, और घोर विपत्तियां सहते हुए भी स्वधर्म में निमग्न रहने वाले महाराणा प्रताप जैसे शूरवीर संसार में थोड़े ही हुए होंगे। प्रताप का नाम भारत में प्रातःस्मरणीय हो रहा है। उनकी कार्यवाहियों का सविस्तर वृत्तांत मैंने

राणा अमरसिंह—सं० १६१६ चैत्रशुदि ७ का जन्म, पूरबिये पंवारों का भाजा था। पहले नौ वर्ष तो विपत्ति सही और बादशाह जहांगीर से कई लड़ाइयां लड़ी। अकबर के समय में जब राजा मानसिंह उदयपुर में ठहरा हुआ था, राणा (अमरसिंह) ने मालपुरा लूटा, फिर बादशाह जहांगीर अत्यंत हट पर आया। सगर बड़ा आसिया होकर चित्तोड़ का स्वामी बनगया, देश के कितने ही राजपूत उससे जामिले और रहे सहे भी साथ छोड़ने पर उतारू होगये। बादशाह जहांगीर ने अब्दुल्लाखां को शाहज़ादे खुर्रम के साथ उदयपुर भेजा। राणा से उदयपुर छूटा और वह चावण्ड के पहाड़ों में जारहा। वहां भी अब्दुल्ला जा पहुंचा और वह स्थान भी छोड़ना पड़ा। तब राणा को बड़ा पश्चात्ताप हुआ। एक दिन उसने भीम को कहा (यह भीम राणा का पुत्र था) कि भीम चावण्ड के मगरों की बड़ी ठौड़ अपने से छुड़ाली है, मुझे उदयपुर छूटने का इतना खेद नहीं जितना इस स्थान के छूटने से है। इसके छूटते छूटते यदि एक भी रातीवासा (रात्रि को छापा मारना) अब्दुल्ला के साथ न किया तो बहुत अपकीर्ति होगी। भीम ने तसलीम कर अर्ज़ की 'अवश्य दीवाण!' अब्दुल्ला से आज वह युद्ध करूं कि लड़ता लड़ता उसकी ड्योढ़ी तक पहुंच जाऊं। यह ख़बर अब्दुल्ला के पास पहुंचने पर उसने बहुत सी सेना और उमरावों को अपनी देहुड़ी पर नियत कर दिये। दूसरे दिन घड़ी ग्यारेक दिन चढ़े भीम विदा हुआ और पहले उन मेवाड़ियों से लड़ाई ली जो अपने स्वामी का साथ छोड़कर शत्रु से जा मिले थे। फिर आधीरात गये बादशाही सेना पर छापा मारा। पहले तो बलपूर्वक बढ़ता और जो सन्मुख हुआ उसे काटता चला गया, जिससे शत्रु के शिविर में के कई घोड़े और राजपूत मारे गये। अन्त में दो

अपनी पुस्तक 'राजस्थान रत्नाकर' भाग २ में लिखा है, यहां केवल राजपूताने के सुप्रसिद्ध कवि आडा दुरसा कृत कवित्त उनके मरसिये का दिया जाता है—

अश लेगो अणदाग, पाग लेगो अणनामी।
गो आडा गवड़ाय, जिको बहतो धुर वामी॥
नवरोजे नहं गयो, न गो आतसां नवल्ली।
न गो झरोखा हेट, जेथ दुनियाण दहल्ली।
गहलोत राण जीती गयो, दसण मूंद रसना डसी।
नीशास मूक भरिया नयण, तो मृत साह प्रतापसी॥

सहस्र राजपूतों से भीम ड्योढ़ी पर जा पहुंचा। वहां पहले ही सब सावधान थे। घमसान लड़ाई हुई, तलवारों की झोंक उड़गई (अर्थात् खूब तलवार चली)। बादशाही सेना के पचास साठ बड़े सर्दार मारे गए और भीम के भी २० तथा पचीस योद्धा खेत रहे! देहुड़ी तक तो पहुंचा परन्तु आगे न बढ़ सका, क्योंकि यहां शस्त्रबंद शूरवीर कसे सजाए तैयार खड़े थे। भीम के एक दो लोह लगे और उसके घोड़े का पग कट गया, तब दूसरे घोड़े पर चढ़कर वह लौट पड़ा। दीवाण नाहरमगरे में थे, जाकर मुजरा किया और रात के युद्ध की बात कही। सुनकर दीवाण बहुत प्रसन्न हुए और बड़ी प्रशंसा के साथ कहा कि शाबाश भीम! खूब झगड़ा किया। तदुपरान्त च्यार मास तक अब्दुल्ला ने दीवाण की सेना पर धावा न किया। गीत—

खितलागा वार विन्है खूंदाळम, सूतो अर्णी सनाहां साथ।
थापै खुरम जेहड़ा थाणा, भीम करै तेहड़ा भाराथ॥
हुवो प्रवाड़ां हाथ हिंदुवां, असुर सिंघार हुवै आराण।
साह आलम सूकै सहिजादो, रायजादो थापलियो राण॥
मंडियो वाद दिली मेवाड़ां, समहर तिको दिहाड़े सींव।
भवसन पैठो किसे भाखरे, भाखर किसे न बड़ियो भींव॥
आरंभजाम अमरधर ऊपर, लड़ै अमर छळतो पलंग।
आथड़ियो घटियो असुरायण, खूमाणों मांजयो खग[1]॥

---

(१) भीमसिंह पीछे मेवाड़ की जमीयत का अफ़सर होकर बादशाही सेवा में रहता था। बादशाह जहांगीर ने उसे राजा की पदवी, मनसब, और टोडे का पर्गना जागीर में दिया था। वहीं बनास नदी के तट पर एक नगर बसा कर भीम-सिंह ने राजमहल का प्रासाद बनवाया। पीछे उसे महाराजा की पदवी और पंच हज़ारी मंसब मिला। गुजरात की, गोंडवाने की और दखन की मुहिमों में महाराजा भीम शाहज़ादे खुर्रम के साथ रहा था और उसका इतना विश्वासपात्र होगया कि ज़ब उसने अपने पिता से बग़ावत की तो महाराजा भीम को सेना सहित अपने भाई पर्वेज़ की जागीर का नगर पटना लेने को भेजा, और भीम ने उसे विजय कर वहां अधिकार जमा किया। झांसी के पास जब सं० १६८३ वि० में बादशाही सेना का खुर्रम के साथ युद्ध हुआ तब भीम शाहज़ादे की सेना का हिरोल था। शाहज़ादे का तोपखाना छिन गया। दर्याख़ां पठान जो बाज़ू पर था भाग निकला और दूसरे लोगों ने भी पैर छोड़ दिये, उस वक़्त भीमसिंह ने अपने राजपूतों सहित बादशाही सेना पर आक्रमण किया। आप पापियादा ढाल तलवार

संवत् १६७१ में बादशाह जहांगीर आप अजमेर आया और शाहजादे खुर्रम को (सेना देकर) उदयपुर भेजा। राणा अमरसिंह खुर्रम से गोगूंदे में मिला और एक हज़ार सवार से (बादशाही) चाकरी देना क़बूल किया। बादशाह ने मेवाड़ पीछा राणा को दिया और सगर को रावताई देकर पूर्व की तरफ जागीर दी। राणा का मन्सब ५०००) ज़ात पांच हज़ार सवार का किया।

संवत् १७११ में मांडलगढ़ और वदनोर के पर्गने ज़ब्त कर लिये थे वे पीछे दिये। मांडलगढ़ २०००००) (?) का।

संवत् १६६४ में बादशाह शाहजहां ने फूलिये का पर्गना ज़ब्त कर लिया'। नीमच चित्तोड़ से १५ कोस गांव २४५ सहित २२५०००) का। इतने परगने पीछे दिये गये जीहरण (जीरण) गांव १२ देवलिये के पास, वसाढ मंदसोर के पास, जिसको सं० १६६४ में रावत केसरीसिंह को मारकर जांनिसारखां ने ले ली थी। भैंसरोड़ १२४ गांव सहित, जंगल पहाड़ की जगह। रामपुरे के पास गांव १२ सहित 'सुणोर' जो सं० १६६४ में ज़ब्त की गई थी। और हंसवहाला भी सं० १७१५ में दिया। सं० १६६४ में डूंगरपुर ज़ब्त करलिया गया था वह भी सं० १७१५ में ओरंगज़ेब ने पीछा दिया। रावत जसवंतसिंह को मारने के कसूर में देवलिया पीछा लेलिया। चित्तोड़ से २२ कोस बूंदी की सीमा से मिलता हुआ बेगूं का

पकड़े शत्रुदल को काई के समान काटता पर्वेज़ के हाथी तक जा पहुंचा और पर्वेज़ की सिपाह ने उसे घेर कर मार लिया। बर्छे व तलवार के सात घाव कारी खाकर खेत पड़ा, परन्तु प्राणान्त होने तक खड्ग हाथ से न छोड़ा। साक्षी का गीत—

इस्या रूपसूं भीम खग वाहतो आवियो, विषम भारत तणी वणी वेळा।
आज दळ पैद गजसिंहसूं भेलिया, भाज गजसिंह जयसिंह भेळा॥
खत्रवट प्रगट अमेरसरो खेलतो, ठेलतो ठाट रहियो समर ठांय।
मार कूरम दिया कमधजां दळ मंही, मार कमधां दिया कूरमां मांय॥
असंख दळ दिली राउजाड़तो, समर भीमेण दीठो सवाईं।
घेंच मंडोर आंबेर सहं घातियो, घेंच आंबेर मंडोर मांही॥
भीम सांगाहरो भड़ां करतो भसम, भीषम आवसावरत खग उजाळो।
असुरे सुरे घणो साथो पटक, कटक मर मारियो नीठ काळो॥

(१) यह पर्गना मेवाड़ में से महाराणा अमरसिंह के एक पुत्र सूरजमल के बेटे सुजानसिंह को बादशाह शाहजहां ने दिया था, क्योंकि सूरजमल महाराणा को छोड़कर बादशाही चाकरी में चला गया था। उसके वंशज शाहपुरा वाले हैं।

परगना १०००००) की रेख का ६४ गांव सहित दिया। बांसवाड़ा एकवार उतार लिया था, अब तो राणा के (अधीन) है। संवत् १६७६ में उदयपुर में राणा अमरसिंह काल प्राप्त हुए।

राणा अमरसिंह के पुत्र—१ कर्णसिंह पाटवी, २ अर्जुनसिंह, देवड़ा बीजा का दोहित्र, सदा राणा की चाकरी में रहा, ३ सूरजमल, जिसके पुत्र—सुजानसिंह बादशाही चाकर, फूलिया पट्टे में पाया; वीरमदेव भी बादशाही नौकर था। ४ राजा भीम (टोडे का) बड़ा राजपूत हुआ, राणा के आपत्काल में ठौड़ ठौड़ शाही सेना से लड़ाइयां लीं, फिर शाहज़ादे खुर्रम की चाकरी में रहा, सं० १६७६ में राजा की पदवी पाया और मेड़ता जागीर में मिला। बग़ावत में खुर्रम के साथ रहा। सं० १६८१ कार्तिक सुदि...पूर्व में कुंडस नदी पर शाहज़ादे पर्वेज़ और महाबतखां के साथ खुर्रम की लड़ाई हुई वहां भीम काम आया। भीम के पुत्र-किशनसिंह, राजा रायसिंह सं० १६६५ में राजाई पाया, पातावत नारायणदास का दोहिता था। ५ बाघसिंह अमरसिंघोत सं० १६६५ में एकवार महाराजा जसवन्तसिंह के पास आया था, गांव २० जागीर में देते थे परन्तु वह रहा नहीं। उसका पुत्र सबलसिंह बादशाही चाकर हुआ, वह पृथ्वीराज के पुत्र बाघ का दोहिता था। ६ रत्नसिंह-राणा अमरसिंह के आपत्काल में अचलदास का पुत्र, शक्तिसिंह का पोता, रावत नारायणदास राणा सगर से जामिला, जब कि वह कई परगनों समेत चित्तोड़ पर आधिपत्य रखता था। सगर ने रावत का बहुत आदर कर ६४ गांव से बेगम और ६४ गांव सहित रत्नपुर की जागीर दी। जब राणा अमरसिंह की बादशाह (जहांगीर) के साथ संधि हुई तो सगर से चित्तोड़ उतरी और वह वहां से चला गया, राणा अमरसिंह का वहां अधिकार हुआ तब उसके आदमी बेगम गये, परन्तु रावत नारायणदास ने वह जागीर उनके सुपुर्द नहीं की, इसपर दीवाण ने रावत मेघ को बेगम पर बिदा किया, (यह मेघसिंह सलूंबर के राव खंगार के छोटे पुत्र गोविन्ददास का बेटा था)। उसने अपने आदमी भेजकर नारायणदास को कहलाया कि श्री दीवाण अपने माता पिता हैं, उनसे अपना ज़ोर नहीं उन्होंने मुझे भेजा है, अपना घर एक ही है, अतएव मेरे पहुंचने के पूर्व ही तुम गांव छोड़ देना। रावत भी समझ गया और बेगम छोड़कर बाहर एक गुढा (छोटा गांव) बना वहां जारहा। मेघ ने परगने पर अधिकार किया तब राणा ने चहुवाण बल्लू को बेगम

का मुजरा करादिया। रावत मेघ के भाइयों ने यह समाचार उसके पास भेजे। वह बहुत खिजा और कहने लगा कि "मरने के वक़्त तो मुझे नारायणदास के संमुख किया और बधारा (वृद्धि या सुख) बल्लू को दिया, हमको तो दीवाण ने चाकर ही न समझे। बेगम या तो शक्तावतों की या चूंडावतों की, चहुवाण कौन हैं जो उसे लेवें"। मेघ सीधा उदयपुर आया और पट्टा छोड़ दिया। उस वक़्त कुंवर कर्णसिंह ने ताने के साथ कहा कि ऐसा अहंकार रखते हो तो बादशाह के पास जाकर मालपुर पट्टे में कराओ। तत्काल अपना सामान दुरुस्त कर मेघ बादशाह जहांगीर की सेवा में चला गया। बादशाह ने उससे राणा का वृत्तान्त पूछा, उसने सब बात अर्ज़ की, जिस पर प्रसन्न होकर बादशाह ने मालपुर उसे जागीर में देदिया (मेघ के काले वस्त्रों को देखकर बादशाह ने उसे "काली मेघ" की पदवी दी थी)। कुछ काल बीता कि राणा ने कुंवर कर्णसिंह को दरगाह भेजा और यह भी समझा दिया कि जैसे बने वैसे मेघ को मनाकर लेते आना। कुंवर मालपुर गया, मेघ ने अगवानी की और गोठ दी। भोजन करने को बैठे, थाल परोसा गया, परन्तु कुंवर हाथ खींच कर बैठा रहा (भोजन न किया)। मेघ ने कारण पूछा तो कहा कि तुमको दीवाण ने याद फर्माया है, मेरे साथ चलो तो भोजन करूं। उसने अर्ज़ की कि हम तो आपके चाकर हैं, आपही ने हमको बिसार दिये, अब जो आपकी आज्ञा होगी वही करूंगा, परन्तु बादशाहजी से रुख़सत लेकर आऊंगा। फिर बादशाह से आज्ञा मांगकर मेघ राणा के पास हाज़िर हुआ, राणा ने बहुत मया की और मुंह मांगा पट्टा उसे प्रदान किया। चौरासी गांव से बेगम, ८४ गांव से रतपुर, ४२ गांव से गोठीलाव (गोथलां), १२ गांव से दीलोता, १२ गांव बोसिया पीपलिया, और तीन गांव उदयपुर के निकट घास लकड़ी (खड़लाकड़) को दिये। ऐसी जागीर मेवाड़ में पहले किसी को न दीगई थी। अढ़ाई लाख टकों की रेख सुनी जाती है।

तत्पश्चात् शक्तावतों और रावत मेघ के दर्मियान एक उपद्रव उठा। रावत के बेगम पट्टे थी, उसके एक गांव में नाथा का बेटा पीथा नाम का शक्तावत रहता था। उसके साथ मेघ का कुछ मनोमालिन्य होजाने से मेघ ने उसको कहलाया कि तू मेरा गांव छोड़ दे, परन्तु उसने छोड़ा नहीं, तब रावत ने वह गांव जला दिया। उस वक़्त रावत नारायणदास (अचलावत) के बादशाह की दी हुई भिणाय जागीर में थी। पीथा नारायणदास के पास जाकर पुकारा कि

हमारे में तुमही मुखिया हो, तुम्हारे होते मेघ ने मेरी यह दशा करदी है। नारायणदास ने खेड़ (लड़ने वाले आदमी) इकट्ठी की और राठोड़ जगमालोत और आपके भाई बन्धु चंद्रावत सीसोदियों के १२०० सवार साथ लेकर बेगम पर चढ़ आया। इससे एक दो दिन पहले ही रावत मेघ बेगम से पांच छः कोस की दूरी पर किसी गांव में विवाह करने को गया था जहां उसने इस विषय की कुछ उड़ती सी ख़बर सुनी। उसका पुत्र नरसिंहदास पीछे घर में था। नारायणदास ने यह समझ कर, कि मेघ घर ही पर है, अपने दो आदमियों को आगे बेगम भेजे और उनको कहदिया कि तुम जाकर मेघ को कहना कि बाहर आवे। पीछे से वह स्वयं भी आन पहुंचा। उन आदमियों ने जाकर पूछ ताछ की तो पता लगा कि मेघ तो विवाहने गया है और नरसिंहदास घर में है। उसी को उन्होंने नारायणदास का संदेशा जा सुनाया। सुनते ही नरसिंह भयभीत होगया और गढ़ का द्वार बन्द कर भीतर बैठ रहा। शक्तावतों ने बेगम के गिर्द अपने घोड़े फिराये और सींव में बंधे हुए मेघ के एक हाथी को लेकर नारायणदास भिणाय लौट आया। दूसरा कुछ भी बिगाड़ न किया। जब मेघ पीछा आया और उसने सारे समाचार सुने तो बड़ा लज्जित हुआ, अपने पुत्र पर बहुत क्रोधित हो उसे घर से निकाल दिया और कहा कि मुझे मुंह मत दिखला! फिर चूंडावत सरदारों को निमंत्रण भेज बुलवाये और बहुतसा साथ इकट्ठा कर पांच सहस्र सवारों की भीड़भाड़ ले रावत मेघ बेघम से एक मंज़िल आगे बढ़ा। इधर भिणाय में शक्तावत भी मरने मारने को तैयार होगये। अनायास मेघ के मन में विचार उत्पन्न हुआ कि हमारा और इनका घराना एक ही है, गोत्र हत्या होवेगी, ऐसा सोचकर वह पीछा लौट पड़ा। मानसिंह करणोत आदि भाई बन्धुओं ने उसको बहुतेरा समझाया कि देखो शक्तावत बोल मारेंगे, हम उनके संमुख जाने के न रहेंगे, परन्तु मेघ ने यही उत्तर दिया कि "चाहे जो हो मुझ से तो गोत्रहत्या नहीं हो सकती"। तदुपरान्त रावत केशवदास के साथ मेघ के कुछ बोलचाल होगई, वह भैंसरोड़ आया जो उस वक़्त रावत (केशव) की जागीर में था। केशवदास भी अपने गांव बेटोर से मुकाबले में आकर लड़ा और अपने दो बेटों सहित मारा गया। जब यह समाचार राणा ने सुने तो कोप किया और मेघ को लड़ने से रोक दिया।

राणा कर्णसिंह—संवत् १६४० श्रावण सुदि १२ का जन्म, सं० १६७६ में पाट बैठा, ढीला सा ठाकुर हुआ। और सं० १६८४ में काल किया। कर्णसिंह के पुत्र-१ राणा जगतसिंह मेहवचा राठोड़ों का भाणजा; २ गरीबदास, पहले तो बहुत दिनों तक राणा के पास रहा पीछे बादशाही चाकर हुआ। सं० १७१४ के जेठ मास में धौलपुर की लड़ाई में काम आया जो औरंगज़ेब ने अपने भाई मुरादबख़्श के साथ की थी[1]। ३ छत्रसिंह, ४ मोहनसिंह ५ गजसिंह।

राणा जगतसिंह—सं० १६६४ भाद्रपद सुदि १२ का जन्म, सं० १६८४ पाट बैठा, और सं० १७१० में काल प्राप्त हुआ। बड़ा दातार और विवेकी महाराजा था, कलियुग में बड़े २ सुकृत किये और उदारता पूर्ण दान दिये। राणा जगतसिंह के पुत्र-१ राजसिंह टीकेत, २ अरिसिंह[2]।

राणा राजसिंह—को बादशाही तरफ से इतनी जागीर है-(मंसब छः हजारी जात छः हजार सवार जिनमें ५ हजार (एक अस्पा) और एक हजार दुअस्पाथे। रुपिया दाम आसामी १७०००००) ६६०००००० । तलब ज़ात ६ हजारी ३०००००) १२०००००० । खाराजात ६ हज़ारी १४०००००) ५६०००००० । ताबीनदार असवार हज़ार छः जिनमें एक हज़ार दुअस्पा १७०००००) ६६०००००० । ५०००००) २०००००००० इनाम २२०००००) ६६०००००० ; तनख्वाह १२५०००) ६६०००००० । सूबे अजमेर । रु० २१५००००) ४७५००) १६००००। सरकार अजमेर परगना १। ४७५००) १६। परगना ओजावर १७२७५००) ६६१००००० । सरकार चितोड़ महाल २७ । २५०००) १०००००० परगना हवेली मोंकीली महाल २ । ५५०००) २२०००००० परगना उदयपुर महाल ३ । ४०००) २२०००००० परगना अरणे महाल २७५००) ११०००० । परगना इसलामपुर कोसीथल २७५०) १५०००० । परगना इसलामपुर मोही ६७५००) ३५०००००० । परगना ऊपरमाल और भैंसरोड़ महाल २ । ५००००) २०००००० । परगना बेगूं २००००) ६००००० ।

(१) मासिरुल् उमरा के अनुसार धौलपुर की लड़ाई औरंगज़ेब की दाराशिकोह के साथ हुई थी। राजपुर के मुक़ाम ग़रीबदास औरंगज़ेब के पक्ष में जूझकर काम आया। उसके वंशज मेवाड़ में केरया, बांसया व घोसूंडा में जागीरदार हैं।

(२) उपरोक्त दो पुत्रों के सिवा राणा जगतसिंह के ४ पुत्र और थे जो निस्सन्तान मरे, और दो कन्या। जिनमें से एक का विवाह, बूंदी के राव शत्रुसाल के पुत्र महादुरसिंह से, और दूसरी का बीकानेर के राजा अनूपसिंह के साथ हुआ था।

परगना बनोर २०००००) ६०००००० । परगना पुर ७५०००) ३०००००० । परगना जीरण २७५००) ११००००० । परगना शाहजादाबाद कणबीर ७५००) ३००००० । परगना सादड़ी २५०००) १०००००० । परगना शाहजहानाबाद कपासण १२५००) ५००००० । परगना घोसमन (घोसूंडा ?) ३ । ५०००) २००००० । परगना मदारे (मदारिया) ५००००) २००००० । नीमच महाल ३१२५०) ५०००० । परगना हमीरपुर २५००००) १०००००००। परगना बदनोर २००००००) ६०००००० । परगना मांडलगढ़ ४०००००) १६०००००० । परगना डूंगरपुर २०००००) ६००००००। परगना बांसवाड़ा १७२७५००) ६९१००००० ॥ ३७५०००) १५००००० । सरकार कुम्भलमेर महाल ६५ जिन में से ६२ पहाड़ में बाकी महाल २३, उनमें से महाल ३ सादड़ी, नाडूल, …………, शाहजादा खुर्रम जब राणा अमरसिंह पर चढ़ आया तब राजा सूरजसिंह को इनाम में दिये थे, उनकी जमाबन्दी नहीं, वे अब राणा राजसिंह के हैं । बाक़ी महाल २० जिनके नाम पढ़े नहीं जाते, २१५००००) ८६००००० । ५००००) २०००००० । सूबे मालवा में परगना एक बसाड़ २२००००) ८८०००००[1] ॥

गुहिलोतों की २४ शाखा—गहलोत, सीसोदिया, आहाड़ा, पीपाड़ा, हुल, मांगलिया, आसायच, केलवा, मंगरोपा, गोधा, डाहलिया, मोटसिरा, गोदारा, भीमला, मोर. टीवणां, माहिल, तिवड़किया, बोसा, चंद्रावत, धोरणिया, बूटीवाल, कूंटिया, और गोतमा[2] ।

---

(१) ये अंक नैणसी ने किस हिसाब से लगाये हैं जो समझ में नहीं आते ।

(२) इनके सिवा भटेवरा आदि अन्य भी शाखा बतलाई जाती हैं । महारावल समरसिंह के संवत् १३३१ विक्रमी के लेख में गुहिल वंश की अपार शाखा लिखी है— " गुहिल वंशमपार शाखम् " ।

डूंगरपुर का गुहिलोत वंश ।

रावल करण के दो पुत्र थे, माहप और राहप । राहप के वंशज राणा चित्तोड़ के स्वामी, और रावल माहप के वंशज बागड़ के स्वामी जो सदा चित्तोड़ के राणाओं की चाकरी करते थे, फिर पीछे दिल्ली के बादशाहों की सेवा में भी रहने लगे । बागड़ में ३५०० गांव हैं जिनमें से आधे तो डूंगरपुर के और आधे बांसवाड़े के ताल्लुक़ हैं ।

डूंगरपुर राज की सीमा—गांव १७५०, उदयपुर तरफ़ गांव ६, सोम नदी उत्तर में, ईडर की ओर गांव पंजूरी, गांव ६ भीलों का मेवास । पश्चिम में बांसवहाले (बांसवाड़ा) की तरफ़ माही नदी, डूंगरपुर से कोस १० गांव १२ । यह नदी मांडू के पहाड़ों से निकलती और सिरोही के परगने में बहती हुई देवलिये से कोस ५ आकर पीछी मुड़ती डूंगरपुर बांसवहाले (बांसवाड़े) के बीच बहती हुई आगे गुजरात में लूणावाड़े चली गई है । शहर डूंगरपुर के उत्तर दक्षिण दोनों तरफ पहाड़ और बीच में मगरे की ढाल में नगर बसा है । चारों ओर छोटा सा कोट है । गांव में मन्दिर बहुत, बाज़ार अच्छा परन्तु पीठ (व्यापार) वैसी नहीं है । उत्तर में रावल पूंजा का बनवाया गोवर्धननाथ का बड़ा देवालय और ईशान में रावल गैपा (गजपाल) का बनवाया बड़ा तालाब है । नगर के पीछे पहाड़ी पर शिकार का स्थान है । डेढ़ मील के लगभग कोण में गांगड़ी नदी के तट पर रावल पूंजा का लगवाया हुआ राजबाग़ है ।

चित्तोड़ पर रावल समरसिंह राज करता था उसने एक बार अपने छोटे भाई से कहा कि तूने मेरी बहुत सेवा की है इसलिये प्रसन्न होकर मैंने चित्तोड़ का राज तुझे दिया । भाई बोला कि चित्तोड़ के स्वामी तो आप हो मुझे वह राज कौन देगा ? समरसी ने कहा कि मेरा वचन है । जिस पर छोटे भाई ने निवेदन किया कि जो राज देते हो तो अपने सरदारों का वचन दिलवाओ । समरसी ने सरदारों से कहा कि ठाकुरों ! तुम सब इसको वचन दो । वे कहने लगे कि क्या आप सचमुच राज देते हैं ? हमारा वचन समझकर दिलाइये । समरसी ने उत्तर दिया कि हां मैं सच्चे दिल से कहता हूं, तब तो सारे सरदारों ने वचन दे दिया । सारे अधिकार और राणा पदवी भाई के सुपुर्द कर रावल समरसी गांव आहाड़ में जा रहा[1] ।

---

(१) डूंगरपुर राज्य का स्थापक सामन्तसिंह था, न कि समरसिंह । सामन्तसिंह, राजा विक्रमसिंह या श्रीपुञ्ज का प्रपौत्र और रहणसिंह के पुत्र षेमसिंह का कुंवर था उसका

कुछ समय बीतने पर एक दिन रावल ने अपने साथवालों से कहा कि यह भूमि मैंने भाई को देदी, अतः अब यहां रहने का धर्म नहीं, हमें कोई दूसरी धरती लेनी चाहिये । उस वक़्त डूंगरपुर के पास वाटवड़ोद में ८४ मलक भूमिया ५०० योद्धाओं के स्वामी की सत्ता थी। उस भूमिप के एक डोम था जिसकी स्त्री के साथ भूमिया हिल गया था । चौड़ेधाड़े निःशंक उसके संग विहार करता और क्योंकि ज़ोरावर था इसलिये उसको कोई कुछ कहभी नहीं सक्ता था। डोम की स्त्री को लेकर आप महलों में सोता और मीरासी को नीचे बिठाकर रात भर गवाता, यदि किसी दिन गानेको न आवे तो पिटवाता था। डोम मन ही मन जला करता परन्तु करे क्या, बहुतेरा चाहता कि कहीं भाग छूटूं परन्तु उसकी रखवाली पर भूमिये ने अपने आदमी छोड़ रक्खे थे इससे भाग भी नहीं सकता था। सदा-घात में लगा रहता और यही विचारता कि किस के पास जाकर पुकारूं। किसी ने उसको कहा कि रावल समरसी चित्तोड़ छोड़कर आहाड़ में आन रहा है, उसके पास बहुतसी जमैयत है वह तेरी सहायता कर सक्ता है । और कोई ऐसा नहीं जो तेरी सुने। तब एक दिन अवसर पाकर डोम वहां से निकल भागा और सीधा रावल समरसी के पास आहाड़ पहुंचा, कहने लगा आप यहां बैठे क्या करते हैं, मैं आपको बड़ोद की चौरासी दिलवाऊं। रावल तो यह चाहता ही था उसके मन में यह बात भाई, डोम से सारी हक़ीकत पूछी, उस ने भी सब वृत्तान्त कहा और बोला पांचसौ सवार लेकर शीघ्र चलिये । डोम को साथ ले रावल चढ़ चला और अचांचक बड़ोद के गोरमें जा खड़ा हुआ। अढाईसौ सवारों को तो पीछे रक्खे और दोसौ पचीस सवारों से कोटड़ी की तरफ बढ़ा, सवार चालीस पचास पौल पर छोड़ दिये और आप भीतर घुस

समय सं० १२२५–५० वि० के लगभग था । जब कि जालोर के चहुवाण राव कीतू या कीर्तिपाल ने मेवाड़ पर चढ़ाई कर राजधानी आघाटपुर (आहाड़) पर अधिकार करलिया। सामन्तसिंह बागड़ की तरफ चला गया । उसके छोटे भाई कुमारसिंह ने गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव दूसरे की सहायता से अपना राज्य चहुवाणों से पीछा लिया । पृथ्वीराज रासे के कारण यह नाम की भूल पीछे से सर्वत्र फैली हो क्योंकि सम्भव है कि सामन्तसिंह ही का साधारण बोलचाल में समतसिंह होकर लेखक दोष से वही समरसिंह बन गया हो नहीं तो समरसिंह का समय तो डूंगरपुर राज्य की स्थापना से क़रीब एक सौ वर्ष पीछे का निश्चित है ।

पड़ा। मालिक जिस घर में था डोम ने वह स्थान बतलाया अतः भूमिये को मार कर चौरासी पर अधिकार कर लिया और अपनी आण दुहाई फिरादी। डोम को रावल ने अपने पास रख लिया[१]।

रावल ने विचारा कि यह भूमि तो थोड़ी है इससे मेरा पूरा नहीं पड़ेगा (कोई अन्य स्थान भी लेना चाहिये)। उन दिनों डूंगरपुर की जगह एक भील पांच सहस्र मनुष्यों के दलबल से रहता था और उसकी वहां बड़ी ठकुराई थी। रावल समरसी मन में कपट रख कर उस भील के पास नौकरी के निमित्त गया और उससे मिला। डूंगर (भील) ने पुछवाया कि राज के यहां आने का कारण क्या है? रावल ने कहलाया कि चित्तोड़ तो हमने भाई को दे दिया अब कहीं अच्छा स्थान देख अपने मनुष्यों को क्यारेक महीने वहां रखना चाहते हैं, फिर कहीं अन्यत्र नौकरी के वास्ते चले जायंगे और यातो दिल्ली या मांडू के बादशाह के पास जा रहेंगे (दिल्ली और मांडू की बादशाहतें तो उस वक्त क़ायम भी न हुई थीं), इतने तुम कहीं पगथंबन को ठौड़ बतलाओ तो वहां आन रहें। डूंगर ने पहले तो यही कहा कि कलके दिन तो तुमने चौरासी मलिक को मारा है अब यहां आकर हमें मारोगे, मैं तुम्हारा विश्वास नहीं करता। समरसी ने उत्तर भेजा कि हमें चौरासी मारने से कोई अभिप्राय न था, परन्तु डोम आकर पुकारा तब वह काम करना पड़ा, वह धरती डोम ही भोगता है, यदि तुम चाहो तो खुशी से अपने आदमी भेज कर वहां अधिकार करलो। हमारा वहां कोई भी नहीं है और न हमें उस भूमि से कुछ सरोकार है। इस प्रकार डूंगर से बहुतसी लल्लोपत्तो की बातें कीं, तब भील ने रावल को रख लिया। डूंगर पहाड़ों के ढाल में डूंगरपुर बसा कर वहीं रहता था-(डूंगरपुर का नगर रावल भर्तुंगड के पुत्र रावल डूंगरसिंह ने विक्रम की पंद्रवीं शताब्दी के आरम्भ में अपने नाम पर बसा कर राजधानी वहां स्थापन की थी)। पहाड़ के पास ही मैदान में रावल को ठहरने के वास्ते ठौड़ बतलाई गई जहां उसने बस्ती सहित अपने छकड़े आन छोड़े। बाड़ी वापियों के पास टपरियां बांधीं और अच्छी सेवा कर भील राजा का मन हर लिया। पांच छः महीने गांठ का खर्च

---

(१) पहले वटवड़ोद ही वागड़ की राजधानी था, शिलालेखों में उसका नाम 'वटपद्रक' मिलता है।

लाया उससे कुछ भी न मांगा। एक आध मास फिर धीरे रह डूंगर को कहलाया कि अब हम अपने कुटुम्ब को तुम्हारे पास छोड़ विदा होने वाले हैं, परन्तु हमारी ५ बेटियां बड़ी होगईं, उनके अब तक पीले हाथ (विवाह) नहीं किये हैं, इसकी फिकर है सो तुम कहो तो विवाह यहां कर लें। भील ने कहा कि खुशी से बाइयों का विवाह कीजिये, हम भी कामधन्धे में सहायता देंगे। रावल ने विवाह थापा, भाई बन्धु सगे सम्बन्धियों को निमंत्रण पत्र भेजे कि अमुक दिवस बहुत सा साथ ले शीघ्र आना, और इधर डूंगर को कहलाया कि हमारे यहां बड़े २ ठाकुर और बराती आवेंगे सो उनके उतारे के लिये कुटियां बंधवालें। उसने कहा कि बहुत अच्छी बात है। तब इन्होंने एक विशाल बाड़ा डूंगर के निवास स्थान के पास ही तैयार कराया और दूसरा अन्तःपुर के घरों के पीछे बहुत ऊंचा और दृढ़ बंधवाया। एक झोंपड़ा अपने गुढ़े के निकट बंधवाया। बरातियों के आने की भी तैयारी थी, न्योतिहारों में से कितनेक आन पहुंचे थे। लग्न दिवस से एक दो दिन पहले रावल ने भील को जाकर कहा कि कल परसों तक बरात आजावेगी तब तो हम उनके सत्कारादि में लग जावेंगे, हमारे तो अच्छी बात तुम्हारी है सो कल आप अपने सारे साथ सहित भोजन वहीं करें। भील ने न्योता मान लिया, रातों रात रसोई तैयार कीगई, उसमें धतूरा और बत्सनाग बहुतसा मिला दिया, पीने के वास्ते तेज़ दुबारा (शराब) खिंचवाया। दूसरे दिन डूंगर को अपने भाई बेटों, प्रधान, नौकर चाकरों सहित सातसौ मनुष्यों से जीमने बुलाया, बड़े बाड़े में पांतिया दिया, भलीभांति भोजन परोसा, और खूब शराब पिलाई जिससे वे सब अचेत होगये। नौकर चाकर व दूसरे ४०० जनों को दूसरे बाड़े में बिठाये थे। जब देखा कि वे सब लोट पोट होगये हैं तो दोनों बाड़ों में आग लगादी। कितनेक तो जल मरे और जो फलसे के द्वार पर आये उनको सहज में मार गिराये, रावल ने कई आदमी डूंगर के घरों पर भी भेज दिये थे, जो कोई वहां रहे थे उनको भी मार लिये। उसका धन माल सारा ले लिया और इस प्रकार डूंगरपुर पर अधिकार कर वहां अपनी राजधानी स्थापन की। बड़ी ठकुराई हुई, बणजारे चलने लगे और बहुतसा दाण महसूल आने लगा।

उन दिनों डूंगरपुर से १२ कोस गलियाकोट में टांटल राजपूत भूमिये डेढ़ दो हजार आदमियों की जोड़ वाले रहते थे, जिनके पांचसौ ६०० सवार सदा

डूंगरपुर की सीमा में विगाड़ किया करते और पीछे पकड़ने वालों का दल पहुंचता तो जाकर अपने गढ़ में घुसजाते थे। गढ़ दृढ़ और विना लगाव वाला था। रावल ने कई उपाय किये परन्तु कुछ दांव न लगा। एकवार अपने बन्धुवर्ग में से दो विश्वासपात्र राजपूतों को जोगी का भेप पहना गलियाकोट घात में भेजे और उन्हें बहुतसा खर्च देदिया। दोनों वहां पहुंचे परन्तु टांटल भूमिया किसी अजनवी आदमी को गांव में घुसने नहीं देता था। यह वात जोगियों ने सुनकर गांव के बाहर तालाव की पाल पर ही आसन जमाया। कहीं भीख मांगने को जाते नहीं और रात्रि में गुपचुप अपना भोजन वना, खा पी लिया करते थे, किसी आने जाने वाले से बोलते तक नहीं। तव तो उनका वड़ा मान वढ़ा, गांव के सेठ साहूकार, कोतवाल, कामेती उनके पास आने लगे और आग्रह पूर्वक उन्हें गांव में लिवा लेगये। कोट (गढ़ी) के बाहर ही एक ठाकुरद्वारा था जहां टिकाये। ये न तो किसी के घर मांगने जाते न किसी से कुछ लेते और न बोलते थे। टांटलों का स्वामी स्वयं पांच सात वार उनके दर्शन को आया और एक दिन कहा कि कोट में पधारकर मेरा घर पवित्र करो। जोगियों ने दो च्यार वार तो नांही करी परंतु अन्त में वह आग्रहपूर्वक उनको भीतर लेगया, भोजन कराया, और वहीं आसन जमाया। यह सदा लगाव देखते रहते पर कहीं दिखाई नहीं देता था और पौल भी सुदृढ़ थी। छः मास तक वे वहां रहे परन्तु कोई छिद्र न पाया। गलियाकोट नदी के तट पर है और खाई में सुरंग रखी (सुरंग या गुप्त मार्ग के मुवाफिक़) एक वारी थी जिसमें होकर गुप्त रीति से आव जाव होता था। यह भेद एक कामदार के पुत्र ने सद्भाव में वात करते खोला। जोगियों ने पूछा कि वह वारी कहां है? उसने बताया कि अमुक स्थान में। पांच सात दिन पीछे वावाजी वहीं जा बैठे, रात्रि को उस खिड़की के मार्ग द्वारा आने जाने लगे और सारा भेद जाना। एक वार टांटलों के कहीं विवाह था, सो वे तो सव वहां गये और इन दोनों ने परस्पर सलाह की कि अपने को यहां आये एक वर्ष वीत गया, आज जैसा अवसर फिर हाथ आने का नहीं है। तुरंत एक भाई रावल के पास डूंगरपुर पहुंचा, सव बात कही और निवेदन किया कि यदि कोट लेने की कामना हो तो तत्काल चढ़ कर रातों रात वहां पहुंचिये, मेरा भाई खिड़की के मुंह पर बैठा है। रावल उसी वक़्त एक हज़ार सवार और ५०० पैदल लेकर तुरन्त चढ़ धाया, अपने राजपूत को खिड़की पर बैठा पाया, और उसी मार्ग से सव कोट के भीतर

घुस गये, इतने में पौ भी फटगई। जिस टांटल को देखा काट डाला, स्त्रियों को बन्दी बना लिया, गलियाकोट हाथ आया और बागड़ के साढ़े तीन सहस्र गांवों में रावल की आण दुहाई फिरगई।

डूंगरपुर से एक कोस पश्चिम रुद्रपाल का मन्दिर नया बना है। गांव १३५० तो डूंगरपुर में मेवाड़ के पहले से हैं और गांव १२ परमारों के बागड़ियों कडाणों (?) को मार कर लिये हैं। यह बात सं० १७१६ में जैतारण में सांइया झूला के पौत्र और भाण के पुत्र रुद्रदास झूला ने कही।

सं० १७०७ में मुंहता नरसिंहदास जयमलोत डूंगरपुर गया और वहां रावल पूंजा के मन्दिर के एक स्तम्भ पर रावल ने अपनी वंशावली लिखवाई है वह उतार लाया सो इस प्रकार है—

१ आदि श्रीनारायण
२ कमल
३ ब्रह्मा
४ मरीचि
५ कश्यप
६ सूरज
७ वैवस्वतमनु
८ इक्ष्वाकु
९ विकुक्ष
१० जन्हु
११ पवन
१२ अनेरण्य
१३ काकुत्स्थ
१४ विश्ववसु
१५ महामति
१६ च्यवन
१७ प्रद्युम्न
१८ धनुर्धर
१९ महीपाल
२० यवनाश्व
२१ सुमेधा
२२ मांधाता
२३ कुरत्थ
२४ वेणु
२५ पृथु
२६ हरीहर
२७ त्रिशंकु
२८ रोहितास
२९ अम्बरीष
३० भागीरथ
३१ अरिमर्दन
३२ वीरशूर
३३ वीरुज
३४ दिलीप
३५ रघु
३६ अज
३७ दशरथ
३८ रामचंद्र
३९ कुश
४० अतिथि
४१ निषध
४२ नील
४३ नाभ
४४ पुण्डरीक
४५ क्षेमधन्वा
४६ देवानीक
४७ अहिनभु
४८ जिनमंत्र
४९ पारिजात
५० शील
५१ अनाभि
५२ विजय
५३ वज्रनाभ
५४ वज्रधर
५५ नाभ
५६ विजयसिधि
५७ धिषताश्व

५८ विश्वजित
५९ इन्दु
६० नाभिमुख
६१ हिरण्य
६२ कौसल्य
६३ ब्रह्मसन्य
६४ उदयक्रर
६५ पद्मनेत्र
६६ अंधनेत्र
६७ सुधन्वा
६८ हावसिद्ध
६९ सुदर्शन
७० सहवर्ण
७१ अग्निवर्ण
७२ विजयरथ
७३ महारथ
७४ हैहस्य
७५ महानन्द
७६ अनन्दराज
७७ अचल
७८ अभंगसेन
७९ जयपाल
८० कनकसेन
८१ जितशत्रु
८२ सुजाति
८३ सलाजित
८४ सुवीर
८५ सुकृत
८६ सुमत
८७ चांदसेन
८८ वीरसेन
८९ सुजय
९० सुजित
९१ विलापानल
९२ हंसनंवसु
९३ विजयनित्य
९४ आसादित्य
९५ भोगादित्य
९६ जोगादित्य
९७ केशवादित्य
९८ अहादित्य
९९ भोजादित्य
१०० बापा रावल
१०१ खुमाण ,,
१०२ गोवंद ,,
१०३ माहित ,,
१०४ अलू ,,
१०५ भादो ,,
१०६ सीहो ,,
१०७ शक्तिकुमार ,,
१०८ शालिवाहन ,,
१०९ नरवाहन ,,
११० यशोब्रह्म ,,
१११ नरब्रह्म ,,
११२ अंबपसाव ,,
११३ कीरतब्रह्म ,,
११४ नरवीर ,,
११५ उत्तम ,,
११६ भालो रावल
११७ श्रीपुञ्ज ,,
११८ करण ,,
११९ गागड ,,
१२० हंस ,,
१२१ जोगराज ,,
१२२ वैरड ,,
१२३ वीरसिंह ,,
१२४ राहप ,,
१२५ देहू ,,
१२६ नरू ,,
१२७ अरहड़ ,,
१२८ वीरसिंह, ,,
१२९ अरसी ,,
१३० रासी ,,
१३१ सामन्तसिंह ,,
१३२ कुमारसिंह ,,
१३३ मथनसिंह ,,
१३४ समरसी ,,
१३५ अरसी ,,
१३६ रतनसी ,,
१३७ पूंजा ,,
१३८ करमसी ,,
१३९ पदमसी ,,
१४० जैतसी ,,
१४१ तेजसी ,,
१४२ समरसी ,,
१४३ रतनसी ,,
१४४ नरब्रह्म ,,

१४५ मल्ला	रावल	१५३ करमसिंह	रावल	१६१ सहसमल	रावल
१४६ केसरीसिंह	,,	१५४ प्रतापसिंह	,,	१६२ करमसी	,,
१४७ सामन्तसिंह	,,	१५५ गोपा	,,	१६३ पूंजा	,,
१४८ सीहड़दे	,,	१५६ श्यामदास	,,	१६४ गिरधर	,,
१४९ देदा	,,	१५७ गांगा	,,	१६५ जसवन्त	,,
१५० [illegible]सिंह	,,	१५८ उदयसिंह	,,	१६६ खुमाण	,,
१५१ [illegible]	,,	१५९ पृथ्वीराज	,,	१६७ रामसिंह[1]	,,
१५२ डूंगरसिंह	,,	१६० आसकरण	,,		

(१) इस वंशावली में बीच के और अन्त के थोड़ेसे नामों के अतिरिक्त शेष सब नाम कृत्रिम हैं। शुद्ध वंशावली नीचे दी जाती है—

सामन्तसिंह (मेवाड़ का राजा)—राज अपने छोटे भाई कुमारसिंह को देकर बागड़ में गया और डूंगरपुर राज्य की स्थापना की (वि० सं० १२२८–३६)

१ रावल सीहड़देव सं० १२७७–९१ वि०,
२ रावल देवपालदेव,
३ रावल वीरसिंहदेव सं० १३४३–४९ वि०,
४ रावल भचूंड,
५ रावल डूंगरसिंह सं० १४२५ वि० के लगभग डूंगरपुर बसाया,
६ रावल कर्मसिंह सं० १४५३ वि०
७ रावल कान्हड़देव,
८ रावल प्रतापसिंह,
९ रावल गोपालदास सं० १४८९–९५ वि०,
१० रावल सोमदास या श्यामदास सं० १५१९ वि०,
११ रावल गंगादास,
१२ रावल उदयसिंह सं० १५८४ वि० में महाराणा सांगा के पक्ष में बाबर से लड़कर खानवे के युद्ध में मारा गया,
१३ रावल पृथ्वीराज सं० १५८८ वि०,
१४ रावल आसकरण सं० १६०४–४२ वि०,
१५ रावल सहसमल सं० १६४७ वि०,
१६ रावल कर्मसिंह दूसरा,
१७ रावल पूंजा सं० १७०० वि०,
१८ रावल गिरधर सं० १७१६ वि०,
१९ रावल जसवन्तसिंह,
२० रावल खुमाणसिंह सं० १७५५ वि०,
२१ रावल रामसिंह,
२२ रावल शिवसिंह,
२३ रावल वैरीसाल,
२४ रावल फतहसिंह,
२५ महारावल जसवन्तसिंह दूसरा सं० १९०१ वि०,
२६ महारावल दलपतसिंह,
२७ महारावल उदयसिंह दूसरा सं० १९५५ वि०,
२८ महारावल विजयसिंह,
२९ राय रायान महारावल श्रीलक्ष्मणसिंहजी बहादुर, विद्यमान।

बांसवाड़े का गुहिलोत वंश।

सीमा—कुल गांव १७५०, डूंगरपुर से पश्चिम दिशा सीम देवालिये से मिली हुई, राजपीपला पास ही है। गांव १७५० तो पहले थे और कई भूमियों से लेकर नये मिलाये-भोगपड़ी गांव १४० सिरोही के भीलों के मेवास तथा देवड़ों के, मही नदी के परले तट पर कोस ६ पूर्व में १२ गांव खांधू के पूर्व, जैसे पाटी मगरा के महीड़े के गांव १२। यह हक़ीक़त सं० १७१६ में मुंहता (मुहणोत) नैणसी को गांव जैतारण में चारण रुद्रदास भूला भाण के पुत्र ने लिखाई।

वांसवाड़े की मूल ठाकुराई तो वागड़ में डूंगरपुर ही की थी, रावल जगमाल उदयसिंघोत ने गांव १७५० आधो आध डूंगरपुर के रावल पृथ्वीराज उदयसिंहोत से बंटवा कर वांसवाड़े को राजधानी बनाया। आज वांसवाड़े का राज डूंगरपुर से कुछ अच्छा है, हासिल भी अधिक बैठता है। मही नदी वहां से कोस ३ पूर्व में बहती है। उसका निकास मांडू के पहाड़ों से है और डूंगरपुर से भी दस कोस के अन्तर पर बहती है। डूंगरपुर वांसवाड़े में मुख्यतः वागड़िये चहुवाण राजपूतों का थोक है जो डूंगरसी बालावत के वंश के हैं। इनके बाप दादे सदा से वहां के अधिपतियों को गद्दी पर बिठाते या उठाते थे और बाहर से राणा की तथा बादशाही सेना आती तो राणा की सीमा श्याम (सोम) नदी उल्लंघने पर ये चौहान मरते मारते रहे हैं। नदी के तटपर कई चहुवाण सरदारों की छतरियां बनी हुई हैं जो वहां लड़ाई में मारे गये। वागड़ के कांठे (निकट) चहुवाण भड़किंवाड़ (दृढ़ रक्षक) राहबेधी राजपूत हैं अतः उनके स्वामियों के साथ प्रायः उनकी अनबन ही रहती और यही कारण है कि मारवाड़ के राठोड़ों को वागड़ के राजा बड़ी २ जागीरें देकर अपने स्थानों पर रखते हैं। राठोड़ों ने वहां बड़े २ युद्ध किये और उनकी वहां बहुत प्रसिद्धि और भरोसा है।

(राज कैसे बंटा)—रावल गांगा के पुत्र रावल उदयसिंह तक तो सारी वागड़ एक ही छत्रछाया में थी। रावल उदयसिंह के पृथ्वीराज और जगमाल दो पुत्र हुए, पिता के काल प्राप्त होने पर (वह राणा सांगा के साथ बाबर बादशाह के मुक़ाबले में बयाने के युद्ध में काम आये थे) पृथ्वीराज डूंगरपुर में पाट बैठा और जगमाल बारोठिया (बागी) हुआ तब रावल ने अपने सरदार वागड़िये चहुवाण मेरा और राव पर्बत लोलाड़िये को सेना सहित भेजे कि

जगमाल को राज्य के बाहर निकाल आवे। उन्होंने जाकर उसके गाड़े लूटे, कई राजपूतों को मारे और वह पराजित होकर भागा व पहाड़ों में जा छिपा। खोई हुई धरती को पीछी लेकर जब दोनों सरदार डूंगरपुर पहुंचे तब उन्होंने तो यह समझा था कि हम बड़ा काम करके आये हैं सो हमारी मान मर्य्यादा और जागीर में वृद्धि होगी, परन्तु रावल पृथ्वीराज का एक खवास पासवान या धाय भाई, जो सेना में सम्मिलित था, पहले से घर पहुंच गया और उसने एकान्त में रावल को सब वृत्तान्त कहा। ये लोग मरने मारने (युद्ध कौशल) में तो कुछ समझते नहीं, यह भिड़ादी कि जगमाल ऐसी घात में आगया था कि मारलिया जावे, परन्तु चहुवाण मेरा व रावत पर्वत ने उसे छोड़ दिया। रावल ने इस झूठी बात को सच्ची समझली और जब ठाकुर डूंगरपुर आये तो आप महल के भीतर जा बैठा और उनका मुजरा तक न लिया। वे खिन्न चित्त होकर घर चले गये। पीछे से रावल ने अपने विश्वासपात्र मनुष्य को भेज कर उन्हें बहुत उपालम्भ दिलाया और कहलाया कि तुम नमकहरामी हो, जगमाल को तुमने जाने दिया यह बहुत बुरा काम किया, अब मैं तुमको रखना नहीं चाहता। ठाकुर बोले कि हमने तो तन मन से सेवा की है, यदि रावलजी उसका मूल्य न समझें तो उनकी इच्छा। रावल ने तीन बीड़े पान के भेजे थे वह उस हजूरी ने उन सरदारों को देदिये। बीड़े पाते ही वे क्रोधित हो तत्काल चढ़ चले, घर पर भी न गये और सीधे उन पर्वतों में पहुंचे जहां जगमाल छिपा हुआ था। कोसेक के अन्तर से उतर कर डेरा डाला और अपने भरोसे के प्रतिष्ठित पुरुषों को जगमाल के पास भेज कहलाया, कि तुम्हारे दिन फिरे हैं यदि धरती लेने की इच्छा हो तो शीघ्र हमसे आकर मिलो! जगमाल कहने लगा कि मुझे उनका विश्वास नहीं, तिस पर उन प्रेषित पुरुषों ने सौगन्द शपथ करके उसका संशय निवृत्त करदिया। वह उनके साथ चहुवाण मेरा पर्वत के पास आया और वहां सब तरह से क़ौल वचन हुए। तत्पश्चात् उन सरदारों ने अपने भाई बन्धुओं को भी बुला लिया, अपने गाड़े जगमाल के गाड़ों के पास ला छोड़े और सब मिलकर देश में उपद्रव मचाने लगे। ठौड़ ठौड़ पर रावल पृथ्वीराज के थानों को मारकर च्यार पांच मास में राज के बड़े विभाग को ऊजड़ कर दिया। तब तो रावल घबराया, अपने मंत्रियों को बुलाकर सलाह पूछी। वे बोले कि हम कुछ नहीं जानते जिस मनुष्य ने आप से बात बीनती करके सरदारों को निकलवाये हों उसीसे पूछिये। रावल कहने लगा

कि जो होना था सो तो हुआ, बिना बिचारे जो काम किया उसका फल मैंने पाया, अब जो उचित समझो सो करो ! मुझसे राज की रक्षा नहीं होसकती है। मन्त्रीगण मेरा पर्वत और जगमाल के पास गये और कहा कि अब आन मिलो, जो तुम कहोगे वही करेंगे, जितनी तुम्हारी इच्छा हो वह जगमाल को दिया जावे और तुम्हारी जागीर भी बढ़ादी जावे। चहुवाण व राठोड़ों ने उत्तर दिया कि वह बात तो वहीं से गई, अबतो मामला ही दूसरा है। यदि तुमको सन्धि करना है तो इस शर्त पर होसकती है कि वागड़ के दो बराबर विभाग करके धरा आधो आध बांट दी जावे और दो रावल होवें, और किसी भी प्रकार सन्धि होने की नहीं। मन्त्री पीछे रावल पृथ्वीराज के पास आये, सारी हक़ीक़त यथातथ्य कह सुनाई, तब रावल बोला कि क्या करना चाहिये। मन्त्रियों ने निवेदन किया महाराज ! यह बड़ी बात है आज पहले ऐसा हुआ नहीं, अतः बात केवल हमारे विचारने योग्य नहीं राज के बड़े सरदारों और अन्य विश्वस्त सेवकों से भी इसमें सलाह लीजिये और स्वयं आप भी दस पांच दिन विचारिये ताकि पीछे किसी को उपालम्भ न दिया जावे। मन्त्रियों के मतानुसार रावल ने सबको पूछा तो यही उत्तर मिला कि धरती क़ाबू से बाहर होगई, जिस तरह बने परस्पर मेल करलेना ही उचित्त है। तब रावल ने स्पष्ट-रीत्या अपने प्रधानों को कहदिया कि जितना उचित समझो वह जगमाल को देकर सन्धि कर आओ ! मन्त्री पीछे मेरा के पास गये, गांव ३५०० के आधे जगमाल को देकर मेल करलिया। दो रावल होगये और खड्गबल से बांसवाड़े के धनी की बात ऊंची रही[1]।

---

(१) रावल जगमाल को आधा राज मिलने के विषय में और भी कई कथाएं प्रसिद्ध हैं। बांसवाड़े वाले तो अपने भुजबल से आधा राज लेना कहते हैं; डूंगरपुर वालों का कथन है कि रावल पृथ्वीराज ने प्रसन्न होकर भाई को आधा राज बांटदिया; कोई ऐसा भी कहते हैं कि रावल उदयसिंह ही ने अपने दोनों पुत्रों को पृथ्वी बराबर बांट दी थी। यहभी सुना जाता है कि जगमाल अपने पिता उदयसिंह के साथ महाराणा सांगा की सेवा में बाबर बादशाह से युद्ध करने गया था। रावल उदयसिंह तो युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ, और जगमाल घायल हुआ। कुछ समय बीतने पर जब घावों से फ़ुर्सत पाई वह अपने भाई के पास गया, पृथ्वीराज ने उसे फितूरी ठहरा कर अपने राज में से निकलवा दिया, वह बांसवाड़े के उत्तरी भाग के पहाड़ों में रहकर उपद्रव व उजाड़ करने लगा। जिस स्थान में वह रहा था उसे अबतक जगमेर (जगनेर ?) कहते हैं। उसवक़्त मही नदी के पूर्व कूबानिये गांव का एक छोटा सा ठिकाना था, जहां का ठाकुर कई साल तक तो जगमाल से लड़ता रहा परन्तु अन्त

(वंशावली)—रावल जगमाल उदयसिंह का, जगमाल का पुत्र कृष्ण-सिंह (पिता की मौजूदगी ही में मरगया हो) । किशनसिंह का कल्याणमल पाट बैठा नहीं, कल्याणमल का पुत्र उग्रसेन था । (रावल जगमाल के पीछे उसका दूसरा पुत्र जयसिंह गद्दी बैठा था, जयसिंह का उत्तराधिकारी उसका पुत्र रावल प्रतापसिंह हुआ जिसने सं० १६३१ में बांसवाड़े के मुकाम शाहंशाह अकबर की आधीनता स्वीकारी और बांसवाड़े का फर्मान हासिल किया) ।

रावल प्रतापसिंह के पीछे रावल मानसिंह गद्दी बैठा जो रावल प्रताप की खवास पद्मनी के पेट से उत्पन्न हुआ था । रावल प्रताप के और कोई पुत्र न था और मानसिंह बहुत सुलक्षण (योग्य) था इसलिये देश के पांच राजपूतों ने मिल कर उसी को टीका दिया । उसके सम्बन्ध के लिये चहुवाणों के नारियल आये और वह उनके यहां व्याहने गया । पीछे अपने प्रधान को छोड़ गया था । उस वक़्त खांधू के भीलों ने राज में कुछ बिगाड़ किया तो रावल का प्रधान थोड़े से आदमियों को लेकर (भीलों को दण्ड देने के लिये) वहां गया, लड़ाई हुई और विजय भीलों की रही । प्रधान की प्रतिष्ठा बिगाड़ कर उसका घोड़ा छीन लिया और उसे वहां से निकाल दिया । जब व्याह करके रावल मानसिंह लौटा तो उसने सारे समाचार सुने, कंकन डोरड़े भी न खोले व मारे क्रोध के उसी तरह खांधू पर चढ़ दौड़ा और वहां पहुंचकर गांव को घेर लिया । कई भीलों को मारे और गांव गमेती को बंधुआ बना पांवों में बेड़ी डाल अपने साथ ले चला । दस कोस पर जाकर डेरा दिया और लगा उस भील को धुतकारने ।

में मेल करलिया और ठाकुर के मरजाने पर वह ठिकाना जगमाल के हाथ लगा, फिर जगमाल राणा रत्नसिंह की शरण गया और राणा की सिफारिश से गुजरात के सुलतान बहादुरशाह ने बागड़ का आधाराज उसको दिलवादिया । इस कथन की पुष्टि फ़ारसी तवारीख़ों तबक़ाते अकबरी व मिराते सिकंदरी आदि से भी होती है जिनमें लिखा है कि हि० स० ९३७ (ई० स० १५३१) में सुलतान बहादुरशाह ने बागड़ पर चढ़ाई की, पहले रावल पृथ्वीराज व जगमाल दोनों भाइयों ने सुलतान का मुक़ाबला किया पर अन्त में विवश होकर पृथ्वीराज ने आधीनता स्वीकार ली और जगमाल पहाड़ों में भाग गया । फिर वह राणा रत्नसिंह के शरण गया और राणा ने अपने वकीलों के द्वारा सुलतान को जगमाल के वास्ते सिफारिश करवाई तो सुलतान ने बागड़ का आधा राज उसको दिलवा दिया, क्योंकि वह तो अपने सरहदी राजा व रावों का जोर तोड़ना ही चाहता था ।

रावल के साथ चहुवाण मान सांवलदासोत और सूरजमल जैतमालोत थे। खांधू का गमेती एक लज्जाशील पुरुष था उसने समझ लिया कि रावल मेरी इज्ज़त बिगाड़ेगा और अपने कोट में पहुंचते ही मुझ को बुरी तरह मारेगा, इसलिये जब डेरा डण्डा उठरहा था उस हा हू में भील ने चुपके से किसी की तलवार उठा ली और जाकर पीछे से रावल मानसिंह पर झटका किया। हाथ भरपूर पड़ा और रावल का काम वहीं तमाम होगया। रावत मान व सूरजमल ने पहुंचकर भील को भी मार लिया।

रावल मानसिंह के कोई पुत्र न था इसलिये अवसर पाकर रावत मान चहुवाण ही बांसवाड़े का स्वामी बन बैठा। उस समय डूंगरपुर में रावल सहसमल राज करता था उसने मान चहुवाण को कहलाया कि तू राज का मालिक होने वाला कौन है परन्तु मान ने उस पर कुछ भी ध्यान न दिया। शत्रुता बढ़ी, रावल सहसमल चढ़ आया, दोनों में लड़ाई हुई, परन्तु जीत चहुवाणों की हुई और रावल पीछा डूंगरपुर को लौट गया। फिर राणा प्रतापसिंह उदयसिंहोत ने यह बात सुनी कि मानसिंह चहुवाण सरज़ोरी के साथ बांसवाड़े की धरती भोग रहा है, तब राणा ने सीसोदिया रावत रामसिंह खंगारोत और रावत रत्नसिंह कांधलोत को ४ हज़ार सवार की सेना सहित बांसवाड़े पर विदा किये, चहुवाण मान ने भी आगे बढ़कर उनसे लड़ाई ली। रावत रामसिंह मारा गया और दीवाण की फौज भागी। जब यह युद्ध मानसिंह ने जीता तब तो वह निश्शङ्क होगया। कितनेक काल पीछे सब वागड़िये चहुवाणों ने मिलकर मान को कहा कि तेरी बात रहगई, हम बांसवाड़े के स्वामी कभी हो नहीं सकते, हम तो इस राज्य के भड़किंवाड़ (रक्षक) हैं इसलिये उचित यही है कि जगमाल के वंश के किसी पाटवी राजकुमार को गद्दी पर बिठादें। तब उसने कल्याणमल के पुत्र उग्रसेन को अपने मामा के घर से बुलाकर पाट बिठाया। आधे महलों में उग्रसेन रहता और आधे में मान निवास करता था। इसी प्रकार राज की आधी आय भी मान लेता और रावल उग्रसेन की आज्ञा सारे राज में नहीं चलती थी। अब तो मान बहुत अनीति करने लगा किसी को कुछ माल नहीं समझता और रावल के अन्तःपुर में भी बेअदबी कर बैठता था। रावल मन ही मन में कुढ़ता परन्तु उसका कुछ बस नहीं चलता था। राव चंद्रसेन (मारवाड़ का) के एक पुत्र आसकर्ण का विवाह बांसवाड़े भी हुआ था सो जब आसकर्ण मरा

गया तो उसकी दूसरी विधवा ठकुराणी हाडी बांसवाड़े वाली ठकुराणी के पास आई थी। हाडी बहुत रूपवती और अवस्था में उसकी किशोर ही थी। मान-सिंह उस पर बुरी दृष्टि डालने लगा। हाडी बड़े घर की कुल वधू जैसी रूपवती वैसी ही शीलवती भी थी, उसने अपनी धाय को भेज कर मान को कहलाया कि तूने रावल के घर का तो नाश किया, परन्तु जो तू मनुष्य है तो मेरा नाम कभी मत लेना! और तब से वह सदा सावधान रहने लगी। मान को तो मन्मथ ने अंधा कर रक्खा था, एक दिन अवसर पाकर उसकी कोठरी में घुस पड़ा, हाडी ने देखा कि अब मेरा धर्म इस दुष्ट से बचने का नहीं तब वह तत्काल कटार खाकर मरगई।

रावत सूरजमल जैतमालोत रावल की सेवा में था, उसके नौ हज़ार वार्षिक का पट्टा था। जब उसने हाडी के प्राण त्यागने की बात सुनी तो मन में बहुत दुखी होकर रावल को कहने लगा-तुम सिर पर सूत बांधते, हाथों में हथियार पकड़ते और रजपूत कहलाते हो! तुम्हारे घर में यह क्या उपद्रव मच रहा है, तुम्हें लज्जा नहीं आती! रावल बोला क्या किया जावे? सब जानते हैं, देखते हैं, परन्तु ज़ोर कुछ भी नहीं चलता और कोई दांव नहीं लगता है। सूरजमल कहने लगा कि अपना बल बढ़ाकर हिम्मत के साथ इसको यहां से निकालेंगे। फिर रावल से बोल क़ौल किया और मानसिंह को कहलाया कि रावल के घर का नाश कर अब तू हाडों की ओर झुका सो अच्छा नहीं किया, परन्तु वह किसकी सुनता था। चोली माहेश्वर में केशोदास भीमोत एक प्रबल ठाकुर रहता था, सूरजमल ने अपना विश्वासपात्र मनुष्य उसके पास भेज कह-लाया कि यदि तुम उग्रसेन की सहायता करो तो उसकी छोटी बहन का विवाह तुम्हारे साथ कर दिया जावेगा और बहुतसा द्रव्य दहेज में देंगे, अमुक दिवस अचांचक आजाना! मान चहुवाण को इस रचना की कुछ भी खबर न हुई। नियत दिवस पर रावल और सूरजमल ने अपने सारे साथ को अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित कर रक्खा और उसी दिन केशवदास ने १५०० योद्धाओं सहित आकर गांव की सीमा पर नक़ारा बजाया। मानसिंह ने अपना आदमी ख़बर के वास्ते रावल उग्रसेन के पास भेजा तो वह क्या देखता है कि रावल के साथी सजे सजाये बैठे हैं, तुरन्त लौटकर मान को सूचना दी कि रावल और वह आने वाला दोनों मिलकर तुम से चूक करने वाले हैं। भयभीत हो मान गढ़ की

खिड़की में से कूदकर भागा। रावल ने हमला किया, चावंडा भोजा सामरोत और दूसरे भी कितने ही मनुष्य मान के मारे गये, उसका सब घरबार माल मता रावल के हाथ आया, उसकी ठाकुराई भी जम गई और सूरजमल को उसने २५०००) की जागीर दी।

मानसिंह भाग कर दर्गाह (बादशाह जहांगीर के पास) पहुंचा और वहां विपुल धन खर्च कर बांसवाड़े का फर्मान अपने नाम पर कराया और शाही सेना लेकर आया। रावल उग्रसेन पहाड़ों में जा छिपा और सूरजमल अपनी बसी में रहा। फिर रावल को उसके सुसराल भेज दिया। मानसिंह ने अपना थाना भीलवण में जमाया था। एक दिन दुपहरी के समय अचांचक सूरजमल और रावल के साथी भीलवण थाने पर आन गिरे, दैवेच्छा से रावल का एक भी मनुष्य न मरा और मानसिंह के भाई बन्धु आदि अस्सी आदमी काट डाले गये। जब यह सम्वाद मान के पास बांसवाड़े में पहुंचा तो वह शाही सेना-नायक को लिये भीलवण आया, खेत सम्भाला तो कहने लगा कि यहां तो सब मेरे ही आदमी मारे गये हैं, तुर्क ने कहा कि तू नमकहरामी हुआ वैसी ही सज़ा तूने पाई, और वह अपनी सेना लेकर वहां से चल दिया। मानसिंह का बल टूट गया। वह बांसवाड़े को उसीतरह छोड़ पीछा दर्गाह गया तब रावल उग्रसेन ने आकर वहां पर अपना अधिकार कर लिया [१]।

रावल उग्रसेन और रावत सूरजमल भी दर्गाह पहुंचे परन्तु वहां सोने चांदी के बल से मानसिंह ने बादशाही कारकुनों को अपने पक्ष में कर रक्खे थे इसलिये रावल की बात तक कोई नहीं सुनता था। मानसिंह को बांसवाड़े का फर्मान अता होने की ख़बर गरमागरम थी। तब रावत सूरजमल ने रावल को कहा कि आप तो बांसवाड़े जाइये, वहां ब्राह्मणों से जो कर लिया जाता है उसे छोड़ देना! मैं यहीं रहता हूं, यदि हो सका तो मानसिंह को मार कर आऊंगा। रावल बांसवाड़े आया, सूरजमल ने अपने हेरू मानसिंह की घात में लगाये, एक दिन मौका पाकर उसके डेरे में घुसगया और उसका काम तमाम कर कुशलता पूर्वक बुरहानपुर को चल दिया।

---

(१) फारसी तवारीख़ों से भी इसकी तसदीक़ होती है।

देवलिये (प्रतापगढ़) का गुहिलोत वंश।

देवलिये की सीमा इतने प्रदेशों से मिलती है—दसोर (मन्द-सोर), रतलाम, कनोरका परगना राणा का, सोनगिरा वालावतों का वतन झाड़ी मदुत, जीहरण धीरावद (धरियावद) राणा की, बांसवाड़ा।

नदियां दो जाखम और जाजाली देवलिये के पहाड़ों से निकलती और देवलिये से कोस ५ पश्चिम और उदयपुर से देवलिये जाते मार्ग में पड़ती हैं। उनका जल, यहां तक ख़राब है कि पीने वाला तो रोगग्रस्त होता ही, परन्तु जो उस नदी के जल में होकर जाता वह भी कष्ट पाता है।

देवलिये ताल्लुक़ सात सौ गांव है। उनमें से एकसौ गांवों में मीनों की वस्ती है, जो कई तो प्रजा और कई मेवासी होकर रहते हैं। गेहूं, उड़द, चांवल, ईख की खेती वहुत होती और आम महुवे के पेड़ वहुतायत से हैं। गांव तीन सौ तो पहाड़ी में, और गांव ४०० समभूमि में है। इतनी भूमि देवलिये वालों ने नई दवाई सुहागपुरा, सोनगिरे चहुवाणों का वतन, ८४ गांव से रावत सिंह ने लिया जहां अवतक सोनगिरों का निवास है, वे देवलिये के स्वामी को चाकरी देते हैं। देवलिये से ४ कोस पूर्व वंसाड़ परगना, गांव १४०, वहुत उपजाऊ हैं। नैणेर का परगना गांव ८४, देवलिये से दस कोस, दक्षिण सुहागपुरे के पास अरुणादत्त का तीर्थस्थान है। गेहूं, वाड़ (ईख) वण, जवार, चांवल अच्छे पैदा होते। गांव १२ सेवना से दसोर के, रावत हरीसिंह ने दवाये, देवलिये से कोस दस। ये गांव वहुत वर्षों के वास्ते मुकाता ठहराकर लिये थे, परन्तु अवतो नाम मात्र के वास्ते थोड़ासा मुक़ाता दाख़िल करते हैं।

देवलिये परगने का प्राचीन नाम गयासपुर था, जिसमें देवलिया भी एक गांव था। अव तो गयासपुर देवलिये से ५ कोस ईशान, ५८ घरों की वस्ती का एक छोटासा गांव रहगया है। प्राचीन काल में वहां मेरों का राज्य था जो मेवासी होकर रहते थे। राणा मोकल के एक पुत्र खींवा (क्षेमराज) को उदयपुर से १५ कोस और चित्तोड़ से २० कोस दक्षिण तेजमाल की सादड़ी जागीर में मिली थी। जब राणा कुम्भा पाट वैठा, तो दोनों भाइयों में परस्पर ग्रासवेध पड़ा। खेमा मांडू के वादशाह के पास पहुंचा और वहां से सैनिक सहायता प्राप्त कर मेवाड़ को वड़ा धक्का लगाया। राणा कुम्भा और खेमा में लड़ाई चलती रही, परन्तु

राणा उसको मेवाड़ बाहर न निकाल सका, अन्त में दोनों इसी प्रकार लड़ते २ काल कवलित होगये। चित्तोड़ में राणा रायमल पाट बैठा और खेमा की जागीर पर उसके पुत्र सूरजमल का अधिकार रहा। राणा रायमल और रावत सूरजमल के दर्मियान भी झगड़ा चलता ही रहा। सूरजमल ने सादड़ी के सिवा और भी बहुतसी भूमि दबाली थी और १७ गांव शासन (उदक) में दिये जो आजतक पानेवालों के भोग में हैं। जब रावत बाघ गद्दी बैठा, वह चित्तोड़गढ़ पर हाडी करमेती के मामले में मारागया। उसने उन शासन के गांवों के वास्ते हाडी की सही कराली थी। वे गांव ये हैं-भीमल, धारता, गोठिया, वीझणा, बोसोला, भरखिया, बालिया, थाहरून, चारणखेड़ी, खर देवला भाटकी, और सुआली। राणा रायमल के जेष्ठ पुत्र पृथ्वीराज ने सूरजमल से कई लड़ाइयां लड़ीं, अन्त में सादड़ी में बड़ी लड़ाई हुई। सूरजमल घावों में पूर होकर पड़ा। इसी लड़ाई से गिरवा हाथ से जाता रहा, जहां देवारी के बाहर गांव वीझणा वासोला आदि और भी गांव सूरजमल के शासन दिये हुए अब तक उदक लेने वाले खाते हैं। इस लड़ाई से भी सादड़ी नहीं छूटी, च्यार पीढ़ी तक सूरजमल के वंशजों का अधिकार वहां रहा था। एक दिन अचांचक कुंवर पृथ्वीराज रावत सूरजमल पर आन गिरा, इसके पहले ही दिवस राणा रायमल के साथ सूरजमल का युद्ध हुआ था, जिसमें उसका हाथ ऊपर रहा (राणा उसको विजय न करसका) और वह थोड़ासा घायल भी हुआ था। दूसरे दिन पृथ्वीराज आन पड़ा तब सूरजमल के बहुत घाव लगे और उसके राजपूत उसे डोली में डालकर पहाड़ों में ले गये। पृथ्वीराज ने पीछा किया। सूरजमल के राजपूत वन्ना देवड़ा और पृथ्वीराज के नौकर महिया भाखरोत में परस्पर युद्ध हुआ। वन्ना ने महिया को मार लिया। देवलिये में मुख्य राजपूत सहसावत सीसोदिया और सोनगरे चहुवाण हैं। जोगीदास जोधा का अच्छा राजपूत है। जोध, गोपाल, और पूरा, सहसमल के पुत्र थे।

१ रावत खींवा मोकल का; २ रावत सूरजमल, ३ रावत वाघ सूरजमलोत चित्तोड़ बहादुर (गुजराती) के हमले में काम आया, ४ रावत बीका-रावत बाघ के पीछे गद्दी बैठा बाघ के पुत्र रायसिंह का बेटा था। उसको राणा उदयसिंह ने अपने देश से निकाल दिया तब वह गांव वडेरी में आसारण नामी मेरों की दादी के पास आया उस बडेरी (वृद्धा) का मेर बड़ा आदर करते थे। पहले तो

मेरों ने उसे वहां न ठहरने दिया परन्तु जब उसने बहुत से सौगन्ध शपथ खाकर उनको विश्वास दिलाया तब रहने पाया। अन्त में होली के दिवस बीका ने दगा कर सब मेरों को मारडाले और देवलिया लिया। आसारण के सन्तानों के अबतक एक गांव जागीर में है और उनका बड़ा भरोसा है।

रावत बीका के पीछे उसका पुत्र भाना (भानुसिंह) टीकेत हुआ [1]। वह चित्तोड़ के राणा अमरसिंह का समकालीन था। जीरण नीमच पर सैय्यदों का अधिकार था, दीवाण की हद नउवे वाघेड़े तक थी जहां रावत खंगार का पुत्र रावत गोयंददास थाने पर रहता था। सैय्यदों से रावत गोयंद का युद्ध हुआ और वह मारा गया। फिर राणा की आज्ञा से सीसोदिये जोध शक्तावत ने मोखण फराड़िया, कुंडल की सादड़ी और जीरण के कितनेक गांव मुकाते लिये। वहां जोध और वाघ दोनों भाई रहने लगे। रावत की धरती आबाद न होने देवें, और अपने गांवों के तुल्य नीमच से भी चौथ मांगने लगे। सैय्यदों के साथ जोधकी खसमखस बनी रही। वह रावत भान के गांवों को भी लूटता और देवलिये के मेरों के गांवों को मारता था। रावत भाना और शक्तावत जोध के पूरी शत्रुता थी। एक बार भान ने सैय्यदों को कहा कि इन बलाओं को यहां क्यों रखते हो, कल्ह (अवसर पाकर) ये तुमको मारेंगे? सैय्यद मक्खन की समझ में यह बात आगई, पहले तो उसने राणा अमरसिंह के पास पुकार की कि जोध हमारे गांव लूटता है और हम से लड़ाई करने का विचार रखता है। जोध के कानों तक यह सम्वाद पहुंचने पर वह भी दर्बार में अपना पक्ष दृढ़ करने लगा, बात बढ़ी, रावत भाना और मंदसोर का फौजदार सैय्यद मक्खन १५०० सवार की भीड़भाड़ लेकर जोध पर चढ़ आये, वह भी एकसौ सवार और २०० पैदल से मुक़ाबले को आन उपस्थित हुआ। चीताखेड़े के परे एक वट वृक्ष के पास दोनों में युद्ध हुआ। जोध ने सैय्यद मक्खन और रावत भाना दोनों को मार लिये, परन्तु आप भी वहीं खेत रहा व उन गांवों पर जोध के पुत्र नाहरखां भाखरसी ने अधिकार जमाये रक्खा। सैय्यदों को भी धक्का पहुंचा।

भाना के पीछे उसका भाई सिंहा तेजावत देवलिये की गद्दी पर बैठा और नीमच, रामपुरे के शासक राव दुर्गा (सीसोदिया) को मिली। राव ने कहा

(१) रावत बीका के पीछे उसका पुत्र रावत तेजसिंह सं० १६२५ में गद्दी बैठा था जिसने तेजसागर का तालाव बनवाया भानुसिंह तेजसिंह का पुत्र था।

कि हम तो दीवाण के चाकर हैं, नीमच जीरण की धरती के जो गांव चाहें दीवाण लेलेवें और जो चाहें हमें देवें। तब राणा ने मनमाने गांव लेलिये और देवलिये भी टीका भेजा और आश्वासना के साथ कहलाया कि रावत भाना और शक्तावत जोध दोनों हमारे भाई मरे, अब जोध के पुत्र वहां हैं तुम उनसे छेड़छाड़ मत करना। रावत सिंह ने राणा की आज्ञा शिरोधार्य रक्खी और धरती बसी। फिर राणा अमरसिंह पर विपत्ति का बादल टूटा, सात वर्ष तक वह आपत्ति भोगता रहा, राज सगर के सुपुर्द हुआ, फिर बादशाह से संधि होने पर नीमच व जीरण दीवाण को बादशाह की तरफ से दिये गये।

देवलिये और राणा के देश की सीमा के गांव—जीरण नीमच में गांव चीताखेड़ा राणा का, झांतला देवलिये का सीसोदिया बाघवाला; उगरावण राणा का। अरवली का टूंक देवलिये का; बलोर का घाटा राणा का, धमोतर देवलिये की।

रावत सिंह तेजावत के मरने पर रावत जसवन्त देवलिये की गद्दी पर बैठा, उस वक़्त बंसाड़ के गांव मोड़ी में रावत जसवन्त शक्तावत नरहरोत राणा जगतसिंह की तरफ से थाने पर रहता था। मन्दसोर के फौजदार जांनिसारखां को रावत जसवन्त सिंहावत ने बहकाया और राणा के थाने पर चढ़ाया। रावत आप तो साथ में नहीं आया परन्तु अपने बहुत से आदमियों को सहायतार्थ साथ दिये। युद्ध हुआ और रावत जसवंत शक्तावत इतने योद्धाओं सहित खेत पड़ा-सीसोदिया जगमाल बाघावत, सीसोदिया पीथा बाघावत, सीसोदिया कान्ह सादूल नरहरोत, पूरविया सबलसिंह चतुर्भुजोत आदि। इस घटना को मन में रखकर राणा जगतसिंह ने रावत जसवन्त सिंहावत को उदयपुर बुलाया। रावत अपने पुत्र महासिंह सहित आया, (चम्पाबाग़ में ठहराया) और रामसिंह कर्मसेनोत को (सेना सहित) भेजकर रावत जसवन्त और उसके पुत्र महासिंह दोनों को मरवा डाले[1]। इसके पूर्व राणा ने अपने मुसाहब अखैराज को धीरावत (धरियावद) के पास, जो देवलिये से मिला हुआ है, बहुतसी सेना समेत भेजकर आज्ञा दी थी कि तू देवलिये पर चढ़ाई करके उस पर अपना अधिकार करलेना, परन्तु अखैराज गया नहीं। इस घटना के उपरान्त सीसोदिये जोध गोपाल रावत हरीसिंह को देवलिये की गद्दी पर बिठाकर फिर उसे दर्गाह

(१) राज प्रशस्ति में लिखा है कि राठोड़ रामसिंह ने देवलिये को भी लूटा था।

ले गए। बादशाह ने देवलिये को राणा के अधिकार में से अलग कर दिया और रावत की चाकरी अपने अहमदाबाद की ओर नियत की[1]।

चन्द्रावत सीसोदियों का गुहिलोत वंश।

चन्द्रावत रामपुर के स्वामी (उदयपुर के) राणा वंश के हैं। राणा भुवनसिंह के पुत्र चन्द्रसिंह के वंशज चन्द्रावत कहलाये, पीढ़ी ११८ हुई। सं० १२८१ में रावल करण का पुत्र माहप हुआ। (उदयपुर के राणा) पहले रावल कहलाते थे, माहप ने राणा पदवी पाई और सीसोदा गांव के नाम से सीसोदिये प्रसिद्ध हुए[2]। यहां से दो शाखा फंटी, एक तो राणा सीसोदा के धनी, और दूसरी रावल, चन्द्रसिंह के वंशज चन्द्रावत कहलाये। उनकी पीढ़ियां—राणा भीमसिंह, चन्द्रसिंह, सज्जनसिंह, जांझणसी, आखरसी[3]। चन्द्र की सन्तान में आखरसी पाटवी था जिसके आंतरी परगने में भूमि थी, यह परगना आंमद (?) देशमें है जिसके पड़े के गांव पथार में चन्द्रावतों का वतन है।

आखरसी और उसका काका कल्लू दोनों बड़े भूमिये थे जिनकी भूम मांडू के बादशाह की हद्दमें थी। आंतरी के ताल्लुक १५० गांव लगते थे, सब कुम्भलमेर और राजधानी आंतरी में थी। बादशाह अकबर के समय में राव दुर्गा ने रामपुरा बसाया[4] और वह चन्द्रावतों का राजस्थान हुआ। ये लोग आंतरी में भूम

---

(१) राणा राजसिंह ने अपने मुसाहब फतहचंद को देवलिये पर भेजा था, उसने यह नगर लूटा और रावत हरीसिंह भाग कर बादशाह के पास गया, हरीसिंह की माता अपने दूसरे पुत्र प्रतापसिंह को लेकर उदयपुर आई और राणा ने उसे अपने उमरावों में दाखिल किया।

(२) राणा वंश का मूल पुरुष रणसिंह का छोटा पुत्र राहप था जिसे सीसोदा जागीर में मिला था, माहप शायद भूल से लिखा गया हो।

(३) नैणसी ने चन्द्रसिंह प्रथम को पहले तो राणा भुवनसिंह का पुत्र बतलाया और फिर भीमसिंह का बेटा होना लिखा। चन्द्रसिंह राणा भीमसिंह के दूसरे पुत्र जेणसी का बेटा था

(४) राव दुर्गा सीसोदिया के वास्ते फारसी किताब मासिरुलउमरा में लिखा है कि वह राणा प्रतापसिंह का विश्वासपात्र सेवक था, पीछे शाहंशाह अकबर की चाकरी में जारहा। बादशाह जहांगीर ने उसका मंसब च्यार हजारी कर दिया था। स० १०१६

लागत की चौथ लेते थे। चन्द्रावतों में मुख्य पुरुष भाखरसी भांभणोत था और वे सब उसके हुक्म में चलते थे। छज्जू बड़ा राजपूत था और उसके पास बहुत सी घोड़ियां, सांडें और गायें भैंसें थीं। उसके पशु प्रतिदिन लोगों के खेत खाया करते तब लोग भाखरसी को आकर पुकारते थे। वह छज्जू को प्रायः उलाहने दिलवाता परन्तु पशु रुकते न थे। लोग अत्यन्त क्लेशित हुए तब एकवार भाखरसी ने फिर छज्जू को बुलाया और कहा कि तूं मानता नहीं, अब भला इसीमें है कि तूं यह स्थान छोड़ कर दस कोस आगे जा बस! यहां रहने में परस्पर विवाद होवेगा। छज्जू और उसका पुत्र शिवा बूंदी चित्तोड़ और आंतरी के बीच पथार के गांवों को छोड़कर कोस बारह पर आंतरी के एक गांव मिलसियाखेड़ी से कोसेक परे बेतवा नदी के तट पर जा बसे, जहां बड़ा जंगल था और ढोरों के चरने के लिए घास भी पुष्कल था। वहीं उन्होंने बीस पचीस घर राजपूतों के बसाये। आंतरी के क़स्बे में बड़े २ महाजन रहते और चोर वहां बहुधा आया करते थे,

---

हि० (सन् १६०७ ई० सं० १६६४ वि०) में ८२ वर्ष की आयु भोगकर राव दुर्गा का देहान्त हुआ। उसका पुत्र चन्द्रसिंह (दूसरा हो) पहले ७०० का मंसबदार था, बादशाह ने उसका मंसब बढ़ाकर राव की पदवी प्रदान की। चन्द्रसिंह के बेटे राव दूदा को मंसब दो हज़ारी ज़ात १५०० सवार का और निशान बख़्शा गया। दखन में दौलताबाद की लड़ाई में राव दूदा अपने किसी सम्बन्धी की लाश को लाने के वास्ते शत्रुओं के गोल में घुस-पड़ा और च्यारों ओर से घिर गया तब घोड़े से उतर कर पैदल हो लिया और नंगी शमसेर घुमाता हुआ अछूता निकल आया। दूदा के बेटे हस्तिसिंह को दो हज़ारी ज़ात हज़ार सवार का मंसब, ख़िलत और राव का ख़िताब अता हुआ था। कई साल तक दखन की मुहिम में रहकर उसने वहीं शरीर छोड़ा। उसके सन्तान न होने से बादशाह शाहजहां ने राव चन्द्रसिंह के पोते और मुकुन्दसिंह के बेटे रूपसिंह को रामपुरा देकर ९०० का मंसब बख़्शा। औरंगज़ेब के साथ रूपसिंह बलख बदख़शां की लड़ाई में गया और वहां बड़ी वीरता दिखलाई। वह बादशाही लश्कर के हिरोल में रहता था। मंसब उसका दो हज़ारी ज़ात १२०० सवार का हो गया। राव रूपसिंह के पुत्र न होने से राव चांदा के पौत्रों में से अमरसिंह को रामपुरा मिला। वह औरंगज़ेब के साथ सन् १६६८ ई० में क़न्दहार की लड़ाई में सालहरे के गढ़ के नीचे काम आया और उसका पुत्र मोहकमसिंह राव पदवी पाया। मोहकमसिंह का पुत्र राव गोपाल था जिसको उसके बेटे रत्नसिंह ने राजच्युत कर दिया। राव रत्नसिंह बड़ा कंजूस और ज़बान का हलका था। मालवे के सूबेदार अमानतख़ां के साथ उसका युद्ध हुआ, उसकी सेना ने साथ न दिया और वह मारा गया। सं० १७७६ वि० में राणा संग्रामसिंह (दूसरे) को बादशाह फर्रुख़सियर ने रामपुरा पीछा दिया।

बादशाही करोड़ियों का भूमियों की भूमि में अमल नहीं था, तब महाजनों ने विचारा कि करोड़ी से तो कुछ होता नहीं, सीसोदिया छज्जू और शिवा बड़े ज़बरदस्त (वीर) हैं, गांव की रक्षा का भार इनको देदेवें तो ये चोरों का उपाय करेंगे। छज्जू से बातचीत हुई, उसने भी स्वीकार कर लिया और महाजनों ने उनको रु० १) रोज़ाना शासन का करदिया, इसके अतिरिक्त जन्म मरण पर भी कुछ लागत बांध दी। पिता पुत्र दोनों क़स्बे की टहल करने लगे, आस पास के उनके भाई बन्धु भूमियों के जो चोर लगते थे उनको छज्जू ने रोक दिये और दूसरे चोरों को पकड़ मारे, क़स्बे में चैन होगया। अब छज्जू शिवा का पलड़ा भारी पड़ा और उनके थोड़े राजपूतों की जोड़ बढ़ने लगी। शिवा बड़ा वीर और हट्टा-कट्टा जवान था, वह नदी तट पर प्रायः शिकार खेला करता था। उस वक़्त मांडू में होशंग गोरी बादशाह था (होशंग ने सं० १४६२ से सं० १४९२ तक बादशाहत की), जिसने दिल्ली के पठान लोदी बादशाह की बेटी के साथ विवाह किया था। होशंग शाह के जवान दिल्ली से शाहज़ादी को लिये आते थे, वे आंतरी के पास नदी पर पहुंचे। भादों आसोज के दिन थे, नदी बड़े वेग के साथ बह रही थी और पार उतरने को कोई घाट बाट न था। शाहज़ादी नदी में डोंगी डालकर उतरने लगी परन्तु मझधार में पहुंचते ही डोंगी टूटगई और उसके तख़्ते अलग अलग होगये। डूबती हुई शाहज़ादी के हाथ एक तख़्ता आजाने से वह उस पर चढ़ बैठी और धारा के प्रवाह में बहने लगी। शाही चाकरों ने शोर मचाया कि शाहज़ादी डूबी जाती है। शिवा पास ही शिकार खेल रहा था, उसने वह शब्द सुने, दौड़ कर पहुंचा और शाहज़ादी को बहती हुई देखा। वह बड़ा तैरू था, तत्काल नदी में कूद पड़ा और आडयहाव तैरता तख़्ते के पास जा पहुंचा। शाहज़ादी को सलाम किया, उसने कहा तू मेरा भाई है मेरा प्राण बचा! शिवा बोला कि मेरा कंधा पकड़ले। इस प्रकार नदी को पार कर शाहज़ादी को निकाल लाया। सब बधाई बांटने लगे, शाहज़ादी शिवा पर बहुत प्रसन्न हुई, उसे घोड़ा सिरोपाव दिया और कहा कि तू मेरे साथ मांडू चले तो मैं तुझे बादशाह से अर्ज़ करके मन्सब दिलवाऊंगी। शिवा घरसे अपने दस आदमियों को साथ ले शाहज़ादी के साथ हो लिया। उसके खानपान का खर्च बांध दिया गया और अकसर शाहज़ादी उसे इनाम इकराम भी दिया करती थी। मांडू पहुंचे, शाह-ज़ादी ने सुलतान से अर्ज़ की कि राणा के भाई एक सीसोदिया ने मुझे नदी में

से छूबती हुई निकाली है, उसको मैंने भाई कहा है। बादशाह उस पर बड़ी कृपा रखने लगा और वह भी बादशाह की चाकरी करता था। एक दिन बादशाह ने प्रसन्न होकर शिवा को कहा मांग ? शिवाने अर्ज़ की कि आंमद देशमें आंतरी का परगना मेरा वतन है वह मुझको मिल जावे। बादशाह ने पट्टा कर दिया और घोड़ा सिरोपाव दे विदा किया, शाहज़ादी ने भी चलते वक्त तीस चालीस हज़ार का माल और घोड़ा सिरोपाव शिवा को दिया। राव की पदवी पाई, मार्ग में अच्छे २ आदमियों को नौकर रखकर ४०० सवार साथ लिये वह घर आया और परगने में अपना अमल जमाया। जो आदमी वहां रखने योग्य नहीं थे उनको निकाल दिए। शिवासे चंद्रावतों की शाखा में ठाकुराई आई और १४०० गांव ले उसने आंतरी का परगना पाया। राव शिवा, राव रायमल, और राव अचला तक तो राजधानी आंतरी में रही। अचला का बेटा दुर्गा बड़ा दातार और जूझार हुआ, उसने रामपुर का क़स्बा श्री रामचन्द्रजी के नाम पर बसाया जो बड़ा गांव है और भूमि वहां की दुफसली है। शिवा ने राणा रायमल के पुत्र पृथ्वीराज से बड़ी लड़ाई की थी। शिवाके पुत्र रायमल को राणा कुम्भाने बलपूर्वक अपना चाकर बनाया जब कि मांडू की बादशाहत निर्बल होगई थी। अचला रायमलोत भी राणा सांगा का चाकर था। राणा सांगा बड़ा प्रतापी हुआ जिसने मांडू और दिल्ली के प्रदेश भुजबल से विजय कर लिये थे। राव दुर्गा अचला का, राणा की चाकरी छोड़ बादशाह अकबर का सेवक बना, बादशाह ने उसका मान बहुत बढ़ाया और रामपुरे के सिवा चार परगने और जागीर में दिये। रायचंद दुर्गा का। चंद्राका टीकायत पुत्र नगजी तो अपने पिता की विद्यमानता ही में मरगया था उसका पुत्र दूदा टीके बैठा जो बादशाह शाहजहां के समय में मोहबतखां के साथ दौलताबाद की लड़ाई में अपने काका गिरधर सहित काम आया। दूदाके पीछे हटीसिंह (हस्तीसिंह) राव हुआ जो जवान ही निस्सन्तान मरगया। उसके पीछे रुक्मांगद का बेटा और चन्द्रसिंह का पोता रूपसिंह गद्दी बैठा, और उसके पीछे राव अमरसिंह हरिसिंहोत चंद्रावत को टीका हुआ। रूपसिंह की मृत्यु के पीछे उसके एक पुत्र हुआ था।

प्रकरण दूसरा

चौहान वंश।

बूंदी के चौहान।

सं० १७२१ के ज्येष्ठ मास में राव रामचंद्र जगन्नाथोत ने लिखाया:—राव भावसिंह के अभी इतने परगने हैं जिनके गांव ३१६। परगना बूंदी गांव २६०; परगना खटकड़, बूंदी से ६ कोस, गांव ८८; पाटण बूंदी से १२ कोस,-गांव ४२; गौड़ों की लाखेरी, बूंदी से ६ कोस। बूंदी के पास हाड़ोती के परगने—मऊ, खीची (चौहानों का वतन), जिसमें (काली) सिंध अच्छी नदी सदा बहती रहती है। उसका निकास मऊ से ७ कोस, गांव धूलकोट के पास गुंडवाण से है। यही नदी गागरूण के गढ़ तले बहती है। राव रत्नसिंह ने मऊ का परगना विजय किया था, जो बूंदी से ३० कोस पर है और उसमें १४०० गांव लगते हैं। खास शहर मऊ, अच्छा छोटासा क़स्बा, पीपाड़ के तुल्य एक टेकरी पर बसा है। आगे की तरफ़ गांव ७०० में समभूमि और पिछवाड़े गांव ७४० में झाड़ पहाड़ हैं। मऊ के कोट की पुश्ती के नीचे नदी सदा उतार बहती है, परन्तु वहां उसका सेजा नहीं (सेजा अर्थात् आसपास की भूमि का सजल होना)। भूमि काली है, जिसमें गेहूं, चने, ईख और चांवल बहुत पैदा होते हैं। प्रजा—लोधा, किराड़, धाकड़ और मीणे हैं। यह परगना हाडा भगवतसिंह ने जागीर में पाया, उसने वहां महल, तालाब बनवाये, और नये मोहल्ले बसाये। बस्ती २००० घर की है।

कोटा, बूंदी से १२ कोस, गांव २६०, बहुत बड़ी जगह है। जैसे जोधपुर के स्वामी के सोजत आसवेध का स्थान है, वैसे ही बूंदी का आसवेध कोटा है। यह नगर चंबल नदी के तट पर बसा है और वहां हाड़ा मुकन्दसिंह के बनवाये हुए बड़े महल हैं[1]।

---

(१) मुहणोत नैणसी के समय से क़रीब चालीसेक वर्ष पहले ही कोटे का जुदा राज बूंदी में से निकल कर स्थापन हुआ था इसलिये उसका हाल ख्यात में नहीं है। मैं यहां कोटे राज्य का इतिहास संक्षेप से लिखता हूं। इस वक़्त उस राज्य का रक़बा क़रीब ४००० मील मुरब्बा, आबादी क़रीब ६४०००० आदमियों की, और गांव २५५८ हैं।

खैरावद, बूंदी से ४० और मह्रू से १४ कोस है। इसका दूसरा नाम मिल्की अभिरामपुर है, गांव ८४। पलायता बूंदी से १४ कोस और कोटे से ८ कोस है, गांव ८४ (अब यह कोटे के अधिकार में है)। सांगोत बूंदी से २५ कोस, गांव ८४। घाटोली, खीचियों का वतन, बूंदी से २५ कोस, कोटे से ६ कोस, गांव ३१। घाटी, बूंदी से २५ कोस, कोटे से ७ कोस, गांव ५१। गागरून, बूंदी से ३० कोस, मह्रू से ४ कोस और कोटे से १० कोस है। खीची अचलदास का बनवाया हुआ पहाड़ पर बहुत चौड़ा गढ़ है, जिसमें १०००० मनुष्य रह सकते हैं। गढ़ के पिछवाड़े सिंध नदी सदा बहती रहती, जिसका जल गढ़ में लिया गया है। पहिले तो यह गढ़ ऊजड़सा पड़ा था, अभी हाडा मुकंदसिंह ने उसकी मरम्मत कराकर वहां महल भी बनवाये हैं। गागरून के क़स्बे में ७०० आठसौ

कोटे राज का स्थापन करने वाला राव माधोसिंह, बूंदी के रावराजा रत्नसिंह सरबलंद-राय का दूसरा पुत्र था, जो अपने पिता की मौजूदगी ही में बादशाही नौकरी में रहता था। बादशाह शाहजहां के तख़्त पर बैठने के समय राव माधोसिंह का मंसब एक हज़ार जात ६०० सवार का था, परन्तु ख़ाने जहां लोदी या पीरा को, जो बादशाह से बाग़ी होगया था, लड़ाई में मारलेने से मंसब बढ़गया और निशान भी मिला। सं० १६८८ वि० में पोष वदी ३ को बालाघाट में बूंदी के राव रत्नसिंह का देहान्त हुआ तब बादशाह ने उसके पाटवी पोते शत्रुसाल को तो बूंदी का राजतिलक दिया और माधोसिंह का मंसब बढ़ाकर कोटा और पला-यता के परगनों के ३६० गांव, बूंदी में से जुदा कर उसको दिये। उस वक़्त कोटा राज की वार्षिक आय क़रीब दो लाख रु० साल की थी। बूंदी के इतिहास वंशभास्कर में लिखा है कि राव रत्नसिंह ने (जब वह बुर्हानपुर का क़िलेदार था और शाहज़ादा खुर्रम अपने बाप जहांगीर बादशाह से बाग़ी होकर बुर्हानपुर लेने आया था) शाहज़ादे (खुर्रम) और उसके (सेनापति) मुहम्मद तक़ी को लड़ाई में हराकर क़ैद कर लिये। बादशाह ने कई फ़र्मान भेजे, परन्तु राव रत्नसिंह ने शाहज़ादे को हुज़ूर में न भेजा और अपने पुत्र माधोसिंह को उसके पास रक्खा। उसी सेवा के बदले खुर्रम ने तख़्त पर आते ही माधोसिंह को जुदा राजा बना दिया। सर ऐचीसन की ट्रीटीज में कोटे के हाल में लिखा है कि, क़रीब २२० वर्ष पहले उदयपुर के महाराणा (जगतसिंह प्रथम) ने बूंदी के राव से उसके छोटे भाई (माधोसिंह) को राज बंटवा दिया।

राव माधोसिंह ने बुर्हानपुर, बुंदेलखंड, बीजापुर, बलख़ और बुख़ारे आदि स्थानों में बड़ी वीरता के काम किये और नाम पाया। सं० १७०४ वि० में उस वीर राजा का शरीर छूटा। उसके पांच पुत्र थे, पाटवी मुकन्दसिंह गद्दी बैठा, मोहनसिंह पलायता पाया, जूझारसिंह को रामगढ़ व रेलवन की जागीर दी, कुंजराम कोयला में रहा और किशोरसिंह को सांगोद दिया गया।

घर की वस्ती हैं। सिंध नदी मह्रू के परगने में वहती है। मह्रू के निकट इतने नगर हैं—बेरा का परगना गांव १२, सदा से हाडों के अधिकार में चला आता था परंतु अभी पादशाह ने दूसरे जागिरदार को बख़्श दिया है। यह परगना मह्रू और कोटे के बीच में है। गूंगोर, खीचियों का वतन, मह्रू से २५ कोस पूर्व की तरफ़, जिसमें ३६० गांव लगते हैं। नगर में १०००० घर की वस्ती (शायद भूल से एक बिंदी ज्यादा लग गई है) और छोटासा गढ़ भी है। खाताखेड़ी, मह्रू से २० कोस, भील चकसेन का स्थान, हाडा भगवंतसिंह की जागीर में है। मारली, गांव ७२८। चाचरनी, खीची बाघ की, खीचियों का वतन, मह्रू से २५ कोस और खाताखेड़ी से ५ कोस है; इसमें गांव ६४ हैं। वेहूसिंधल की गोपलदे, भगवंतसिंह की जागीर में है। खीची सांवलदास का चाचरड़ा, गांव ४२, खाताखेड़ी से ७ कोस है। मह्रू के परगने में नामी गांव—देवीखेड़ा, हरीगढ़, जोलपो मोही, मोड़पुरा, और कूड़ी। वंभोरी परगना, गांव ६४। जरगा, अटरोह के गांव ८४। धूलोप, जीलवाड़ा के गांव ८९। भूमि प्रजा की है। लगान—वाड़ (ईख) वीघे एक के रु० ५); आल, वीघे एक के रु० ५); वण (कपास) वीघे एक का रु० १॥)। ऊनाली (रवी की शाख) पीवल नहीं होती, सेजा वहुत, साल, गेहूं, चना और ईख बहुतायत से पैदा होते हैं। प्रजा, गूजरगौड़ (ब्राह्मण), पारीक (ब्राह्मण), मीणे, धाकड़, किराड़ और अहीर हैं।

हाडोती में नदिया ४ हैं—चंवल, (काली) सिंध, पार और पूडण।

बूंदी नगर का वृत्तान्त—सं० १७२१ के जेष्ठ मास में राव रामचंद्र जगन्नाथोत ने लिखाया। यह नगर पहाड़ से सटा हुवा वसा है। राजमहल पहाड़ के मध्यभाग में है, वहां जल नहीं है, शहर से लाया जाता है। वाला का पहाड़ शहर से मिला हुवा है। उस पहाड़ पर वृक्षावली वहुत और जल पुष्कल है। नगर के निकट भी जल की कमी नहीं है। बड़े तालाव सूरसागर की नहर से वहुत से वाग़ वाड़ी सींचे जाते हैं, जिनमें आम, फुलवाद और चंपे के वृक्ष वहुत हैं। नगर की बस्ती ५०० घर के लगभग है, जिनमें १०० घर महाजनों के हैं।

बूंदी देश के राजपूत—मुख्य तो सावंत हाडा, जिनकी ५०० सवारों की जोड़ है। हाडा लक्ष्मीदास मानसिंह का नांदेण गांव में रहता है। हाडा केशवदास का पुत्र पृथ्वीराज भोजनेर में; हाडा रायभांण रायसिंह का तालाव

सामियां के गुढ़े में है। हींडोला के हाडा प्रताप की संतान, खजूरी के हाडा तिलोकराम का पुत्र लक्ष्मण। दहिया हमीर जयमाल की संतान—दहिया सांवलदास। गोवर्धन सुंदरदासोत के पट्टा रु० २००००) का है। दहिया आसामी तीस चाकर हैं, जिनके ३०० मनुष्य हैं। सोलंकी ४००—हरीसिंह राघोदास का, सूर नाहरखान का और रावत जगतसिंह मानसिंह का। गौड़ सांगावत—रावत आशकरण, गौड़ सुन्दरदास, गौड़ गहपावत। वालणोत सोलंकी १० तथा १५, जिनके मनुष्य १०० हैं। नव ग्रह के हाडा आसामी १० तथा १५, मनुष्य एकसौ। राठोड़ ऊदावत। कछवाहा आसामी १० आदमी १००। वीकावत सादूल के बेटे पोते, आदमी १००। राजावत आदमी १००। हाडा राम के वंशज रामोत कहलाते, आजकल इनकी चढ़ती है, आदमी २०० हैं।

ख्यात (इतिहास)—चौहानों की २४ शाखा-सोनगरा, खीची, देवड़ा, राकसिया, नीला, डेडरिया, वगसरिया, हाडा, चीबा, चाहिल सेलोत, वेहल, बोड़ा, वोलत, गोलासण, नहरवण, वैस, निर्वाण, सेपटा, ढीमाड़िया, हुरड़ा, म्हालण, बंकट और………[1]।

हाडों की पीढ़ियां:—राव लाखण नाडोल का स्वामी, बली, सोहि, महंद्राव, अणहल, जिंदराव, आसराव, माणकराव, (संभरण), जैतराव, अनंगराव, कुंतसिंह, विजयपाल, हाडा, वाघा, और देवा बाघा का जिसने मीणों से बूंदी ली[2]।

---

(१) नैणसी ने केवल २३ ही शाखा के नाम लिखे हैं, २४ वां नाम नहीं दिया है। कर्नल टॉड ने अपनी पुस्तक 'राजस्थान' में ये २४ शाखा चौहानों की बतलाई हैं—चौहान, हाडा, खीची, सोनगरा, देवड़ा, पविया, सांचोरा, गोहेलवाल, भदोरिया, निरवाण, मालण, पुरबिया, सूरा, मादड़ेचा, संकरेचा, भूरेचा, वालेचा, तस्सेरा, चाचेरा, रोसिया, चांदू, निकुंभ, भावर, और वंकट।

चौहानों का गोत्रोचार-सामवेद, सोमवंश, माध्यंदिनी शाखा, वत्सगोत्र, पांच-प्रवर, चंद्रभागा नदी, अंबिका भवानी, वालन पुत्त (पुत्र), कालभैरव और आबू पर अचलेश्वर महादेव।

(२) बूंदी कोटा की ख्यातों तथा वंशभास्कर में हाडों की वंशावली और उनकी उपाधि आदि का जो बर्णन दिया है वह तो निराकपोलकल्पित ही प्रतीत होता है। बूंदी के महाराव वास्तव में नाडोल के चौहान वंश में से निकले हैं। इस शाखा का मूल पुरुष शाकम्भरी या साम्भर के चौहान राजा वाक्पतिराज या वप्पयराज का एक पुत्र राव लाखण (लक्ष्मण)

चौहानों की चौवीस शाखाओं में एक शाखा राव लाखण के वंशज हाडा बूंदी के धणियों की है। बूंदी में पहले मीणे रहते थे, हाडा देवा बाघा का विपत्ति का मारा भैंसरोड़ से बूंदी में जाकर रहा। एक बात ऐसे सुनी है कि बूंदी में एक ब्राह्मण रहता था जिसकी बेटी को मीणों ने ब्याहना चाहा। ब्राह्मण ने बहुत कुछ आनाकानी की परन्तु उन्होंने एक न सुनी। हाडे (राजपूत) उस ब्राह्मण के यजमान थे, इसलिये वह देवा के पास भैंसरोड़ जाकर पुकारा। देवा ने कहा देरी देरी करके विवाह थाप देना, और मीणों को कहना कि मैं तुम्हारी खातिरदारी बराबर न कर सकूंगा सो कहो तो अपने जजमान हाडा को भैंसरोड़ से बुलालूं। ब्राह्मण ने ऐसा ही किया, मीणों ने भी कहदिया कि बुला ले। विवाह का दिन नियत कर ब्राह्मण ने हाडों को बुलाये। मदांध हुए मीणों ने खुटाई या चूक की

या लाखण हुआ जिसने सं० १०१० वि० से कुछ पूर्व नाडोल में अपना अधिकार जमाया और क्रमशः उनका बल बढ़ता गया। फिर लखमण का पुत्र शोभित या सोहिय, बलिराज, विग्रहपाल शोभित का भाई, महेन्द्र, इसकी बहन दुर्लभ देवी और लक्ष्मी ने स्वयम्वर में गुजरात के सोलंकी राजा दुर्लभराज और उसके छोटे भाई नागराज को वरे थे। अणहिल्ल, जिसने गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव प्रथम से युद्ध किया, सम्भव है कि सोमनाथ पर चढ़ाई करते समय नाडोल के पास सुलतान महमूद गज़नवी से भी इसका युद्ध हुआ हो। बालप्रसाद, जेन्द्रराज, इसके तीन पुत्र थे—पृथ्वीपाल, जोजलदेव और आसराज क्रमवार नाडूल के स्वामी हुए। आसराज (अश्वराज) विक्रम की तेरवीं शताब्दी के आरम्भ में नाडोल की गद्दी पर बैठा था। इसने गुजरात के सोलंकी राजा जयसिंह सिद्धराज की सहायता की जब उसने मालवे पर चढ़ाई की थी। कई मन्दिर, धर्मशाला, वापी, तालावादि बनवाये। इसका बड़ा पुत्र आल्हण तो नाडोल की गद्दी पर बैठा और छोटे माणकराज के वंश के बूंदी के चौहान हैं। कर्नल् टॉड को मैनाल में हाडों का एक लेख सं० १४४६ वि० का मिला उसमें दी हुई हाडों की वंशावली—माणिक्यराज, संभारण, जैतराव, अनंगराव, कुंतसिंह, जयपाल, हरराज (इसी का भाटों ने बिगाड़ कर "हाडा" कर दिया जैसा कि नैणसी की ख्यात में है। बाघा जिसको बंगदेव पढ़ा है और बाघा का पुत्र देवा या देवीसिंह था।

ऊपरमाल प्रदेश में सांभर अजमेर के चौहानों का राज्य था, मैनाल बीजोलियां (विंध्यावली) आदि में चौहान राजाओं के मिले हुए प्राचीन लेखों से यह बात स्पष्ट है। सम्भव है कि माणकराज के किसी वंशज को उधर कहीं जागीर मिली हो। नाडोल के राज्य का विध्वंस सुलतान कुतबुद्दीन ऐबक के समय में हुआ और गुहिलवंशी रावल जैत्रसिंह ने भी उसको विजय किया था। सुलतान अलाउद्दीन खिलजी के समय में किसी कारण आपत्ति आने से वह जागीर छूट गई हो, तब राव देवा ने भैंसरोड़ में आकर निवास किया।

बात न समझी। लग्न दिवस के पहले हाडों ने सुदृढ़ सड़े (कांटों की छड़ें और मिट्टी की छुड़ियां) बंधवाये और उस पृथ्वी के नीचे बारूद बिछवाकर ऊपर घास फैलादी। मीणों को बुलाकर जनवासा दिया और खूब मद्य पिलाया, जिससे वे मतवाले होकर बेसुध होगये; तब कितनोंक को तो काट डाले, कई उस सड़े में जलकर मरगये और जो गांव में रहे उनको भी कूट मारकर देवा ने बूंदी पर अधिकार करलिया। कई मीणे भागगये जो बुंदेले मीणे कहलाते हैं।

बात एक ऐसे सुनी है कि हाडा देवा बाघा का आपत्ति का मारा बूंदी की तरफ आया और भैंसरोड़ में ठहरा। उसकी वस्ती भी साथ थी। राणा अरिसिंह लखमसीहोत के साथ देवा ने अपनी बेटी का सम्बन्ध किया था, सो राणा अरसी बरात बनाकर बहुतसी सेना साथ लिये उसके यहां व्याहने को आया। विवाह होजाने के पीछे राणा ने देवा से उसका सारा वृत्तान्त पूछा और कहा कि तुम यहां क्यों रहते हो, हमारे पास क्यों नहीं आजाते? उसने एकान्त में कहा कि यह सरस धरती मिणों के अधिकार में है, वे लोग निर्बल से हैं, और आठों जाम मद में छके मतवाले बने रहते हैं, यदि दीवाण मुझे सेना की सहायता दें तो उनको मारकर यह प्रदेश लेलूं और दीवाण की चाकरी करूं। तब दीवाण ने वहीं देवा के कहने के अनुसार सहायता दी। वह सेना लेकर रातोंरात मीणों पर चढ़ गया, निकास पैसाव के वाट घाट तो वह जानता ही था, सब मार्ग रोक कर उसने मीणों को मारा और कई प्राण बचाकर भागगये। देवा ने अपनी आण दुहाई फेरी, और पीछा राणा के हजूर में हाज़िर होकर मुजरा किया। राणा बहुत प्रसन्न हुआ, और पूछा कि और जो कुछ चाहो सो कहो! अर्ज़ की कि दीवाण की कृपा से सब काम ठीक होगया, अब ४ मास तक पांचसौ सवार मदद के मिल जावें। राणा पांचसौ सवार वहां छोड़ चित्तोड़ को चला गया। देवा ने रहे सहे मीणों को फिर मारा और आपके भाई बन्धुओं को बुलाकर बसाया। जब वह भूमि बसगई दीवाण की सेना को विदा करदी, और पीछे से आप भी बड़ी जमैयत के साथ राणा के मुजरे को गया, और उसकी चाकरी करने लगा[1]।

---

(१) राणा अरिसिंह जब लखमसी का पुत्र सं० १३५०–६० में था। लखमसी चित्तौड़ का स्वामी नहीं किन्तु सीसोदे में राज करता था। जब सं० १३६० वि० में सुलतान अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तोड़ पर चढ़ाई की तब राणा लखमसी अपने सात पुत्रों सहित

एक बात ऐसे भी सुनी है कि हरराज डोड (परमारों की एक शाख) अकेला बूंदी के मीणों पर हमला करता और उनकी धरती में बहुत बिगाड़ करता था । मीणों ने उसका उपद्रव मिटाने के कई प्रयत्न किये परन्तु हरराज को न पहुंच सके । वह प्रतिवर्ष उनसे लालकन्नी के बहुत से रुपये लेता और उनके गांव भी लूट लेता था । हाडा देवा बाबावत के पास एक घोड़ा अच्छा था जिसको लांहू के बादशाह ने मंगवाया परन्तु देवा ने दिया नहीं, और इसी से वह बैंसरोड़ को छोड़कर बूंदी में मीणों के पास आया। मीणों ने उसको छुड़ी (छूड़ी) नाम एक वेश्या के घर में रहने को ठौड़ बताई और वह वहीं रहने लगा । उस वेश्या को भविष्यत् काल का कुछ ज्ञान था । साथ रहने से देवा की प्रीति वेश्या से जुड़गई, तब एक दिन वेश्या ने उससे कहा कि इस धरती के धनी तुम होओगे । एक दिन हथाई (वह स्थान जहां गांव के मनुष्य इकट्ठे होकर सलाह करते हैं) बैठे मीने कहने लगे कि इस हरराज ने हमारे पर बड़ी लीक लगाई है, हम से दण्ड भी लेता और हमारे गांव भी मारता है । तब देवा बोला कि यदि कोई इस बला को तुम्हारे सिर पर से दूर करदे तो तुम उसे क्या दो ? मीणों के मुखिया ने कहा कि भूमि का जो मेज (हासिल) आता है उसमें से आधा दे देवें । देवा ने उनसे क़ौल क़रार और सौगन्द शपथ लेकर बात पक्की करली । हरराज प्रति दिवाली के दिन बूंदी में आता और धावा करता था। दीपमालिका आते ही देवा अपने इराकी घोड़े पर चढ़ बखतर पहन शस्त्र बांधकर तय्यार होगया । मीणे तो हरराज को आता देखकर भागे और अपने २ घरों में आघुसे, परन्तु देवा अपने द्वार पर खड़ा रहा । दोनों का परस्पर दृष्टि मिलाप होते ही देवा ने अपने घोड़े को चाबुक लगाकर बढ़ाया । उसे आता देख हरराज लौटगया। देवाने पीछा किया । बीच में एक गहरा नला पड़ता था, सो हरराज का घोड़ा

रावल रत्नसिंह की सहायता के वास्ते आया था और शत्रु के संमुख सातों पुत्रों सहित युद्ध में शरीर छोड़ा । सम्भव है कि रत्नसिंह के खेत पड़ने पीछे लखमसी ने पाट बैठ कर युद्ध किया हो, उसके मारे जाने पर उसका पुत्र अरिसिंह या अर्सी पाट बैठा और दो एक दिन शत्रु से जूझकर काम आगया ।

राव देवा का समय विक्रम की चवदवीं शताब्दी के अन्त में है, उस वक़्त राणा हमीर राज करता था और सम्भव है कि हमीर ही की सहायता से देवा ने बूंदी पर अधिकार किया हो ।

उस नाले को कूदकर दूसरे तीर जा खड़ा हुआ, और देवा इस तीर पर ठहरा। हरराज ने उससे पूछा कि तुम कौन हो और कहां से आये हो? देवाने अपना नाम ठाम बतलाया। फिर पूछा कि यहां आये तुमको कितना अर्सा हुआ। कहा च्यार महीने। पूछा कि अब क्या विचार है? देवा बोला मैंने तुम्हें रोकने का बीड़ा उठाया है, अब यदि तुम यहां आओगे तो तुमको मारूंगा। तब हरराज ने कहा कि अब मैं कभी न आऊंगा। दोनों में मेल हुआ, घोड़े से उतरकर परस्पर मिले, हरराज चलता बना, देवा पीछा बूंदी आया। थोड़ा समय वीतने पर देवा ने अपनी पुत्री का विवाह हरराज के साथ करना ठहराया, परन्तु मीणों के मुखिया ने कहा कि यह कन्या हमें परणाओ। देवा ने बहुत कुछ उज़र किया परन्तु मीणों ने माना नहीं, तब उसने कहा कि बहुत अच्छा ब्याह दूंगा। सीथुर में हरराज डोड के सोलंकी सगे सम्बन्धी रहते थे उनकी सहायता से देवा और हरराज ने मीणों को लड़ों में बन्दकर मारडाले और बूंदी देवा के हाथ आई।

राव नारायणदास राव भांडा का बेटा—(मारवाड़) के राव सूजा की बेटी खेतबाई परणा था। अमल बहुत खाता था। एकबार लघुशङ्का करने बैठा सो वहीं पीनक आगई। खेतबाई राव पर अपनी साड़ी की छाया किये रातभर वहीं खड़ी रही। प्रभात होते जब राव की आंख खुली तो क्या देखता है कि खेतू खड़ी है, प्रसन्न होकर कहा कि हमारे घर मुवाफ़िक जो चाहो सो मांगो! राणी ने कहा मुझे और कुछ नहीं चाहिये, आपकी कृपा से आनन्द है, परन्तु इतना चाहती हूं कि आपका अमल का पोता (थैली) मेरे पास रहे (अर्थात् मैं ही आपको अमल अरोगाया करूं)। राव ने पोता खेतू को दे दिया और वह दिन २ राव का मावा घटाने लगी। नारायणदास राणा सांगा की चाकरी में था, उसने मांडू के बादशाह को (जब वह राणा से लड़ा था) क़ैद किया। नारायणदास के खेतू के पेट से सूरजमल पैदा हुआ।

हाडा सूरजमल नारायणदासोत और राणा रत्नसिंह सांगावत के झगड़ा हुआ जिसका हाल—राणा सांगा रायमलोत चित्तोड़ में राज करता था, उसका टीकायत पुत्र रत्नसिंह, राठोड़ राणी धनाई (धनबाई) से उत्पन्न हुआ था। पीछे राणा सांगा ने हाडा नरबद की बेटी हाडी करमेंती से विवाह किया जिससे वह बहुत प्रसन्न था। करमेती के दो पुत्र विक्रमादित्य और उदैसिंह हुए, इससे राणा का प्रेम उसपर और भी अधिक बढ़गया। एक दिन

करमेती ने दीवाण (राणा) से अर्ज़ की कि "आप बहुत दिन जीवित रहें, परंतु विक्रमादित्य और उदैसिंह बालक हैं, और राज्य का स्वामी टीकायत रत्नसिंह है, इसलिये आपके साम्हने इनका कुछ प्रबंध होजावे तो अच्छी बात है।" राणा ने पूछा कि तुम क्या चाहती हो? तब हाडी ने कहा कि रत्नसिंह को पूछ कर इनको रणथंभोर दीजिये, और हाडा सूरजमल जैसे राजपूत की बांह पकड़ाइये। दीवाण ने भी यह बात स्वीकारी। दूसरे दिन दरबार जुड़ा तब कुंवर रत्नसिंह को राणा ने कहा कि विक्रमादित्य और उदैसिंह तुम्हारे छोटे भाई हैं उनके निर्वाह के वास्ते कुछ जागीर देनी चाहिये। राणा सांगा बडा ज़बर्दस्त राजा था, रत्नसिंह उसके साम्हने कुछ बोल न सका, केवल इतना ही कहा कि जो आपकी इच्छा हो वही स्थान दे दीजिये। राणा ने कहा कि इनको रणथंभोर दें, रत्नसिंह ने उत्तर दिया कि बहुत अच्छा। राणा ने विक्रमादित्य और उदैसिंह को सन्मुख कर कहा कि उठो रणथंभोर का मुजरा करो, उन्होंने खड़े होकर मुजरा किया। हाडा सूरजमल भी दरबार में बैठा हुआ था, राणा ने उससे कहा कि हम विक्रमादित्य और उदयसिंह को रणथंभोर देकर तुमको इनके नियँता नियत करते हैं तुम इनकी बांह पकड़ो। सूरजमल ने उत्तर दिया मुझे इस बात से कुछ सरोकार नहीं जो चित्तोड़ का राजा हो मैं उसी का चाकर हूं। राणा ने फिर आग्रह पूर्वक कहा कि ये बालक हैं तुम्हारे भानजे हैं, बूंदी से रणथंभोर निकट है, और तुम अच्छे राजपूत हो इसलिये इनका हाथ तुमको पकड़ाते हैं। सूरजमल ने अर्ज़ की कि दीवान फर्मावें वह मुझे शिरोधार्य है, हम तो हुक्म के चाकर हैं, परंतु आपके सौ बरस बीतने (मृत्यु) पर रत्नसिंह हमें मारने को तय्यार होवेगा, इसलिये दीवाण ही की आज्ञा से मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता, रत्नसिंह कह दे तो बात दूसरी है। तब राणा ने रत्नसिंह की तरफ देखा तो उसने कहा "सूरजमल! तुम दीवाण का हुक्म सिरपर चढ़ाओ। ये (विक्रमादित्य और उदैसिंह) मेरे भाई हैं, तुम हमारे संबंधी हो, और राजपूत हो, हम तुम से बुरा न मानेंगे"। तब सूरजमल ने दीवाण की आज्ञा को स्वीकारा, रणथंभोर उन (दोनों भाइयों) को दिया गया, और उन्होंने वहां जाकर अपना अमल जमाया। कुछ अर्से पीछे राणा रत्नसिंह गद्दी बैठा तब हाडी करमेती अपने पुत्रों को लेकर रणथम्भोर चली गई। राणा की छाती में रणथम्भोर नहीं समाता था, उसने पुरबिये (चौहान) पूरणमल को विक्रमादित्य व उदयसिंह को ले आने के

वास्ते भेजा। पूरणमल ने पीछे आकर कहा कि सूरजमल उन्हें नहीं आने देता है। राणा आखेट करता बूंदी की तरफ आया और सूरजमल को बुलाया। वह आया। उसे साथ लेकर राणा शिकार को जाने लगा। एक दिन पूरणमल सहित राणा व सूरजमल एक झूल में बैठे, दूसरे सबको दूर भेज दिये, सूरजमल के साथ उसका एक खवास (चाकर) था। तब राणा ने सूरजमल पर झटका किया, और पूरनमल ने भी हाथ चलाया। हाडा ने उसको गिराकर दबा लिया, वह चिल्लाने लगा तब राणा ने फिर पास जाकर दूसरा वार किया इतने में तो सूरजमल ने राणा के घोड़े की वाग थाम्ह कर राणा की गर्दन के नीचे के भाग में कटार मारा जो नाभी तक चीरता चला गया। घोड़े से गिरकर राणा मर गया, और सूरजमल के प्राण भी वहीं निकल गये। राणा उदयसिंह ने सूरजमल के पुत्र सुरताण को बूंदी का टीका दिया। (सूरजमल सम्बन्धी वृत्तान्त उदयपुर के राणा रत्नसिंह के हाल में सविस्तर लिखा गया है)।

सुरताण कुलक्षणा था। हाडा सहसमल सांतल बूंदी के बड़े उमराव थे, सुरताण ने क्रोध में आकर उनकी आंखें निकलवा डालीं और दूसरी भी कई उपाधियां करने लगा, तब बूंदी के सब सरदार मिलकर राणा उदयसिंह के पास आये और कहा कि सुरताण राज करने योग्य नहीं है। राणा ने सुर्जन को बूंदी का टीका दिया, राजपूत सब सुर्जन से आन मिले और उसका बल प्रतिदिन बढ़ता गया। राणा ने उसका पूरा भरोसा कर गढ़ रणथम्भोर की कुंजी भी उसके सुपुर्द की और बूंदी, गांव ३६०१ से पाटण, कोटा, कटखड़ा, लाखेरी गांव ६४ से, नैणवा, आंतरदा, खैराबद गांव ८४ सहित बूंदी से कोस ३५, जागीर में दिये। जब सुर्जन राणा की चाकरी में था तब १२ गांव उसकी जागीर में थे। एक वार जगनेर में दीवाण की चाकरी पहुंचा तब फूलिये का पट्टा उसको दिया था, फिर फूलिया खालसे कर बदनोर दिया, उसी वक्त राव सुरताण के ये समाचार आये[1]।

(१) राजभ्रष्ट होकर सुरताण का अपने कुटुम्ब समेत रायमल खीची के पास जाना और वहां पडौंद जागीर में पाना वंशभास्कर में लिखा है। फिर वह बादशाह अकबर की सेवा में गया और शाही तोपखाने के कुछ विभाग का अफसर नियत हुआ। जब बादशाह ने चित्तोड़ पर चढ़ाई की तो आज्ञा के विना ही वह थोड़ी बादशाही सेना लेकर बूंदी पर चढ़गया, परन्तु राव सुर्जन के भाई रामसिंह ने उसे पराजित कर भगादिया। नाराज़ होकर बादशाह ने सुरताण को निकाल दिया और वह पीछा खीचीवाड़े में जा रहा। सुरताण के वंशज सुरताणोत हाडा कहाते हैं।

राव सुर्जन—राणा उदयसिंह ने रणथम्भोर की क़िलेदारी सुर्जन को दे रक्खी थी। राणा ने सांडू रामा के मामले में अपने सगोत्री सीसोदिये भाण को अपने हाथ से मारा इसलिये वह (इस पाप का प्रायश्चित करने को) द्वारिका की यात्रा को गया तब राव सुर्जन राणा के साथ था। उस वक़्त रणछोड़जी का देवल सामान्य सा था, राव सुर्जन ने दीवाण से आज्ञा लेकर नया मन्दिर जो अभी है, बनवाया।

सं० १६२४ वि० में बादशाह अकबर ने चित्तोड़गढ़ तोड़ा और जयमल (राठोड़), सीसोदिया ईसर और पत्ता जगावत वहां काम आये। पीछे फिरते समय बादशाह ने रणथम्भोर का गढ़ घेरा। चवदह वर्ष तक वह गढ़ सुर्जन के हाथ में रहा था। जब सुर्जन का बल घटा तो उसने (आम्बेर के) कछवाहे राजा भगवन्तदास (भगवानदास) के मार्फ़त बादशाह से बात चीत कराके सं० १६२५ के चैत्र सुदि ६ को वह बादशाह की सेवामें हाज़िर हुआ और इन शर्तों के साथ गढ़ बादशाह के हवाले किया कि—"मैं सदा राणा की दुहाई कहूंगा, और राणा पर चढ़कर भी न जाऊंगा"। बादशाह ने बाणारसी की तरफ चरणाट (चनार) के ४ परगने उसको दिये। आगरे पहुंच कर अबकरशाह ने सीसोदिया पत्ता जगावत और रावत जयमल वीरमदेवोत की दो मूर्तियां हाथियों पर चढ़ी हुई गढ़ के द्वार पर बनवाईं, और सुर्जन की मूर्ति कूकर (कुत्ते) की सी बनवाई, तब सुर्जन को बड़ी ही लज्जा आई। फिर काशी में जाकर रहने लगा, वहां उसके बनवाये हुए बड़े महल हैं। सुर्जन का छोटा पुत्र (भोज) तो बादशाह की सेवा ही में रहा और बड़ा पुत्र दूदा रणथम्भोर ही से राणा उदयसिंह के पास चलागया। राणा ने उसके निर्वाह को कुछ रोज़ीना करदिया, फिर राव सुर्जन जल्दी मरगया[1]।

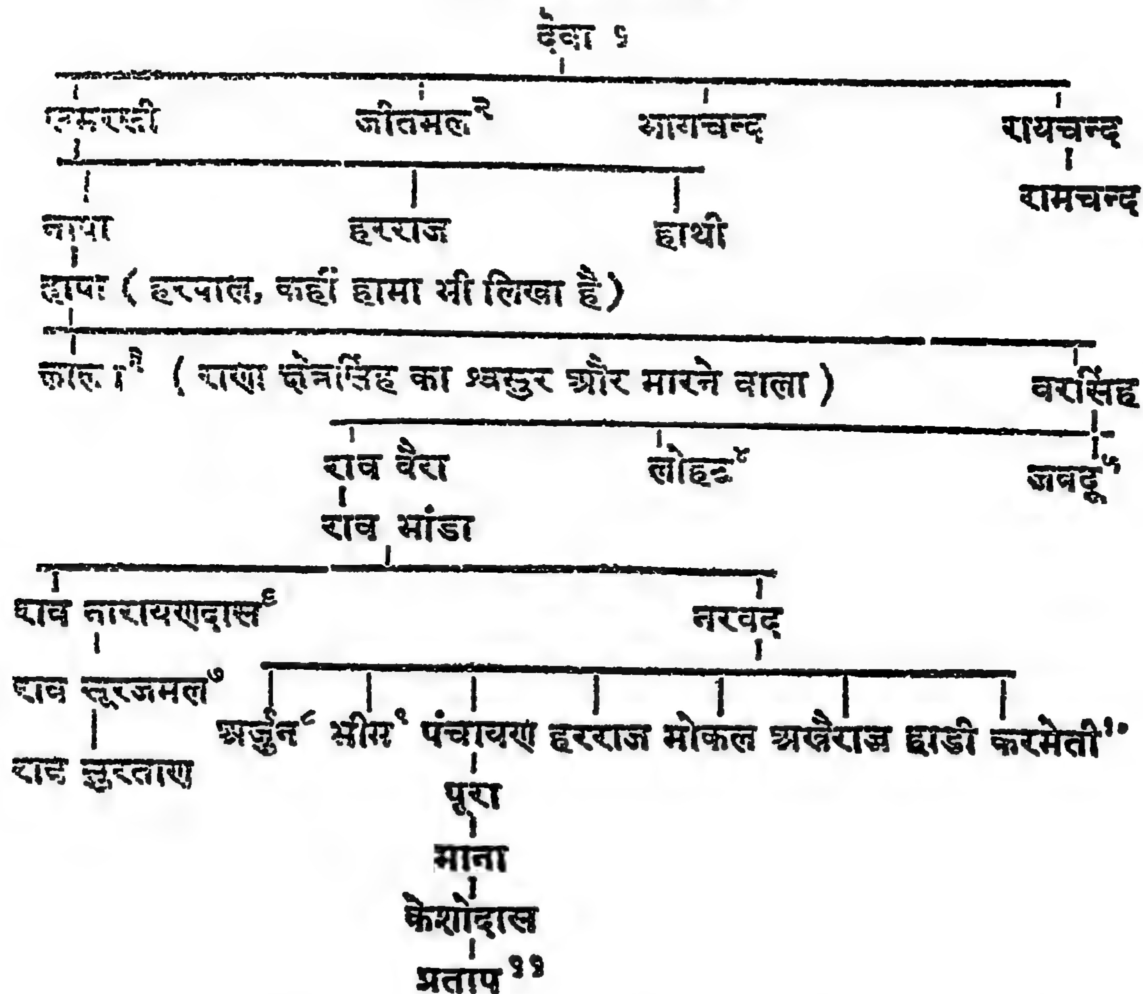
बादशाह (अकबर) ने बूंदी (राव सुर्जन के छोटे बेटे) भोज को दी तब दूदा ने आसवेध किया। निरन्तर उपद्रव करता और प्रजा को लूटता था। दस-बार आगरे (बादशाही) आमखास में जाकर भोजके साथ लड़ाई की। रतन दूदा के पास रहा। फिर दूदा को विष दिया गया, भोज बूंदी आया और उस बिगड़े हुए देश को बसाया।

(१) अपने पुत्र दूदा को राजकाज सौंप कर राव सुर्जन ने काशी वास किया और वहीं सं० १६४२ वि० में उसका देहान्त हुआ मणिकर्णिका घाट पर बहल नाली में उन राणियों के चबूतरे हैं जो राव सुर्जन के साथ सती हुई थीं।

दूदा-जसा भैरवदासोत चांदावत का दोहिता और भोज डूंगरपुर के रावल सहसमल का दोहिता था। दोनों भाइयों में परस्पर वैमनस्य हो गया तब राव सुर्जन ने दोनों को बुलाकर कहा कि तुम मेरा कहना नहीं मानते, मुझे राज्य से काम नहीं, तुम दोनों भाई उसे बराबर बांट लो। फिर ३६० गांव से बूंदी दूदा को दी और ३६० गांव से खटकड़ का परगना भोज को दिया। हमीर दहिये ने भोज को कहा कि तू दूदा के आगे ठहर नहीं सकेगा, तुझको वह थोड़े ही दिनों में मार डालेगा। तब भोज बोला कि मैं क्या करूं? दहिया ने उसे अकबर बादशाह की सेवा में जाने की सलाह दी। भोज बोला कि जाऊं तो सही परन्तु इतना खर्च कहां से लाऊं? हमीर ने कहा मैं तुझको एक लाख रुपये देता हूं और लाखेरी के बोहरे के पास से अपनी ज़मानत पर लाख रुपये उसे दिलवाये। भोज सीकरी फतहपुर में बादशाह के पास हाज़िर हुआ। यह खबर दूदा को हुई, वह बोला कि "भोज को मारूं और लरे दरबार मारूं" और वह भी सीकरी फतहपुर गया और भोज का पता लगाने को गुप्तचर छोड़ा। गुप्तचर ने आकर कहा कि मैंने पता लगा लिया है, आज अमुक तरह की पोशाक पहन अमुक रंग के घोड़े पर चढ़कर भोज दरबार में जावेगा। दूदा बोला कि तूने खूब चौकस तो करली है? उसने उत्तर दिया कि इसमें शक नहीं है। भोज पोशाक पहनकर दरबार में जाने को तैयार हुआ और घोड़े पर चढ़ने लगा तब घोड़ा धूजा, जोगा गौड़ ने कहा कि आप इस घोड़े पर सवार मत हूजिए, तब भोज ने वह घोड़ा और पोशाक एक खवास को बख़्श दी और आप दूसरा बागा पहन दूसरे घोड़ेपर चढ़कर गया। दूदा भी पीछे लगा। जब भोज बादशाह से मुजरा करके पीछा फिरा तब दूदा ने गुप्तचर के बतलाए हुए बागे और घोड़े के निशान से खवास के कटारी मारी। खवास ने हाय की, तब दूदा ने घोड़ा पलटा कर देखा और हेरू को कहा कि तेरी खबर सही न निकली, भला यह कब हो सकता है कि राव सुर्जन का बेटा कभी कटार लगने से हाय मारे! ख़बर कराई तो जानपड़ा कि वह बागा और घोड़ा भोज ने खवास को देदिया था। दूदा पीछा बूंदी आया और पूछा कि भोज को दर्गाह में किसने भेजा? किसी ने कहा कि हमीर दहिया ने। यह सुनते ही तीन हज़ार सवार लेकर वह हमीर के गांव किरवाड़े पर चढ़ धाया, हमीर को कहलाया कि भोज को रुपये दिये सो मुझे भी लाख रुपये दे नहीं तो मारता हूं। तूने भोज को क्यों भेजा? तब हमीर सोचने लगा कि अब क्या करूं। उसने अपने

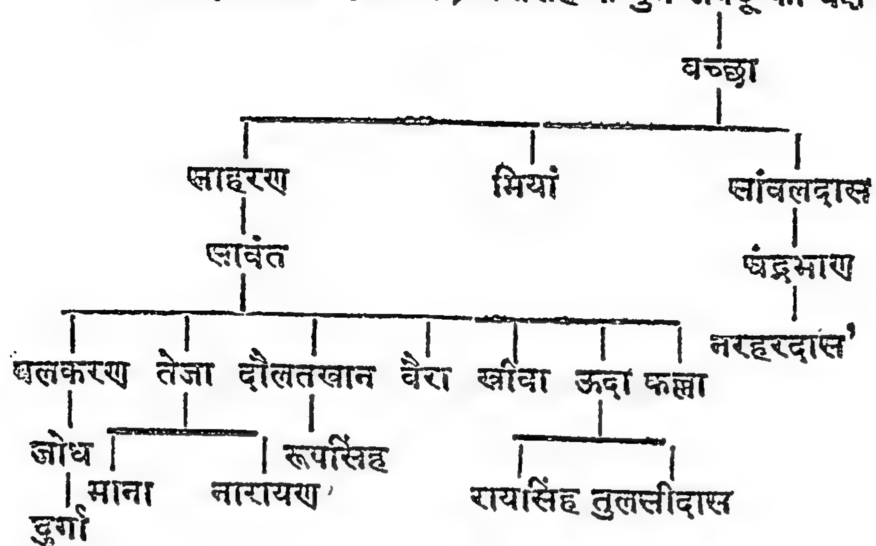
छोटे भाई दौलतखान को बुलवाया और कहा कि भाई अब क्या करें बड़ी आपत्ति आई है। जो रुपये देते हैं तो जाट गूजर कहलाते और हाडोती में बदनाम होते हैं और न देवें तो मारे जाते हैं। दौलत बोला, भाई दूदा के कटक में २५ बड़े सरदार हैं, जो इनको मारलें तो दूदा फिर जावेगा। हमीर कहता है-दौलत! ये अपने सगे सम्बन्धी हैं, उनको क्योंकर मारें। दौलत ने उत्तर दिया भाई समझ जा (ऐसे किये बिना काम नहीं चलेगा), तब हमीर ने अपना प्रधान दूदा के पास भेज कहलाया कि भोजको तो ज़ामिन होकर दूसरे से रुपये दिलाये, परंतु आपको मैं घर से दूंगा। पचास हज़ार तो रोकड़ लेलो और शेष पचास हज़ार के बदले हाथी घोड़े दे दूंगा। दूदा ने मंजूर किया। हमीर को बुलाया तो उसने कहा कि आपके साथ के सरदार वचन दें कि आज पीछे दूदा हमीर को न सतावेगा तो आऊं। दूदा ने कहा कि सरदारों जाकर वचन दो और हाथी घोड़े ले आओ। सरदार गये। हमीर ने ४०० राजपूत शस्त्रबंद एकस्थान पर छिपा रक्खे थे, उनको भी कुछ भेद न दिया, केवल इतना ही कहा कि सावधान रहना यदि काम पड़े तो तुरन्त निकल आना। दोनों भाइयों ने सलाह की कि मृग घोड़े के पास पहुंचने पर काम बनावेंगे। दूदा के प्रधान बन्ना और धन्ना गौड़ घोड़े हाथियों की क़ीमत आंकने लगे। चार सौ के घोड़े के ४०) लिखे। हमीर के सदाकुंवर नामकी एक कन्या थी, उसको मालूम हो गया कि चूक है, तब उसने कहा कि मेरे देवर को बचा लो। उत्तर पाया कि अब नहीं बच सकता, तो उसने कहा कि मैं अभी चिल्लाकर सारा भेद खोल दूंगी। तब दौला ने जाकर उसके देवर को कहा कि तुमको भीतर बुलाते हैं। पहले तो उसने इन्कार कर दिया, परन्तु बहुत कहने पर गया। सदाकुंवरी ने उसके पास किसी ढब से तलवार कटार लेली और आप कोठरी के बाहर निकल आई, दासी ने तुरन्त द्वार बन्दकर कुण्डी चढ़ा दी। वह बहुत चिल्लाया कि भोजाई यह क्या बात है, द्वार खोल दे नहीं तो आपघात करता हूं, परन्तु यही उत्तर पाया कि "चुप रहो"। ऐसे ही उन सरदारों के साथ कविया गोविन्द नाम का एक चारण भी था, हमीर ने अपने भाई से कहाकि चारण को तो नहीं मारना चाहिए, तब दौला ने चारण का हाथ पकड़ कर कहा गोयंदजी चलो तुम कुछ नाश्ता करलो। चारण बोला बहुत अच्छी बात है। हमीर उसको भीतर लेगया, मिठाई परोसी और वह जीमने लगा। दहिया मोहन ने जो १४ वर्ष की अवस्था का था, अपनी ढाल, तलवार

लेजाकर अपनी माता के साम्हने रखदी और कहने लगा "माता! हम शस्त्र काहे को बांधें जब कि जाट गूजरों के मुवाफिक़ दण्ड भरते हैं"। माता ने कहा- "बेटा शस्त्र मत डाल, बांधे रह! बाई सदां के देवर को उसने बुला लिया है, शेष सब मारे जावेंगे। मृग नाम का एक घोड़ा है उसके पास पहुंचने पर काम बना दिया जावेगा, तूं बैठ मत, जल्दी जा"। तब मोहन शस्त्र पकड़ कर चला। बूंदी के सरदार घोड़े लिखते लिखते मृग के पास पहुंचे। उनसे कहा कि इसका मोल तो इतना है फिर तुम्हारी इच्छा हो वह लिखो। वन्ना गौड़ ने कहा कि १०००) रु० लिखेंगे। हमीर ने कहा कि कुछ अधिक लिखो। वन्ना कहने लगा कि मृग है तो हम क्या करें, अरे दहिया! भेड़ी अपने बाल अपनी इच्छा से नहीं मूंडने देती, उसको तो नीचे गिराकर गुद्दी पर पांव दे मूंडे तब मुंडाती है। दौला दहिया बोला, सुनरे गौड़! एक बरछा हमारे हाथ का भी आता है। बरछा लगते ही कागज़ और क़लम तो वन्ना के हाथ ही में रह गये और वह मृग घोड़े की पिछाड़ी के पास चूतड़ों के बल जा गिरा। इतने में शोर हुआ और घर के भीतर छिपे हुए ४०० बख़्तरी जवान आ निकले। लोहा बजने लगा और दूदा का सब साथ मारा गया। दूदा ने यह बात सुनी, और हमीर दहिया ने अपने साथियों समेत जाकर उससे कहा कि तेरे राजपूत मारे गये, अब तूं फिर ऐसे राजपूतों की जोड़ बनावेगा जितने में हम यहां से निकल जायंगे। अब तूं यहां से चला जा। हम तेरे बाप के राजपूत हैं, इसीलिए तुझे मारते नहीं हैं। दूदा बूंदी को लौट गया और हमीर सुख के साथ घर में बैठकर राज करने लगा। कितनेक वर्षों के पीछे जब दूदा मरगया तब भोज बूंदी में आया। उसको बादशाह ने यह देश दिया था। भोज के समय में, दहिया और गौड़ों का वैर टूटा और गोपालदास गौड़ को दहियों ने कन्या ब्याहदी और मुल्क में सुख शान्ति होगई।

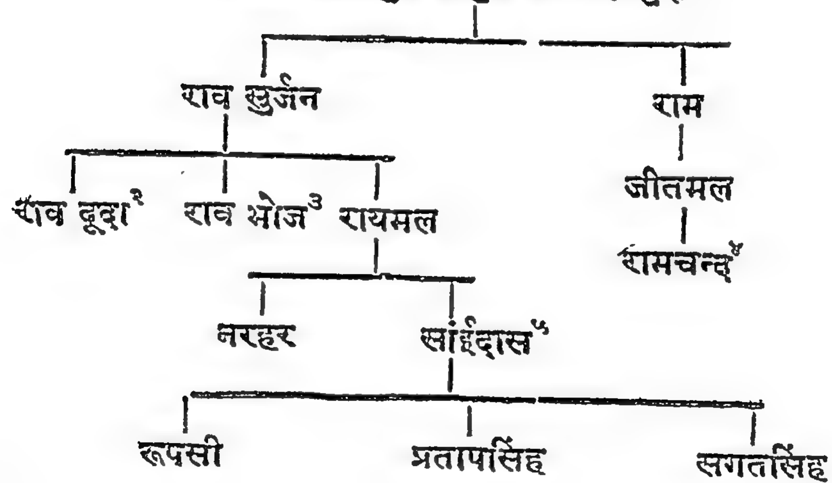


(१) मीणों से बूंदी ली। (२) इसकी बेटी हाडी जसमादे राव जोधा (राठोड़) की पटराणी, राव सूजा की माता थी। (३) इसके वंशज नव ब्रह्म खानखेड़ वाले हाडा हैं। (४) इसके वंशज लोहठवाली हाडा हैं। (५) इसकी सन्तान मियां के गुढ़े रहती है। (६) बूंदी का स्वामी। राव सूजा (राठोड़) की कन्या खेतू को व्याहा। (७) बड़ा बलवंड राजपूत हुआ, मरता मरता राणा रत्नसिंह सांगावत को ले मरा। (८) सुनते हैं कि जब चित्तोड़गढ़ की बुर्ज सुरंग से बादशाह अकबर के हमले में उड़ी, तब अर्जुन भी उसके साथ उड़कर मरगया। उड़ते हुए तीन आदमियों ने तलवारें निकालीं जिनमें से एक अर्जुन था। (९) भीम की संतान बूंदी से ६ कोस ठीकरदे गांव में है। (१०) यह राणा विक्रमादित्य और उदयसिंह की माता थी। (११) गांव हिंडोले में रहता है।

(राव देवा का वंश जारी) वरसिंह के पुत्र जवदू का वंश वृक्ष ।



नरवद के पुत्र अर्जुन का वंश वृक्ष ।



(१) राव भावसिंह का प्रधान, मिया के गुढ़े सादियाहेड़े रहता है । (२) जैसा भैरवदासोत की बेटी जसोदा के पेट का । (३) आहाड़ा हींगोल्या की बेटी कनकावती के पेट का । कोई जगमाल लाखावत आहाड़ा की बेटी का पुत्र बतलाते हैं । इसकी सन्तान पीपलू में है । (५) बूंदी के गांव बणखेड़े रहता है ।

सिरोही का चौहान वंश ।

सम्वत् १७१७ भाद्रपद मास में मुंहता (मुहणोत) नैणसी गुजरात श्री जी साहब (महाराज जसवन्तसिंह) के हजूर में गया और आश्विन में पीछा आया तब देवड़ा अमरा चन्द्रावत ने अपने प्रधान वावेले रामसिंह को जालौर नैणसी के पास भेजा था । उससे सिरोही की हक़ीक़त पूछी तो उसने कहा कि सिरोही और जालौर में गांव बराबर हैं । राव के दाण (चुंगी का महसूल) बहुत आता था, अर्थात् पचास साठ हज़ार रुपये, परन्तु इन दिनों में कम होगया है । सिरोही का आधोआध अमरा चंद्रावत लेता है । विमोग के गांव एकसौ तथा १२५ हैं ।

जालौर के ताल्लुक़ होने के वक़्त परगने सिरोही की फेहरिस्त में सुन्दरदास ने इतने गांव लिख भेजे थे । ग्यारह गांव रवाई भीतरोट के; २४ गांव भीतरोट के पथग (परगने) के; ४० बाहरोट के; ४८ साठ मडार परगने के; ७२ मगरे तथा जोरा के; १२ आबू पर; ६ महादेवजी श्री सारणेश्वरजी के; ७७ सासण(शासन) चारण ब्राह्मणों के; ३० वागड़िया देवड़ों के वतन के; और २४ गांव सोलंकियों के वतन के थे ।

सिरोही के गांवों की तफ़सील—उन्नीस गांव रवाई भीतरोट कहलाते–वालधा, लोधरी, सीहणवाड़ा, तेलपुरा, वीरवाड़ा, ऊंदरा, सीवेरी, काछोली, पर्वतसिंह का पिंडवाड़ा सहस्रमल का, वीरोलिया भाटों के शासन में, धर्मसिंह की अजारी ब्राह्मणों के शासन में, चवरड़ी, नांदिया, काछोली, नीतोड़ा पूरा सूजा का, लोटाणा, भाहरू, धनीरी, और खाखरवाड़ा ।

तेईस गांव भीतरोट के पथग कहलाते—सागवाड़ा, रोहिड़ा खालसेका, वांसा खालसा विभोगा, वाटेरा रामाका, मुदरड़ा, भीमाणा चीबा कर्मसीका, सिणवाड़ा, आमथला, तडूगी, भारजा, वूनाणी, फिरसूली, मानपुरा, सुरतपुरा, गिरवंर, मुंगथला, ऊड़, कर, मांडवाड़ा, धाणता, मोकरड़ा, चनार ।

बाहरोट पथग—सिंघणोता, सुरंताणपुरा, मोडा, मेलांगरी, पावड़ा, सिणवाड़ा, सीरोड़ी, पमाणा, पोसीतरा, ठाकरा, ऊंडवाड़िया, हमीरपुरा, पालड़ी, भालगांव, डमाणी, धांधपुरा, हणादरा, डाक, थली, नीला, सेहलवाड़ा, रिवाद्री, राणकवाड़ा, लोडेला, चापोल, ब्रह्माण, मकावल, नींबूड़ा, फरहटी, जोलपुर, थीयली, दताणी, मारेल, कंपासियो, भोटाणी, साडड़ा, पीथापुर, सेरवा ।

साठ का पश्गग, इसमें मुख्य गांव—मांडाहड़ो, घड़ोदा, रोड़ुवा, जीरावल, देदापुर, गूंडसवाड़ा, सोललभ्रा, वाचेल, वड़्यज, रायपुरिया, छुणवसिया, वांट, जैतवाड़ा, रीवी, आलवाहा, खीमत, याचड़ोल, वूराल, भाटराम, घनियावाड़ा, सुहड़ला, भांडेतर, वाघोर, भ्रात, मऊड़ी भाटों की, आढाल भाटों की, पासूवाला, आरखी, भाड़ली, सांतरवाड़ा, भीलडामा, सातसेण, भीलड़ा छोटा, भ्रांवठा, कूजावाड़ा, जावाल, गंगोल, अटाल चारणों की, धनेरी, येलावस, सोहडपुर, रोजेड़, गोयंदपुर, पीथावाड़ा, छमदमा, पीथोली, आकेली, गुंडसवाड़ा।

भगरे तथा झोरे के गांव—गुढ़ीली, खांभार, अणधार, डेडवा, मझावली, तिवरी, कलाग्रा, जसोलाव, पाडीव रामान्दा, साणपुर, सकर, सीरोड़ी, घग, सिवराटी, महेसरी चींवा करमसी की, पाधोर, वूचोड़ा, वाहुल, ग्रुहन, गांडल, फागुणी, नोहर, दालीवाड़ा, आखूना, मांडोवाड़ा, फलवंध, भूतगांव, जावाल, देलोई, चरहाड़ा, मणोहरा, मूंडेई, आंवेला, सतापुर, चीयली, मांडणी, जामेर, ओड्डू, नारदेरा, लोटीवाड़ा, लास, मूणवद, झाड़ोली, अणदोर, वासण, मोरोली, पालड़ी, भीतरी, वाघसेण, भेव, अरटवाड़ा, पोसालिया, आलिया, मांचाल, लिलमीवास, कोरटा, नामी, उपमाणा, चींवा गांव, पालड़ी वाहरकी, राडवांरा, घड़गांव, वाचणा, डीघाड़ी, सीरोड़ीद्रंगडीरा, आफूड़ी, नागीणी, डींडसोद, अवेल, थावडी, वाजो, मींडावाड़ा, वलदुगा।

आबू पर के गांव—अचलगढ़, तेसा, देलवाड़ा, हेठमठी, सेहरा, साल, ओरिया, वासुदेव, नाहरलाव, घासथान, उमरणी, ऋषीकेश।

महादेवजी सारणेश्वरजी के गांव ६—देतरखा (दातराई), ठकुरणा, घाणां, भामरां, वाचाहड़ा, पालसी, मांडवाड़ा, फोटड़ा, सीलोर्इ।

वागड़िया देवड़ों के गांव ३० जालोर के परगने वड़भागा गूंदाउरा से सीमा मिली हुई, सांचोर से दस कोस सूर, आउवा, पाचला, सांचोर की सीमा से मिले हुए देवड़ा आपमल गोपालदास, नरहरदास का वतन। गांव इकसाखिया। धानेरा, धाखा, सांवलवाड़ा, सातवाड़ा, थावर, चीहरड़ा, वींचवाड़ा, कंवरला, घूसिया, मगराउवा, नानाओ।

गांव २४ सीरोही के सोलंकियों का वतन—पद्दी, वड़गांव, सांचोर की सीमा पर-सीहा ७००), जड़िया, जाहडदेढा, सेतुरा, सिरोहणी,

भूकाणा, मेवड़ा, वेहड़ा, राजोड़ा, आनापुर, रींविया, पींगिया, जाणीवाड़ा, गलथर, माटपाण, दुणाद्र।

७७ गांव सासण ब्राह्मण चारण भाटों के—पेसवा चारणों का, भांखर आढों का, कोजड़ा, लखमेर, पुनपुरी, धांधपुर, लाज, फूलसरेड़, रींछड़ी, ब्राह्मणदेड़ा, मोलेसरी, कूचमा, सोनाणी, सोलावास, मोरवड़ा मोटासण, वांभ-वाड़, वाचड़ा, वड़ोदरा, सीभोतरा, खुडियाला, फावरिया, वराहिल, मांडवा, उड महेसदास की, जाल्हकड़ी, कुलदड़ा, डूंगरी, वीठिया, साकदड़ा, ढमढमा, ओभारी, वीरोली भाटों की, वीरोली ब्राह्मणों की, वासणड़ा, अहिचावा, देवखेत, छाथल, जसोदर, पेरवा, वूटड़ी, खेगड़ी, मीटाण, वीजावा, आसवड़ा, अहिचावा-खुर्द, जाखवर, गोविल, पेवड़ी भाटों की, सेसूत्री तिरवाड़ियों की, खोड़ादरा, जायल, नेनरवाड़ा, पातंवर चारणों का, उडवाडिया चारणों का, कासंदरा दधि-घाड़िया खींवराज का, मोरथला, आसदस, खाणां, मालावास, माडली, जुवादरा, धासडोसा भाटों का, धूंवावस, देलांणा भाटों का, खुराड़ी भाटों की, तडतोली ब्राह्मणों की, खांडायत ब्राह्मणों की, कारोली भाटों की, गणकी भाटों की, पाडरी भाटों की, पालड़ी रावलों की, पीपला रावलों का, वाटेल ब्राह्मणों की, खडवलो-दो, तिथमी।

घात सिरोही के स्वामियों की—आदि में चौहान अनल कुण्ड से उत्पन्न हुए। वशिष्ठ ऋषीश्वर ने राक्षस निकन्दन के वास्ते ४ क्षत्री उत्पन्न किये-पंवार (परमार), चौहान, सोलंकी, (चालुक्य) और डाभी (प्रतिहार या पडिहार होना चाहिये)। प्रायः बहुत से चौहान नाडोल के स्वामी राव लाखण (लक्ष्मण) के वंश में हैं। राव लाखण से कुछ पीढ़ी पीछे आसराव (अश्वराज) हुआ जिसके घर में देवी वचन बंध होने के कारण (पत्नी बनकर) रही। उसके पेट से अश्वराज के २ पुत्र हुए जो देवड़े कहलाये[1]

(१) सिरोही के राजवंशी देवड़े कैसे और कबसे कहलाये इसके लिये भिन्न भिन्न ख्यातें हैं—परन्तु नैणसी का यह कथन स्वीकारने योग्य नहीं कि देवी के पेट से पैदा होने से देवड़े प्रसिद्ध हुए; क्योंकि क्षत्रियों में माता के नाम से शाखा या गोत्र चलने की प्रथा नहीं है। (अश्वराज आशाराज या आसराज) नाडोल के चौहान राव जोजल देव का छोटा भाई था। जोजल के पीछे नाडोल की गद्दी पर बैठा था। उसके समय के दो शिलालेख सं० ११६७ और सं० १२२० वि० के गोडवाड़ के गांव सेवाड़ी और वाली में मिले हैं।

पहले आबू पर पंवार राज करते थे तब आबू से ५ कोस उमरणी गांव है वहां नगर बसता था। राजा पृथ्वीराज चौहान के जैत पंवार बड़ा सामन्त हुआ जिसने पृथ्वीराज के पक्ष में शहाबुद्दीन गोरी से युद्धकर उसे क़ैद किया था। उस वक़्त जगजोत नामक ज्योतिषी ने कहा था कि दिल्ली का छत्रभंग होने का योग है, तो जैत पंवार ने कहा कि आज के युद्ध में छत्र मेरे सिर पर रखा जावे जिससे पृथ्वीराज की वला मुझपर पड़े। पीछे जैत पंवार काम आया, उसके वंशज आबू पर राज्य करते थे[2] और रावल कान्हड़देव उस समय जालौर का स्वामी था।

उसने गुजरात के सोलंकी राजा जयसिंह सिद्धराज को मालवा विजय करने में सहायता दी थी। वह बड़ा धर्मनिष्ठ राजा हुआ, और अनेक धर्मस्थान बनवाये। लेखों में उसके पुत्रों के नाम कटुक और आल्हणदेव मिलते हैं। आसराज के पीछे आल्हणदेव राजा हुआ।

सिरोही की ख्यात के अनुसार राव मानसिंह (महणसिंह या मोहनसिंह) के एक पुत्र देवराज के वंशज देवड़ा कहलाये। राव मानसिंह, जालोर के चौहान राव समरसिंह का पुत्र था। समरसिंह के लेख सं० १२३९ व सं० १२४२ वि० के मिले हैं। तो देवराज का सं० १२६० वि० पीछे होना बन सकता है, परन्तु पण्डित गौरीशङ्करजी हीराचंद ओझा रचित "सिरोही के इतिहास" के पृष्ठ १६३ की टिप्पणी में लिखा है कि "आबू पर अचलेश्वर के मंदिर के बाहर वि० सं० १२२५ और १२२६ के लेख हैं जिन में देवड़ा नाम मिलता है।" इस प्रमाण से सिरोही की ख्याति का लेख विश्वास के योग्य नहीं ठहरता।

बूंदी के कवि सूरजमल मिश्रणकृत वंश भास्कर में लिखा है कि नाडोल के राव माणकराव चौहाण के पुत्र निर्वाण के वंश में देवट नामी पुरुष हुआ जिसके वंशज देवड़े कहलाये, परन्तु निर्वाण (चौहान) अपनी शाखा को देवड़ों में से निकली बतलाते हैं।

चौहानों की एक ख्यात में नाडोल के राव लाखण के पुत्र सोहिय के बेटे का नाम देवराज दिया है। शिलालेख ताम्रपत्रों में शोभित के पुत्र का नाम बलिराज मिलता है। यदि शोभित या सोही ही का दूसरा नाम देवराज माना जावे तो उसका सं० १०५० वि० के लगभग होना सम्भव है, परन्तु क्या आश्चर्य कि धर्मनिष्ठ होने के कारण आसराज ही देवराज करके प्रसिद्ध हुआ हो या उसके देवराज नाम का कोई पुत्र हो जिसके वंशज देवड़े कहलाये हों।

(२) पृथ्वीराज चौहान के समय आबू पर जैत नाम का कोई परमार राजा न हुआ, उस वक़्त या उसके पहले से वहां धारावर्ष परमार, यशोधवल का पुत्र, राजा था, जिसके कई लेख सं० १२२० वि० से सं० १२७६ वि० तक मिलते हैं। वह चौहानों के नहीं किन्तु गुजरात के सोलंकियों के आधीन था। सोलंकी राजा भीमदेव दूसरे के पक्ष में उसने आबू के पास कायद्रह गांव में सुलतान शहाबुद्दीन गोरी का मुक़ाबला किया था।

उन्हीं दिनों देवड़े बीजड़ के पुत्र जसवन्त, समरा, लूणा, लूंभा, लखा, तेजसी सिरोही के पास सिरणवा की पहाड़ी के निकट आनकर रहे। इनके पांव रखने को जगह नहीं थी। पांचों भाइयों ने परस्पर सलाह की कि अपने तो सब ऐसे ही हैं, जैसे तैसे करके पेट भरते हैं, कोई स्थान ठहरने तक को नहीं, और आबू लेने का विचार करने लगे। उस समय पवांरों का एक चारण इनके पास आया, ये उसको अफसोस के साथ कहने लगे कि हमारे पास धरती नहीं, भूखे हैं, इतने पर भी हम पांचों भाइयों के पांच पांच कन्याएं हैं, जिनको वर नहीं मिलते हैं। चारण ने कहा कि इसका क्या सोच करते हो, ये आबू के पंवार बड़े राजपूत हैं, इनको अपनी कन्याएं व्याह दो। इन्होंने कहा कि हमतो आज दीन दशा में हैं और पंवार आबू के स्वामी हैं, वे हमारी कन्याएं व्याहें या न व्याहें। चारण बोला कि मैं इस विषय में उनसे बात चीत करूंगा। आबू पर हूण पंवार राजा था, चारण उसके पास गया, और कहने लगा कि चौहानों के २५ कन्याएं हैं, उनको पंवार व्याह लें। पंवार बोले, बहुत अच्छा व्याहेंगे। इतने में किसी विचारशील पुरुष ने कहा कि ये (चौहान) काल पूंछिये भूमि दबाते हुए चले आते हैं, इनके साथ संबंध नहीं करना चाहिये। तब आबू के राव और दूसरे पंवारों ने कहा कि हम पहिले इक़रार करचुके हैं, अब इनकार नहीं कर सकते और उस चारन को कहा कि यदि ये चौहान अपने एक भाई को आबू पर ओल में रख देवें तो हम व्याहने को आवेंगे। चारन ने चौहानों को आकर ओल की बात कही, तब प्रथम तो उन्होंने यही उत्तर दिया कि हम ओल क्यों देवें, परंतु पीछे एक भाई ने कहा कि बिना किसी के मरे तो आबू हाथ आने का नहीं, यदि एक ही के ओल में आने के बदले काम बनता हो तो ढील न करनी चाहिये और लूणा बोला कि मैं जाऊंगा। फिर प्रकट में चारन को कहा कि हम दरिद्री हैं और बेटियां हमें ज़रूर व्याहनी हैं इसलिये पंवार हम को निर्बल जान कर ओल मांगते हैं तो देवेंगे। लूणा उस चारन के साथ होलिया। यह आबू के राव के पास रहा और पंवारों के २५ वर थोड़े ही आदमियों से व्याहने को आये। चौहानों ने सामेला कर उन्हें जनवासे में उतारे और भांग अमल व मदिरा से उनकी खूब खातिर की। लग्न के समय इन्होंने २५ जवान आदमियों को स्त्रियों का वेष पहना कर दुलहनें बनाई और प्रत्येक को एक २ कटारी देकर कहा कि इसको छिपाये रखना। जब हम कहें कि 'फेरे फिरो' उसी समय

दुलहों को कटारियों से मार गिराना। ऐसा संकेत करके चौहान जनवासे गये और कहा कि लग्न का समय होगया है, दुलहे व्याहने को चलें। कई आदमी तो मद्य में अचेत पड़े हुए थे, थोड़े से साथ से २५ वर व्याहने को आये। ड्योढ़ी के मुंह पर चौहान बोले कि केवल वर भीतर जावें और दूसरे आदमी बाहर ही रहें, क्योंकि यद्यपि हम भूमिये हैं परंतु हमारे भी ठाकुराई है। दुलहे भीतर गये, चंवरियों में बैठे, ब्राह्मण ने हस्तमेलन कराया। चौहानों ने कन्या दान किया। ब्राह्मण ने कहा कि उठो फेरे फिरो। इस वचन के साथ ही हुंकार करके पच्चीसों दुलहों को मार गिराये और जनवासे जाकर जानियों का भी काम तमाम किया। आबू पर अपने भाई लूणा के पास खबर भेजने का विचार कर रहे थे, तब उन्हीं में के एक राजपूत ने कहा कि मैं जाऊंगा। वह मंगत का भेष बना कर आबू पर गया और जहां लूणा और पंवार ठाकुर बैठे बात कर रहे थे वहां पहुंचा। कहा बधाई है, विवाह होगया। लूणा ने पूछा कि यश किसको आया। याचक बोला कि चौहानों को और पंवारों की बड़ी भक्ति की। यह सुनते ही लूणा ने दलपत पंवार को कहा कि आबू हमारा है, जैसे वे मारे गये वैसे मैं तुझ को मारूंगा। दलपत और लूणा परस्पर लड़कर मर मिटे, इतने में तो नीचे के चौहान भी आबू पर आन चढ़े। इस प्रकार चौहानों ने आबू लिया।

बीजड़ का बेटा चौहान तेजसिंह पाट बैठा तब कितनेक पंवार तो इधर उधर चले गये और कितने ही तेजसिंह के चाकर हो रहे। तेजसिंह का विवाह मेहरा (पंवार) की बहन लजली (लजावती) के साथ हुआ था इसलिये गांव ४ तथा ५ मेहरा को जागीर में दिये थे। जब वह तेजसी के मुजरे को आता तब वह सदा उससे यही प्रश्न किया करता था कि "मेहरा! आबू हमारा या तुम्हारा?" मेहरा कहता कि "आबू आप का है," क्योंकि प्रकट में तो वह और कुछ कह नहीं सकता परन्तु मन ही मन क्रोधवश दुखी होता था। इस दुःख से उसका शरीर दुर्बल होगया। एक बार उसका एक अन्धा चचा उससे मिलने को आया। मेहरा ने उसके चरण छूए, और अन्धे ने प्रेम वश उसके मुख व शरीर पर हाथ फेरा तो जान पड़ा कि वह दुबला है। उसने कहा कि "मेहरा, पंवारों से आबू गया सो ठीक ही है क्योंकि उनमें तेरे जैसे मड़ियल पैदा हुए। मेहरा बोला "काका, रजपूत तो अच्छा हूं, परन्तु मुझे सदा एक दग्ध लगी रहती जिससे शरीर गिरता जाता है।" काका ने पूछा "वह दुख क्या है"?

तब उसने सारी बात कही। अन्धा बोला, धिक्कार है तुझे ! जो उत्पन्न हुआ उसको मरना अवश्य है। अबकी बार अपन दोनों (चौहान के पास) साथ चलेंगे, देख तो गोविन्द क्या करता है। तू मुझे देवड़ों के किसी भले सर्दार के पास बैठा देना, फिर तेजसी जब तुझ को प्रश्न करे तो यही उत्तर देना कि "आबू मेरा और मेरे बाप का, मेरे दादा का, तूं तो ऊपरी सांड आन घुसा है"[1]।

सिरोही के धनियों की पीढ़ियां—सं० १७२१ के माघ मास में आडा महेशदास ने लिख भेजी। सं० १४५२ (८२) वैशाख सुदि २ गुरुवार को सोभा के पुत्र राव सहसमल ने सिरुवा पहाड़ी की तलहटी में, आबू से दस कोस के अन्तर पर, नया नगर बसाया। आबू और यह पहाड़ी एक मिली हुई डांग है, पहाड़ कुछ विशेष विकट नहीं है।

पीढ़ियां—१ शालिवाहन, २ जैतराव, ३ अम्बराव व गोगा भाई; ४ दलराव, ५ सिंहराव, ६ राव लाखण, ७ बल, ८ सोहि, ९ महिराव, १० अणहिल, ११ जिन्दराव, १२ आसराव, १३ आल्हण, १४ कीतू, १५ महणसी. १६ पत्ता, १७ बीजड़ को यहां तो महणसी का पुत्र लिखा और कई उसको कीतू का बेटा बतलाते हैं, १८ लूंभा, १९ सलखा, २० रिणमल, २१ सोभा (शिवभाण), २२ राव सहसमल ने सं० १४५२ वैशाख वदि ७ को सिरोही का नगर बसाया (१४८२ होना चाहिये, सं० १४५२ में सहसमल राज पर ही नहीं आया था)। २३ राव लाखा, २४ जगमाल, २५ अखैराज जगमाल का, २६ रायसिंह अखैराज का, २७ राव दूदा अखैराज का, २८ उदयसिंह रायसिंह का, २९ राव मानसिंह दूदा का, ३० राव सुरताण, ३१ राव राजसिंह सुरताण का, ३२ राव अखैराज (दूसरा) राजसिंह का[2]।

---

(१) रायबहादुर पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा रचित सिरोही के इतिहास में प्राचीन लेखों के आधार पर तेजसिंह को राव लुंभा का पुत्र और उत्तराधिकारी लिखा है। सिरोही के खामियों की वंशावली में तेजसिंह, कान्हड़ देव, सामन्तसिंह के नामों को छोड़ कर राव सलखा को ही राव लुंभा का उत्तराधिकारी बतलाया है। राव तेजसिंह की राजधानी चंद्रावती नगरी थी जो आबू रोड स्टेशन से क़रीब ४ मील दक्षिण में है। यह नगरी परमारों की प्राचीन राजधानी है।

(२) इस ख्यात में दिये हुए नाडोल व जालोर के राजाओं के नाम न्यूनाधिक हैं, सब ठीक नहीं हैं।

अखैराज (पहला) राव जगमाल का, बड़ा राजपूत हुआ, जिसने एक बार जालोर के खांन को क़ैद कर कारागार में रक्खा था[1]।

राव रायसिंह अखैराज का—जगमाल राव लाखा का टीकेत कुंवर था, उसके हमीर और ऊदा दो भाई थे। हमीर ने अपने भाई राव जगमाल के पास आधी सिरोही बंटवाली परन्तु अन्त में जगमाल ने उसे मार डाला। राव रायसिंह बड़ा महाराजा हुआ, बहुत दान पुण्य किया और मेवाड़ व मारवाड़ के स्वामियों के साथ बड़े बड़े उपकार किये। माला नाम के आसिया चारण को क्रोड़ पसाव दिया जिस में गांव खांण उसको शासन कर दिया। वहां सुकाल दुकाल में अरहट ३०० (?) चलते हैं[2]। पत्ता कलहट को भी कोट पसाव में गांव मोटासण, गुजरात के मार्ग पर वड़गांव के पास, ५० अरहट का शासन कर दिया। राव रायसिंह भीनमाल पर चढ़ कर गया था, वहां कोट (गढ़) के भीतर विहारियों (जालोरी पठान) के थाने के आदमी थे। जब कोट का घेरा डाला तो भीतर से किसी ने तीर चलाया। वह राव के बखतर को भेदकर बग़ल में जा घुसा जिससे राव मरगया। दाग़ कालंधरी में दिया गया और वहीं उसकी राणी चम्पाबाई सती हुई, जो (जोधपुर) के राव गांगा की बेटी थी और जिसके पेट से उदयसिंह उत्पन्न हुआ था। रायसिंह ने मरते वक़्त कहा कि मेरा पुत्र अभी तक बालक है सो टीका भाई दूदा को देना, वही उदयसिंह की रक्षा करेगा।

राव दूदा—राव रायसिंह की वसियत के बमूजिब गद्दी पर बैठा। उसने राज्य की सारी साहिबी का स्वामी उदयसिंह ही को रक्खा, अपने पुत्र मानसिंह को कभी उसके पास फटकने तक न दिया। राव दूदा ने ऊदा बघेल को गांव डोप में मारा, जिसके कलहट पत्ताके कहे हुए कई छन्द हैं। (दूदा) ने मरते वक़्त (सं० १६१०) कहा कि टीका रायसिंह के पुत्र उदयसिंह को देना ! मेरे पुत्र मानसिंह को नहीं। और उदयसिंह को कहा कि जो तुम चाहो तो लोहियाणा गांव मेरे पुत्र को दे देना। प्रधानों व राजपूतों ने उदयसिंह को पाट बिठाया और मानसिंह को लोहियाणा दिलाया।

---

(१) यह पालनपुर वालों का बुज़ुर्ग मजाहिदखां था जो गुजरात के सुलतान की तरफ से जालौर की हकूमत पर था।

(२) शायद ३० की जगह तीन सौ भूल से लिखे गये हों।

राव उदयसिंह—गद्दी बैठने के पीछे एक वर्ष तक तो मानसिंह से मेल रहा पीछे राव उसके दूषण का चिन्तवन करने लगा। कहा कि इसने मुझ पर एक तुक्का चलाया था। राजपूतों ने समझाया कि ऐसे विचार मन में मत ला! इसके पिता ने तेरे साथ बहुत भलाई करी है, यहां तक कि अपने पुत्र को टीका न देकर तुझ भतीज को गद्दी बिठाया है। मानसिंह तेरा आज्ञाकारी सेवक है, परन्तु उदयसिंह ने तो यही उत्तर दिया कि मैं उसको लोहियाणे से निकालूंगा। फिर फौज भेज कर उसे निकाल दिया, तब वह मेवाड़ के राणा के पास जा रहा और वहां उसे १८ गांव बरकाणा, बींझेवा समेत जागीर में दिये गये। शिकार में वह राणा के साथ रहता था और राणा भी उस पर कृपा रखता था। एक ही वर्ष पीछे राव उदयसिंह को चेचक निकली और यह समाचार मानसिंह को सिरोही से एक क़ासिद ने आकर दिये। राणा उस वक़्त आखेट खेलने कुंभलमेर की तर्फ गया था, उस पर यह भेद न खुला। सिरोही से मानसिंह के पास एक और आदमी आया और कहा उदयसिंह की दशा अच्छी नहीं है।

उसी रोग से उदयसिंह मरगया तो सिरोही के पांच भले आदमियों ने मिलकर विचार किया कि इसके कोई पुत्र नहीं, मानसिंह दूदावत राणा के पास है, राणा यह समाचार सुन कर मानसिंह को मार कुम्भलमेर से सीधा इधर आजावे तो आज देवड़ों के घर से आबू चला जावेगा। तब उन पांच ठाकुरों ने दो पहर तक राव की मृत्यु का भेद किसी पर प्रकट न किया, और साहाणी जयमल को, जो बहुत योग्य और भरोसे वाला मनुष्य था, पत्र देकर मानसिंह के पास भेजा, व राव का अग्नि संस्कार किया। सारी रात चलकर पहर दिन चढ़े साहाणी मानसिंह के डेरे कुंभलमेर में पहुंचा। मानसिंह उस वक़्त गढ़ पर राणा के पास था। साहाणी ने चींबा सामन्तसिंह को सब बात गुप्त रीति से समझा बुझा कर कही और वह गढ़ पर गया, उसको देखते ही मानसिंह ताड़ गया कि जयमल आया है सो सिरोही में कुशल नहीं। कोई बहाना करके तुरन्त वहां से उठा और डेरे आकर जयमल से मिला। उसने सैन ही में सब हक़ीक़त समझाई, तब मानसिंह ने चींबा को कहा कि हम जाते हैं, यदि राणा का कोई आदमी यहां आकर मेरे वास्ते पूछे तो कहना कि मानसिंह उन दो शूकरों को ढूंढने गया है जो जंगल में कहीं जा छिपे हैं। पांच सवार साथ लेकर वह जयमल समेत चल दिया और पहर रात गये सिरोही के निकट बाग़ में जा

उतरा। जयमल ने ठाकुरों को सूचना दी और ये सब रात ही में मानसिंह से आ मिले।

थोड़ी देर पीछे राणा ने मानसिंह के डेरे पर ख़बर कराई कि वह कहां है तब चीबा ने कहा कि अहेड़े में दो शूकर भाग गये थे उनको ढूंढने गया है, अभी आता ही होगा। संध्या होगई, मानसिंह न आया, तब राणा ने फिर उसे याद किया, उस वक़्त किसी ने अर्ज़ की कि मैंने कोस दसेक पर मानसिंह को पांच सवारों से मध्याह्न के समय सिरोही की तरफ भागता हुआ देखा था। राणा ने पूछा कि यह क्या बात है, दूसरे ने कहा कि मेरे पास एक आदमी सिरोही से आया था उसने समाचार दिये कि राव उदयसिंह को चेचक निकली है और वह बहुत बुरी हालत में है। तब राणा बोला कि जान पड़ता है कि उदयसिंह मर गया, और दूसरों ने भी इसकी पुष्टि की। राणा ने हुक्म दिया कि मानसिंह के डेरे पर जो राजपूत है उसको बुला लाओ। वहां देवड़ा जगमाल मुखिया राजपूत था वह हज़ूर में हाज़िर हुआ। राणा ने उसको फर्माया, कि मानसिंह ऐसे क्यों भागा, हम उसके साथ क्या करते थे। जगमाल ने अर्ज़ की कि "यह बात तो वही जाने"। फिर हुक्म हुआ कि सिरोही के च्यार परगने हमको लिख दे। जगमाल ने सोचा कि यदि मैं इसमें उज़र करता हूं तो आश्चर्य नहीं कि राणा का साथ मानसिंह का पीछा करे और जो वह मार्ग में कहीं ठहर गये होवें तो बात बे ढब हो जावे। तब बड़े विनय के साथ अर्ज़ कराई कि मानसिंह दीवाण का चाकर है, हमको क्या उज़र है। चाहे जितनी धरती दीवाण लेवें, और जितनी इच्छा हो उतनी मानसिंह को बख़्शी जावे। राणा ने च्यार परगनों का लिख़त उससे कराया और इस झमेले में रात बहुत बीत गई तब सोचा कि मता (लिखने वाले की सही) कल करा लेंगे। राणा ने सुख किया और जगमाल भी सो रहा। प्रभात ही उठकर वह राणा के पास रुख़सत लेने को जाता था कि रास्ते में राणा के आदमी उसको मिले जो उसे बुलाने को आये थे। वे राणा के हज़ूर में पहुंचे, हुक्म हुआ कि रात को जो काग़ज़ लिख दिया है उसमें मता कर दे! तब जगमाल ने अर्ज़ की कि मेरे दिये हुए परगने नहीं जा सकते हैं, मानसिंह और सिरोही के सर्दार जो वहां हैं, मता करेंगे। राणाने कहा कि इस रजपूत ने अच्छा दांव खेला। फिर फर्माया कि उन ४ परगनों में हमारा थाना बिठाने को हम अपने सवार तुम्हारे साथ भेजते हैं सो वे उनके सुपर्द कराके

पीछे आगे बढ़ना। जगमाल ने कहा कि सिरोही के स्वामी आपके चाकर और सगे हैं, दीवाण ऐसा क्यों करते हैं, किसी एक भले आदमी या पुरोहित को मेरे साथ भिजवा दें, जो उत्तर राव देवेगा वह पीछा हजूर में आकर मालूम कर देगा। दीवाण ने इसको मंजूर फर्मा कर पुरोहित को जगमाल के साथ भेजा। मानसिंह ने पुरोहित का बहुत आदर किया और एक हाथी व ४ घोड़े राणा के नज़र के वास्ते भेज लिखा कि ४ परगने ही पर क्या, सिरोही सब दीवाण ही की है और मैं दीवाण का रजपूत हूं। तब राणा भी राज़ी होगया।

राव मानसिंह बड़ा वीर सर्दार हुआ, बहुत राज किया, पादशाही फ़ौजों से कई लड़ाइयां लीं, सिरोही के पास कोलियों के बड़े बड़े मेवासे थे जो पहले किसी राव से न टूटे थे, मानसिंह ने एक ही दिन में २२ जगह सारे मेवासों पर अमल कर लिया और कोलियों को निकाल दिया। छः महीने तक राव के थाने वहां रहे, तब तो कोली सब पांवों पर आन गिरे और राव की आज्ञा सिरपर चढ़ाई, तब प्रसन्न होकर उनको पृथ्वी पीछी दी और अपने थाने उठा लिये।

राव रायसिंह की राणी, राव उदयसिंह की माता चंपाबाई राव गांगा (राठोड़) की बेटी बहुत ज़बर्दस्त स्त्री थी। राव उदयसिंह की स्त्री के गर्भ था सो चंपा बकती कि "कल मेरे पोता हो जावेगा, मानसिंह कौन है जो राज भोगे। राव मानसिंह ने चंपाबाई और उसके बेटे की बहू गर्भवती (बीकानेरी) को खुल्लम खुल्ला मार डाला। बीकानेरी के पेट में से ८ मास का बालक निकला उसको भी वहीं पूरा किया, और सुरताण अभयसी की शत्रुता के लिये अपने प्रधान पंचायन को विष दिया। पंचायन पंवार का भतीजा कल्ला पंवार राव का ख़वास था। जब राव आबू पर गया तो वहां कल्ला को धक्का सा दिलवाया। रात्रि को जब राव मानसिंह भोजन कर रहा था तब कल्ला ने उसके कटार मारा और वे झटपट निकल भागा। फिर एक पहर तक राव जीया। उस वक़्त सर्दारों ने पूछा कि आपके बेटा नहीं, पीछे टीका किसको दिलाते हैं? उत्तर दिया कि आए के पुत्र सुरताण को (सं० १६२८ में इस घटना से राव मानसिंह का देहान्त हुआ[1])।

---

(१) राव मानसिंह की एक कन्या ऊंकार कंवर का विवाह जोधपुर के राव चंद्रसेन के साथ हुआ था, और दूसरी कन्या का महाराणा प्रतापसिंह के भाई जगमाल सीसोदिया के साथ। पांच राणियां आबू पर राव मानसिंह के साथ सती हुई।

राव सुरताण—(यह राव लाखा के तीसरे पुत्र ऊदा के पौत्र भाण का बेटा था)। मानसिंह की वसीयत के अनुसार सर्दारों ने इसे टीका दिया। राव सुरताण बीजा देवड़ा का बहुत आदर करता और वही सिरोही में कर्ता धरता था। राव मानसिंह की राणी बाहड़मेरी के गर्भ था। राव के मरने पीछे उसने पुत्र प्रसव किया। देवड़ा सूजा रणधीरोत, राव सुरताण का काका, अपने पास अच्छे अच्छे राजपूत और घोड़े रखता था। उसकी यह बात बीजा देवड़ा को पसंद न आई. उसने विचारा कि मानसिंह के पुत्र को (ननिहाल) से बुलाकर गद्दी बिठाऊं और सुरताण को निकाल कर सूजा को मरवा डालूं। उसने अपने भाइयों को सूजा के मारने के वास्ते कहा, तो सब ने यही उत्तर दिया कि ऐसी बात मत करो! सिरोही का धणी राव सुरताण हो चुका, तुम उसके काका को मत मारो! परन्तु बीजा ने किसी की न सुनी। देवड़ा रावत शेखावत को खड़ा किया, और रावत ने बालीसा जगमाल के डेरे पर सूजा को मार डाला। देवड़ा गोयंददास देवीदासोत डेरों के पास था। जब बीजा, देवड़ा सूजा के घोड़े असबाव लूटने को आया तब गोयंददास भी उससे लड़कर काम आया। अब तो बीजा ने बाहड़मेर से राव मानसिंह के पुत्र को बुलवाया, जब वह निकट पहुंचा तो बीजा उसको लेने को कालंधरी गया और राव सुरताण को एक कोठरी में बन्द कर अपने दो भरोसे वाले रजपूतों को यह कहकर वहां छोड़ गया कि इसे बाहर मत निकलने देना। राव सुरताण ने जान लिया कि पीछा आकर बीजा मुझे मार डालेगा, तब एक देवड़ा डूंगरोत को, जो भला राजपूत था, उसने समझा कर कहा कि तूं मुझे निकाल दे, रखने वाला तो मैं ही हूं। मेवाड़, जोधपुर में कहीं चला जाऊंगा तो वहां बीस हज़ार का पटा तो मुझे मिला ही रहेगा। फिर उसके साथ क़ौल वचन किया, महादेवजी को बीच में दिया, और वे दोनों शिकार का बहाना कर वहां से निकले। दूसरे राजपूत धींवा ने पहले तो इस भेद को न जाना, परन्तु दो कोस पर जाने के पीछे वह बोला कि मैं इस बात को नहीं जानता, तुमको जाने न दूंगा। तब डूंगरोत बोला, इधर आ! मैं तुझको मारूं. तब तो झख मारकर धींवा चुप होरहा और राव सुरताण भाग कर रामसैण पहुंचा।

देवड़ा बीजा ने सूजा को मारने के लिये जब अपने आदमी भेजे तो वहां सूजा का एक पुत्र माला भी अपने पिता के साथ मारा गया, सूजा की पस्सी

माल लूट ली। सूजा के दूसरे बेटों पृथ्वीराज और श्यामदास को उसकी माता ने एक गढ़े में छिपाकर ऊपर वस्त्र ढक दिये, जब लुटेरे चले गये तो रात्रि के समय निकाल कर वह उनको आबू के पास कहीं लेगई; और फिर ये रामसैण में राव सुरताण से जा मिले।

देवड़ा बीजा मानसिंह के पुत्र को लेने गया। उसकी माता ने बालक को बीजा की गोद में बिठाया ही था कि अचांचक किसी अकस्मात रोग से बालक वहीं मरगया। बीजा पीछा सिरोही आया और देवड़ा समरा को कहा कि मुझे टीका दो। बहुत कुछ कहा सुनी की, परन्तु समरा ने यही उत्तर दिया कि अब तक राव लाखा के सन्तानों में बीस आदमी मौजूद हैं; जब तक एक दो वर्ष का बालक भी उसके वंश का होवे तब तक तेरी क्या मजाल जो तू गद्दी पर बैठे। उन दोनों में विरस हुआ और समरा आदि रिसाकर वहां से चले गये। बीजा राव बन बैठा और ४ मास तक राज किया। यह बात राणा (प्रतापसिंह उदयसिंहोत) ने सुनी। राव कल्ला (देवड़ा) मेहाजलोत राणा का भाणजा था, उसको सिरोही की राज गद्दी का तिलक देकर राणा ने अपनी फौज के साथ सिरोही भेजा, जब वह वहां आया तो देवड़ा बीजा वहां से भाग कर ईडर चला गया और कल्ला सिरोही का स्वामी हुआ।

राव कल्ला का सिरोही की साहिबी का आधार विशेष कर चींवा खींवा भारमलोत पर था। देवड़ा समरा हरराज आदि भी नौकरी करते परन्तु मन में (कल्ला को) न चाहते थे। राव सुरताण ने भी आन कर उसको जुहार किया और कितनेक गांव सुरताण को जागीर में दिये गये जहां वह रहने लगा और कभी चाकरी भी देता था। एक दिन कल्ला तो दर्बार से उठ कर शयनस्थान में चला गया और देवड़ा समरा, सूरा, हरराज गालीचे पर बैठे थे। उस वक्त चींवा पत्ता ने फर्राश को कहा कि गालीचा उठा ला। फर्राश आया, देखा कि यह तीनों सर्दार बैठे हैं तो पीछा फिरगया। चींवा नें पूछा—गालीचा लाया? फर्राश बोला—सूराजी व हरराज बैठे हैं। चींवा कहने लगा, क्या वे तेरे बाप लगते हैं, जा गालीचा ले आ! फर्राश पीछा आया और कहने लगा, गालीचा चींवा पत्ता मंगवाता है, आप तो सब बात जानते ही हैं। वे सब उठगये और बोले, ईश्वर ने चाहा तो अब हम कल्ला की जाजम पर न बैठेंगे। वे क्रोध वश वहां से चल दिये, राव सुरताण को कहलाया कि तू आकर हम से मिल।

सुरताण अपना माल असबाव लेकर उनके पास चला आया और वहां उन्होंने उसको टीका दिया। राव सुरताण व समरा ने देवड़ा वीजा को भी ईडर से बुलवाया, वह सरोतरे के पास आन पहुंचा। राव कल्ला ने सुना कि वीजा आता है तब उसने देवड़ा रावत हामावत को ५०० सवार देकर घाटा रोकने के वास्ते विदा किया और वह गांव माल में पहुंचा। वीजा के डेरे वर्माण में हुए। वहां से एक कोस के अन्तर पर दोनों में परस्पर युद्ध हुआ। वीजा के पास १५० सवार थे परन्तु उसकी विजय हुई, कल्ला के ४० आदमी मारेगये और ६ घायल हुए, फौज का सरदार पूर्ण रीति से घायल होकर गिरा। वीजा के १३ आदमी काम आये। विजयी वीजा रामसेण में राव सुरताण से जा मिला। वह राहभेदी राजपूत था, उसके आने से राव सुरताण का बल बढ़ गया। फिर उसने सलाह दी कि जालौर के मलिकखान को अपनी मदद पर बुलाओ। खान के पास दूत भेज कर कहलाया कि हम एक लाख रुपये देंगे, हमारी सहायता करो! उसने उत्तर दिया कि लाख रुपयों के वास्ते मैं अपने भाई बन्धुओं को मरवाना नहीं चाहता, सिरोही के ४ परगने सियाणा, बड़गांव, लोहियाणा, और डोडियाल दो तो आऊं। कितनेक सरदारों ने कहा कि ये परगने न देने चाहिये। तब वीजा बोला कि वह तो परगने सिर के साथ मांगता है, खुशी से देने चाहिये। वे च्यारों परगने उसको दिये गये, और वह १५०० सवार की सेना से राव सुरताण से आ मिला।

राव कल्ला सिरोही से ४००० सवार की सेना साथ ले कालंदरी आया, मोर्चे जमाये, नालें बांधी, और सब सामान ठीक करलिया। राव सुरताण के पास भी हज़ार तीनेक आदमियों की भीड़ भाड़ होगई, उसने सुना कि राव कल्ला ने कालंदरी पर अच्छी सजावट की है तो जाना कि यदि हम वहां गये तो धक्का खावेंगे। देवड़ा समरा व वीजा सब भेद जानने वाले थे, कहने लगे अपने कालंदरी से क्या काम है, सीधे सिरोही ही क्यों न चलें, यदि कल्ला को लड़ाई करनी होगी तो आप आ जावेगा। तब ये तीनों सेना सहित सिरोही को चले। कालंदरी से एक कोस के अन्तर से निकले, वहां राव कल्ला इनके सन्मुख आन उपस्थित हुआ। लड़ाई शुरू हुई, राव सुरताण जीता और कल्ला हार गया। इस लड़ाई में (जालौर के) बिहारी पठान ने बड़ी वीरता दिखलाई। सुरताण के दस बीस आदमी मारे गये, जिनमें मुखिया देवड़ा सूरा नरसिंहोत समरा का

भाई था। राव कल्ला के इतने सरदार काम आये-चीवा पत्ता, सीसोदिया मुकंद-दास व शामदास, सीसोदिया दलपत। कल्ला भाग गया, सुरताण ने खेत शोधा और फिर सिरोही पर आ जमा। राव कल्ला के अन्तःपुर की स्त्रियां आदि सिरोही में थीं उनको रथों में बिठाकर कल्ला के पास पहुंचा दीं (कल्ला के वंशज गोडवाड़ में बीसलपुर बांकली जा रहे)।

राज की सब थाप उथाप देवड़ा बीजा के हाथ में थी और वह प्रतिदिन ज़ोर पकड़ता जाता था। राव सुरताण की उससे नहीं बनती थी परन्तु वस कुछ नहीं चलता था। उन्हीं दिनों राव का विवाह बाहड़मेर हुआ और उसकी पत्नी सिरोही में आई। उसने बीजा का वर्ताव देखकर राव से पूछा कि यह ठाकुराई का कैसा ढंग है, राज के स्वामी तुम हो या बीजा है? सुरताण ने उत्तर दिया कि राज में कोई ऐसा रजपूत नहीं जो बीजा जैसी बलाय का साम्हना करे। तब बाहड़मेरी बोली कि भरपेट खाने को दो तो धरती पर रजपूत बहुत हैं। राव ने कहा कि तुम ही दस बीस को बुलवाओ। उसने अपने पीहर से २० आदमी बहुत अच्छे बुलवाये और उनको राव के पास रक्खे। जब देश के राजपूतों ने राव की हालत बदली देखी तो वे भी उसके पास आकर रहने लगे। बीजा के और राव के बीच इतनी शत्रुता हुई कि दोनों एक दूसरे को मार देने का अवसर ताकने लगे। बीजा के दो भाई लूणा और आना भी उससे फटकर राव से आन मिले और राव का पलड़ा प्रतिदिन भारी पड़ता गया, यहां तक कि एक बार बीजा को सिरोही में से निकाल दिया तब वह अपनी पत्नी में जा रहा।

उसी अवसर पर बीकानेर के महाराजा रायसिंह (बादशाही तरफ से) सोरठ को जाते थे, जब वह सिरोही के पास पहुंचे तो राव सुरताण उनकी पेश-वाई करके उनसे मिला, राजा ने उसका बहुत आदर किया। देवड़ा बीजा भी राजा रायसिंह के पास पहुंचा और उसको कई प्रकार से लालच दिखलाया परन्तु राजा ने उसकी बात न मानी। राव सुरताण से बात चीत कर सिरोही का आधा राज बादशाह के रक्खा और आधा राव के, और बीजा को सिरोही के इलाक़े में से निकाल दिया। बादशाही आधे राज पर राय रायसिंह मदना पत्तावत को ५०० सवार से सिरोही छोड़ गया। बादशाह को अर्ज़ लिखी कि "सिरोही का स्वामी राव सुरताण मुझ से आकर मिला, उसको आसिये बीजा ने दबा रक्खा था, राव ने आधी सिरोही देनी क़बूल की, तब मैंने उसकी सहायता कर बीजा को

निकाल दिया और अपने ५०० सवार रखकर आधा देश बादशाही ख़ालसे में लिया है। हजूर की मरज़ी हो उसको बख़्शा जावे, या करोड़ी भेजदिया जावे। राव हुक्मी चाकर है।"

(इस अर्ज़ी के पहुंचते ही) बादशाही दीवान बख़्शी आदि सिरोही के आध की तजवीज़ में लगे। राणा उदयसिंह का बेटा सीसोदिया जगमाल दर्गाह गया था और (सिरोही के) राव मानसिंह की बेटी का विवाह भी उसके साथ हुआ था, उसने मंसब में सिरोही की आध मिलने की अर्ज़ कराई, तो बादशाह ने फर्माया कि यह राणा का बेटा है और योग्य भी है, इसको वह जागीर दी जावे। फर्मान लिख दिया गया, उसको लेकर जगमाल सिरोही आया, राव सुरताण उसके साम्हने आकर मिला। बीजा देवड़ा भी दर्गाह गया था, वहां उसकी कुछ सुनवाई न हुई, तब वह भी जगमाल के साथ सिरोही आगया[1]।

राव सुरताण ने आधा राज्य जगमाल के सुपुर्द कर दिया। राव सुरताण महल में रहता और जगमाल दूसरे घरों में। जगमाल की ठकुराणी राव मानसिंह की बेटी से यह सहन न हो सका, कहने लगी कि मेरे होते मेरे बाप के घर में दूसरा रहने वाला कौन है। (बीजा इस वैर भाव को सुलगाता जाता था)। एक बार राव सुरताण कहीं बाहर गया हुआ था, पीछे से जगमाल और बीजा दांव देखकर महल पर चढ़ गये। सांगा आसिया (चारण) और दूदा खंगार राव के सेवक वहां पर थे, वे जगमाल के संमुख हुए, लड़ाई ठनी, महल हाथ न आया, तब तो खिसियाना होकर जगमाल दर्गाह जाकर पुकारा। बादशाह ने राव रायसिंह (राठौड़ चंद्रसेनोत) और दांतीवाड़े के राव कोली सिंह, व कई तुर्कों को जगमाल के साथ सहायतार्थ भेजे। वह सेना सहित सिरोही आया, राव सुरताण सिरोही छोड़ पहाड़ों में चला गया, तब तो जगमाल महल में जा बैठा।

---

(१) महाराणा उदयसिंह का देहान्त सं० १६२८ फागुण सुदि १५ को गोगूंदे में हुआ। महाराणा का प्रेम अपनी राणी भटियाणी पर विशेष था इसलिये उसके पुत्र जगमाल को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहा, परन्तु महाराणा का शरीर छूटने पर सरदारों ने वीर प्रतापसिंह को गद्दी पर बिठा दिया जो पाटवी और सर्व प्रकार योग्य था। इसपर अपने भाई से रूठकर जगमाल बादशाही चाकरी में चला गया।

कुछ समय वीतने पर जगमाल ने सोचा कि नगर तो लेलिया अब राव सुरताण से आबू की तलहटी भी छुड़ा लूं, तव वह चढ़ चला। राव ने भी दो एक कोस पर आकर एक विकट स्थान में डेरा दिया। जगमाल के सरदारों ने यह तजवीज विचारी कि राव के राजपूतों के वस्सी के गांवों पर जुदी २ सेना भेजी जावे जिससे वे सव बिखर जावेंगे, तव हम आसानी से राव को पराजित कर सकेंगे। तदनुसार देवड़ा वीजा हरराजोत व खींवा मांडणोत व राम रणसीहोत आदि को कई तुर्कों सहित भीतरोट पर विदा करने का विचार वांधा। वीजा ने जगमाल व रायसिंह को कहा कि जो तुम मुझे अलग करोगे तो राव सीधा तुम पर आवेगा, तो राठोड़ ठाकुर वोले कि "जिस गांव में कुक्कुट नहीं होता वहां भी प्रभात होता है"। तव तो वीजा उधर चल दिया। राव सुरताण ने देवड़ा समरा को सूचना की कि वीजा भीतरोट की तरफ गया है, समरा बोला कि अब विलम्ब मत करो! सीसोदिये जगमाल और राव रायसिंह के डेरे गांव दताणी में थे वहां सुरताण नक्कारा देकर आया। दोनों के वीच एक दो कोस का अन्तर था। ये तो इसी विचार में रहे कि राव वीजा के पीछे जाता है, परन्तु वह तो अचांचक इन पर आ गिरा। सं० १६४० कार्तिक सुदी ११ को युद्ध हुआ, जगमाल, रायसिंह, और कोली सिंह तीनों सरदार मारे गये, और राठोड़ गोपालदास किसनदासोत गांगावत, राठोड़ सादूल महेसोत कूंपावत, राठोड़ पूरणमल मांडणोत कूंपावत, राठोड़ लूणकरण सुरताणोत गांगावत, राठोड़ केशवदास ईसरदासोत, पडिहार गोरा राघावत, चौहान सेखा भांभणोत, पडिहार भाण अभावत, देवा ऊदावत, भाटी नेतसी, (भाटी) जैमल, वारहट ईसर, सेलहथ, वाला, मांगलिया किसना, धांधू खेतसी, मूंता राजसी राघावत, भाटी कान्ह अभावत, मांगलिया गोपाल भोजावत, राव खींवा रायसलोत और ईंदा आदि सरदार मारे गये, देवड़ा समरा भी खेत रहा [1]। इस युद्ध के पीछे देवड़ा

(१) कहते हैं कि जब राव सुरताण ने खेत संभाला तो वहां आढा दुरसा को, जो रायसिंह के साथ था, घायल पड़ा देखा। देवड़ों ने कहा कि इस राजपूत को भी दूध पिलाओ (मारडालो) तो दुरसा बोला कि मैं चारण हूं, मुझे मत मारो। सुरताण ने कहा कि चारण है तो देवड़ा समरा की प्रशंसा में कोई रूपक कह। उसने तुरन्त यह दोहा बनाकर सुनाया—"धर रावां जश डूंगरां, मद पोतां सत्रहाण। समरै समर सुधारियो चहु-

बीजा फिर दर्गाह पुकारू गया। उसी अर्से में जोधपुर का टीका मोटे राजा (उदयसिंह) को हुआ था सो उसको भी बैर लेना था। पादशाह ने जामबेग व मोटे राजा को सिरोही पर भेजे, उन्होंने आकर मुल्क लूटा, देवड़े पत्ता सांवतसी, तोगा सूरावत, सूरा नरसिंहोत, और चीवा जैता खेमावत को छलसे मारे, राठौड़ वैरसल प्रथीराजोत पेट में कटार खाकर मरगया। उस वक़्त देवड़ा बीजा और जामबेग मोटे राजा से फंटकर लड़ाई के वास्ते गये थे सो राव सुरताण ने देवड़ा बीजा को मारडाला। सं० १६६७ आश्विन वदि ६ को राव सुरताण काल कवलित हुआ [1]।

महाराणा प्रतापसिंह की पौत्री, कुंवर अमरसिंह की पुत्री केशरकुमारी (कहीं सुखकंवरी भी लिखा है) का विवाह राव सुरताण के साथ हुआ था। जब इस विवाह की बात चीत होने लगी तो महाराणा के भाई सगर ने अर्ज़ की कि राव सुरताण तो हमारा शत्रु है, उसने भाई जगमाल को मारा है सो उससे बैर लेना उचित है, न कि उसके साथ सम्बंध करना। महाराणा ने इस पर कुछ ध्यान न दिया, इसी से सगर क्रोध में आकर बादशाही चाकरी में चला गया था। राव सुरताण के १२ राणियां थीं, और दो पुत्र—राजसिंह और सूरसिंह।

राव राजसिंह—भोला सा ठाकुर हुआ। एकबार राव सुरताण के दूसरे पुत्र सूरसिंह ने ग्रासबेध किया, और देवड़ा भैरवदास समरावत और सब डूंगरोत देवड़े उसके पक्ष में बंधगये। देवड़ा प्रथीराज सूजावत अपने स्वामी

थोकां चहुवाण"। राव सुरताण प्रसन्न हुआ, उसको पालकी में लिटाकर साथ लेगया, इलाज कराया, और अच्छा होने पर दो गांव जागीर में देकर अपना पोलपात नियत किया।

(१) मासिरुल उमरा के मुवाफ़िक मोटा राजा सं० १६४१ में अपने भतीजे रायसिंह का बैर लेने को मुज़फ्फरशाह गुजराती से लड़ाई कर लौटते वक़्त सिरोही आया था। पत्ता सावंतसी आदि देवड़े ठाकुरों को बगड़ी के ठाकुर राठोड़ वैरसल प्रथीराजोत द्वारा अभय का वचन दिलवा कर बुलवाये थे, फिर उनको छल से राम रत्नसिंहोत के हाथ से मरवाये। अपने वचन के भंग होने की उस वीर राठोड़ ठाकुर को इतनी घृणा हुई कि उसने मोटे राजा के सामने जाकर राम रत्नसिंहोत को मारा और फिर आप कटार खाकर मरगया। कहते हैं कि राजा उदयसिंह (मोटा राजा) राव कल्ला को फिर सिरोही की गद्दी पर बिठाकर चला गया, परन्तु कल्ला वहां न ठहर सका और राव सुरताण ने पीछा अधिकार कर लिया।

राव राजसिंह का पक्षपाती बना रहा। परस्पर दोनों दलों में लड़ाई हुई, राव जीता, और सूरसिंह ने हार खाई[1]। कई एक दिवस पीछे राव राजसिंह की देवड़ा प्रथीराज के साथ अनबन होगई। प्रथीराज मुल्क लूटने लगा, और उसके बेटे व भतीजों ने पूर्ण आवेश के साथ राव के विरुद्ध कमर कसी। राव राजसिंह महाराणा अमरसिंह का दोहिता था इसलिये महाराणा के कुंवर कर्णसिंह ने राव और प्रथीराज के बीच मेल करा देने की इच्छा से दोनों को उदयपुर में बुलाये और कहा सुनी की। राजसिंह, प्रथीराज, नाहरखान, और चांदा सब एक ही प्रकृति के पुरुष थे, उन्होंने राणा के साथ बुराई करने का विचार बांधा। राणा के भले आदमी जो बातचीत करने वाले थे उन्होंने राणा से अर्ज़ की कि अपने को इस बीच बिचाव करने में कुछ लाभ नहीं है, तब राणा ने उस बात को छोड़ दी और उनको उदयपुर से बिदा किये।

फिर कई दिन तक परस्पर वही खटाखट चलती रही। प्रथीराज का बल बढ़ता गया। राव राजसिंह देवड़ा भैरवदास समरावत को अपने पास रखता था। सं० १६७४ भादवा शुदि ६ को (जोधपुर के महाराजा सूरसिंह के) कुंवर गजसिंह ने जालौर फतह किया और वहां भाटी गोकलदास आसावत और भाटी दयालदास को थाने पर रक्खे। राव राजसिंह ने उनको कहलाया कि यदि देवड़ा प्रथीराज को सिरोही के इलाक़े से निकाल दो तो गांव १४ तुम को दिये जावें। उन्होंने कुंवर गजसिंह से आज्ञा लेकर इसको स्वीकारा। भाटी दयालदास राव की सहायता पर आया और प्रथीराज को निकाल दिया, तब ये १४ गांव दिये गये-कोरटा, पालड़ी, नाम्री, रहवाड़ा, चमला, आलोपा, पोसाणा, बांसड़ा, बाथार, खेजड़िया, भेव, अणदोर, नारदणा, अरटवाड़ा। प्रथीराज पीछा आगया

---

(१) सूरसिंह ने जोधपुर के महाराजा सूरसिंह से सहायता चाही, और कुंवर गजसिंह को अपनी कन्या व्याह देने और दूसरे राठोड़ सरदारों को जिनके सम्बन्धी दताणी की लड़ाई में मारे गये थे, देवड़ों की २६ कन्या व्याह कर राव रायसिंह (राठोड़) का वैर धो डालने की कोशीश की। इसके अलावा यह भी ठहराव हुआ कि जो सामान व नक्क़ारा राव रायसिंह का राव सुरताण ने छीना था, पीछा दिया जावे; महाराजा उसको सिरोही की गद्दी पर बिठा दें और बादशाही चाकरी में दाख़िल करावें। महाराजा ने भी इसको मंजूर किया, परन्तु अन्त में सूरसिंह की हार होजाने से यह सब मामला यूंही रहगया।

इसलिये एक साल तो राव ने ६०००) फीरोज़ी (रुपये) और १२०००ऽ मण गेहूं मारवाड़ वालों को दिये फिर कुछ न दिया।

एक बार राव राजसिंह महादेवजी के दर्शन को गया था और देवड़ा भैरवदास समरावत उसके साथ नहीं था, पीछे रहगया था। प्रथीराज और उसके भाई बेटे सदा घात में लगे रहते थे, उस दिन अवसर पाकर उन्होंने भैरवदास को जा मारा। राव ने जब यह सुना तो मन ही मन में जल भुनकर रह गया। भैरव के बेटे को उसके बाप की जागीर का गांव पाडाव दिया। एक वर्ष बीत गया, प्रथीराज, नाहरखान, चांदा आदि अवसर ताकते रहते थे। एक बार ये सब राव के पास गये। राव, देवड़ा रामा व सीसोदिया पर्वतसिंह के साथ बैठा बातें कर रहा था। इन्होंने भीतर घुसते ही राव को मारडाला और पर्वतसिंह को भी मारना चाहा परन्तु उसके दिन बाक़ी थे, बचगया। शोर मचा, राव राजसिंह का पुत्र अखैराज दो वर्ष का था उसको उसकी धाय एक कोठरी में ले घुसी और सुलाकर ऊपर गुदड़ियां डालदीं। प्रथीराज ने उसको बहुत ढूंढा परन्तु पता न लगा। इतने में तो सीसोदिया पर्वत, देवड़ा रामा, खंगार आदि राव के साथी इकट्ठे होकर आये और प्रथीराज आदि को रावालय में घेर लिये और उनपर तीर व गोली बरसाने लगे। अखैराज की खोज की कि कहां है तो ज़नाने में से समाचार आये कि अबतक तो वह कुशलता पूर्वक है, अमुक कोठरी में बन्द है, और प्रथीराज के आदमी उसके द्वार पर बैठे हैं। बड़े बड़े सर्दारों को जल पिये दो पहर बीत गये हैं, उस कोठरी के अमुक अलंग पर कोई नहीं है सो सिलावट को बुलवाकर दीवार तुड़वा के अखैराज को निकाल लो। सीसोदिया पर्वतसिंह और देवड़ा रामा ने वैसा ही किया, दीवार तुड़वाकर बालक अखैराज को निकाल लिया। अब तो इनका बल बढ़ा, और पुकार पुकार कर कहने लगे हरामखोरों! अखैराज हमारे हाथ आगया है। यह सुनते ही प्रथीराज के पग छूट गये, रात हो चली, राव के चाकर च्यारों ओर से मारने लगे, तब उसने विचारा कि यदि रात को यहां रहगये तो मारे जावेंगे, अपने भले भले राजपूतों को च्यारों तरफ रख कर चला गया। राव के साथियों ने भी पीछा किया जिनके साथ लड़ाई करने में कई राजपूत मारे गये, परन्तु वह सर्दार सकुशल डेरे पर पहुंच गये और वहां से सवार हो पालड़ी में आन कर ठहरे।

सीसोदिया पर्वतसिंह, देवड़ा रामा चीवावत, दूदा, करमसी और साह तेजपाल ने मिलकर सं० १६७५ में राव अखैराज को राज-तिलक दिया। प्रथीराज की कार्यवाही के समाचार चित्तोड़ के राणा और ईडर के राव कल्याणमल ने; जो ज़बर्दस्त सरदार था, सुने और सबने राव अखैराज का पक्ष लिया। पर्वतसिंह आदि ने अपना बल बढ़ाकर प्रथीराज को देश से निकाल दिया। वह देवल राजपूतों के यहां व्याहा था, वहां चला गया, उन्होंने बेखला नामी पहाड़ी में एक विकट स्थान उसके रहने को बतला दिया और उसका बेटा चांदा अम्बा भवानी की तरफ चला गया। इन्होंने धरती में कई डाके डाले, और बहुत बिगाड़ करने लगे, कई गांव ऊजड़ कर दिये और चांदा सिरोही का आधा दाण लेने लग गया, परन्तु अपनी हरामखोरी के कारण वह दिन दिन निर्बल ही पड़ता रहा। प्रथीराज का भतीजा रामसिंह एक गांव लूटने को गया था, वहीं मारा गया। थोड़े अर्से पीछे राजसिंह, जीवा, और देवराज के पुत्र डूंगरोत देवड़े कपट क्रिया करके सिरोही से प्रथीराज के पास पहुंचे और कहा कि हम रामा भैरवदासोत आदि से लड़कर तुम्हारे पास आये हैं। उसने उनकी बात पर विश्वास कर उन्हें अपने पास रख लिये। अवसर पाकर एक रात उन्होंने प्रथीराज को मार डाला और सिरोही चले आये। प्रथीराज के दूसरे पुत्र तो सब मरगये परन्तु चांदा बड़ा विकट राजपूत हुआ। सिरोही में कोई ऐसा रजपूत नहीं था जो दो च्यार बार चांदा के साम्हने से न भागा हो। वह गांव नींबज में रहता था। सं० १७१३ कार्तिक शुदि १४ को सीसोदिया पर्वत, देवड़ा रामा, करमसी; और खवास केसर आदि राव अखैराज का सारा साथ नींबज पर चढ़ गया, चांदा ने लड़ाई की, दो पहर तक युद्ध होता रहा, अन्त में विजय चांदा की हुई। राव के ५० आदमी खेत पड़े और सौएक घायल हुए। सेना नायक देवड़ा राघोदास जोगावत लाखावत काम आया और बाक़ी ने पीठ दिखाई। चांदा भी थोड़े ही काल पीछे मरगया, उसके पुत्र अमरा को राव अखैराज ने समझा कर अपने पास बुला लिया और पालड़ी जैतवाड़ा, देदपुर, मकरोड़ा; बापला, पीथापुर, टीकली, मेड़ा, गिरवर, सूंगथला, झालंधरी, सूआवल, धनारी, आंवल, और देलवाड़ा गांव जागीर में दिये, दाण जो वह लेता था लेता रहा, परन्तु अन्य गांवों का हासिल लेना रोक दिया

सं० १७२१ में राव अखैराज के बड़े पुत्र उदयभाण ने डूंगरोत देवड़ों को मिला कर अपने पिता को क़ैद कर लिया (और आप राज का मालिक बन बैठा.)। अन्त में देवड़ा राणा भैरवदासोत और सीसोदिया साहबखान आदि ने मिल कर राव को बन्दीगृह से निकाला तब उसने उदयभाण को उसके पुत्र सहित मारडाला।

कवित छुप्पय सिरोही के टीकायतों की पीढियों के आसिया माला के कहे हुए।



आद अनाद असंभ, आप मुद्रा उप्पाये।
ओंकार अपार, पार परमहि नहिं पाये॥
कालिका जग कृतो, कंध रूढा कोमारी।
कमला वला कलाप, कला प्रमहंस पियारी॥
देवाण विद्या दत्तावरी, देवी धन दत्तावरी।
चौहान वंस रूपक चवां, सारमत्त भुवनेश्वरी॥ १॥
वंस चहुवाण वखाण, आण सुरताणां ऊपर।
अनल कुंड उतपत्त, मुद्रा की चंद महेसुर॥
मार मार वित्थार, बार उठियो विकासै।
खुरसाणां खलभलै, निहंग सावभ्रा नासै॥
सवा लख सिंध सागर सतर, जिये खंड जितावरी।
तेहवंस समो नहं कोइ जग, को संग्राम न समवड़ी॥ २॥
जेण वंस जैराव, जेण गोगो जग जाणै।
जेण वंस जैतराव, जेण सोमेसुर ताणै॥
जेण वंस प्रथिमल्ल, साल हूवो सत्राणां।
गढ़ चौरासी गहे, साभि वंधे सुरताणां॥
कैमास सूर सारिख कियत, जास मोहल न पामता।
चौतीस लाख चतुरंग दल, हुय आयस व्है हालता॥ ३॥
तिण डंडे पंड चोखाण, त्रंब तिण में उल्लालै।
मालव धर मलवटै, पैंज दत्तण हू पालै॥

गुज्जरवै पोह ग्रहै, सिंध समुहो नीहट्टे।
देतो पे परदक्षणा, आय दिल्ली अरहट्टे॥
अनन देस धर गिर अधर, संकोड़ो संसार सहि।
चहुवाण पीथल सूं आखड़ै, गज्जणवै सुरताण गहि॥ ४॥
गज्जणवै सूं ग्रहे, लीध भंडार पहल्ली।
दूजे गयंद तुरंग, गोरियां नींद गेहेली॥
तीजे साह महंत, लेय नव लाख धरावै।
चौथे मारग माल, भोग संयुगत भरावै॥
पंचमै डंड प्रथमाल रै, वात पह मानी असुर।
दस सहस लाद अलावदी, पूरवै आजमेर पुर॥ ५॥
प्रथीमाल परमाण, वधै चहुवाण तणै दल।
घसणे वंस वलाल, दान दीन्हो दस'''वल॥
चाहड़दे (जग जाण!), जेण पंडवो प्रजाले।
चाहड़दे अस चढ़ै, वैर गज्जणवो वाले॥
अजमेर हुवा नर पे भला, नव लखी उग्रह लिया।
सीलत पाण सुरताण सूं, कंदल सुरताणी किया॥ ६॥
रायसिंह तिण पाट, रहै सेवे तुरकाणो।
लाखणसी धर छांड, हुवो नाडूलो राणो॥
सेवा कीध सकत्त, वधे वरदान वडाई।
व्यातो गढ़ वधनोर, मान मन हुवो सवाई॥
चहुं भाई चहुवाण, जेन वंस रूपक वड़ो।
रावां गज्जन वैरड़ो, खुरासाण ऊपर खड़ो॥ ७॥
तेरह सहस तुरंग, सकत वरदान समप्पै।
नाडूलो नाडूल, थान आसावर थप्पै॥
पाटण ऊली प्रोल, दाण चहुवाण उग्राहै।
पंच लक्ख पोहकरण, वरस वरसै निरवाहै॥
मेवाड़ मंडल खंड दै, प्रसरे पूरवही परै।
प्रियराय सीस लाखण तपै, जो आरंभे सो करै॥ ८॥
अग लाखण संपनो, पाट सोही परगंट्टे।

सोही रै महेन्द्र, जेण खल दूणो खट्टे ॥
महंद्र हंस मछरीक, सुवण आलण संपन्नो ।
आलण रै असराव, आस जिंदराव उपन्नो ॥
जिंदराव तणै कीतू जिसा, जे लीधो जालोर जुढ़ ।
कर त्यूं समो पूजैन को, त्यैस कूंण पूजंत तुढ़ ॥ ६ ॥
सिवियाणो गिर सोन, जेण हेकण दिन जीता ।
वीरनरायण वंस, वहै वेलास वदीता ॥
दहियावत ढूंढार, मार संग्राम मनावै ।
कर छह वरस कटक, पछै नाडूल पजावै ॥
सुरताण सबल सामहां, आप प्राण अवरज्जियो ।
कीतू कंधार मछरीक कुल, अह ऐ वडे़ गरज्जियो ॥ १० ॥
विवनेतू वसुधाह, सुतन ऊठिया वाई ।
सांवतसी र महणसी, वेघै बीजार वड़ाई ॥
बीजड़ तणै वियाव, पांच पांचे पांडव पर ।
एकैही आगांह, आभ गह राखे असमर ॥
जसवंत समर लूणा जिसा, लोहगड्ड लूंभा लखा ।
इक एक विरद गह ऊठियो, मार मार करता मुखा ॥ ११ ॥
अरबुदह परमार, कान्ह एका कासियागर ।
सीह पंच सदूहण, वैसहै कोटां तां सिर ॥
बीजड़ रा घर बेध, वसै विन लोध विचालै ।
काम तहै कां करै, चक्र है काढ़ चालै ॥
मावै नहिं सेविहैं न मन, पोहव प्रमाण प्रगट्टिया ।
देवड़ा दूठ देसांदहण, आग खाय कर ऊठिया ॥ १२ ॥
पंच बीस पांवार, तेड़ जोना तिड़ तोड़ै ।
थाणै गूजर खंड, मुगल मंडाहड़ मोड़ै ॥
लूणो लामो लोह, सुवो दलपत्तह मारे ।
तेजसीह अरबुद, लेस पीतिये बंधारै ॥
पग-आणधरा गिर पालटै, घणा विरद आवत घणा ।
सुरथान गया सरवै तिको, तपै तुंग बीजड़ तणा ॥ १३ ॥

तेजसींह पांवार, उभै चूकै आवट्टे ।
दूजनो साह सुमेर, धुमते सकल मगट्टे ॥
सारंग सूर संग्राल, समन्द सुरताणां सझे ।
सलखण तणो रिणमह्न, सूझ भर दूणो झले ॥
सरणिये वसै रिड़मल्ल, सुहड़ खंडाखंड आखड़ै ।
चहुआण जिकण ऊपर चढ़ै, वणनरिंद घोवे घड़ै ॥ १४ ॥
अरबुदह रिणमल्ल, अनै वीकल दाचोलै ।
सोलंकियां सहाय, बोल हुय भारी बोलै ॥
कटै कटक अरजवा, निवह देवड़ो निहट्टै ।
बोड़ो बिरद पगार, आव वीसर आहट्टै ॥
पलखंड चंड भुव डंड खिड़, ते कारण खल खुंटिया ।
चापड़ै बीस चवदह चड़ै, आरोयण आवट्टिया ॥ १५ ॥
दल बोड़ो देवड़ांह, सहित विकलत संघारे ।
रहै हेक रजपूत, तेण रिणमल्लह मारे ॥
तेण पाट सुड़ताण, वधै सोभ्रम बड़ाई ।
सोभ्रम रै सहसमल्ल, सूररै कज्ज सवाई ॥
चहुवाण देस च्यारह चरै, पगहिन हल्लै पाधरै ।
अर्बुद राव बल आपरै, जां आरंभै तां करै ॥ १६ ॥
कुम्भकरण अरबुद, लियो सरणुवो सहेतो ।
सहसमल्ल सुरताण, जाय अगबार पुहंतो ॥
कर ऊपर कुतुबदी, इतो क्यूं बेगो आवै ।
गयो राण ओघाट, घाट परगह पाड़ावै ॥
वीटेव दुरंग थाणे वहै, पनरैती पालट्टिया ।
मछरीक सुकर मेवाड़रा, असंख सेर आहुट्टिया ॥ १७ ॥
पग आणै घर प्राण, समर साहसमल मांगे ।
तेणपाट लखधीर, मयंक उग्रे जगमागे ॥
जेवालो तो सीह, नलां आकासह नांखै ।
ओवासै ऊससै, ढाण कोटानूं धांखै ॥
सिवपुरी वसै ग्रह सरणुवो, देसां ऊपर देखियो ।

बल सबल ते बोलियो, परगह आपन पेखियो ॥ १८ ॥
सोलंकी संग्राम, सात फेरा संघारे ।
गोखू बरगा हेट, मछर चढ़ डूंगर मारे ॥
डोडियाल काचेल, सहेत डंडे वालीसां ।
कोलीयां कड़ काढ, वोप तीसी चोवीसां ॥
सयल तणा नदनरि जिम, जीता सेन असंख जिण ।
लखधीर तणो सुरताण लग, तापन खिमै रोद्र तण ॥ १६ ॥
धर खाटै लखधीर, दीध जगमाल हमीरां ।
विने पाट पत बेध, वेहु होवे वर बीरां ॥
एक राव अरबुद्द, बियो सरणुवे बयट्ठो ।
ऐका एक अगाह, ऐक एकाह अपुट्ठो ॥
रायभाण अनेस तन, द्रोहे आरख बेधियो ।
भुयतणो आस विहुं भाइयां, आधो आध निमंधियो ॥ २० ॥
दल मेलै जगमाल, पीड़ हम्मीर पहारै ।
विह लिखियो बेध, तामसह वर संघारै ॥
रसतर संघण लील, राज वकवाल विवेनो ।
तेण पाट सुड़ताण, पछे अखई उतपन्नो ॥
अखैराज अरक पोहोसियो, नर नरिन्द भंजेव निस ।
कलकलै किरण दीपै कमल, दसही दिस चत्वार दिस ॥ २१ ॥
जिके इंदु फणींद, कंता गलै निकासै ।
जुधविण रढ राण, पाण त्यां दूरि पियासै ॥
जिके छत्र गजग तज, जत्र त्यां हुये अलग्गा ।
जिके काळ लंकाळ, लुळै लुळ पाये लग्गा ॥
पूर्व पछिम उत्तर दखिण, किंत्ति रैण खत्रवट भले ।
अखैराज अरक ओहोसियो, हुय नरिंद हालोहले ॥ २२ ॥
वंधे खाण बल आप, माण मेटे मिलकाणो ।
धरा राजधर धूण, लियो चांपे लोइयाणो ॥
डोडियाल की बेल, वास गोयंद बसावे ।
चांपे तीस चोईस, धर सत्र मनावे ॥

पतसाह सर सद् खवार पिंड, जे टंटोले गोद्लां ।
अकैसाह भाल कलन अंतरै, डरै निमंधै पतलां ॥ २३ ॥
कोड़ सवाड़ा करे, सरण आजह संपत्तो ।
रायसिंह लिए पाट, अरक देवे ऊगंतो ॥
किरण भाल भळहळै, अंब अंबर ओहासे ।
सपतदीप सारीख, वदन उद्योत विकासे ॥
नवलेक छत्र छाया निजर, न अठारह विलकलै ।
यह सिंह प्रतच्छे सिवपुरी, जोत विंब जिम भळहळै ॥ २४ ॥
काय भोज विक्रम्म, काय रुद्र नाग अरजन्न ।
काय राम बलराज, कायजु जैठल अर गंजन ॥
कन्न कहा हरचंद, कंज जुग हर कहंता ।
काय समर दाधीच, काय जीवाहन जंता ॥
सुजसिंह सही सुजसिंह सत, एहन आरप आवरां ।
वात न सानै काय पर, किणी ऋद्धि जलतो करां ॥ २५ ॥

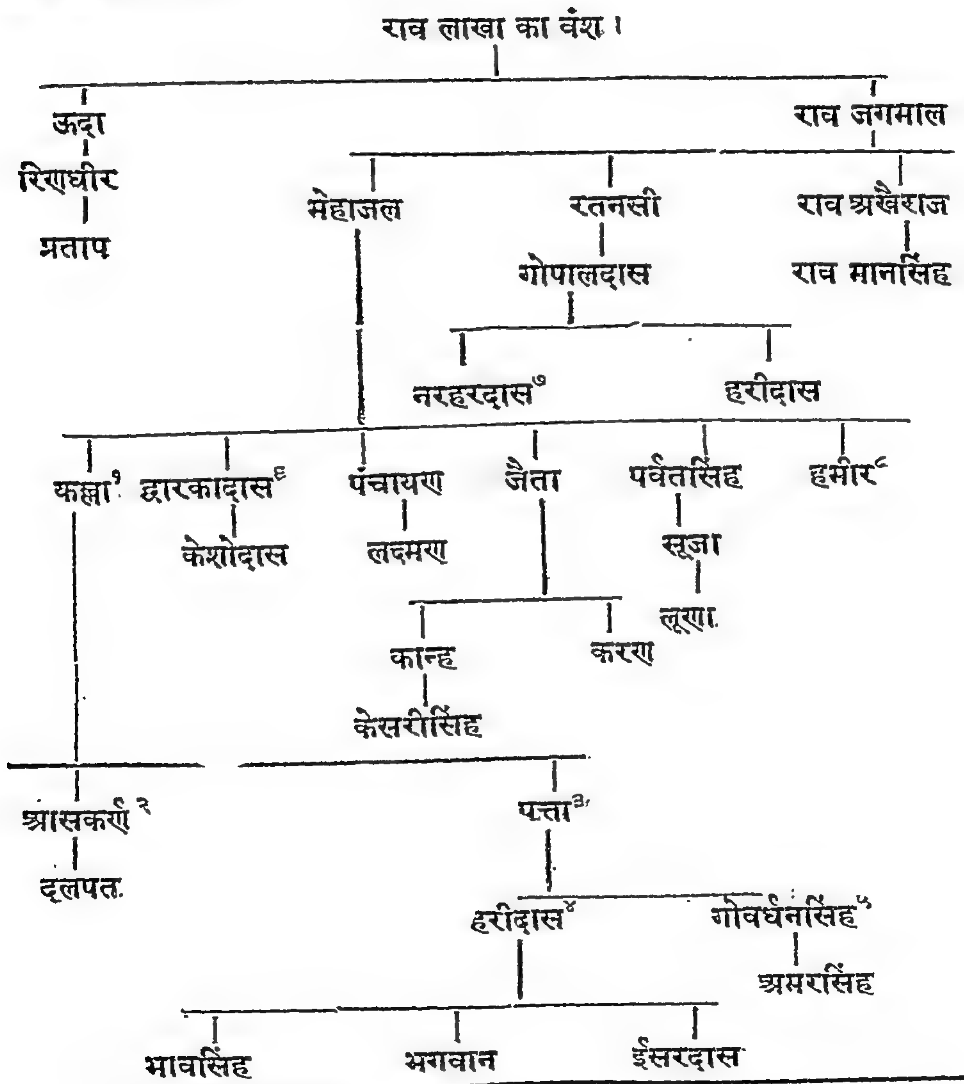
कवित्त राव रायसिंह सिरोहीवाले के, आसिया करमसी सींवसरोत के कहे हुए—

जै ऊपर रो तमर, सुतर वैहवार लहंतो ।
जिण थूं आ ऊपरिय, फाड़ फड़क्क फाड़ंतो ॥
जिण समये सौवन्न, जेण वद्रा बंधावै ।
जिण सोभावै हाट, जेण लाखां लूटावै ॥
खूनिभरस संभार सदन, (घणां) कपणां तणो विरामियो ।
कर भूपर कीरत करमसी, रायसिंह विसरामियो ॥
जहां अंब फल अच्छ, तहं निंब फल न पामासि ।
जहां चीणी पकवान, तहां को कसरथ मानसि ॥
जहां जायसूं जपै, तहां आदर नह पायस ।
जहं उपाय सवहोत, तहं वोहतेरो खायस ॥
ओषध दान देसी कवण, कवण नैणां विदोषिये ।
हयत्थ सरीर छूटो नहीं, रायसिंह अपरोषिये ॥
दान राय रखवाल, राव रहडण रिमराहां ।

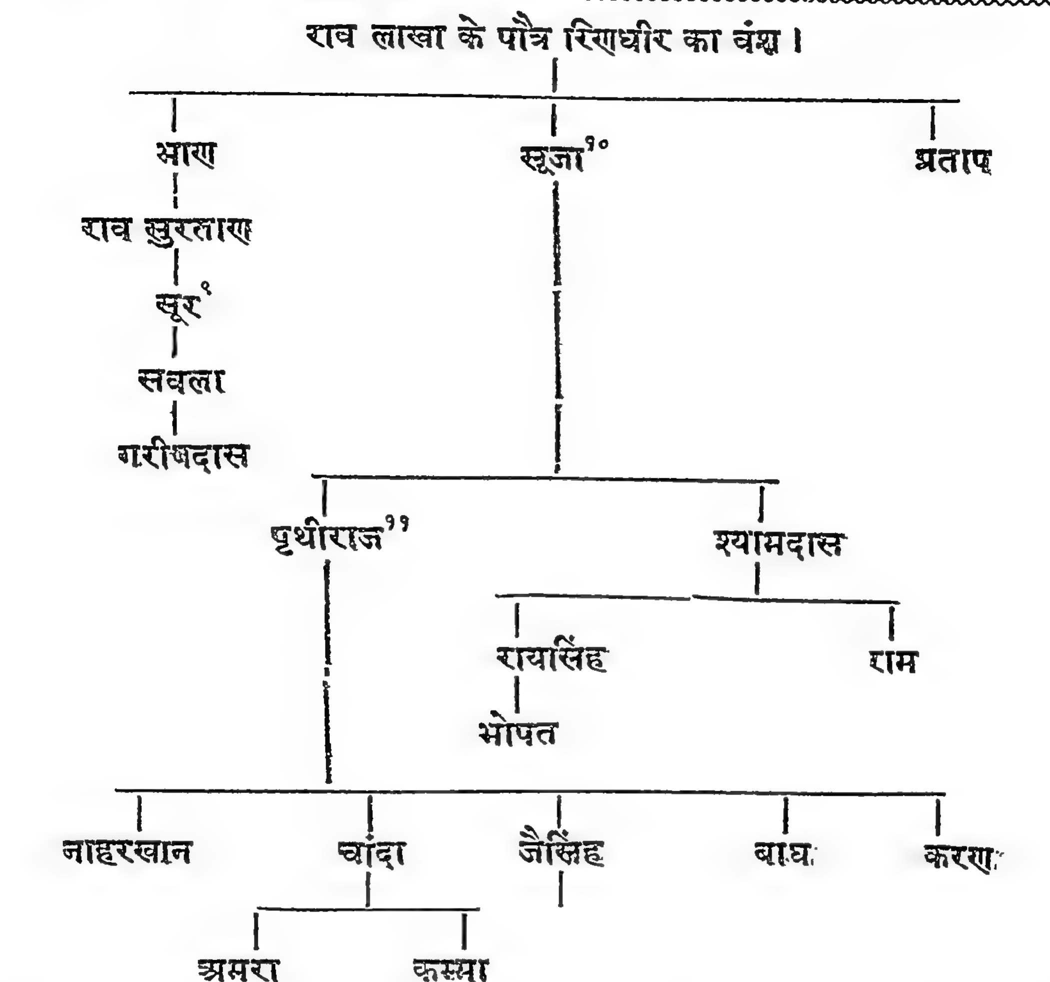
राव कुरूप रायह, राव वैरी पतसाहां ॥
राव रोर विड़ार, राव संसार उधारै ।
राव भ्रम्म उद्धरै, राव इकोतर तारै ॥
तण जास पास नय कुलतणी, सिवे और आचार ही ।
अभिनमो कन्न दानेसवर, रायसिंह विवनोम कहि ॥
केहिज राव राखिया, भोम निगमी भ्रमंता ।
केहिज राव राखिया, भयै खुरसाण पुलंता ॥
केहीज लोभ राखिया, तणै पतसाह उहकाले ।
केहिज रंक राखिया, महा रौरव, दुक्काले ॥
रणखेत पिसण केहि राखिया, कन्ही काय कवि पात्रकहि ।
अभिनमो कन्न दानेसवर, रायसिंह विवनोम कहि ॥
कुण चारण कुण चंड, कवण वंभण वंभेसर ।
कुण जोगी कुण जती, कवण दरवेस दिगंबर ॥
कुण पंडित कुण पात्र, कवण पंथी परदेसी ।
जाचे जौतलानह, कवण नियभट्ट निवेसी ॥
रिण हुवो सीस दुहिला रहै, रुलियो नहं चूकै रिणां ।
हिंवये राव विवनै हुवै, मोटो छै हो मांगणां ॥
कहिम मेर डोलहै, कहिम जलहल है सायर ।
कहिम चंद लुकि जहै, कहिम छहलहै दिवायर ॥
कहिय वीस ब्रहमंड, गाट छेड़े हेकागल ।
कहिय सक्क पाताल, चलेजा पहुंत अणघल ॥
खड़हले इंद्र कालंतरे, पड़ै रुद्र ब्रह्मा पड़ै ।
रूपक नाम रासिंघरो, तोहि जरा नहं आमड़ै ॥
वित छुमाग खरचियो, चित्त लीन्हों हर पाये ।
जिसो वेवे वांछियो, तिसो परलोक सिधाये ॥
सुरा पान नहं कियो, कदै परनार न रत्तो ।
सगला धरम सांचवे, परम दरगह सम्पत्तो ॥
आखंत मद तूं वर अधिक, करै आरती अपछरै ।
सुर भुवंण राव प्रभु आड़सल, जै जै कार उच्चरै ॥

सिरोही के महारावों का वंश—राव सोभा (शिवभाण) का पुत्र राव सहसमल और सहसमल का पुत्र राव लाखा था। राव लाखा के पीछे क्रमवार-उदा टीका नहीं हुआ, रिणधीर, भाण, सुरताण, राव राजसिंह (राणी) सीसोदणी के पेटका, राव अखैराज राणी वीरपुरी का (पुत्र), उदयसिंह, और उदय भाण सिरोही की गद्दी पर बैठे।

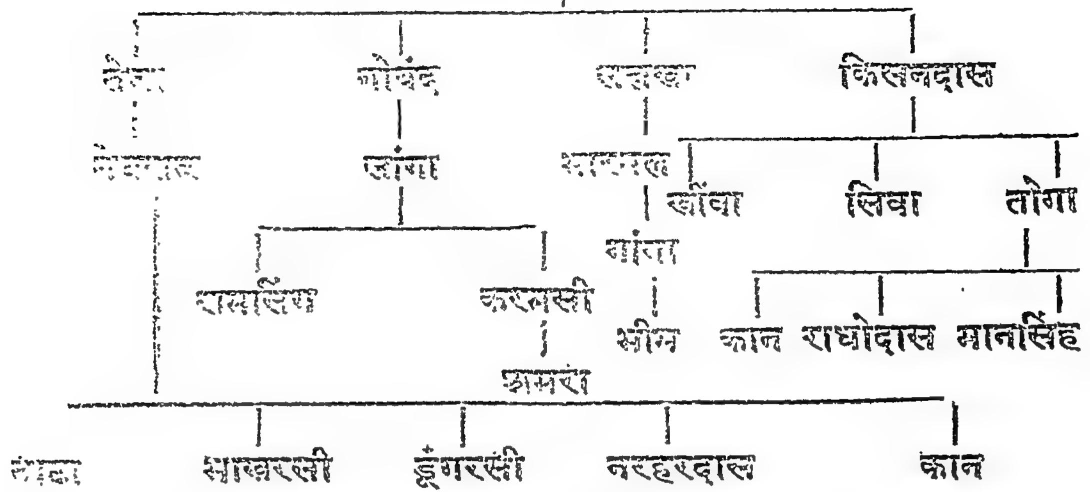
राव लाखा का वंश।



(१) एक वार राणा उदयसिंह ने सहायता करके सीरोही की गद्दी पर विठा दिया था परन्तु डूंगरोत देवड़ों से उसका मनोमालिन्य होगया। फिर राव



सुरताण से लड़ाई हुई। सं० १६४६ में मोटे राजा (उदयसिंह राठोड़) के पास नागोर जोधपुर जा रहा और भाद्राजण की जागीर पाई। सं० १६६१ में मरा। (२) जोधपुर रहता था। नवसरा गांव जागीर में था। (३) राणा के पक्ष में लड़कर मारा गया। (४) जोधपुर रहता था, भाद्राजण पट्टे में था। (५) कल्ला ने मारा। (६) सं० १६८० में जोधपुर था। गांव नवसरा पट्टे में था। (७) राव अखैराज ने चूक करके मारा। (८) राव जगमाल से आधा हिस्सा मांगता था इसलिये राव जगमाल ने उसे मारा। (९) जोधपुर रहा, गांव २५ से भाद्राजण पट्टे में था। सं० १६७५ में मरा। (१०) देवड़े बीजा ने सेखा के पुत्र रावत के हाथ से मरवाया। (११) सीरोही का बड़ा ग्रासिया हुआ, सं० १६७५ में राव राजसिंह को मारा। देवड़ा जीवा ने सं० १६८१ में पृथ्वीराज को मारा।

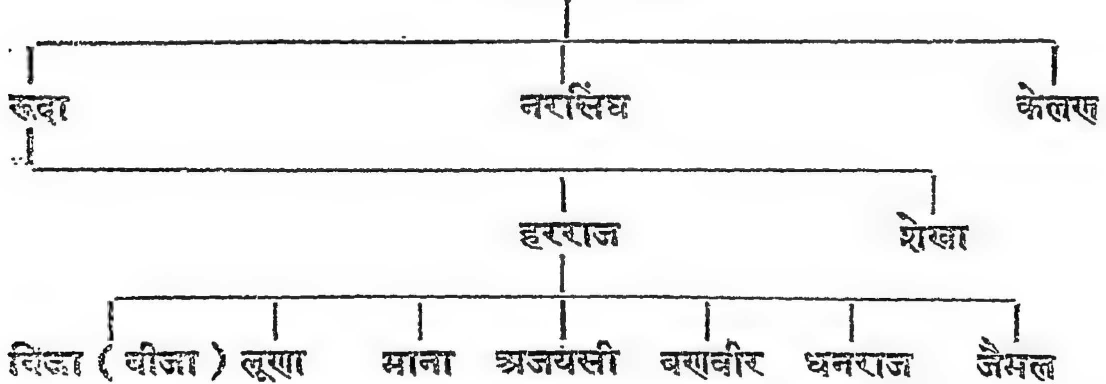


राव [illegible] के पुत्र राव अखैराज के दो पुत्र थे दूदा और राव रायसिंह। दूदा का पुत्र माना और राव रायसिंह का राव उदयसिंह हुआ।

सिरोही के डूंगरोत[1] (देवड़ा) चौहानों का वंश वृक्ष। *

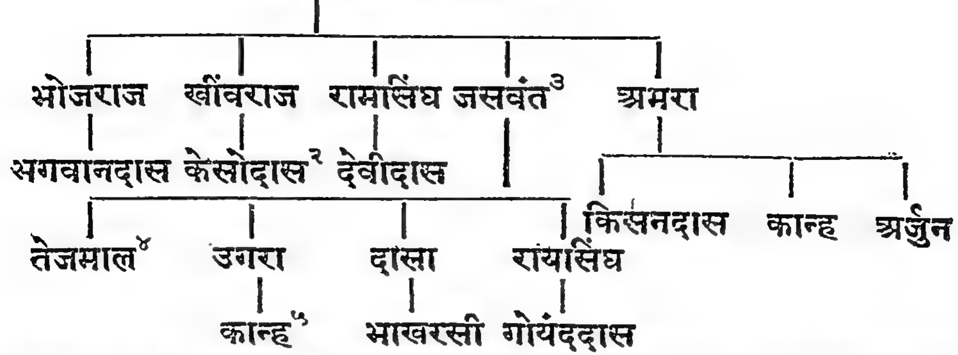
[illegible] के पुत्र राव लुंभा ने (आबू लिया)। लुंभा का पुत्र सलखा, सलखा का [illegible], [illegible] का डूंगर, डूंगर का झांझा, झांझा का गज्जा, गज्जा का सींदा, सींदा का आल्हण और आल्हण का तेजसी हुआ।

तेजसी का वंश



(१) सिरोही के देश में डूंगरोत देवड़े बड़े राजपूत हैं। ये देश के रक्षक, और सदा सिरोही के स्वामियों को गद्दी पर स्थापित करने या अलग करने वाले रहे हैं।

* डूंगरोत देवड़ों के मूल पुरुष डूंगर को राव रणमल के दूसरे पुत्र गज्जा का बेटा और राव सोभा या शिवभांण का भाई बतलाते हैं।



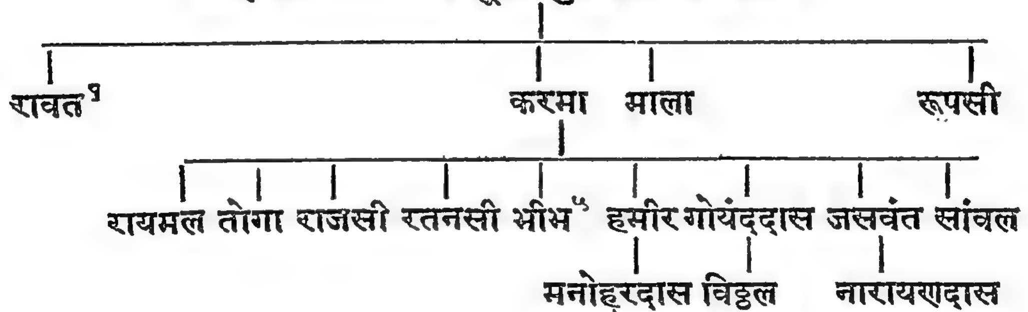
हरराज के दूसरे पुत्र लूणा का वंश—लूणा बड़ा रजपूत हुआ उसको राव सुरताण ने मारा। उसका पुत्र महेश, और महेश का बेटा भोपत था।

हरराज का बेटा माना भी अच्छा राजपूत था, उसको भी राव सुरताण ने मारा। माना का पुत्र सादूल राव राजसिंह के साथ मारा गया।

हरराज के बेटे अजयसी का पुत्र सुरताण जोधपुर में था, गांव ससूभा उसके पट्टे में था। सुरताण का बेटा बाघ, और बाघ के दो बेटे, पीथा और उदयसिंह थे। उदयसिंह का बेटा करण।

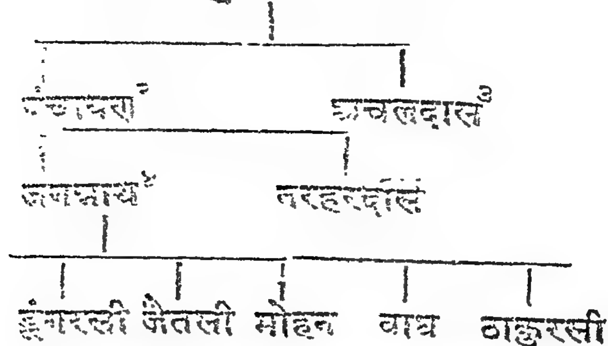
हरराज के बेटे रणबीर के दो पुत्र—चांदा और रामदास थे।

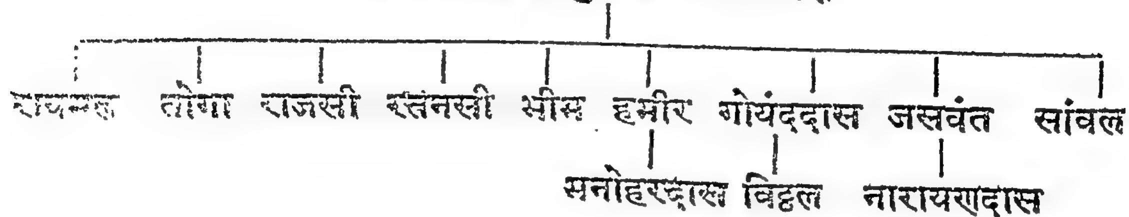
रूदा तेजसीहोत के दूसरे पुत्र सेखा का वंश।

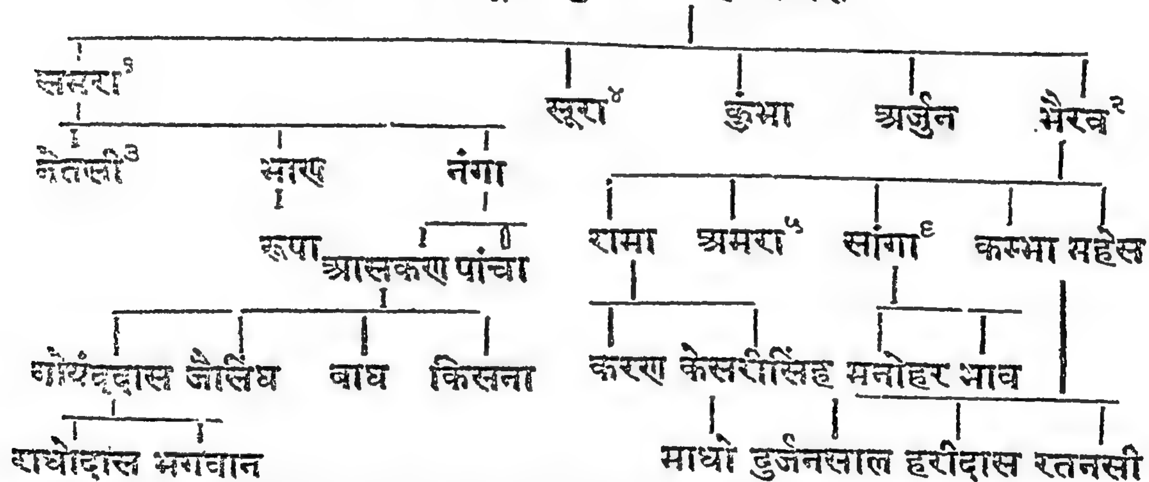


(२) राव राजसिंह के साथ मारा गया। (३) जोधपुर रहता था और गांव कुल्थाणां पट्टे में था। (४) राव राजसिंह के साथ मारा गया। (५) जोधपुर में रहता था।

(१) बड़ा राजपूत था देवड़ा बीजा के पास रहता था। रावत ने बीजा के कहने से सूजा रिणधीरोत को मारा, पीछे सं० १६५८ में जोधपुर जा रहा, जहां उसे सिवाणे का गांव देवली थाली पट्टे में दिया गया। सं० १६६२ में मरा। (५) देवड़ा प्रथ्वीराज की लड़ाई में मारागया।



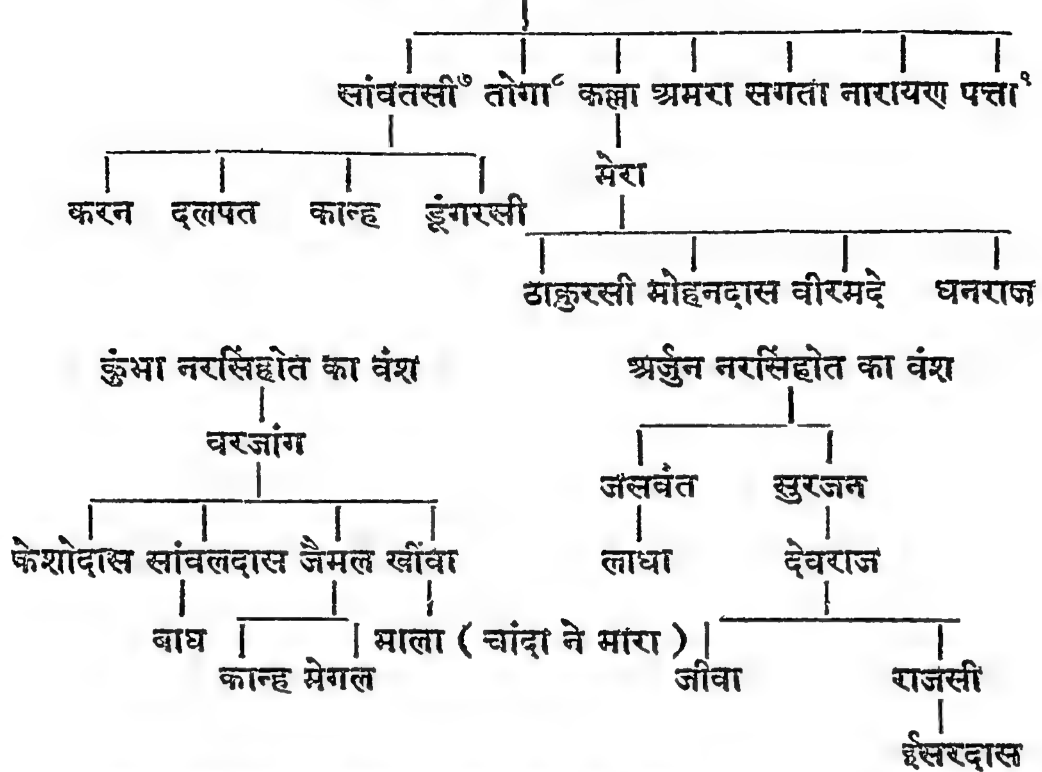




(२) जोधपुर वास, गांव खडाला नीवली पट्टे में थे। (३) जोधपुर वास, गांव नवसरा रु० १००००) की रेख का, पट्टे में था। सं० १७०३ में काबुल में मरा। (४) जोधपुर वास, गांव नवसरा पट्टे. सं १७२१ चेत सुदी ७ को मरा।

(१) राव सुरताण ने राणा जगमाल व रायसिंह को दताणी के युद्ध में मारे तब सं० १६४० कार्तिक शुदि ११ को काम आया। (२) सं० १६७२ में देवड़े प्रथीराज ने मारा। (३) राजा जैसिंह के साथ काम आया। (४) वड़ा राजपूत था, कल्ला के साथ कालंधरी के मुक़ाम राव सुरताण की लड़ाई हुई तब सुरताण के पक्ष में मारा गया। (५) किसनबाई राठोड़ का पुत्र था सं० १६४६

नरसिंह के पुत्र सूरा का वंश।



केलण तेजसी का इसके दो पुत्र देदा और पत्ता थे। देदा पालड़ी में रहता था, उसको रतना के पुत्र देवड़ा हामा ने मारा। पत्ता का वेटा उगरा था।

में मोटे राजा (उदयसिंह राठोड़) ने छल से मारा। (६) देवड़ा सूरा के साथ काम आया। (७) जोधपुर रहता था, गांव करमावस पट्टे में था। (८) (९) तोगा और पत्ता को मोटे राजा ने चूक करके मारे।

चीवा शाखा के देवड़े।

(मूल पुरुष) कीतू (जालौर का राव), इसके दो पुत्र समरसी और अभयसी। समरसी के पीछे (क्रमवार) १ मोहनसिंह, २ माला, ३ चीवा, ४ सांगण, ५ रणसिंह, ६ दल्लू, ७ सौभ्रम (शोभा), ८ वला, ६ स्यामसिंह, १० भारमल हुए। भारमल के बेटे खींवा और चीवा। खींवा का मेहरा, मेहरा का दूदा, दूदा का पुत्र उदयसिंह था।

कीतू के दूसरे पुत्र अभयसी के वंशज अभयसी देवड़ा कहलाये, ये बड़े राजपूत, ५०० आदमियों की जोड़ है। सुरताण अभयसीहोत राव मानसिंह के समय में बड़ा राजपूत हुआ था[1]।

गीत चीवा जैता का आड़ा दुरसा का कहा हुआ। मोटे राजा उदयसिंह ने सूरा देवड़े के बेटे सत्ता, तोगा, और सांवतसी को चूक कर मारे तब चीवा काम आया था।

"सोभाहर तिलक सींचतो सावल, करतो खग दींती कर।
रिणरोहियो घणै राठोड़ै, चीवो एकल वाड़वर।
भांजै छड़ा वरड़कै भाला, पड़ै न पिंड देतो पसर।
ऐकल जैत सलख आहेड़ी, सकैन पाड़ै भड़ सिहर।
ऊपाड़िये तूठ आघतर, जण जण पूगो जुवो जुवो,
खींवर हाक लियो खीमावत, हौंकर झाड़ विहाड़ हुवो"॥

गीत—चीवा खीमा भारमलोत का, आसिया दल्ला का कहा हुआ जब कि खींवा राव कल्ला के साथ राव सुरताण के मुक़ावले में काम आया था।

"विडरी अंसत विजो थोथियो वांसै, वाजै हाक थई विकराल।
चाला वालण हारन चूको, खत्रवट खाग वाही खीमाल।
एकारम रव ऊपर आयो, सोह आवगो डूंगरां साथ।
मिटै न घणै नरे मोडाणां, भारमलोत सरस भाराथ"॥

(१) नैणसी ने चीवा को जालौर के राव समरसी का पौत्र और मोहनसिंह का पुत्र वतलाया और अभयसी को राव कीतू का बेटा होना लिखा है; परन्तु पंडित गौरीशंकरजी हीराचंद ओझा रचित सिरोही के इतिहास में चीवा और अभा को जालौर के राव मानसिंह के पुत्र लिखे हैं। चीवा के वंशजों का सिरोही राज्य में एक ठिकाना जामठा है, वाकी पालनपुर इलाके में चले गये हैं।

जालौर के सोनगरा चौहान।

चौहानों की २४ शाखा में एक शाखा सोनगरा, जालौर (इसका दूसरा नाम सुवर्णगिरि या सोनगिर था उसी पर सोनगरे प्रसिद्ध हुए) के स्वामी थे। (ये नाडूल के चौहानों में से फंटे हैं) राव लाखण पर देवी आसा पूरी(आशा पूर्णा) प्रसन्न हुई और उसे नाडूल का राज दिया, तब राव ने देवी से प्रार्थना की कि मेरे पास घोड़े नहीं हैं। उत्तर दिया कि अमुक दिवस सोवत (सोहवत या कारवान) के घोड़े खुल कर आपसे यहां आवेंगे। तदनुसार तेरह हज़ार तुरंग टलकर नाडूल आये। घोड़ों के स्वामी सौदागर भी पीछे लगे हुए आन पहुंचे, परन्तु देवी ने सब घोड़ों का रंग बदल दिया तब सौदागर पीछे चले गये।

राव लाखण के पुत्र—वीसल, जिसके (वंशज) हाडोती में हैं; आसल, जिसने आसल कोट बसाया; जोजल; जोलावर बसाई; और जैतल जिसने जैतकोट बनवाया। फिर वलि, सोहित, महींद्रराव, आल्हण, और जिन्द-राव (क्रमवार) नाडूल के स्वामी हुए। जिन्द राव (जयेन्द्र राव) के पीछे आसराव (अश्वराज) बड़ा ज़बर्दस्त राजा हुआ। एक बार वह नाडूल के पास शिकार खेलता था, वहां देवी उसको डराने लगी, परन्तु वह डरा नहीं और मृग के मारने को जो बाण धनुष पर चढ़ाया था उसको छोड़ा। तब देवी ने प्रसन्न होकर कहा कि मांग! देवी का रूप देख कर आसराव मोहित होगया और विचारा कि यदि ऐसी सुंदर स्त्री मिले तो क्या बात है। प्रकट में देवी से कहा कि यदि तूं तूठी है तो यही मांगता हूं कि तूं मेरी भार्या बन कर मेरे पास रह। बचनबंध होने से देवी ने इस बात को स्वीकारा, परन्तु बोली कि यह मैं चिताये देती हूं कि यदि किसी पर मेरा भेद खुलगया तो मैं तुरन्त चली जाऊंगी। फिर वह उसके घर में आन बैठी। कहते हैं कि उस देवी के पेट से आसराव के च्यार पुत्र हुए—माणकराव, मोकल, आल्हण,·········। आल्हण का पुत्र केलण, और केलण का बेटा कीतू (कीर्तिपाल) था, वह बड़ा राजपूत हुआ। उस वक़्त जालौर में पंवार कुंतपाल राज करता था और सिवाने में पंवार वीर नारायण। कुंतपाल के प्रधान दहिया राजपूत की मिलावट से कीतू ने जालौर और सिवाना लिये।

राव कीतू के पीछे उसका पुत्र रावल समरसी जालौर पाट बैठा। समरसी का अरिसिंह, और अरसी का उदयसिंह, रावल हुआ। सं० १२६८ माघ शुदि ५ को सुलतान जलालुद्दीन (फीरोज़ खिलजी) ने जालौर पर चढ़ाई की, और हार खाकर भागा। उसकी साक्षी का दोहा-"सुंदर सुर असुरह दले, जल पीयो बवरोह, ऊदै नरपत काढियो तसनारी नयरोह"।

जसवीर उदयसिंह का; करमसी जसवीर का; रावल चाचगदे करमसी का जिसने सूंधा के पहाड़ पर चावंडाजी का मंदिर सं० १३१२ में बनवाया। सामन्तसिंह (दूसरा) रावल चाचगदे का टीकेत, और चाहडदे व चंद्र दो पुत्र दूसरे थे। रावल सामंतसिंह का पुत्र रावल कान्हड़देव था, जो दशमा शालिग्राम और गोकुलनाथ भी कहलाया। सं० १३६८ में जलौर के गढ़ के नीचे अलोप हुआ। उसका पुत्र, कुंवरों का शुरु, वीरमदेव अपने पिता के पीछे तीन दिन तक बादशाही सेना से लड़कर काम आया। रावल कान्हड़देव के भाई मूंछाळे मालदेव ने, जो सामन्तसिंह का दूसरा पुत्र था और जिसको कान्हड़देव ने अपना वंश बना रखने के वास्ते गढ़ से नीचे भेज दिया था, फिर तुर्कों की फौज का बहुत बिगाड़ किया। सिवाने का खान उसके पीछे लगा, मालदेव देवी सेणी चारणी के साथ दिल्ली गया। जब देवी एक गुफा में घुसी तो मालदेव भी उसके साथ लगा चला गया। आगे बहुली (वेहरी) नामकी जोगिनी बैठी थी जिसने अपने गले का जड़ाऊ हार मालदेव को दिया, और रुधिर भरा एक पात्र भी उसके सामने रक्खा। मालदेव ने उसको (ग्लानिवश) पिया नहीं वह अमृत था, उसने थोड़ासा मुख से लगा कर रख दिया। उसमें से कुछ रुधिर उसकी मूछों के छूगया जिससे मूंछें बहुत चढ़गई और इसी कारण मूंछाळा कहलाया। फिर कान्हड़देव की आज्ञा पाकर बादशाह से मिला, बादशाह के ऊपर बिजली गिरी थी जिसको मालदेव ने तलवार के झटके से टालदी। इस सेवा से प्रसन्न होकर बादशाह ने चित्तोड़ का गढ़ मालदेव को दिया। सात वर्ष तक गढ़ उसके अधिकार में रहा फिर वह काल प्राप्त हुआ [1]। उसके तीन बेटे थे जैसा, कीर्तिपाल और रणवीर। जैसा

(१) चित्तोड़गढ़ विजय कर पहले तो सुलतान (अलाउद्दीन खिलजी) ने अपने शाहज़ादे खिज़रखां को दिया था परन्तु जब उससे वहां का प्रबन्ध न हो सका तब बादशाह ने राव मालदेव को वहां का हाकिम मुकर्रर किया।

का पुत्र धरणीधर (रणधीर), धरणीधर के केलण और राजधर। राजधर के पुत्र डूंगा, भीखा और राघव और जैसा। जैसा के कान्ह, वीसा, देवा, रायमल, ओज, भारमल, नंगा और नरा नामी पुत्र हुए। १ खींवा, दूदा, दल्ला। राजधर रणधीर का सं० १४८२ में राव रणमल्ल (राठोड़) से युद्ध कर मारागया। इसी रणधीर के अरड़कमल, नाथू, हरदास नामी और बेटे भी थे। रणधीर का पुत्र केलण और केलण का बेटा करमचंन्द बड़ा दातार हुआ, सं० १४७६ में राव रणमल्ल के मुक़ाबले में काम आया। करमचंद के बेटे सामन्त, जयसिंह, संसारचंद और मेघा थे। बणवीर भालदेवोत का बेटा राणा बड़ा वीर राजपुत्र था जिसको वीरमदेव (कान्हड़देव का पुत्र) बादशाह के पास ओल में रख आया था, जब वीरमदेव अपने क़रार के मुवाफ़िक़ बादशाही हजूर में न पहुंचा तो बादशाह ने अपने दीवान तोगा को कहा कि राणा को बेड़ी पहना! यह सुनते ही राणा ने भरे दर्बार तोगा को कटार से मार दिया और आप झापा नामी घोड़े पर सवार होकर कुशलता पूर्वक जालौर पहुंच गया।

राण का बेटा लोला हुआ। जब राव रणमल्ल (राठोड़) धणले रहता था तब उसका विवाह नाडूल में किसी सोनगरे राजपूत की कन्या के साथ हुआ था। सोनगरों ने राव को चूक कर मारने का विचार किया तब उसकी राणी सोनगरी ने उसको स्त्री का वेष पहना कर निकाल दिया। राव ने फिर नाडूल में १४० सोनगरों को मारकर कुए में डलवा दिये, और इसी शत्रुता को लिये हुए जहां किसी सोनगरे को पाया उसको वहीं ठिकाने लगाया, एक राण का बेटा लोला अपने मामा भाटियों के घर होने से बच गया था। जब भाटियों के साथ राव रणमल्ल की शत्रुता मिटी तो राव उनके यहां जेसलमेर ब्याहने को गया। एक दिन जेसलमेर का रावल और राव रणमल्ल दोनों शिकार खेलने गये तब लोला भी रावल के साथ था और उस वक़्त उसकी उमर केवल १२ वर्ष की थी। वनमें सिंह निकला, जिसके भय से दूसरे लोग तो भाग गये परन्तु लोला ने अपना छोटासा भाला इस ढब से फुर्ती के साथ सिंह के मारा कि उसके च्यार दांत तोड़ कर अणी गुदी के पार निकल गई। यह देख कर राव रणमल्ल बोला कि यह तो कोई सोनगरा होवे जैसा दीखता है। रावल ने उत्तर दिया कि दूसरे तो सब सोनगरों को तुमने मार डाला, एक यही बालक अपने मामा के आश्रय से बचा है। जब राव रणमल्ल जेसलमेर से विदा हुआ तब लोला को रावल के

पाल से मांग कर अपने साथ ले आया। राव जोधा की कन्या (राव रणमल की पोती) सुन्दरबाई के साथ उसका विवाह कर दिया और सिंधल नींबावत से पाली का (क़स्बा) लेकर लोला को पट्टे में दिया। तब से सोनगरे जोधपुर के चाकर हुए और वहां के राजाओं के बड़े बड़े काम किये[१]।

लोला का पुत्र सत्ता, सत्ता का खींवा, खींवा का रिणधीर, और रिणधीर का अखैराज हुआ। वह बड़ा दातार जूझार और बांका राजपुत्र था, उसके जैसे रजपूत थोड़े ही हुए होंगे। सं० १६०० के पोष महीने में जब बादशाह (शेरशाह सूर) का समेल गांव में राव मालदेव (राठोड़) के साथ युद्ध हुआ तब अखैराज बादशाही सेना के मुक़ाबले में बड़ी वीरता के साथ काम आया। राव मालदेव का दिया हुआ पाली का परगना उसकी जागीर में था। अखैराज की कन्या का विवाह राणा उदयसिंह के साथ हुआ था। एकबार बणवीर ने राणा को बहुत दबा लिया तब राणा ने अपनी सहायता के वास्ते अखैराज को बुलाया। राठोड़ कूंपा मेहराजोत, भदा, कान्हा, खींवा, जैसा भैरवदासोत आदि मारवाड़ के कई सरदारों को साथ लेकर अखैराज पहुंचा। गांव माहोली में बण-वीर से युद्ध हुआ, अखैराज जीता और राणा उदयसिंह को कुंभलमेर पर पाट बिठाया।

अलाउद्दीन (खिलजी) बादशाह ने गुजरात पर चढ़ाई कर वहां की बहुतसी प्रजा को मारा; सोरठ में देव पट्टन में सोमइया (सोमनाथ) महादेव के ज्योतिर्लिङ्ग को उठा कर गीले चमड़े में बांधा और गाड़ी में पटक कर लेजाने लगा, परन्तु लिङ्ग स्थान से न हटा। बादशाह आरम्भराम (जो विचारे उसको

---

(१) एपिग्राफिआ इण्डिका जिल्द ११ के पृष्ठ ७६–७७ में सोनगरा रिणधीर वणवीरोत का एक लेख सं० १४४३ का छपा है, वहां दी हुई वंशावली भी ख्यात से मिलती है "वणवीर सं० १३६४ वि०, उसके दो बेटे रिणधवल सं० १४४३ वि० और राणा। रिणधवल के राज-धर और केल्हण। राजधर के खींवा और दूदा, और केल्हण के करमचंद; करमचंद के पुत्र सावन्त और जयसिंह"। "राणा का बेटा लोला; लोला का सत्ता; सत्ता का खींवा; खींवा का रणधीर; रणधीर का अखैराज सं० १६०० वि०। अखैराज के भोज व मानसिंह। भोज के सिंध और मान के जसवन्त; जो भटनेर में भाटी की कन्या ब्याहने गया था, उसी समय भटनेर को तुर्कों ने घेरा व जसवन्त लड़ाई में मारा गया"।

पूर्ण करने वाला) था, उसने हठ पकड़ी, गाड़ी में पांचसौ बैल जोड़ी की वेल लगाकर जोती। महादेव के लिंग में से अग्नि की ज्वाला निकलने लगी, तब पांचसौ सक्के (भिश्ती) उस पर जल छांटने को नियत कर दिये। बैल जुतते जाते और मरते जाते थे। महादेव बहुत करामाती थे परन्तु देवों ऊपर के दानव के आगे करामात चली नहीं। इस प्रकार बड़ी कठिनता से गाड़ी एक कोस रोज़ चलती थी। उसको लिये हुए बादशाह जालौर के गांव सकराणे आया, महादेव की आपत्ति की सब बात राव कान्हड़देव के कर्णगोचर हुई।

कहते हैं कि कोई तपस्वी ब्राह्मण गंगाजी के सौरों घाट से गंगोदक की एक कावड़ भर कर प्रतिवर्ष सोमनाथ महादेव पर जा चढ़ाता था। इस तरह छः कावड़ उस ब्राह्मण ने चढ़ाई, सातवीं बार गंगोदक लिये आता था, संध्या समय किसी नगर में बटाऊ की भांति एक घर के बाहर चबूतरे पर रात भर विश्राम लेने को ठहरा। उस घर के स्वामी की स्त्री की किसी पर पुरुष से प्रीति थी और वह सदा उसके पास जाती थी। उस स्त्री का पति कहीं बाहर गया हुआ था वह भी उसी दिन अपने घर आया, जिस दिन वह ब्राह्मण वहां जाकर उतरा था। पति के आने के कारण वह स्त्री अपने जार के पास कुछ देर से पहुंच सकी, इसलिये जारने उस पर क्रोध किया और पास न आने दी। स्त्री ने कहा कि आज मेरा पति घर आया था इसलिये कुछ बिलम्ब होगया, तब जार बोला कि जो तुझे अपना पति इतना प्यारा है तो यहां काहे को आती है ? जा अपने घर चली जा ! वह कहने लगी कि किसी भांति तुम मुझे अपने पास आने भी दो ? तो जार कहता है कि यदि तू अपने पति का सिर काट लावे तो मेरे घर में घुसने दूं। व्यभिचारिणी बोली मुझे कोई शस्त्र दो तो सिर काट लाऊं। तब उस पुरुष ने अपना एक बड़ा छुरा उसको दिया, वह लेकर चली, और नींद में अचेत सोते हुए अपने पति का मस्तक काट कर अपने जार के पास ले आई। कटा हुआ मस्तक देख कर वह जार पुरुष बोला कि " फिट् रंडा ! तेरा काला मुंह, मैं तो तेरा मन लेता था, तूने सचमुच सिर काट ही लिया, अब तू मेरे काम की नहीं। " ऐसा कहकर उस रांड को निकाल दी। वह पीछी अपने घर आई, चबूतरे पर ब्राह्मण सोया हुआ था उसके वस्त्रों में छुरा धर दिया और रुधिर के छींटे भी उस पर डाल दिये, फिर घर में आकर चिल्लाने लगी कि मेरे पति को मार कर चोर जाते हैं। लोग शोर सुनकर इधर उधर से दौड़े

आये, और राज के चौकीदार आदि भी आन पहुंचे। खोज देखने लगे। चौकीदार देखता भालता उस कावड़िये ब्राह्मण के निकट गया। वह तो निश्चिन्त सोया हुआ था; उसके वस्त्रों पर लोहू के छींटे देखकर उसे पकड़ा, तलाशी ली तो बिछौने में से छुरा भी निकल आया। तब तो पूरा प्रमाण मिलगया, बन्दी बनाकर उसे लेचले, और कोतवाल ने सारा वृत्तान्त राजा से निवेदन किया और आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा। हुक्म हुआ कि इसके दोनों हाथ काट डाले जावें। न तो उस ब्राह्मण से कुछ पूछा, और न उसने कुछ कहा, हाथ काट डाले गये। जब कुछ आराम पड़ा तो वह अपनी कावड़ कंधे पर धर चलता हुआ, परन्तु महादेव पर उसको बड़ा ही क्रोध आया, मन ही मन कहने लगा कि मैंने ऐसी सेवा की जिसका फल मुझे शङ्कर ने यह दिया। मैं भी अबकी बार कावड़ चढ़ाने के बहाने से मंदिर में जाकर एक बड़ा सा पत्थर लिंग पर पटक उसे तोड़ डालूंगा। ऐसे विचारता हुआ जब वह देवालय के निकट पहुंचा तो सोमनाथ ने पुजारी को कहदिया कि अमुक ब्राह्मण क्रोध में भरा हुआ आता है सो उसे भीतर मत घुसने देना। इतने में तो ब्राह्मण आन पहुंचा। पुजारी ने भीतर न घुसने दिया। ब्राह्मण कहने लगा तुम जाकर महादेव से पूछो कि तुम्हारी इतनी सेवा करते हुए भी तुमने मेरे हाथ क्यों कटवाये। महादेव ने पीछा कहलाया कि पूर्व जन्म में तू राजपूत था, और जिसका कण्ठ काटा गया वह भी राजपूत था। तुम दोनों मित्र थे। एक दिन तुम दोनों ने मिलकर एक बकरी को मारा, तूने तो दोनों हाथों से उसके कान पकड़े और उसने उसके गले पर छुरी चलाई। बकरी मर कर वह स्त्री हुई, और तेरा मित्र उसका पति। स्त्री ने अपने पूर्व जन्म का वैर पति का सिर काटकर लिया; और क्योंकि तूने उस बकरी के कान पकड़े थे इस अपराध में तेरे दोनों हाथ काटे गये। अब इस में मेरा क्या दोष है।

इतना होने पर भी ब्राह्मण का कोप महादेव पर कम न हुआ, वह काशी गया और वहां गंगा स्नान कर करवत लेने को तय्यार हुआ। करवत देने वाले ने पूछा कि तू क्या चाहता है सो कह। ब्राह्मण ने प्रश्न किया कि क्या यहां मांगा हुआ आगे मिल जाता है? उत्तर मिला कि मिलजाता है। तब तो ब्राह्मण ने कहा कि "मैं अगले जन्म में सोमइया महादेव के लिङ्ग को उखाड़ कर गीले चमड़े में बांधने वाला होऊं।" यह सुनकर पास खड़े हुए लोग कहने लगे कि धिक्कार

है तुझको, काशी में करोत लेता और ऐसा क्या मांगता है, विचार के मांग। तब फिर ब्राह्मण बोला कि " मेरा आधा धड़ तो महादेव को बांधने वाला हो जैसा कि मैंने पहले कहा है और आधा उनके बंधन छुड़ाने वाला हो। यह कह कर करवत ली सो कामनानुसार आधे धड़ से तो अलाउद्दीन बादशाह का और आधे धड़ से राव कान्हड़देव का अवतार हुआ।

बादशाह (अलाउद्दीन) का डेरा जालौर के गांव सकराणे हुआ, जो जालौर से ६ कोस है। रावल कान्हड़देव ने सुना कि बादशाह सोमइया महादेव को बांध कर लाया है तब उसने कांधल ओलेचा और दूसरे ४ अच्छे राजपूतों को बादशाह के पास भेजे और कहलाया कि " इतने हिन्दुओं को मारे और क़ैद किये और महादेव को बांधकर लाये, मेरे गढ़ के नीचे मेरे ही गांव में ठहरे, यह आपने अच्छा न किया। क्या आपने मुझको राजपूत ही नहीं समझा? रावल के राजपूत शाही लश्कर में पहुंचे और बादशाह के वज़ीर सिहपातला के, जो उसका भाञ्जा भी था, डेरे के पास डेरा किया। उससे मिले और रावल कान्हड़देव का सन्देशा सुनाया। वज़ीर बोला कि बादशाह ने राव का क्या बिगाड़ा है जो वह ऐसी अर्ज़ हजूर में कराता है, ऐसी बात कहलाना उसको मुनासिब नहीं है। कांधल बोला यह तो कान्हड़देजी जाने, तुम तो निश्चित अर्ज़ करो! कांधल और दूसरे राजपूतों को देखकर वज़ीर बहुत खुश हुआ, बादशाह के हजूर में जाकर कान्हड़देव का सन्देशा अर्ज़ किया और साथ ही यह भी कहा कि उसका राजपूत कांधल देखने के योग्य है। हुक्म हुआ कि हाज़िर कर! तब सिहपातले ने अर्ज़ की कि ये लोग अनाड़ी होते हैं, राव कान्हड़देव के सिवा किसी दूसरे के आगे सिर नहीं झुकाते और अजब नहीं कि कोई अपराध कर बैठे, इसलिये जो हज़रत उनका क़सूर माफ फर्मा देवें तो हाज़िर करूं। ऐसा कह बादशाह का वचन लेकर वज़ीर कांधल को हजूर में लेगया और एक तर्फ खड़ा कर दिया। बादशाह ने फर्माया कि कान्हड़देव तो उलटा हमको आंखें बताता है, हमारा यह नियम है कि मार्ग में कोई गढ़ आजावे तो उसको लिये बिना आगे न बढ़े। हमतो चले जाते थे मगर क्योंकि कान्हड़देव ने ऐसी अर्ज़ कराई है तो अब जालौर फतह करने के बिदून आगे न जावेंगे। इतने में एक चील उड़ती हुई, बादशाह जहां बैठा था, वहां ऊपर को आई। बादशाह ने उस पर तुक्का चलाया, जिसकी चोट से चील

सरसर गिरने लगी, तब पास खड़े हुए तीरंदाज़ों को हुक्म हुआ कि गिरने न पावे। उन्होंने ऐसे तीर मारने शुरू किये कि वह चील नीचे न गिर सकी। तब कांधल ने क्रोध कर मनमें विचारा कि यह तीरंदाज़ी मुझको दिखलाने के वास्ते कराई गई है। उसी वक़्त एक बड़ा भैंसा जिसके सींग उसकी पूंछ तक पहुंचते थे, और ऊपर पानी से भरी पखाल लदी थी, कांधल के पास से निकला। इसने तलवार खोल कर उस भैंसे पर ऐसा झटका किया कि जिससे उसके सींग कट, पखाल को चीरती और भैंसे के दो टुकड़े करती हुई उसकी तलवार पृथ्वी पर जाकर लगी। इसी अवसर में वह चील भी नीचे गिरी और भैंसे के रुधिर व पखाल के पानी में बह गई। कांधल ने मनमें कहा शकुन तो अच्छे हैं, बादशाही सेना भी हमारे सन्मुख इसी तरह बह जावेगी। यह देख तीरंदाज़ों ने कमान की मूठ कांधल की तर्फ़ की, तब सीहपातले ने बीच में पड़ कर अर्ज़ की कि मैंने तो पहले ही हज़रत में मालूम कर दिया था। बादशाह ने तीरंदाज़ों को रोक दिया। कांधल बाहर आया, जहां गाड़ी में महादेव लदे हुए थे वहां गया, दर्शन किये और बोला कि " जल पिये विना तो रह नहीं सकते परन्तु अन्न तो जब ही खावेंगे जब आप को छुडा लेंगे। " फिर गढ़ की तरफ़ चला। आगे उसको बादशाही उमरा मंसूशाह (मुहम्मद) मीरगाभरू मिले जिनका भाई किसी हरम के मामले में पकड़ा गया था। यह क़िस्सा बहुत लंबा चौड़ा है। वे लोग पचीस हज़ार सवार के स्वामी, उदास होकर बैठे थे। उन्होंने कान्हड़देव व कांधल की बात सुनी और उसको आता देख कर उससे मिले और कहा कि हम भी तुमारे शामिल हैं तुम्हारे काम आवेंगे। क़ौल बचन हुए, कहा हम रात को छापा मारेंगे। एक तरफ से हम आवेंगे और दूसरी तरफ से तुम आना। कांधल कान्हड़देव के पास आया और सब वृतान्त सुनाया। तीसरे दिन अपनी सारी सेना को इकट्ठी करके रावल ने रात को बादशाही लश्कर पर छापा मारा, मंसूसाह व मीरगाभरू भी दूसरी तर्फ़ से आन पहुंचे, बादशाह के बहुत आदमी मारे गये, और बादशाह किसी ढब से बच कर भाग गया। कान्हड़देव के राजपूतों ने भागते हुए तुर्कों का पीछा किया और बहुतों को मारे। फिर सोमइया महादेव के पास जाकर कान्हड़देव ने पीठ में हाथ दे उसे उठाया और उस लिंग को मकराणे (गांव) में स्थापन किया और

बड़ा मंदिर बनवाया। रावल कान्हड़देव ने हिन्दुस्थान की बड़ी मर्यादा बनी रक्खी[1]।

मम्मूसाह और मीरगभरू कान्हड़देव के पास आन रहे और उनको बड़ा रोज़ीना कर दिया गया, परन्तु वे तो बादशाही के रहने वाले थे सो नित गौवें मारने लगे। हिन्दुओं को यह बात बहुत बुरी लगी। रावल ने कहा कि इनको किसी ढब से यहां से विदा करने चाहिये, तब किसी ने कहा कि इनके पास सुन्दर पतुरियां (वेश्याएं) हैं उनको मंगवाओ, ये देवेंगे नहीं और आप ही चले जावेंगे। रावल ने अपने दो मनुष्यों को भेजकर पतुरियां मंगवाईं। उन्होंने कहा कि महादेव का मंदिर सम्पूर्ण होने पर हम आप ही चले जाते, परन्तु रावलजी ने हमारी पतुरियां मंगवाईं इससे जान पड़ता है कि वे हमको विदा करना चाहते हैं। तब वे वहां से रूख़सत होकर राजा हमीरदेव चौहान के पास जारहे। हमीर ने उनका बहुत आदर किया। जब बादशाह अलाउद्दीन हंमीर पर चढ़ आया और गढ़ (रणथम्भोर) को घेरा तो सं० १३५२ श्रावण वदि ५ को हंमीरदेव बादशाह से युद्ध कर काम आया[2]।

---

(१) फारसी तवारीख़ों से भी यह लड़ाई होना पाया जाता है, परन्तु बादशाह उसमें शरीक न था। फिरिश्ता लिखता है कि सं० ७०४ हि० सं० १३०४ ई० सं० १३६१ वि० में जब बादशाह अलाउद्दीन के सेनापति अलफखां व नुसरतखां मालवा व गुजरात फतह करके जालौर पहुंचे तो यहां के राजा नैहरदेव (कान्हड़देव) ने मुक़ाबला किये बिना ही गढ़ उनके सुपुर्द कर दिया। फिरिश्ता का यह लेख विश्वास करने योग्य नहीं है क्योंकि जो कान्हड़देव ऐसा भय खाता तो उसी तवारीख़ के मुताबिक़ दूसरी बार खुद बादशाह को ऐसा कब कह सकता था कि "मैं आपकी फौज से लड़ सकता हूं।"

(१) रणथम्भोर के चौहान महाराजा पृथ्वीराज के पुत्र गोविन्दराज के वंश में थे। हमीर महाकाव्य में उसे पृथ्वीराज का पौत्र लिखा है। सम्भव है कि फारसी तवारीख़ों का गोलाराय और गोविन्दराज एकही हों। इस गोविन्दराज को सुलतान कुतुबुद्दीन ऐबक ने अजमेर का राजा बना दिया था। परन्तु पृथ्वीराज के भाई हरीराज ने उसको वहां से निकाल दिया और वह रणथम्भोर चला गया। गोविन्दराज के पीछे उसका पुत्र वाल्हण देव राज पर आया। वाल्हण के दो पुत्र थे प्रल्हाददेव, और वाग्भट्ट (बाहड़देव)। प्रल्हाद को शिकार में सिंह ने ज़ख्मी किया जिससे वह मरगया। उसका पुत्र वीर नारायण बालक था इसलिये बाहड़देव राजकाज करने लगा। सयाना होने पर वीर नारायण की काका से न बनी, बाहड़देव मालवे की तरफ चला गया, सुलतान शमशुद्दीन अलतिमश ने रणथम्भोर छीन लिया था परन्तु उसके मरते ही चौहानों ने पीछा यहां अधिकार कर लिया। पीछे

बादशाह अलाउद्दीन की सेवा में पञ्जू नाम का एक पायक (इक्का) रहता था वह किसी कारण से बादशाही सेवा छोड़ रावल कान्हड़देव के पास एक बार आरहा था। उसने रावल के पुत्र वीरमदेव को विनोट की विद्या सिखलाई थी। कुछ समय वीतने पर बादशाह ने पंजू को पीछा बुला लिया। एकबार बादशाह ने उसको फर्माया कि आज हिंदुस्थान में कोई ऐसा है जो तुझ से बाज़ी लेजावे, क्योंकि पञ्जू ने बादशाह के अन्य सब पायकों को परास्त कर दिये थे। उसने अर्ज़ की कि ईश्वर की सृष्टि बड़ी है, उसमें किसी बात की कमी नहीं है, इस पृथ्वी पर बहुत से ऐसे होंगे जिनको मैंने देखे नहीं, परन्तु जालौर के रावल कान्हड़देव का पुत्र वीरमदेव, जो मेरे पास ही सीखा है, मेरे समान खेलने वाला है। बादशाह ने रावल को लिखा कि वीरमदेव को तुरन्त हमारे पास भेजदो। अहदी फर्मान लेकर जालौर आया तब कान्हड़देव ने अपने भाई बेटों को बुला-कर सलाह की कि क्या करना चाहिये। सब ने यही कहा कि हमने बादशाह को खिजाया है, दिल्लीश्वर ईश्वर और आरम्भराम है जो चाहे सो करे। यदि वह अपना अगला अपराध क्षमा करता है और कृपा के साथ कुंवर को बुलाता है तो भेज देना चाहिये। तब रावल ने बड़ी तय्यारी के साथ वीरमदेव को हजूर में भेजा। कुंवर ने दिल्ली पहुंच कर मुजरा किया, बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ। दस पांच दिन बिताकर वीरम को कहलाया कि एक बार पंजू के साथ खेल! हम देखना चाहते हैं। वीरम ने अर्ज़ कराई कि हमारा यह काम नहीं है, परन्तु जो हज़रत की यही मर्ज़ी है तो कहीं एकान्त में जहां बादशाह चाहें, मैं उसके साथ खेलूंगा। बादशाह ने अपनी खासा बैठक में जगह तय्यार करवाई, हरमसरा की बेगमें भी चिकों की ओट में देखने को आईं; और वहां दोनों

रज़िया बेगम ने भी वहां सेना भेजी थी, वीर नारायण के पीछे बाहड़देव मालिक हुआ तब सुलतान जलालुद्दीन फीरोज़खिलजी ने स० १२६१ ई० में रणथम्भोर पर चढ़ाई की और दो बार अलगखां ने भी घेरा दिया परन्तु उन्हें शिकस्त खाकर हटना पड़ा। बाहड़देव के पीछे उसका पुत्र जैत्रसिंह गद्दी बैठा। इसके तीन पुत्र थे सुरतान, हमीर और वीरम। हमीर को राज देकर जैत्रसिंह तप करने चला गया, अलाउद्दीन के अपराधी को हमीर ने शरण दी जिसपर सुलतान खुद चढ़ आया। हमीर ने शरणागत को न दिया, एक साल तक बादशाह गढ़ घेरे पड़ा रहा, अन्त में सं० १३५६ वि० में गढ़ फ़तह हुआ और हमीर मारा गया। हमीर के मृत्यु कालमें ख्यात और फ़ारसी तवारीखों में ७ वर्ष का अन्तर है।

आदमी खेल दिखलाने को बुलाये गये। एक दो बार तो पंजू और वीरम बराबर उतरे, बादशाह बहुत ही राज़ी हुआ। दोनों बराबरी के खिलाड़ी थे और कुंवर ने उसी से (पंजू से) सीखा था, परन्तु जब पंजू पीछा बादशाही चाकरी में चला गया तब कोई कर्णाटक के पायक जालौर आये थे, उनके पास से वीरमदेव ने एक नई कला यह सीखी थी कि पांव के अंगूठे से उस्तरा बांध कर उल्टी गुलांच खाना और उस्तरे की चोट दूसरे खिलाड़ी के ललाट पर पहुंचाना। तीसरी बार वीरम ने वह कलाबाज़ी की और पंजू को उस्तरे की हलकीसी चोट पहुंचाई। इससे वीरम जीता। बादशाह बहुत ही प्रसन्न हुआ, बेगमें भी खुश होगईं, और बादशाह की एक बेटी, जो कुमारी थी, वह तो इतनी रीझी कि वीरम पर आशिक़ होगई। खेल ख़तम हुआ, पंजू व वीरम दोनों रुख़सत होकर अपने २ डेरों को गये, तब शाहज़ादी किसी एकान्त स्थान में जाकर सोगई। अन्न जल छोड़ दिया, महल के लोगों ने कारण पूछा तो कहने लगी कि ब्याह करूं तो कुंवर वीरमदेव के साथ करूं, नहीं तो बिना अन्न जल के मरूं। एक दिन तो उसकी माता व दूसरी बेगमों ने उसको बहुत समझाया कि वह हिन्दू, तू तुर्कनी विवाह कैसे बने, परन्तु उसने तो अपना हठ न छोड़ा, प्राण तजने पर तय्यार होगई। तब बेगम ने यह बात बादशाह के कानों तक पहुंचाई। बादशाह ने भी यही कहा कि यह बात कैसे बनसकती है। शाहज़ादी को अन्न जल लिये तीन दिन बीतगये, तब फिर बादशाह से अर्ज़ हुई कि अब तो शाहज़ादी मरती है, तब शाह ने अपने भले आदमी भेज वीरमदेव को कहलाया। उसने बहुत से उज़र किये, परन्तु बादशाह ने एक न सुना। तब उसने सोचा कि बात पेढव है यातो मरना, या विवाह क़बूल करना। फिर वह एक चाल चला, अर्ज़ कराई कि "बहुत अच्छी बात है लग्न दिखलाया जावे, हमको विदा दीजावे कि जालौर जाकर ठाटपाट से बरात बनाकर आवें, और विवाह करें। बादशाह ने फर्माया कि तू वहां जाकर बैठ रहे और पीछा न आवे तो क्या ठिकाना, किसी को ओल में रखजा। वणवीर के बेटे राण को ओल रखकर वीरम जालौर आया, सारा हाल पिता को कह सुनाया, कान्हड़देव ने विचारा बात बिगड़ गई, उसने गढ़ सजाया और सब सामान शीघ्रता के साथ ठीक कराया। अवधि बीतगई, वीरमदेव न आया, बादशाह ने राण को बुलाकर फर्माया कि वीरम के न आने का कारण क्या है। राण ने समझाया कि बरात

का सामान करता होगा, जल्दी ही आजावेगा। इस तरह से दो च्यार महीने बीतगये, तब तो बादशाह ने अपने हजूरियों को जालौर भेजे। वे पहुंच कर कान्हड़देव व वीरमदेव से मिले (परन्तु जवाब साफ पाया)। पीछे आकर अर्ज़ की कि वीरम न आवेगा उन्होंने तो जंग का सामान दुरुस्त कर रक्खा है। बादशाह को क्रोध आया, अपने कोतवाल तोगा को बुलाकर हुक्म दिया कि राण को बेड़ी पहना। उसने राण के सन्मुख बेड़ी ला डाली, तब राण ने कटार पर हाथ पटका, तोगा का काम तमाम कर चलता बना और कुशलता पूर्वक जालौर पहुंच गया। साखी के दोहे—

काय आडां पग आण, कायकर वात कटारियां,
राण रावत वट ताण तोगाळा छल छांडिया।
तोगो नं जाणै तोल, मूरख मछरीका तणो।
कारण किणीक बोल, मारै काय आपण मरै।
सुध पूछै सुरताण, कोलाहल केहो कटक।
काय रिसाणो राण, मैंगल खंभ मरोड़िया।

राण का घोड़ा गांव भांतड़ा के पास मरगया।

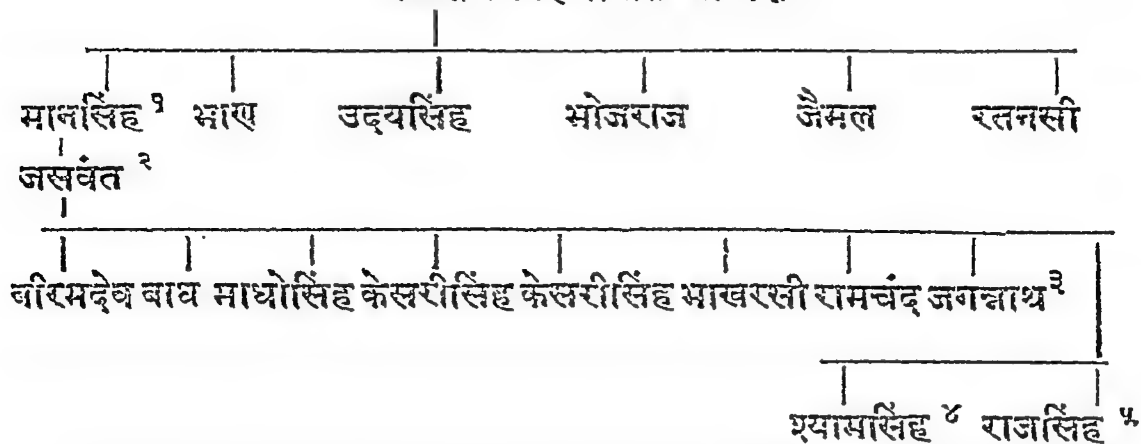
बादशाह ने पांच लाख सवार की फौज से मुदफर खान (मुज़फ्फरखां) और दाऊदखां को जालौर भेजे उन्होंने आकर गढ़ घेरा, रोज धावा होने लगा, जिसकी खबर ढोल की आवाज़ से बादशाह के पास पहुंचाई जाती थी। कहते हैं कि बारह वर्ष तक विग्रह रहा। फिर दन्तकथा ऐसी है कि दो दहिया राजपूतों को रावल कान्हड़देव ने किसी अपराध में सूली पर लटका दिये थे, हवा से उनकी लाशों का रुख बदल गया और पूठ पीछे को और चेहरा सन्मुख होगया। तब रावल कान्हड़देव उनको देखकर हंसा और कहने लगा कि दहिया सन्मुख हुए सो अब गढ़ जावेगा। उन दहियों का कोई भाई बन्धु उस वक़्त रावल के पास खड़ा था उसके चोट लगी। कोट उड़ा और गढ़ भिलगया। कांधल ने खड़्ग के मुंह बड़ा पराक्रम बतलाया। रावल कान्हड़देव अलोप हुआ, कुंवर वीरमदेव बहुत राजपूतों सहित युद्ध में मारागया, तुर्कों ने उसका सिर काटकर दिल्ली भेजा। शाहज़ादी ने उस मस्तक को थाली में रख उसके साथ फेरे लेने का इरादा किया, तब वह मस्तक उल्टा फिरगया। कहते हैं कि शाहज़ादी फेरे फिर कर मस्तक के साथ सती होगई। सं० १३६८ वैशाख शुदि ५ बुधवार को जालौर का गढ़ टूटा। इतने राजपूत काम आये—कांधल देवड़ा, कान्हा ओलेचा, लखमण सोभावत, जैता

देवड़ा,जैता बाघेला, लूणकरण,मान लणवाया, उरजन वीहल,चांदा वीहल,जैतमाल राठोड़ सांतल, सोमदेव व्यास, सल्ला राठोड़, सल्ला सेपटा, झांझण भंडारी, गाडण सहजपाल, अडवाल वीहल, आल्हण देवड़ा, आल्हण सोहड़, धारा सोढा, भाणा धांधल, सींधल पत्ता और झांझण पडिहार आदि। तीन राणियां उमादे, कमलादे, जैतलदे, जौहर कर जल मरीं। गहलोत कुंढा, मेरा, अरसी, विजैसी, सांगा शिलार, सल्हण जैसा, लखमण, लूणा। दहिया, धूंधलिया सहाणी, पत्ता दहिया, वीलण सोभत, सूला सेपटा, लाला, नरसिंह सिंधल,जगसी सिंधल,करमसी। वीका दहिया तो बड़ा स्वामिद्रोही हुआ इसी के भेद से गढ़ टूटा, ये सब बचकर निकलगये[1]।

(१) सुलतान अलाउद्दीन ख़िल्जी का दो एक बार जालौर पर सेना भेजना फारसी तवारीख़ों से भी प्रमाणित ठहरता है, मगर उन में जो कारण दिया है वह विचित्र सा है। फिरिश्ता लिखता है कि–" सं० ७०८ हिं० (सं० १३०८ ई० सं० १३६५ वि०) में जालौर का क़िला भी फतह हुआ। राजा कान्हड़देव ख़िदमत में देहली हाज़िर आया। एक दिन बादशाह ने कहा कि आज हिंदुस्थान में किसी राजा की ताक़त नहीं कि हमारे लश्कर का मुक़ाबला करसके। कान्हड़देव हाज़िर था, अर्ज़ की, कि मैं मुक़ाबला कर सक्ता हूं, अगर न करूं तो क़त्ल किया जाऊं। बादशाह को उसकी अर्ज़ बहुत नागवार गुज़री मगर चुप होकर उसे वतन की रुख़सत दी और दो तीन महीने बाद अपनी एक लौंडी गुलविहिश्त को फौज देकर जालौर भेजी। उसने क़िले को जा घेरा और इस बहादुरी के साथ हमला किया कि कान्हड़देव मुक़ाबले की ताब न लासका। क़रीब था कि क़िला फतह होजावे कि एकाएक गुलविहिश्त बीमार होगई। उसके बेटे शाहीन ने लड़ाई शुरू की मगर कान्हड़देव के हाथ से मारा गया, और बादशाही फौज भाग निकली। यह ख़बर सुनकर बादशाह बहुत रंजीदा हुआ और कमालुद्दीन को फिर लश्कर देकर भेजा, उसने क़िला फतह कर लिया और राजा अपनी औरतों व बाल बच्चों समेत मारा गया।" क्या सम्भव है कि जब रावल कान्हड़देव ने हार खाकर बादशाही सेवा स्वीकारली थी और वह ख़िदमत में हाज़िर था, फिर अलाउद्दीन खूनी जैसे बादशाह के साम्हने ऐसी बेतुकी बात ज़बान से निकाले कि " मैं आपसे लड़ने की ताक़त रखता हूं " ताज्जुब नहीं कि मुसलमान इतिहास लेखकों ने असली बात को छुपाकर ऐसा लिखा हो। इस हालत में तो ख्यात का यह लेख स्वीकारने योग्य है कि पहली बार सुलतान ने शिकस्त खाई, और सम्भव है कि यह लड़ाई उसी वक़्त हुई हो जब अलाउद्दीन ने सोमनाथ का मंदिर तोड़ा था, और बादशाही फौज ने शिकस्त खाई हो, तब दुबारा जालौर पर फौज भेजी गई हो, जिसमें रावल अपने बेटे वीरमदेव समेत काम आया और जालौर फतह हुआ। बादशाह की बेटी का वीरमदेव पर आशिक़ होने, और उसके मस्तक के साथ फेरे फिरकर सती होजाने का क़िस्सा विश्वास योग्य नहीं है। ख्यात और फारसी तवारीख़ों में दिये हुए रावल कान्हड़देव के मृत्यु संवत् में दो वर्ष का अन्तर है, कान्हड़देव पर जालौर के राज का ख़ातमा हुआ।

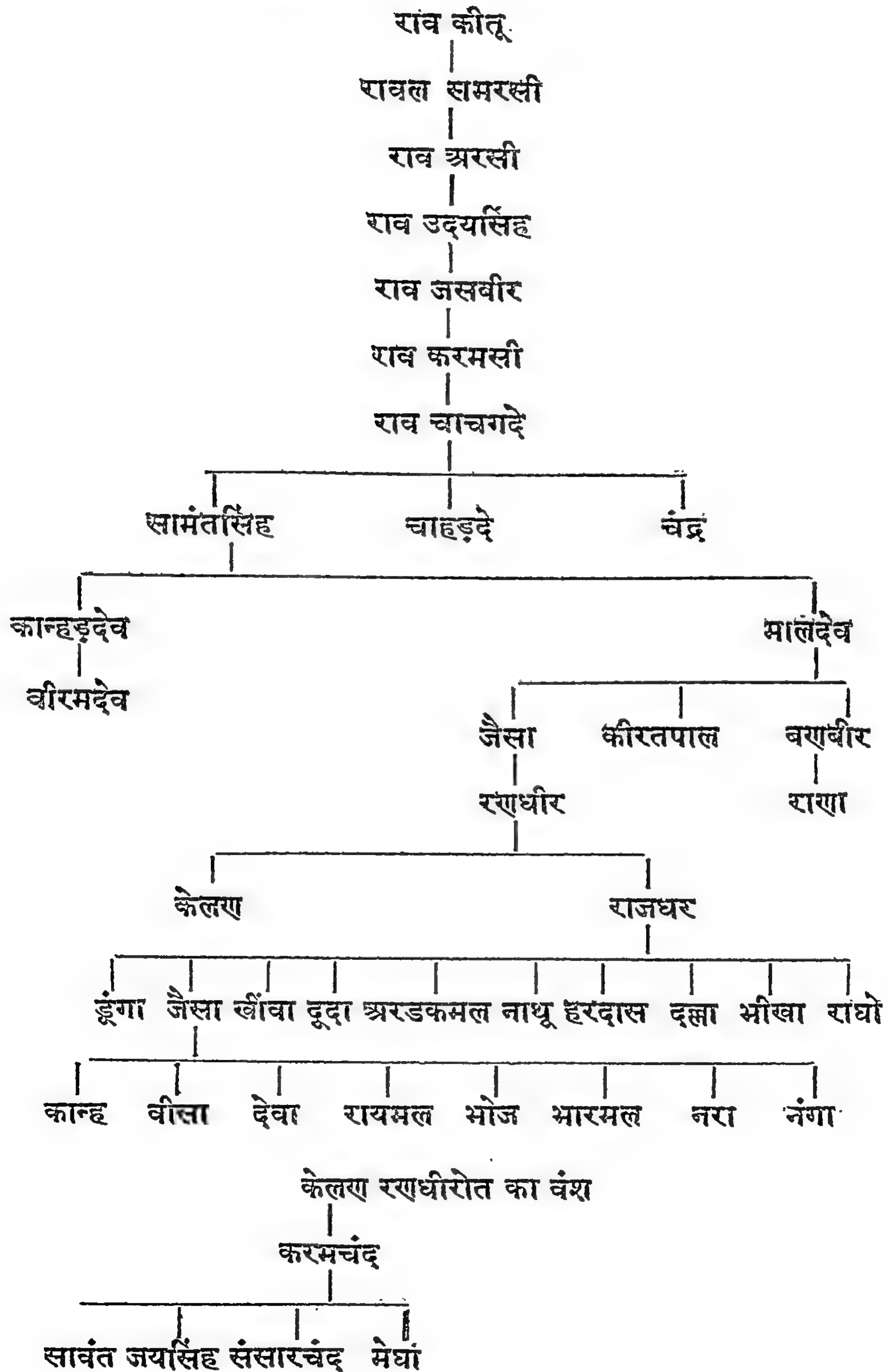
राण वणवीरोत का वंश–राण का पुत्र लोला, लोला का पुत्र सत्ता, सत्ता का पुत्र खींवा, खींवा का पुत्र रिणधीर और रिणधीर का पुत्र अखैराज।

अखैराज रिणधीरोत का वंश।



(१) जोधपुर के राव चंद्रसेन के समय में जब जोधपुर के गढ़ के घेरा लगा तब मानसिंह जोधपुर में था, उसने राव चंद्रसेन की बहुत सेवा की; फिर सं० १६२१ चैत्र महीने में राणा प्रताप के पास जारहा। सं० १६३२ में हल्दी घाटी में मानसिंह के साथ राणा प्रताप का जो युद्ध हुआ वहां मारा गया। (२) बड़ा सरदार था, मोटे राजा (उदयसिंह) ने राणा के पास से बुलाकर जसवंत को पाली का परगना सं० १६४४ में २७ गांवों से जागीर में दिया। फिर ३० गांव दिये। सं० १६६५ महाराज जसवंतसिंहजी ने पाली के पट्टे का गांव देवीखेड़ा इससे लेकर धनराज सांगलिया को देदिया और कहा कि बदले में दूसरा गांव देंगे। तब महाराज की सेवा छोड़कर जसवंत राणा के पास चला गया और वहीं मरा। (३) सं० १६६७ में राणाजी के पास से आया, तब जोधपुर की तरफ से सिनगारी गांव पट्टे में दिया गया। सं० १६७७ में पाली का पट्टा दिया और सं० १६९१ में कुंवर अमरसिंह (राठोड़) के साथ चला गया तब पाली उतारली गई। (४) सं० १६७६ में जोधपुर का गांव गुड़ा पट्टे में था, सं० १६९७ में भाद्राजण पाया जो एक वर्ष तक जागीर में रहा। (५) सं० १६६६ में राणाजी के पास से आया तब जोधपुर की तरफ से ९ गांवों सहित गांव कूडणा पट्टे में दिया गया। सं० १६७२ में सूरजमल ने पाली का पट्टा छोडा तब वह राजसिंह को दिया गया, फिर सं० १६७७ में पाली जगन्नाथ को देदी, तब राजसिंह सेवा छोड़ कर रायसिंह सीसोदिये के पास जारहा। सं० १६९२ में कछवाहों ने मारा।

जालौर के चौहानों का वंश वृक्ष ।



वीरमदेव जसवंतसिंहोत के पुत्र—हरीसिंह और सांवलदास। बाघ जसवंतसिंहोत का पुत्र भीम।

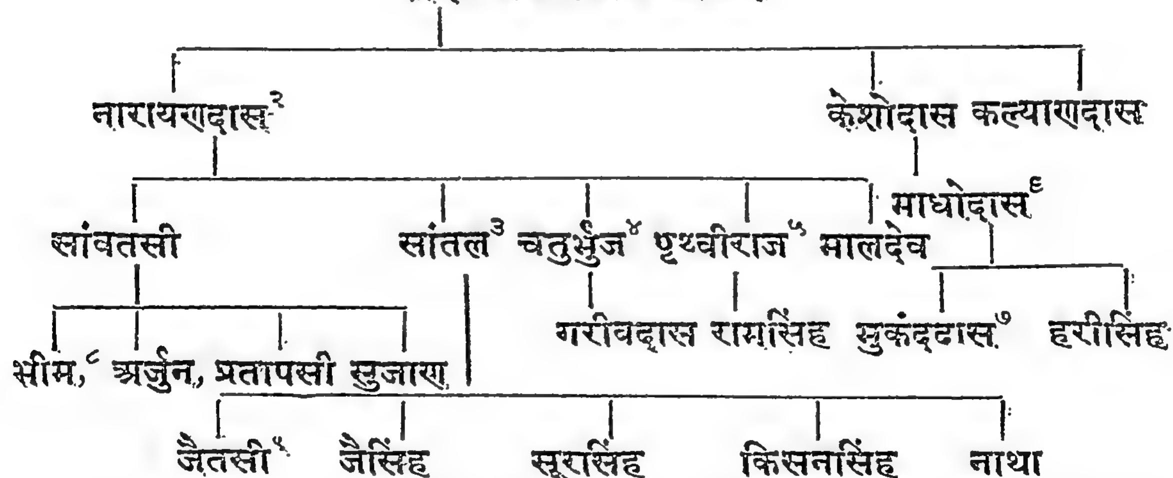
माधोसिंह जसवंतसिंहोत के पुत्र—तेजसिंह, विहारीदास और कुशलसिंह। भाखरसी जसवंतसिंहोत का पुत्र गोकुलदास। गोकुलदास के पुत्र नारखान, सबला और सत्रसाल।

जगन्नाथ जसवंतसिंहोत के पुत्र—दलपत और भोजराज। दलपत का पुत्र पृथ्वीराज।

स्यामसिंह जसवंतसिंहोत के पुत्र—सुजानसिंह, जोध और करण।

राजसिंह जसवंतसिंहोत के पुत्र—महासिंह; जगतसिंह (सोने ही पट्टे, उज्जैन की लड़ाई में घायल हुआ और धोलपुर काम आया); दुर्जनसिंह; सुजानसिंह, पूने में मौत से मरा।

भांण[1] अखैराजोत का वंश



(१) राणा उदयसिंह के पास नौकर था। जब (अकबर के सेनापति) शाहबाज़खां ने कुंभलगढ़ घेरा, तब भांण वहां काम आया। मोटे राजा का विवाह भांण की पुत्री से हुआ था। (२) पहले बादशाही चाकर था, पीछे मोटे राजा ने बुलाकर सं० १६४१ में भाद्राजण पट्टे में दिया। सं० १६४५ में जब मोटेराजा सिरोही पर चढ़ कर गये तब नारायणदास ने राव सुरताण देवड़ा को पहले से सूचना करदी थी, इसलिये उसकी जागीर छीनली गई; तब वह राणा के पास जा रहा और खोड़ जागीर में पाया। (३) सं० १६८२ में २१ गांव सहित भाद्राजण पट्टे में थी। सं० १६८३ में १० गांव से नवसरा जागीर में दिया गया।

उदयसिंह अखैराजोत का एक पुत्र 'सूरजमल'—सं० १६५७ में सगतसिंह के शामिल पाली जागीर में थी; सं० १६६५ में सगतसिंह मरा तब देवीदास के शामिल पाली का पट्टा रहा; सं० १६७१ में पट्टा छोड़कर राणा के पास जा नौकर हुआ और सं० १६७३ में पीछा आया तब ७ गांव सहित नकसरा पट्टे में दिया। पीछे सं० १६७४ में ६ गांव सहित गांव देछू जागीर में पाया। दूसरा पुत्र 'सगतसिंह' सूरजमल के साथ आधी पाली पट्टे में थी, सं० १६६२ (१६६५) में मरा। सूरजमल के दो पुत्र पहला देवीदास, जिसके आधी पाली पट्टे में थी और दूसरा पुत्र बणवीर, इसके सं० १६७७ में २ गांवों सहित भंवरी गांव पट्टे में था। सगतसिंह का पुत्र मुकंददास था, इसके सं० १६८५ में भाद्राजण और जालोर का गांव दासण पट्टे में थे।

भोजराज अखैराजोत—कूंपा महाराजोत के पास रहता था, पीछे उसी के साथ मारागया। भोजराज का पुत्र सिंह, जिसके जसवंत नामी पुत्र था। जसवंत, (बीकानेर के राजा) रायसिंह के पुत्र दलपत के पास रहता था। उसने भटनेर को बचाया लेकिन पीछे जब वहां बादशाही फौज आई तब उससे लड़कर काम आया।

जयमल अखैराजोत—बीकानेर रहता था और रिणी के पास उसके वाय गांव पट्टे में था। जयमल का एक पुत्र अचलदास और दूसरा पुत्र सारंगदे था।

सं० १६८८ में छोड़कर चलागया। (४) बड़ा सरदार था। बादशाही चाकर हुआ। बर और पखेरीगढ़ जागीर में पाया। (५) सं० १६७८ में ऐहनला पट्टे में था। पीछे सं० १६८८ में गांव कुंडण पाया। (६) बड़ा राजपूत था। सं०१६८४ में गांव १० से भरवाणी जागीर में थी। पंवार जस्सा और सूंता जयमल के लड़ाई हुई तब जयमल ने माधोदास के चाकर को मारडाला इसलिये माधोदास जागीर छोड़कर चलागया। सं० १७०० में फिर महाराजा जसवंतसिंह के पास चाकर हुआ और १६०००) रु० की रेख से गूंदक का पट्टा पाया। सं० १७१४ के वैशाख मास में उज्जैन की लड़ाई में काम आया। (७) इसके १६०००) रु० की रेख से गलणिया पट्टे में था। (८) राणाजी की सेवा में मारा गया। (९) सं० १६८६ में जोधपुर के महाराजा ने सेना सहित आसा निंबावत के साथ देश में भेजा; जहां मारा गया।

अचलदास के पुत्र—केशोदास जिसे जाटों ने मारा, प्रयागदास, बलभद्र, और अनिरुद्ध थे। अनिरुद्ध का पुत्र जूझारसिंह था। सारंगदेव का पुत्र नरहरदास।

रतनसी अखैराजोत—इसका पुत्र कान्ह था कान्ह के राव और अमरा दो बेटे थे। राव जसवंत मानसिंहोत के पास रहता था।



वागड़िया चौहान।

ये मुंधपाल की सन्तान कहलाते हैं।

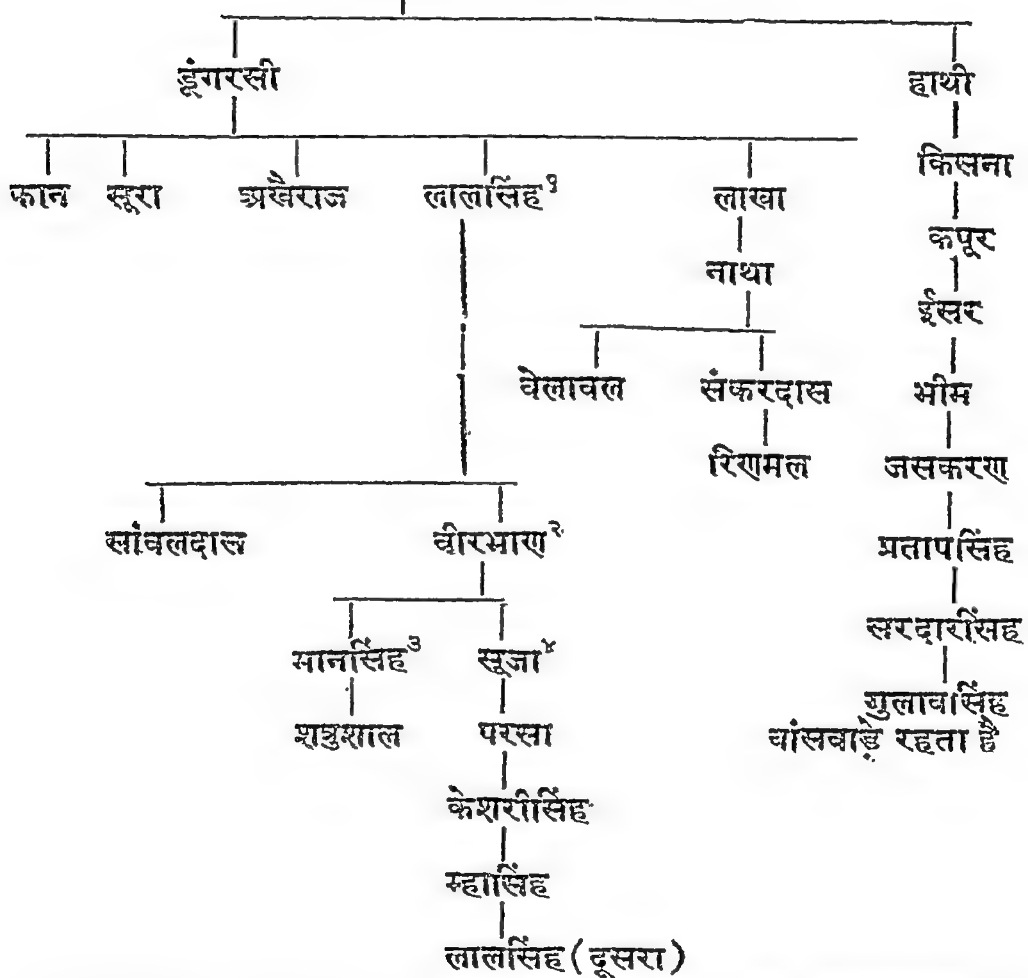
वंशावली—ब्रह्मा, वैवस्वत, रावण, धुंध, तपेसरी, तप, चाय, चौहान, तपेसरी (दूसरा), चंपराय, सोम जिसने सांभर बसाई, साहिल, अम्बराय, सिंधराव, राव लाखण, वल, सोही, जिंदराव, आसराव, सोहड़, मुंध, हापा, महिपा, पत्ता, देदा, सहराव, मुंधपाल, वीसलदेव, वरसिंहदेव, भोजा, वाला, डूंगरसी, लालसिंह, वीरभाण, सूजा, परवा, केसरीसिंह, महासिंह, लालसिंह (दूसरा)।

चौहान डूंगरसी वालावत बड़ा रजपूत हुआ, कई दिन वागड़ में रहकर पीछे राणा सांगा के पास गया। वहां बहुत आदर पाया और बड़ी जागीर मिली। राणा ने बदनोर पट्टे में दी, जहां डूंगरसी के बनवाए हुए बड़े महल तड़ाग और वापियां हैं। जब राणा सांगा की गुजरात के (सुलतान) मुदाफर (मुज़फ्फर) के साथ अहमदनगर में लड़ाई हुई[1] तब डूंगरसी ने बड़ी वीरता से युद्ध किया, पूरे घाव खाकर खेत पड़ा और उसके बेटे, भाई भतीजे शत्रु से लड़कर काम आये। डूंगरसी के पुत्र कान्ह ने बड़ा ही पराक्रम बतलाया। अहमदनगर के दरवाज़े के लोहे के कपाट बहुत गर्म होने से हाथी (उनको तोड़ने के वास्ते) मोहरा न कर सकता था, तब कान्ह ने महावत को कहा कि मैं अपना शरीर किंवाड़ों पर लगाता हूं तूं हाथी को मुझपर हूलकर किंवाड़ तुड़वा दे। इतना कह वह वीर क्षत्री बीच में जा खड़ा हुआ, हाथी ने कान्ह के शरीर पर दांत टेक कर मोहरा किया और किंवाड़ तोड़ दिये और कान्ह का शरीर भी किंवाड़ों के साथ ही पड़ा।

(१) यह लड़ाई सं० १५७७ वि० में हुई थी।

डूंगरसी के दो पुत्र कान्ह और सूरा। सूरा का भांण, भांण का करमसी, करमसी का जसवंत, जसवंत का केशोदास, केशोदास का सांवलदास, सांवल का गोपीनाथ, गोपीनाथ का सूरतसिंह जो मही (नदी) के तट पर काम आया। सूरतसिंह का पुत्र सरदारसिंह, राणा जयसिंह के समय में था।

बागड़िये चौहानों का वंश वृक्ष।



(१) चित्तोड़ पर काम आया। (२) रावल करमसी और उग्रसेन (बांसवाड़े का) लड़े तब काम आया। (३) सं० १६५१ में मानसिंह और रावल उग्रसेन में खटाखट चली, तब मानसिंह बादशाह के पास जा रहा। सं० १६५८ में राव सूरजमल ने बुरहानपुर में मानसिंह को मारा। (४) राणा जगतसिंह ने अखैराज को फौज देकर डूंगरपुर भेजा और उसने वह नगर फतह किया तब सूजा काम आया।

बावसूई के चौहान

थिराद के परगने में बावसूई गांव के चौहान भी (नाडूल के) राव लाखण के वंश के हैं। १ राव लाखण, २ बल, ३ सोही, ४ महंदराव, ५ अणहिल, ६ जिंदराव, ७ आसराव, ८ माणंकराव, ९ आल्हण, १० देदा, ११ रत्नसी, १२ धुंधल, १३ महिपा, १४ भरमा, १५ पत्ता, १६ पूंजा, १७ बीजा, १८ सिवा। सिवा के पुत्र राम और रूदा। २० सीहा रूदा का, २१ मेरा, २२ वणवीर, २३ सांगा। २४ पत्ता सांगा का बाव का स्वामी, २५ कन्ना, २६ राणा भोजराज, और राजसी दोनों भाई। भोजराज का २७ पंचाइण सूई गांव, २८ हिंगोल।



सांचोर के चौहान

सांचोर का नगर प्राचीन है जो समभूमि में बसा है। नगर के बीच ईंटों का कोट था वह तो गिर पड़ा, केवल एक दर्वाज़ा रह गया है। राज के घरों के पीछे या उस दर्वाज़े के पास थोड़ीसी दीवार बच रही थी। सं० १६८१ में जब महाराजा गजसिंह (जोधपुर) को सांचोर जागीर में मिली तब काछियों (कच्छ देश) के ५००० मनुष्य सांचोर पर चढ़ आये, उस वक्त वहां मुंहता जयमल जैसावत हाकिम था। जयमल के आदमियों ने लड़ाई कर काछी कटक को भगादिया। उसने कोट की मरम्मत करवाई। नगर का दिखाव बहुत अच्छा, और बाज़ार बड़ा तथा गुजरात के ढंग पर केलुओं से छाया हुआ है। दो मंदिर जैनमत के हैं जिनमें से एक मुंहता जयमल ने कराया है। कोट (गढ़) के भीतर एक कुंवा है परन्तु उसमें जल नहीं। नगर में जल की तंगी है। एक बावड़ी कुंए जैसी, चौहान तेजसिंह की बनवाई हुई खारे पानी की है जिस पर ३ चड़स चलते, नगर के बहुत से लोग उसी का जल काम में लाते हैं। जब राव बल्लू को सांचोर मिली तब उसने एक कुंवा दक्षिण की तरफ खुदवाया था। उसमें मीठा जल बीस पुरुष (करीब १६० फुट) नीचे निकला। उस कुंए पर छोटासा बाग लगा हुआ है। तालाब कोई नहीं, दो तीन नाडे हैं, जिनमें दो तीन महीने तक पानी रहता है। गांव के आसपास तो पानी का कष्ट ही है। राव बल्लू का कुंवा गांव से दक्षिण एक कोस पर है, वहां से वाहनों पर

लादकर जल नगर में लाते हैं। सांचोर से एक कोस उत्तर में गांव लाछड़ी में एक कुंवा है जिसका जल पालर पानी (वर्साती जल) जैसा मीठा है। वहां से भी पानी नगर में लाते हैं। सांचोर का परगना निर्जल और एक शाखिया है। नगर के पास जाल और कैर के वृक्ष वहुत, प्रजा जाट राजपूत, गांव १२६, उनमें से २८ गांवों में सूराचंद राडधरा के पास होकर लूणी नदी वहती हुई जाती है। इन गांवों में नदी की रेल आने पर तो गेहूं चने सेजे से पैदा होजाते और जो रेल न आवे तो २८ गांवों में २०० चड़स चलते हैं। वाकी सव गांवों में एक शाख वाजरे, मोठ, मूंग, तिल, कपास की होती है। परगने में भूमिये देवड़े, गड़िये और पूरेचे चौहान हैं। सांचोर में तुर्कों के घर १५० हैं, वे सकना तुर्क कहलाते और उनके एक सौ खेत गांव में माफी के हैं। उनके डूम वहलीम ऋराडिया, और पायक हैं जिनको गांव प्रति २) मिलते हैं। गांव १२६ पर रेख दाम २४८०००० । सांचोर में क़रीव १२४५ घरों की वस्ती है, जिनमें ७०० महाजन ओसवाल श्रीमाल, ८० श्रीमाली ब्राह्मण, १० राजपूत, १५० सकना, १५ दरज़ी, १२ मोची, ४० तेली, ३५ सुनार, २५ पिनारे, १५ सूत्रधार, १२ छींपे, धोवी, ४ कुंभार, ५ रंगरेज, १५ भोजक, ५ माली, २ लोहार, ५ गंधर्व, ३ ढेढ (चंडाल), और ४० घर भीलों के हैं।

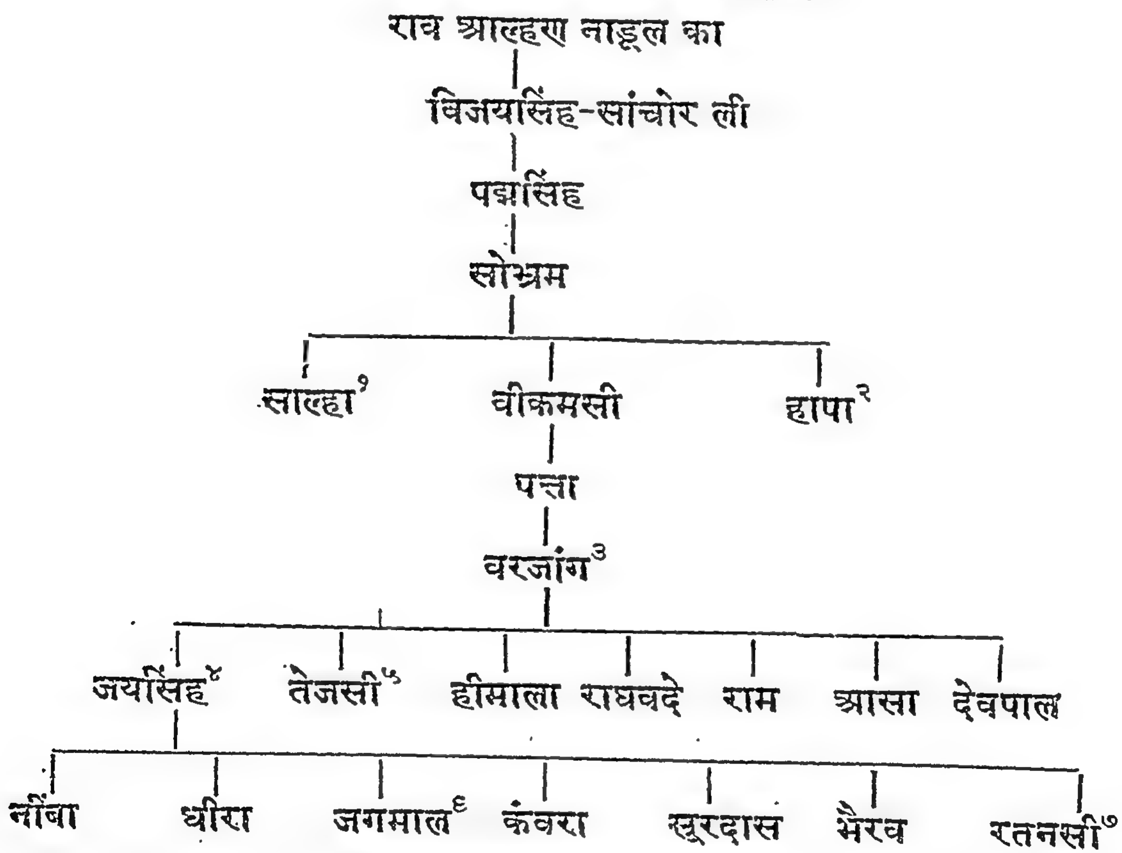
पहले सांचोर में दहिया राजपूतों का राज था। दहिया विजयराज के समय में चौहान विजयसिंह आल्हणोत सिंहवाड़े रहता था। दहिया विजयराज का भाञ्जा महिरावण वाघेला किसी कारण अपने मामा से विगड़ वैठा और जाकर चौहान विजयसिंह से मिला और कहा कि अपन सांचोर लेवें, आधा हिस्सा उसमें मेरा है। विजयसिंह ने इसको मंजूर किया। पीछे वाघेले के वुलाने पर विजयसिंह सांचोर पहुंचा। दहियों को मारकर नगर में अपनी दुहाई सं० ११४१ फागुण वदि ११ को फिरादी और साथही महिरावण वाघेले को भी मारडाला[1]। कवित्त छप्पय—

(१) सांचोर लेने वाले विजयसिंह को नाडूल के राव आल्हण का पुत्र वतला कर उसका सं० ११४१ में सांचोर पर अधिकार कर लेना लिखा सो ठीक नहीं जंचता है। राव आल्हण-देव के लेख दान पत्रादि से उसका समय सं० १२०६–२० निश्चित है, तो फिर सं० ११४१ में होने वाला विजयसिंह आल्हण का पुत्र कैसे हो सकता है; या तो सं० १२४१ की जगह ११४१ भूल से लिखा गया हो, या विजयराज, आल्हण का नहीं किन्तु अणहिल्ल का पुत्र हो जो विक्रम की ग्यारवीं शताब्दी के अन्त में नाडूल का राव था।

धरा धूण धकचाल, कीध दहिया दहवट्ट ।
सवदी सवळां साल, प्राण मेवास पहट्ट ।
आल्हण सुत विजयसी, वंस असराव प्रागवर ।
खाग त्याग खत्रवाट सरण······विजै पंजर ।
चौहान राव चोरंग अचळ, नरांनाह अणभंग नर ।
धू मेर सेस जा लग अचळ, तास राज सांचोर घर ॥

(भावार्थ—आसराव की सन्तान में से आल्हण के पुत्र चौहान राव विजयसी ने दहियों से युद्ध कर पृथ्वी ली । चिरकाल तक सांचोर में उसका राज रहे)

सांचोर के चौहानों का वंश वृक्ष ।



(१) साल्हा बड़ा राजपूत हुआ । जब बादशाह अलाउद्दीन (खिलजी) ने जालौर के गढ़ को घेरा तब साल्हा वहां काम आया । गढ़ की पहली पोल में चढ़ते ही साल्हा चौकी है । उसने पुराणों में सुना था कि युद्ध में लड़ने को जाने के लिये जितने क़दम आगे बढ़े उतने ही अश्वमेध यज्ञों का फल होता है। इस बात को मन में लाकर रावल कान्हड़देव के विद्यमान होते उसने अश्वारोही

तेजसी वरजांगोत का वंश ।

तेजसी का पुत्र पीथमराव[1] या प्रथीराव

वाघा[2]	अज्जा, सेखा और देवीदास का मामा था। सेखा मारा गया और देवीदास को राजपूतों ने निकाल दिया तब अज्जा उसके साथ गया। फिर चित्तोड़गढ़ के घेरे में देवीदास के साथ मारा गया।
सिंघा	

होकर अपनी जंघाओं को कीले पत्तियों से कसकर जकड़ लीं और बादशाही कटक में घोड़ा पटका। कान्हड़देव ऊपर महल में बैठा हुआ उसका युद्ध देखता था। खूब लड़ाई की और बड़ी वीरता के काम कर मारा गया।

कवित्त—अलावदी प्रारंभ, कीध सोनागर ऊपर।
हुओ समर तलहटी, जुड़े चौहान मछर भर।
सकतीपुर वेसाम, प्राण सुरताण संकायो।
गांजे घड़ गजरूप, चित्त आलम चमकायो।
राजियो राव कान्हड़ रिणह, कोतक रिवंरथ थंभियो।
वरमाल कंठ अपछर वरे, साल्ह विमाणै मालियो॥

(२) हापा के वंशज सूराचंद के स्वामी हैं। (वंशावली आगे दीजावेगी) (३) राव वरजांग की लड़ाई मलिक मीर के साथ हुई। सं० १४७८ में वरजांग को मारकर मुग़लों (पठानों) ने सांचोर छीन ली। वरजांग बड़ा राजपूत था। जब जेसलमेर व्याहने को गया तब वहां इतना खर्च किया कि आज तक उस चमरी पर किसी दूसरे का विवाह नहीं होता है। उस मौड़ को सब जानते हैं। (४) सांचोर का स्वामी, मेवाड़ के राणा उदयसिंह की बहन को व्याहा। (५) सांचोर का स्वामी। (६) सांचोर का स्वामी जिसको तेजसी के पुत्र पथिमराव ने मारा। (७) इसने ४६ आखड़ी (प्रतिज्ञाएं) ले रक्खी थीं।

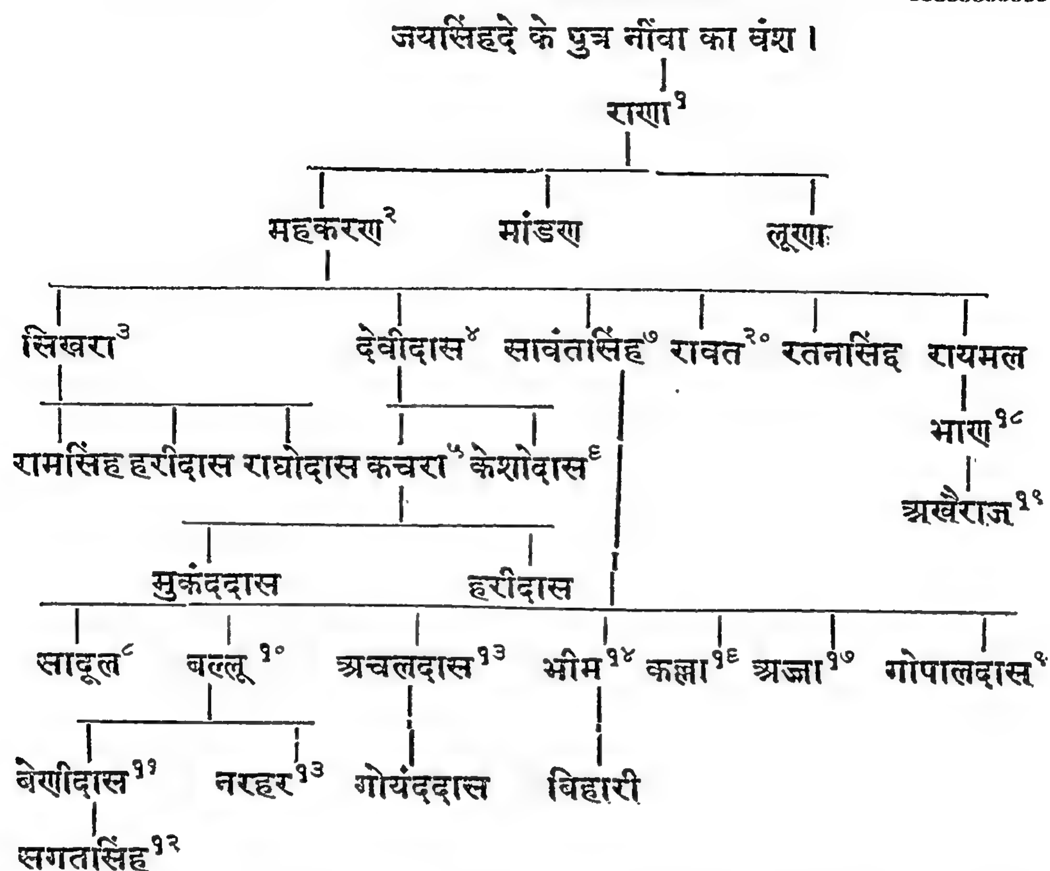
(१) सेखा सूजावत और देवीदास का नाना। राव सूजा (जोधपुर का) इसके यहां व्याहा था। इसने जगमाल जयसिंहदेवोत को मार कर सांचोर ली, जीवन पर्यन्त सांचोर इसके अधिकार में रही। (२) कोढणे का वाघावास बसाया। सांचोर का तिलक हुआ था, परन्तु जब चौहान राणा नींबावत ने देश को उजाड़ा तब यह सांचोर छोड़कर कोढणे में आया।

वाघा के पुत्र लिंबा का वंश

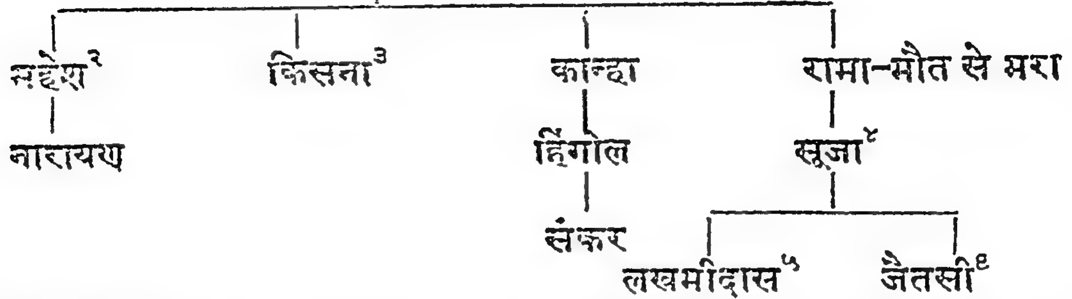
- वणवीर[3]
  - सूजा
    - रामा[4]
    - रायसिंह
      - श्रीपत
    - कान्हा
- पत्ता[6]
- सांडा
  - भीमा
    - राणा[7]
  - गोयंद[11]
    - जीवा[12]
- संकर[8]
  - रतना
    - जैता[9]
      - चांदा[10]
        - सहसा[16]
          - नारायण
            - माधो
        - वैरसल
          - देदा[5]
          - रायसिंह
        - जैतसी
  - आसा[13]
- जोधा[14]
  - वीसा[15]
  - सत्ता

---

(३) मोटे राजा का सुसरा। (४) सं० १६६३ में थोभ की खारड़ी पट्टे में थी, अच्छा राजपूत था। (५) पाटाऊ गांव पट्टे में था। (६) गोपालदास ऊहड़ का नाना। (७) रात को पानीले गांव में व्याहा, प्रभात में वाहड़मेरों ने आकर गांव के पशु घेर लिये तब उनके साथ लड़कर मारा गया। (८) गोपालदास ऊहड़ के साथ मारा गया। (९) मोहबतखां की सेवा में काम आया। (१०) मांडण की सेवा में रहता था। (११) पाटोदी में भाटियों ने मारा। (१२) मांडण ऊहड़ की नौकरी में था। (१३) मांडण की नौकरी में था। (१४) राव चंद्रसेन के पास था, गढ़ के घेरे में काम आया। (१५) गोपालदास ऊहड़ के साथ काम आया। (१६) मांडण ऊहड़ के साथ काम आया।

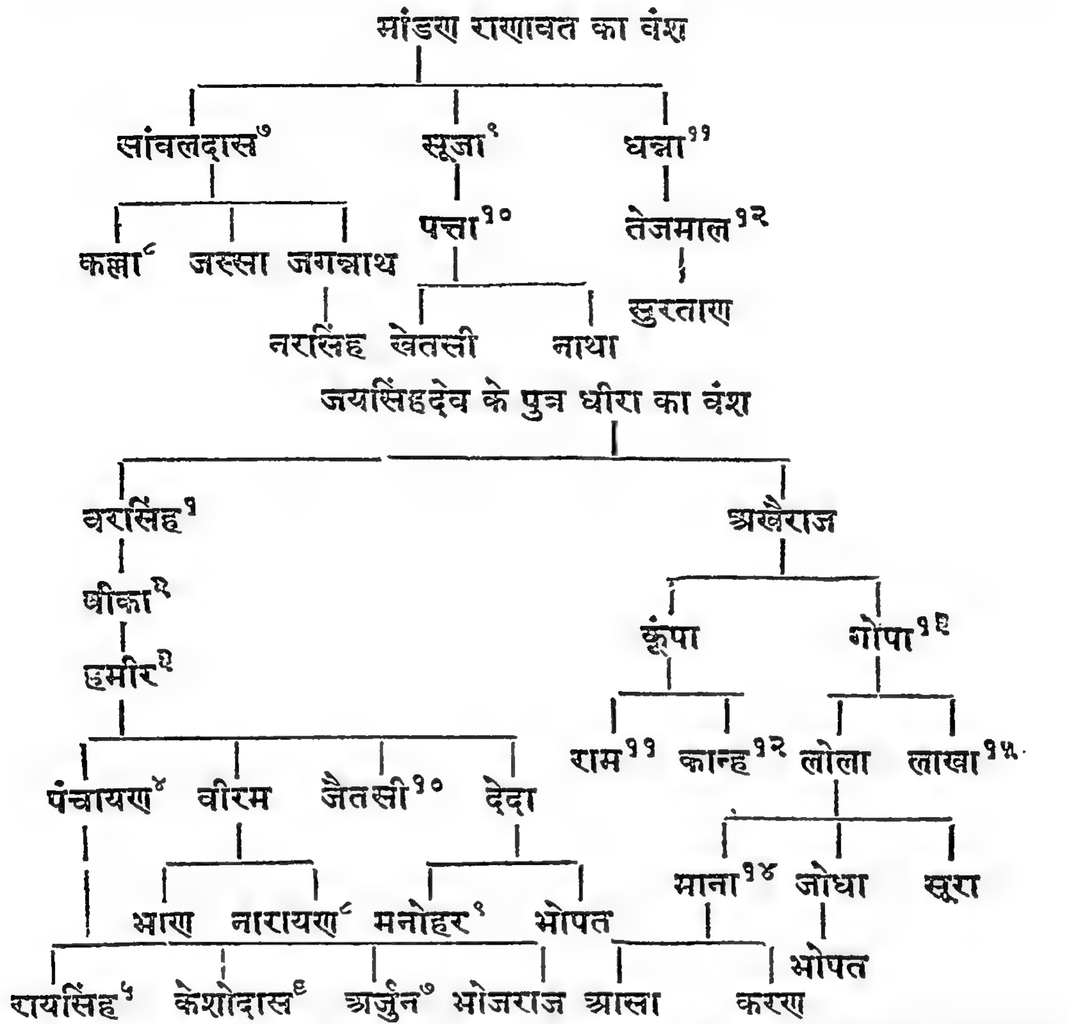


(१) राणा को (मारवाड़ के) राव मालदेव ने सिवाने का समदड़ली गांव जागीर में दिया था। (२) मोटे राजा (उदयसिंह) का सुसरा और दलपत का मामा था। मुसलमानों के साथ लड़ाई में मारा गया। (३) राजसिंह का सुसरा और मोटे राजा का चाकर था। तीन गांवों सहित खेजड़ली पट्टे में थी। (४) मोटे राजा का चाकर सं० १६४० जोधपुर का गांव चवाड़ी, सं० १६··· ओईसां का गांव तांतूवास सं० १६··· दूनाड़े गोयंद का बाड़ा, और सं० १६... में जोधपुर का दहीपुरा पट्टे में रहा। (५) तांतूवास पट्टे में था; सं० १६७४ में सोजत का हुणगांव मिला; और सं० १६७७ में मरगया। (६) सं० १६७२ में जोधपुर का दहीपुरा पट्टे में था। (७) दलपत का मामा और उन्हीं का नौकर था, बडी ठाकुराई वाला था। (८) सं० १६६... में बुरहानपुर में महाराज जसवंतसिंह ने नागोर के ६ गांव रु० ४७००) की आय के पट्टे में दिये थे। पीछे मोहबतखां के पास जा रहा और दक्षिण में लड़ाई में काम आया। (९) दौलताबाद में मोहबतखां की नौकरी में लड़कर काम आया। (१०) दलपत के पुत्र महेशदास (राठोड़) का नौकर



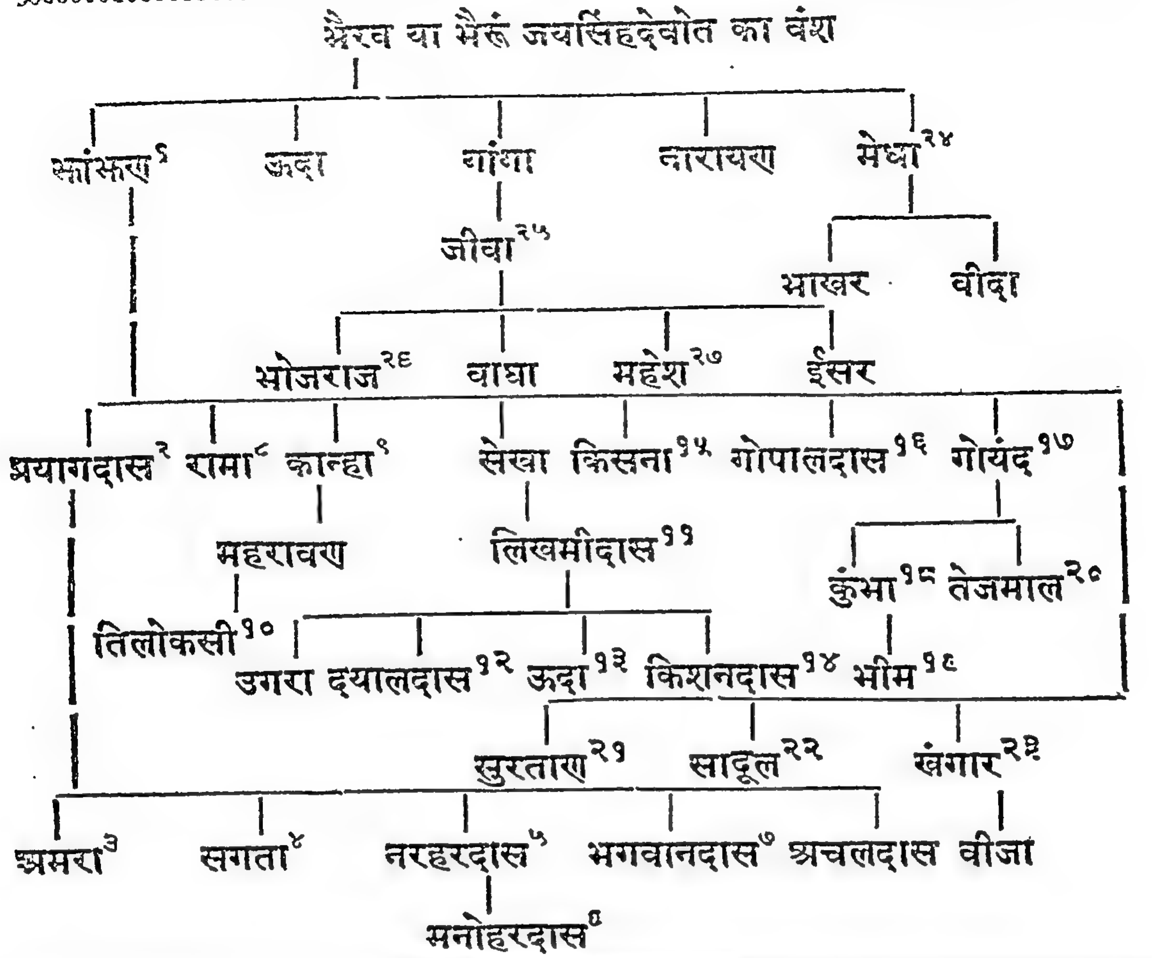
था। सं० १६८५ में महेशदास मोहबतखां के पास रहा तब बल्लू भी उसी की चाकरी में चला गया, दक्षिण में युद्ध में मारा गया। जब मोहबतखां मरा तो महेशदास और बल्लू दोनों बादशाही चाकर हुए। महेशदास को जालौर और बल्लू को सांचोर सं० १६९९ में मिला। मंसब सातसौ ज़ात ४०० सवार का था। पूरब में मरा। (११) इसका मंसब ४०० ज़ात एकसौ सवार का था, बिहानू का परगना भी मिला। (१२) इसका मंसब २५० ज़ात, ३० सवार का था। (१३) सं० १७१४ के जेठ मास में धौलपुर की लड़ाई में मारागया। (१४) मोहबतखां की नौकरी में दक्षिण में मारा गया। (१५) सं० १६७७ में जालौर का चवराट पट्टे में था। दलपत के पुत्र जूझारसिंह की सेवा में काम आया। (१६) दलपत के पुत्र जूझारसिंह की सेवा में काम आया। (१७) सं० १६७५ में पाली का गांव केरला पट्टे में था, फिर दलपत के पुत्र कनीराम के पास नौकर हुआ और उसी के साथ बुरहानपुर में काम आया। (१८) दलपत की सेवा में (राठोड़) किशनसिंह के साथ मारा गया। (१९) सं० १६४० में हीरादेसर पट्टे में था, पीछे बीसलू दिया गया।

(१) बड़ा राजपूत था। (२) जालौर काम आया। (३) उग्रसेन चंद्रसेनोत (राठोड़) के साथ रह लड़ाई में मारा गया। (४) दलपत की सेवा में लड़ाई में मारा गया। (५) भीम करणोत के पास था। (६) सबलसिंह के पास था। (७) सं० १६५२ में धन्ना के शामिल भाद्राजण का गांव वाला पट्टे में पाया, फिर सं० १६६६ में उसी (सांवल) को सुगालिया गांव मिला। पीछे भाद्राजण का राखाणा दिया था। सं० १६७१ में (राजा सूरसिंह राठोड़) की सेवा में खिरालू के परगने में काम आया। सं० १६७१ में गांव राखाणा जागीर में था। (८) सं० १६··· में सूजा और सांवल को वाला, नीलकंठ और भाद्रा-



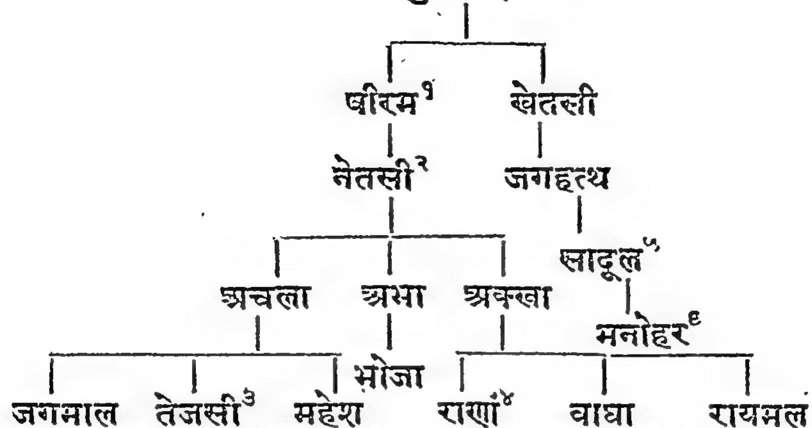
जण पट्टे में मिले थे। (१०) पत्ता के सं० १६८५ में जालौर का गांव सिराणा पट्टे में था। (११) धन्ना के सं० १६७० में सिवाने का गांव मेहली और सं० १६८३ में इंद्राणा पट्टे में था। पीछे धन्ना मर गया। (१२) धन्ना के बदले चाकरी करता था, गांव तिसरणी में मरा।

(१) सांचोर काम आया। (२) आचरणे गांव में सिंधलों ने मारा। (३) राव चंद्रसेन (मारवाड़) का खुसरा था, महेश के पुत्र हरदास ने मारा। (४) सं० १६६६ में भाद्राजण का गांव बीजली पट्टे में था, चाकरी इसका पुत्र अर्जुन करता था। (५) सं० १६··· में जोधपुर का गांव रोहेचा, सं० १६६६ में केशोदास के शामिल भाद्राजण का गांव रायमा, और सं० १६८५ में भाद्राजण का गांव सीहराणा पट्टे में था। (६) बालपुर में मरा। (७) सं० १६८६ में साहरियावे में था। (८) भाद्राजण का गांव केड़ा पट्टे में था। (९) गांव भवराणी



में रहता है। (१०) जब तुर्कों (मुसलमानों) ने जैतसी नंगावत को पकड़ा तब वहां काम आया। (११) भाखरसी दासावत की सेवा में काम आया। (१२) सिंह जैतसीहोत की सेवा में काम आया। (१३) जैतसी ऊदावत के साथ बड़ी लड़ाई में काम आया। (१४) गांव सुगालिये में सुगंधल आए वहां लड़ाई में मारा गया। (१५) ईंदे (पडिहारों) के यहां सासरे (श्वसुरालय) गया था वहां लड़ाई में मारा गया।

(१) राव मालदेव के पास नौकर था, सिवाणे का गांव मेहगड़ा पट्टे में था। (२) भरोसे वाला मनुष्य था, सं० १६४० में मोटे राजा ने लवेरे का गांव गोदरी पट्टे में दिया। (३) सं० १६···गोदरी बरक़रार। (४) सं० १६६···में सिवाने की गोपड़ी और सं० १६७२ में लवेरे का गांव रूंदिया कूवा पट्टे था, फिर छोड़ दिया। (५) सं० १६७० में जोधपुर का गांव नरावस पट्टे में था, फिर सं० १६७१ में अजमेर में गोयंददास (भाटी) के साथ काम आया। (६) नरावस बरक़रार, सं० १६८१ में महलांणा दिया था। सं० १६८२ में कुंवर अमरसिंह (राठोड़) के पास जारहा। (७) सं० १६७८ में तांतूवास पट्टे में थी। (८) राव चंद्रसेन के साथ देवराज की लड़ाई में पोकरण के



गांव में मारा गया। (९) मेहगड़े में मौत से मरा। (१०) सिवाने का गांव वाघलोप पट्टे में था। (११) लिखमीदास के सं० १६४० में हरढाणे की वासणी और सं० १६७७ में जालौर का सिराणा पट्टे में था। (१२) सं० १६८० में जालौर का एक गांव था। (१३) मेड़ते का भानावस पट्टे में। (१४) ऊदा के शामिल पाली का रूपावास सं० १६८२ में और सं० १६८३ में मेड़ते का भानावस पट्टे। (१५) राव चंद्रसेन के पुत्र उग्रसेन के साथ मारा गया। (१६) कल्याणदास रायमलोत का नौकर, उसी के साथ सिवाने में मारा गया। (१७) गांव गोदरी करमसीसर प्रयाग के शामिल पट्टे में थे। फिर कुंभा के शामिल हीरादेसर का पट्टा मिला। (१८) गुजरात में मांडवै काम आया। (१९) सं० १६७८ में भाद्राजण का कोरांणा, सं० १६८६ में जोधपुर का संभाड़ा और मेड़ते का पोलावस पट्टे में था, फिर सं० १६९१ में कुंवर अमरसिंह के साथ चला गया। (२०) हीरादेसर पट्टे। (२१) एक मास तक हीरादेसर पट्टे रहा, फिर गोदरी, और पीछे आसोप की चीनड़ी दीगई। (२२) खेचों की लड़ाई में मारा गया। (२३) किशनसिंह (राठोड़) के पास नौकर था। (२४) पृथीराज के साथ मेड़ते काम आया। (२५) समावली में मोटे राजा का चाकर था, सं० १६४० में दांतनिया और पीछे माणकलाव, पट्टे में दी। (२६) भोजराज के माणकलाव बरकरार, पीछे देवराज के भय से छोड़ कर दलपत के पास जारहा और वहीं काम आया। (२७) जालौर के गांव भूतेल भाटीव पट्टे में थे।

(१) मेड़ते काम आया। (२) सं० १६८१ में देवीदास के साथ मेड़ते की लड़ाई में काम आया। (३) सं० १६८२ में भाद्राजण का उदारा और सं० १६८५ में जालौर का तालियाणा पट्टे में था। (४) सं० १६७७ में जालौर की

हीमाला राव वरजांग का—इसका पुत्र सोभा बड़ा रजपूत हुआ, उसके आधी सांचोर रहगई थी, आधी गुजरात के बादशाह ने प्रेम मुग़ल को देदी थी। जब मुग़लों ने गढ़ में गो हत्या की तब उनके साथ युद्ध हुआ, सोभा ने प्रेम को मारा। हीमाला का दूसरा बेटा ऊदा; तीसरा देवा; चौथा सांगा था।

चौहान सोभा के दोहे—

छायल फूल विछाय वीसमतो वरजांगदे।
तिण अवास अड़ाविया गैमर गोरी राय ॥ १ ॥
इसड़ै सै अहनाण चहुवाणो चौथै चलण।
खुजड़ी आयो सोभड़ो डकडकती दीवाण ॥ २ ॥
काला काल कलास सरस पलासां सोभड़ा।
वीकमसीहां बास मांहि मसीतां मांडजे ॥ ३ ॥
हीमाळा उतहीज खुजड़ी साही सोभड़ै।
ढीलपहां रिमहां घड़ी खखल पलकी वीज ॥ ४ ॥
सोभड़ सूअर सीत दूछर धावै ज्यां दिसी।
भीत हुवा भड़ भडवड़ै रोद्रत कर गजरीत ॥ ५ ॥
चोल वदन चहुवाण मिलक अढारै मारिया।
खुजड़ी आयो सोभड़ो डखडख तो दीवाण ॥ ६ ॥
वणवीरोत वखाण हीमालावत मनहुवा।
त्रिजड़ी काढै तां तणी चलण दियै चहुवाण ॥ ७ ॥
सोभड़ कियो खुगाळ मुंहंगो एकण ताल में।
खेतल वाहण खड़हड़ै, चुड़खै चामरियाल ॥ ८ ॥
लोद्रां चीलू आंध भागी सो कोई भणै।
सोभ्रमडा अग सातमै, बावा तोरण बांध ॥ ९ ॥



खीरोहरी और सं० १६८४ में अहर, सं० १६९० में डांगरा, सं० १६७५ में जालौर का समूजा पट्टे में था। (५) सं० १६७२ में पाली का गांव भूंभादड़ा पट्टे। (६) सं० १६८१ में भूंभादड़ा और सं० १६८८ में सोजत का गांव सापा पट्टे में था।

बोड़ा चौहान

चौहानों में एक शाखा बोड़ा की है, जो राव लाखण की सन्तान हैं और जालौर सिरोही के चौहानों की भांति राव कीतू के वंश में हैं। बोड़ा भाखर का पुत्र था, जिसके वंशज बोड़े कहलाते हैं। वतन इनका जालौर के परगने में सैणे का छोटासा इलाक़ा है। पहले तो सैणा सिरोही के अधिकार में था, परन्तु जब राव सुरताण और राव कल्ला मेहाजलोत के कालंद्री गांव के पास लड़ाई हुई तब राव सुरताण ने जालौर के बिहारी मलिकखान को सहायता के एवज़ ४ परगने सिरोही में से दिये जो अबतक जालौर के ताल्लुक़ हैं, उन्हीं में का परगना सैणा जालौर से १० कोस उत्तर सिरोही की तरफ है। सिरोही से उसकी सीमा मिलती है। यह परगना दुफ़सला, और गांव सैणा छोटीसी पहाड़ी के नीचे बसा हुआ है। उसके साम्हने खुला हुआ मैदान है। ऊनालू की फसल अच्छी होती है। सैणा ताल्लुक़ गांव १२, और छोटे मोटे ३०० रहट हैं। आय रु० १००००) साल।

यहां बोड़े बहुत दिनों से बसते थे, सं० १६९९ में जब दलपत के पुत्र राव महेशदास को जालौर मिली (रतलाम राज्यका मूल पुरुष) तो च्यार वर्ष, तक महेशदास जीता रहा तब तक, तो बोड़ा कल्याणदास नारायणदासोत के भोमिये के मुवाफिक़, सैणा अधिकार में रहा। सं० १७०३ में राव महेशदास मरा और बादशाह (शाहजहां) ने उसके पुत्र राव रत्नसिंह को जालौर दी, तब रत्नसिंह सैणे आया और कल्याण को कहा कि हम आगे चलते हैं तुम जल्दी से आन पहुंचना। कल्याण थोड़े से साथियों से आया, तब रत्नसिंह ने बर्छी मार कर उसको ठिकाने लगाया और सैणे पर अपना अधिक़ार जमाया। दूसरे चौहाण भागके सिरोही इलाक़े में जारहे।

पहले भी (बोड़ों में) नवघण व बीजा बड़े बांके राजपूत हुए थे। थोड़े ही दिन पहले सं० १६८० में महाराजा गजसिंह (जोधपुर) के समय में बोड़ा नारायणदास बाघावत वीर राजपूत हुआ। सं० १६७४ में कुंवरपदे में जब गजसिंह को जालौर मिला तब नारायणदास बिहारियों से फूटकर कुंवर गजसिंह से आमिला। राजा सूरसिंह का विवाह नारायणदास की बहन के साथ हुआ था और वह बड़े उमरावों की भांति रहता था। गांवों के नाम—

ईलणा, कांदरा, भैटाल, मेड़ा, वाहरलोवास, मांहेलो (भीतर का) वास, तुंड, देवड़ा, दहीगांव, नागरा, उंडवाड़ा, करणावद।

वंशावली:—राव लाखरण, वल, सोही, महंदराव, आल्हरण, जिंदराव आसराव, आलरण, कीतू, समरसी, भाखर, वोड़ा, लक्खा, महिपालदेव, हाजा, सावंत, सिखरा, नवघरण, करमा, वजा, वाघा, नारायणदास, कल्याणदास।

और तो वोड़े कहीं सुनने में नहीं आये एक वोड़ा मानसिंह नरवदोत जालौर के गांव वापडोतरे में रहता था। वह गांव पांच सात दूसरे गांवों सहित दहियावत पट्टी में, उसके पट्टे था। अर्थात् सीहाणा, खारी, सांधाणा, देवसीवास, आलवाड़ा और आलाराण। माना के २०० भाई वंधु की जोड़ थी, सवार ४० उसके साथ चढ़ते थे। मेहवे के गांव भांडेवले में भी सोहा, ठाकरसी, सूरा आदि वोड़े चौहान रहते हैं।



कांपलिया चौहान।

चौहानों में एक शाखा कांपलिया है जो सांचोर के गांव कांपला के रहने वाले हैं। ठिकाने के नाम पर ही इनका नाम कांपालिया पड़ा है। पहले कुम्भा कांपलिया वड़ा रजपूत हुआ, उसके गांव कुम्भावतों के कहे जाते थे। कुम्भावतों में मुखिया धन्नाधारी सांचोर के पास ओखरड गांव में रहता था।

कुम्भा कांपलिया के पास एक घोड़ी वहुत अच्छी थी उस वक्त रावल माला (मल्लिनाथ) ने पश्चिम दिशा में बहुतसी धरती ली थी और पश्चिम के सब भूमिये रावल की आज्ञा मानते थे। कुम्भा भी भूमिये की भांति चाकरी करता था। रावल ने उसकी घोड़ी लेने का विचार किया। रावल का प्रधान भीमा नाम का एक नाई था उसको कहा कि यह घोड़ी किसी ढव से लेना चाहिये। भीमा बोला कि सीधी तरह से तो कुम्भा घोड़ी देने का नहीं, तब उसको वुला कर कचहरी में विठाया और ५०० आदमी सिलह सजकर उसके सन्मुख बैठगये व ५०० वंदूकची तोड़े सुलगाकर खड़े होगये। फिर रावल ने नाई को कुम्भा के पास भेज कर कहलाया कि " रावलजी तुम्हारी घोड़ी मंगवाते हैं "। यह शब्द उसके मुंह में से निकलने थे कि कुम्भा तलवार की मूठ पर हाथ डालकर उठ खड़ा हुआ और कहने लगा " मैं घोड़ी रावल को देकर पीछे अपना पलान

रावल की मा पर धरूं या तेरी मा पर!" और साथ ही तलवार खींचली, शोर हुआ। कुम्भा का मुख क्रोध के मारे लाल सुर्ख होगया और सिर के केश खड़े होगये। तब किसी ने रावल को जाकर कहा कि कुम्भा को मारते तो हो परन्तु रजपूत को सूरापन चढ़ा है वह सूरत तो उसकी एकबार देखलो। रावल बाहर आया, और कुम्भा को देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ और अभय दिया; कहा कि जैतमाल की वेटी पत्ती के लिये वर की आवश्यकता थी सो आज मिल गया। फिर कुम्भा का विवाह पत्ती के साथ कर दिया। उसके पेट से कुम्भा के दो पुत्र खेता और भोजा बड़े वीर रजपूत हुए। इसके पूर्व मल्लिनाथ के पुत्र राव जगमाल ने जैतमाल को मार डाला, और जब उसका माल असबाब बंटने लगा तो उसके ५ हिस्से किये गये, तीन तो तीनों वेटों के, एक वेटी पत्ती का, और एक भाग व एक उजाला बछेरा जुदा रक्खा गया और कहा कि इसको वह लेवे जो जैतमाल का वैर लेने को समर्थ हो। वह भाग भी पत्ती ने यह कहते हुए लिया कि "मेरे बाप का वैर मेरे वेटे खेता व भोजा लेवेंगे"। सयाने होने पर खेता भोजा ने राव जगमाल के साथ वहुत उपद्रव किये, उसके तीन भाइयों को मारडाले और ......के सात पुत्रों को मारे।



खीची चौहान

ये भी (नाडोल के) राव लाखण के वंशज हैं। पीढ़ावली—राव लाखण, बल, सोही, महंदराव, अणहिल, जिंदराव, आसराव, माणकराव। एकबार आसराव अपने पुत्र माणकराव से प्रसन्न हुआ और कहा कि तूं प्रभात से संध्या समय तक जितनी पृथ्वी में फिर आवे वह भूमि तुझको देदी जावेगी। तब माणकराव दिन निकलते ही चला और संध्या तक बराबर फिरता रहा। वह सांभर का चढ़ा, इतनी जगह गया—नागोर पट्टी के ८४ गांव, और सारी भदाण जहां इसने गढ़ बांधने का विचार किया। संध्या होते जायल की तरफ निकला, वहां गवार (बैल लादने वाली एक जाति) ठहरे हुए थे, उन्हों ने भोजन की मनुहार की; यह भी दिन भर फिरता २ भूखा होगया था, कहा कोई पका पकाया अन्न हो तो लाओ। उस वक़्त उनके खिचड़ी तय्यार थी वह कटोरे में ले आये। माणकराव ने ऊंट की सवारी पर चढ़े चढ़े ही वह चांवल

मूंग की खिचड़ी खाई और संध्या होते पिता के पास पहुंचा। पिता ने पूछा, कितनीक धरती में फिर आया? उसने सब हक़ीकत कह सुनाई। फिर पूछा कि कहीं गढ़ की ठौड़ भी निश्चय की है? कहा भदाणा के पास गढ़ बांधने का विचार किया है। पिता बोला दिन भर में कुछ खाया भी? उत्तर दिया कि गंवारों के यहां खिचड़ी खाई है। पिता ने कहा तूने खिचड़ी खाई इसलिये तेरी सन्तान खीची कहलावेगी[1] और जो धरती उसनें देखी थी वह उसको देदी, और भदाणा व जायल में गढ़ बंधवा कर दोनों जगह राजस्थान रखने की आज्ञा दी। माणकराव ने वैसा ही किया। माणकराव, अजैराव, चंद्रराव, लक्ष्मणराव, गोयंदराव, संगमराव, और गुंदलराव, पृथ्वीराज चौहान का सामन्त।

राजा पृथ्वीराज चौहान की राणी सुहवदे जोइयाणी अपने पति से रूठ कर पिता के घर आन बैठी थी, उसके पिताने खाटू (गांव) की पहाड़ी पर पुत्री के लिये एक महल बनवा दिया। वह इतना ऊंचा था कि उसमें जलता हुआ दीपक अजमेर में नज़र आता था। जोइयाणी की आशनाई गुंदलराव से हो गई। गुंदल ने अपने गांव से उस महल तक एक सुरंग (गुप्त मार्ग) खुदवाई जिसमें होकर वह जोइयाणी के महल में आया जाया करता था। एक बार पृथ्वीराज की दूसरी राणी अजयदेवी दहियाणी ने उस दीपक को देखकर अनुमान बांधा कि वहां अवश्य कोई मर्द आता जाता होवेगा और उसने यह बात पति को कही, तब अपनी चौकी के घोड़े पर सवार होकर पृथ्वीराज अचांचक सुहवदे के महल की ड्योढी पर जा पहुंचा और घोड़े से उतर पड़ा। द्वारपाल ने राणी के पास ख़बर पहुंचाई इतने में तो पृथ्वीराज भी महल में पहुंच गया। गुंदलराव तो तत्काल सुरंग के मार्ग से चलता बना परन्तु उसके पांव का जोड़ा वहां रह गया। प्रभात को जब पृथ्वीराज ने वह जोड़ा देखा तो सुहवदे से पूछा कि यह किसका है और यहां कौन मर्द आता है। थोड़ी देर तक तो वह टालमटोल का उत्तर देती रही परन्तु जब देखा कि सच कहे बिना चलेगा नहीं तो स्पष्ट कहदिया कि यहां गुंदलराव खीची आता है। यह सुनकर

---

(१) खिचड़ी खाने से खींची प्रसिद्ध होना तो भाटों की कल्पना मात्र ही मालूम देती है, सम्भव है कि या तो इनके मूल पुरुष का नाम खीचीराव हो या पहले खीची नाम के किसी गांव में बसते हों।

पृथ्वीराज पीछा अजमेर को लौट आया और दूसरे ही दिन दाहिम चामुण्डराज को फ़ौज देकर जायल की तरफ़ खीचियों पर विदा किया[1]। गुंदलराव वहां से छोड़कर मालवे की तरफ भागा। मऊ मैदाना, गागरूण, वालाभेट, सारंगपुर गूंगोर, बार, वड़ोद, खाताखेड़ी, रामगढ़, चाचरणी के बारह गढ़ों पर डोडिये राजपूतों का अधिकार था। गूंदल ने उनको मारकर वे गढ़ उनसे छीन लिये और जायल में राजस्थान किया। गोरे की सन्तान ने खीचींवाड़े पर अधिकार जा जमाया; भदाणे में राव गालण का राजथान हुआ जिसने नागोर में गीदाणी का तालाव बनवाया। दोहा—"गीदा हुता भदाणियां, कूंगे जायलवाळ"

कवित्त—खण्ड पूंगल खलभले, कोट मरवट्टां टळकै।
देरावर डिगमिगे, लसे वरिहाहा संकै।
लुद्रवो थरथरै, छेलपुर नेह संगट्टै।
वुट्टां अनै भाटियां, सास नीवट्ट नीवट्टै।
वीकमपुर वसै न बारही, धूजै धर पाटण पट्टै।
गीदो रोद्र भदाणियो धाये सोमेई धड़े।

कहते हैं कि गीदा के अधिकार से पश्चिम की ओर ८४ गढ़ थे। गीदा का पुत्र महंगराव हुआ जिसका दोहा—

आंखड़ियां रतनालियां, मूंछ अवंदा फेर।
तिण भय कांपे गज्जणो, आगी दाणी केर।

गुंदलराव की सन्तानों में खीचींवाड़े में वड़े २ वीर हुए, उनमें धारू आनलोत बड़ा दातार और बड़ा जूझार था। सांखले सीहड़ ने अपनी पंगु पुत्री को छल से आनल को व्याह दी, आना ने उसको सुहाग दिया और उसके पेट से धारू का जन्म हुआ।

---

(१) यह सुहवदे' अंतिम पृथ्वीराज (चौहान) की राणी नहीं किन्तु पृथ्वीराज दूसरे (पृथ्वी भट) की राणी थी। मेवाड़ के ज़िले जहाज़पुर के क़सबे से ७ मील अग्निकोण में धौड़ गांव के एक मंदिर के थंभे पर सं० १२२५-जेठ वदि १३ को अजमेर के राजा पृथ्वीराज (पृथ्वी भट) चौहान का एक लेख खुदा हुआ पण्डित गौरीशंकरजी हीराचंद ओझा को मिला जिसमें पृथ्वीराज की राणी का नाम सुहवदेवी लिखा है जो रूठी राणी के नाम से प्रसिद्ध है। मेवाड़ के जागीरदार बेगूं के रावत की जागीर के गांव मैनाल (महानाल) में सुहवदेवी के महल और उसी का बनवाया हुआ सुहवेश्वर का शिवालय है जो वि० सं० १२२४ में बना था।

खीची आनल दुष्काल का मारा अपनी वस्ती समेत अपने सासरे ओडवाड़े डोड राजपूतों के यहां जाता था। मार्ग में कोटे के गांव सूरसेन में जाकर उतरा। उसकी स्त्री सांखली गर्भवती थी, प्रसव काल आगया था। आना की दशा उस वक़्त अच्छी न थी, खाने के लिये पूरा खर्च भी पास नहीं था। वहीं सांखली को प्रसव वेदना हुई। डेरा डंडा तो पास कुछ था ही नहीं, निकट ही एक फूटा टूटा मंदिर था उसमें उसको जा रक्खी, जहां धारू का जन्म हुआ। उसको एक पीढ़ी (मुंजकी वणी हुई छोटी सी वैठने की चौकी) पर सुलाया। उस पीढ़ी के नीचे एक सर्प की वंबी थी जिसमें से सर्प ने निकल कर प्रथम तो उस बालक की प्रदक्षिणा की और एक मोहर पांच तोले सुवर्ण की उसके पास रख कर पीछा बिल में घुस गया। धारू की माता यह सब देखती रही, सर्प के जाने पर उसने मोहर लेली। प्रभात को आना ने अपनी स्त्री से आनकर कहा कि प्रिये! चलना पड़ेगा, साथ के लोगों के पास खाने को कुछ भी नहीं है। स्त्री बोली कि आज तो मुझसे चला नहीं जाता और वह सुवर्ण मुद्रा निकाल कर पति के हाथ में दी कि इससे काम चलाओ। आना प्रसन्न हुआ, उसने जाना कि यह अशरफी सांखली ने वक़्त बेवक़्त के वास्ते चुपके से अपने पास रक्खी होगी सो आज गुढ़ा के लोगों को लंघन होता जान कर मुझे दी है। दूसरे दिन भी वही सर्प उसी प्रकार परिक्रमा देकर एक मोहर रखगया। ऐसे पांच सात दिन तक सर्प आता और मोहर रखके चला जाता और सांखली उसे उठाकर अपने पति को देती रही। आठवें दिवस आना ने अपनी स्त्री से इसका भेद पूछा, उसने सारी बात कह सुनाई और यह भी कहा कि आज तुम भी आकर इस रचना को देखना। नियत समय पर आना आया और सर्प को निकल कर परिक्रमा करते व मोहर रखते देखा। जब वह पीछा बिलमें प्रवेश करने लगा तब आना ने उससे पूछा कि तुम कौन हो और इस बालक के साथ तेरा क्या सम्बन्ध है कि तूं इसकी रक्षा करता है? सर्प ने मानुषी भाषा में उत्तर दिया कि पहले इस प्रदेश का राजा हुआ बड़ा महाराजा हुआ था उसी का जीव इस बालक के रूप में तेरे घर अवतरा है। उस राजा के और मेरे बड़ी मित्रता थी, उसने मुझको तीस चरू अशर्फियों से भरे सौंपे थे वे इस मंदिर में मेरे बिल के पास अमुक स्थान में गड़े हैं। इतने दिन तक तो मैंने उनकी रखवाली की अब वह धन तेरे पुत्र का है सो तूं

खोद कर लेले, और तू यहीं गढ़ बांधकर रह, इधर उधर दूसरे स्थान में मत जा, यह सब प्रदेश तेरे बेटे पोतों के अधिकार में आ जावेगा। इतना कह कर सर्प तो चला गया और आना वहीं रहने लगा। उसने जाकर डोडों से वह जगह मांगी और उन्होंने भी स्वीकार कर लिया। धन निकाल कर उसने वहां गढ़ बंधवाया। जब धारू सयाना हुआ तब उस धरती के स्वामी डोड थे। वह अपने मामा के पास जाकर उसकी सेवा करने लगा। भाञ्जे को सपूत देखकर मामा ने अपने राज्य का सारा भार उसी के सिर पर रख दिया और बादशाही चाकरी में भी डोडों के एवज़ धारू ही जाने लगा। डोड दिन दिन निर्बल पड़ते गये और खीचियों का प्रताप बढ़ा। बादशाह अकबर के समय तक तो खीची बड़े प्रबल थे, अकबर ने कछवाहे राजा भगवन्तदास (भगवानदास) के कुंवर मानसिंह को खीचीवाड़े पर भेजा और खीची रायसल और मानसिंह के दर्मियान युद्ध हुआ। खीची हारे और राव पृथ्वीराज हरराजोत, रायसल का चाकर राय देवीदास सूजावत का पोता, काम आया। उसके पीछे फिर एक वार बादशाह ने राव पृथ्वीराज कल्याणमलोत बीकानेर वाले को गढ़ गागरून बख्शा था तब भी पृथ्वीराज और खीची राव में लड़ाई हुई थी परन्तु उसमें भी हार खीचियों ही की हुई। जब बादशाह जहांगीर ने खीचियों पर खफगी की और मऊ का परगना बूंदी के राव रत्नसिंह (हाडा) को इनाम में देकर हुक्म दिया कि इसे खोस लो! राव रत्न ने वहां २००० सवारों के अपने ४ थाने बिठा दिये और गांव अपने रजपूतों को बांट दिये। खीचियों ने कई वार राव से लड़ाइयां लीं। राव ने राठोड़ गोयंददास उग्रसेनोत और राठोड़ कान्ह रायमलोत को वहां रक्खे। अन्त में राव के आदमियों ने राजा शालिवाहन (खीची) को मारा, तब से दिन दिन खीची निर्बल पड़ते गये और हाडों का वहां जमाव होगया।

मऊ के परगने में १४०० गांव तिनमें से ७०० अगवाड़े के जहां भूमि समतल; और ७०० पिछवाड़े के जहां बहुत से झाड़ पहाड़ हैं। राय गोपाल मऊ मैदान का स्वामी बांका वीर राजपूत बादशाही चाकर था। खीचियों का दूसरा इलाका तो बहुत दिनों से छूट ही गया था परन्तु जब हाडों ने व बादशाही सेना ने चाचरणी लेना चाहा तो खीची राव बाघसिंह की माता, सिंघल राजपूतानी, गोपालदेवी ने शस्त्र बांधकर कई बार मुग़लों की व हाडों की सेना से युद्ध किया (अपने जीते जी चाचरणी पर शत्रु का अधिकार न होने दिया); जब वह मरी तब नवरेशीणां ने चाचरणी ली।

मोहिल चौहान।

(मोहिलों का राजधान छापर द्रोणपुर में था जो अब राठोड़ों के अधिकार में है) पहले यह छापर का परगना करके प्रसिद्ध था। पाण्डव कौरवों के समय में द्रोणाचार्य ने अपने नाम पर, छापर से दो कोस, द्रोणपुर बसाया, जिसे अब कालाडूंगर कहते हैं। उसकी तलहटी में नगर बसाया था। इस डूंगर से मिली हुई आठ तथा ९ पहाड़ियां हैं। विनायक की डूंगरी, लहर डूंगरी, भैंसासिर की डूंगरी, देवीजी की डूंगरी, कोढ़णी डूंगरी, चरला की डूंगरी, चिंमर डूंगरी, काला डूंगर। छापर परगने में गांव १४०० लगते हैं। इतने स्थान छापर, लाडणू, कर्णावटी रिणी के परली तरफ हैं। करणावटी कीरत आहेड़ोत की ठौड़, पहले पाण्डव कौरवों के समय में भारद्वाज के पुत्र द्रोणाचार्य के थी। फिर द्रोणपुर शिशुपाल वंशी डाहलिये पंवारों के रहा, उस वक्त बागड़ी राजपूतों का इलाक़ा नागोर था जहां उनका बड़ा मेवासा था। वे बड़े राहबेधी राजपूत थे। डाहलियों और बागड़ियों में परस्पर शत्रुता हुई और बागड़ियों ने उनको मारना चाहा। वे सेना सजकर चढ़ धाये, डाहलिये भी मुक़ाबले पर आये, युद्ध हुआ जिसमें डाहलियों के ६०० आदमी मारे गये और शेष ने भाग कर प्राण बचाये। इलाक़ा बागड़ियों के हाथ आया, उन्होंने उसे बसाया और अपनी जमैयत बढ़ाकर प्रबल हो गये। सं० ६३१ (वि०) तक द्रोणपुर उनके अधिकार में रहा।

पूर्व दक्षिण के बीच श्रीमोर नामी परगना है जहां सजन चौहान राज करता था, राणा सजन के ज्येष्ठ पुत्र का नाम मोहिल था। पिता पुत्र में परस्पर प्रेम न होने से मोहिल ने विचार किया कि कोई नई भूमि लेनी चाहिये। वह एक वीर प्रकृति का राजपूत था। अपने विश्वासपात्र दो पुरुषों को यह समझाकर विदा किये कि अमुक ओर जाकर कोई प्रदेश देख आओ, यदि कोई स्थल अपने हाथ लगे ऐसा निगाह में चढ़ जावे तो सूचना देना। दोनों राजपूत इसी खोज में फिरते फिरते छापर द्रोणपुर आये, वह जगह उनके मन भाई और उसके लेने में भी विशेष कठिनाई उनकी दृष्टि में न आई, क्योंकि वहां गढ़ में मनुष्य थोड़े ही थे। पीछे आकर उन्होंने मोहिल से सब हक़ीकत कही। बागड़ियों के पांच सहस्र मनुष्यों की जोड़ थी मोहिल ने भी सोलह

सतरह हज़ार की भीड़भाड़ इकट्ठी करली, परन्तु पास द्रव्य नहीं जिसका उसे बड़ा शोच पड़ा। राणा सजन के दरबार में सन्तन बोहरा नामका एक धनाढ्य पुरुष था, उसको बुलाया और कहा कि इस समय तुम हमारी सहायता करो। हमने एक स्थान लेना विचारा है, उसके लिये कटक तो इकठ्ठा किया, परन्तु उन्हें खिलाने को पास पैसा नहीं है, यदि तुम उधार दो तो काम बन जावे। सन्तन ने ढाढस बंधाकर उत्तर दिया कि जितनी आवश्यकता होगी उतना द्रव्य मैं दूंगा, तुम तो तैयारी करके चढ़ो। ख़त लिखवाकर ख़र्च उसने देदिया, मोहिल उसको साथ लेकर द्रोणपुर आया, बागड़ियों से लड़ाई की, उभयपक्ष के एक हज़ार योद्धा खेत पड़े, बागड़ियों के सरदार बहुत मारे जाने से उनके पग छूट गये, पीठ दिखाई और धरती मोहिल के हाथ आई। राणा पदवी धारण कर वह छापर में पाट बैठा, गांव १४०० बसाये और बड़ी ठाकुराई का मालिक हुआ। बोहरे सन्तन को छापर से ७ कोस लाडणू परगने में गांव कसूंभी दूसरे पांच गांवों सहित जागीर में दिया, जहां बोहरे ने ठाकुरजी का एक शिखर बन्द मंदिर बंधवाया और बाव खुदवाई जो अब तक सन्तन बाव कहलाती है। बागड़ियों से मोहिलों ने धरती ली। मोहिल और देवराम बीदावत के परस्पर लड़ाई हुई जिसकी साक्षी के छ्यक्षरी छन्द चारण चांपा सेमोरके कहे हुए हैं। मोहिल के वंशज मोहिल चौहान प्रसिद्ध हुए।

चौहान और मोहिलों के बीच की पीढ़ियां—चौहान या चाह (मान)। इसके कई पुत्रों में से एक राणा नाम का पुत्र हुआ जिसे गंग भी कहते थे। राणा का पुत्र इन्द्रवीर। इन्द्रवीर का राणा अर्जुन। अर्जुन का राणा सुर्जन या सजन, और सजन का पुत्र राणा मोहिल। फिर हरदत्त, वीरसिंह, बालहर, आसल, आहड़, रणसिंह, साहणपाल, लोहट, बोवा, बेग, माणकराव जिसके सामन्तसिंह और सांगा रावल लखणसेन का दोहिता, अजीत सामन्तसिंहोत, (क्रम वार राणा हुए)। माणकराव के पीछे सामन्तसिंह राणा हुआ था। राठोड़ रामदेव के कहे मोहिल राणा के छ्यक्षरी छन्द हैं जिन में सारा हाल है।

बागड़ियां भोगवी बसाई, जमी पर उवही कलना आई।
बोया बळै मोहिलै बरवा, धर रस चूंप इधक मन धरवा॥
धजवड़ पाण लिया खत्र धोड़े, रेहिलिया मोहिल राठोड़े।
मेवासी राव जोधै मलिया, रामज भोज मिरी सिर दलिया॥

वहै अजीत जिस्या वैराई, वसुधा राव जोधै वसाई।
रूके वछो सिंघारो राणो, थापै जोधो छापर थाणो॥
वीदो बांको दुरग वसायो, जेतहथो राव जोधे आयो।
सिरे फेर वांस सत्रां सिर, गढ़ वीदो तपियो द्रोणगिर॥
केवी वीदे धरोधर कीधा। लियाः देसआस दंड लीधा।

दोहा—चारण चांपै सोमौर के कहे हुए:—

सेलहथा देव डाण सह, गोरांहां गीलांह।
वाघोड़ा वंगाह वरण, एकै गोत इतांह॥
सोनगरा हाडा सकल, राखसिया निरवाण।
चाहिल मोहिल खीचिया, एता सौह चौहान॥
चाह हुवो चौहानरै, प्रथमी गढ़ जस पूर।
चक्रवत उदयो चाहरै, समवड मघवन सूर॥
मुहि पड भीच्च प्रवाड मल, भूवल आपण भाव।
सिंघ हुवो वणसूररै रूपक वंस इंद्रराव॥
पात वड़ा सारी प्रथी, जपै सदा जस जीह।
रढ रावण इंद्ररावरै, उदियो अजाना वीह॥
पूर वली पण पालवा, सुरताणां गहवंत।
अजब तणो वंस ओपियो, सजन हुवो सामंत॥
सुबस किया खेड़ा सकल, चक्रवत चवदह चाल।
तपियो (मोहिल) महपती, सजनतणो सींगाल॥
रेणा कीधी आपरी, सह अवखाले सत्र।
मोहिल तण उदियो मछर, दीपक वंस हरदत्त॥
रण वड़ मच्छल राखवां, आपण पाण अबीह।
दल नायक हरदत्तरै, सोहे वंस वरसीह॥
कुल दीपक चढ़ती कला, सुत वरसीह सुचाव।
हाथालो जुग पुड़ हुवां, राणो वालहराव॥
राज वंस रारेहलो, चूको जाव सुचल्ल।
डाहल रो टीको वडम, ले दीयो आसल्ल॥
अतुलित वल रावण अवड़, भुजा निवाहण भार।

आसलरै उदियो अभंग, आहड़ वंस उदार ॥
सह मेवासी संकिया, भूपत खाये भीह।
आहड तण तपियो इला, सादूलो रिणसीह ॥
सुरहे चवदे चालसे, दीने कलप दुबाह।
साहणमल रिणसीहरो, पतगरियो पतसाह ॥
बलहट दव वड (मंडण), हुवा मुकत्ता हट्ट।
पाट जु साहणपाल रै, लाज भुजे लोहट्ट ॥
थरकै खल दूरैथका, अदल वरत्तै आंण।
लोहट पाट विराजियो, राजन बोबो राण ॥
सिद्धां गृह साधक हवे, जग मालम खग जेत।
बैसे गादी बोबउत, बेगो वंस वनेत ॥
छापर धणी छत्रपति, सामन्त बेग सुजाव
धर खांगा बल धूपटे, राणो माणकराव ॥
राव चोइसां सोहियां, नरां चढ़ावै नीर।
राणा माणकरावरै, सांगो पाट सधीर ॥
सोहे चवदे चाल से, लेखीजे भुज लाज।
सांगारी सुगह......, राण तपै बछराज ॥
साह सिकंदर संकियो, देखि सुणी सिरदोड़।
रूप गादी बछराजरी, मेघो वंस सुमोड़ ॥
मोहिल दाता मोहिरी, जस गाहक गुण जाण।
सकवी पालक चौर खल, मेघावत महाराण ॥
मोहिल दीधा मांगणा, हित दाखै बरदास।
वैरावत कुल बांचजे, दीपक जालवदास ॥
परवड़ियो या जग प्रथी, कलहंस वारे काम।
जाल पेर हद जो धरे, बेणो वंस पर थाम ॥
सींगांलो कुल में सदा, जुधवे लाख गजेत।
चाल न चूकै रामचंद, बेणावत बानेत ॥

अजीतसिंह सामंतसिंहोत वडा वीर क्षत्रिय हुआ, राव जोधा ने उस को अपनी कन्या राजबाई ब्याही थी। अजीत अपने सुसराल मंडोवर गया हुआ

था, इन दिनों में राव जोधा बड़ा ज़बर्दस्त था और मोहिल उसके पड़े लगे थे, जिनके पास धरती बहुत थी। राव ने मोहिलों से भूमि लेने का विचार किया परन्तु प्रबल अजीतसिंह के रहते वह प्रदेश हाथ नहीं आ सकता था। तब राव ने (अपने जामाता) अजीत को मार डालने का मंसूबा बांधा,। राव की राणी भटियाणी अजीत की सास को अपने पति के प्रयत्न का पता लग गया, उसने अजीत के खवास प्रधानों को गुप्त रीति से कहलाया कि रावजी तुम्हारे साथ चूक करेंगे और अब जो तुम यहां रहे तो दुःख पाओगे। प्रधानों ने शोचा कि अजीत भागना तो जानता ही नहीं यदि यह भेद उस पर खोल दिया जावे तो वह कदापि यहां से न टलेगा, अतएव किसी प्रकार छल करके उसको यहां से ले चलना चाहिये। सबने मिलकर कहा कि छापर से आदमी आये वे कहते हैं कि यादवों की सेना राणा वछराज सांगावत पर चढ़ आई है और उसे घेर रक्खा है, उसने कहलाया है कि मेरे मरने के पूर्व यदि तुम मेरी सहायता को पहुंच सको तो शीघ्र आना। यह सुनते ही अजीत नक्कारा बजवा कर सवार हुआ। राव जोधा ने नक्कारे का शब्द सुना और पूछा कि यह कहां बजा है। किसी ने उत्तर दिया कि अजीतसिंह सवार होकर गया है। जोधा ने जान लिया कि उस पर चूक का भेद खुला, और जो वह जीता बचकर गया तो पीछे दुःख देवेगा। तुरन्त राव ने उसका पीछा किया, द्रोणपुर से कोस ३ और छापर से कोस ५ पर उसे जा लिया। अजीत ने अपने आदमियों से पूछा कि यह अपने पीछे किसका साथ आता है? तब उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि राव जोधा ने तुम पर चूक करने का इरादा किया था, उसकी ख़बर राणीजी को होगई और उन्होंने हमें कहलाया कि जमाई को लेकर भागो, तब हमने तुमसे बात बनाकर कही और वहां से ले आये, अब रावजी ने पीछा किया है। यह बात सुनते ही अजीत बहुत विगड़ा, कहा रे! तुमने मेरी वीरता में बट्टा लगा दिया। फिर वह अपने साथियों समेत खड़ा रह गया, रावजी ने भी घोड़े चढ़ाये, दोनों अनियां मिलीं, और लगा लोहा बजने। खूब युद्ध हुआ और अजीत अपने ४५ राजपूतों सहित खेत पड़ा, उसकी स्त्री उसके साथ सती हुई। यह लड़ाई गांव गणोड़े में हुई थी।

राठोड़ों और मोहिलों में बड़ा वैर बंध गया। इस घटना के एक वर्ष पीछे राव जोधा ने अपने भाई बेटों को इकट्ठे कर मोहिलों पर चढ़ाई की, राणा बछराज

सांगावत १६५ साथियों समेत मारा गया, राव जोधा की जीत हुई और मोहिलों ने खेत छोड़ा। बोबाराव का पुत्र मेघा वहां से निकल गया, और छापर के इलाक़े में राव जोधा का अमल हुआ, परन्तु मेघा ज़ोरावर था, उसने देश बसने न दिया और राठोड़ों पर रात को छापे मारने लगा। राव जोधा ने जान लिया कि मेघा जबतक जीवित है तबतक वसुधा बसने की नहीं; दो मास राव वहां रह कर पीछा मंडोर चला आया और उसके पीठ फेरते ही मेघा छापर द्रोणपुर में आ जमा। वह बड़ा तलवार का धनी, राहबेधी और ज़बर्दस्त आदमी था, राव ने कई उपाय उसको मारने के किये परन्तु कुछ क़ाबू न चला। थोड़े वर्ष पीछे मेघा का शरीर छूट गया तब उसके भाई बन्धु ग्रास के वास्ते परस्पर लड़ने लगे और देश के १६ भागों में विभक्त होजाने से उसका बल जाता रहा। राणा मेघा के पाट राणा वैरसल बैठा। वह एक निर्दलसा ठाकुर था और भाई बन्धु सबल। राणा वैरसल चित्तोड़ के राणा कुम्भा का दोहिता और उसका छोटा भाई नरबद रावत कांधल (राठोड़) रिणमलोत का नाती था। अब मोहिलों के भाइयों भाइयों में सदा परस्पर लड़ाइयां होने लगीं, जिनमें बहुतसे कट मरे, उस वक़्त राव जोधा ने देखा कि अब ये निर्बल होगये हैं और यह अवसर अच्छा है, तब फिर कटक लेकर आया। राणा वैरसल व नरबद अपनी अपनी बस्ती लेकर बिना युद्ध किये हीं चल निकले, कितनेक दिन तो फतहपुर, झुंजणूं और भटनेर में रहे और पीछे मेवाड़ में राणा कुम्भा के पास चले गये। एक अर्से तक तो वहां रहे और फिर विचारा कि अब हमें यह तो आशा नहीं कि हम अपने बल से अपनी भूमि पीछी लेसकें, इसलिये किसी सबल की शरण लेना चाहिये, तब नरबद मेघावत और राठोड़ बाघा कांधलोत दोनूं मामा भाणेजे सलाह करके देहली के लोदी बादशाह की हजूर में जाकर पुकारे; बादशाह ने उनको ढाढस बंधाई, इन्होंने भी दस ग्यारह मास अच्छी सेवा बजाकर बादशाह को खुश कर लिया। लोदी शाह ने सारंगख़ां पठान को पांच हज़ार सवार देकर इनकी कुमक पर भेजा। सारंगख़ां को साथ लिये नरबद व बाघा झुंजणूं के पास पहुंचे, वहां राणा वैरसल भी इनसे आन मिला। छः हजार सेना से राव जोधा ने भी संमुख मोर्चे आ जमाये, दोनों तरफ जंग की तय्यारियां होने लगीं। उस वक़्त राव ने बाघा राठोड़ को गुप्त रीति से अपने पास बुलाया और कहा "शाबाश भतीजे! मोहिलों के वास्ते तूं अपने भाइयों पर तलवार उठाकर भोजाइयों और स्त्रियों को क़ैद करावेगा"।

तब तो वाघा के मन में विचार बंधा कि मोहिलों के वास्ते भाइयों को मारना उचित नहीं है और राव को कहा कि "मैं आपके शामिल हूं, वही काम करूंगा जिसमें आपको लाभ हो, और चिता दिया कि मोहिलों के घोड़े अति दुर्बल हैं इसलिये मैं उनको पैदल लड़ाई करने का मंत्र पढ़ाऊंगा। पठान सवार होकर लड़ना स्वीकारेंगे, तब पैदल मोहिलों की अनी बांई तरफ और पठान दाहिनी तरफ रहेंगे। आप पहले मोहिलों पर ही घोड़े उठाना तो वे भाग निकलेंगे फिर तुर्कों पर हाथ साफ करना"। ऐसी सलाह करके वाघा पीछा फिरा, मोहिलों से मिल कर लड़ाई का ठाट जमाया और लोहा बजने लगा। राठोड़ उन पर टूट पड़े, वे पैदल थे, उनका हमला न संभाल सके और निकल भागे। पीछे सारंगखां से ठनी, ५५५ पठान खेत पड़े, सारंग मारा गया और कई घायल हुए, खेत जोधा के हाथ रहा। द्रोणपुर में रावजी का जमाव होगया, वैरसल पीछा मेवाड़ को गया, और नरबद फतहपुर के पास पड़ा रहा। राव जोधा ने अपने कुंवर जोगीदास को द्रोणपुर में रक्खा और आप मंडोर को लौट गया। जोगीदास भोला भाला आदमी था उससे वह इलाक़ा न सम्भला, मोहिल पीछा दखल करने लग गये, जगह जगह से प्रजा की पुकार आने लगी, तब जोगीदास की ठकुराणी झाली ने अपने श्वसुर को कहलाया कि "आपके पुत्र योग्य नहीं हैं, कठिनता से प्राप्त की हुई पृथ्वी पीछी जाती है, सो आप इसका उचित प्रबन्ध क़ीजिये" तब राव जोधा ने राणी सांखली नवरंगदे के पुत्र बीदा को, जो कुंवर बीका का छोटा भाई था, द्रोणपुर दिया और जोगीदास को पीछा बुला लिया। बिदा होते वक़्त बीदा को कहा कि "बेटा देखें कैसा उत्तम प्रबंध करता है।" पिता के चरण छूकर बीदा द्रोणपुर पहुंचा, अच्छा अमल जमाया।

मोहिलों में परस्पर फूट चल रही थी, सो उनको पट्टे दे देकर बीदा ने अपनी चाकरी में ले लिये। लिंगट जगराम के पुत्र और जवणसी के पौत्र ने बीदा के पास अपनी कन्या के सम्बंध के नारियल भेजे और बेटी व्याह दी। वह धनाढ्य आदमी था, एकसौ घोड़े, २०० ऊंट और एक लाख रुपये का माल बीदा को दहेज में दिया। मोहिलाणी पर पति की पूरी कृपा होने से जवणसी ने कितनेक मोहिलों को, जिनके साथ उसकी अनबन थी, देश से निकलवा दिये सं० ६३१ में वागड़ियों से मोहिलों ने धरती ली थी, नौसौ बरस तक छापर द्रोणपुर का राज मोहिलों के अधिकार में रहा और सं० १५३२ में उनसे

राठोड़ों ने वह प्रदेश लिया। केवल च्यार या पांच महीने ही उनका आधिपत्य वहां रहा होगा कि कुंवर मेघा बछराजोत ने अपनी भूमि पीछी ले ली। मेघा के मरने पर राणा बैरसल नरबद से फिर राव जोधा ने छापर द्रोणपुर छीन लिया और अपने पुत्र बीदा को वहां का राज दिया। उसकी सन्तान बीदावतों का अब तक उस पर अधिकार है।



क़ायमखानी।

ये दरैरे के निवासी चौहान थे। हंसार का फौजदार सैय्यद नासिर उन पर चढ़ आया, दरैरा लूटा, वहां की प्रजा भागी और केवल दो बालक, एक चौहान और दूसरा जाट, गांव में रह गये। फौजदार ने उन दोनों को अपने महावत के सुपुर्द किये और हिसार आकर उन्हें अपनी बीबी को दे दिये। वह उनको बेटों की तरह पालने लगी। जब वे दस बारह वर्ष के हुए तब हांसी के शेख के पास रख दिये। सैय्यद नासिर मरगया, तब उसके लड़के बादशाह बहलोल लोदी की हजूर में भेजे गये। बादशाह की निगाह में सैय्यद नासिर के लड़के वैसे योग्य न ठहरे जैसे चौहान और जाट के लड़के थे। चौहान का नाम बादशाह ने क़ायमखां रक्खा और उसे सैय्यद नासिर का मंसब बख़्शा। दूसरे (जाट) का नाम जैनू देकर उसे भी कुछ जागीर दी। जैनू के वंश के थोड़े से जैनोत (जैनंदोत) झुंजणूं फतहपुर में हैं। क़ायमखां हिसार का फौजदार हुआ, तब उसने अपने लिये कोई ठिकाना बांधना विचारा। झुंजणूं का स्थान उसके चित्त पर चढ़ा और वहां के चौधरी को बुलाकर कहा कि यदि तुम्हारी इजाज़त हो तो हम यहां अपने रहने को एक मकान बनवालें। चौधरी ने कहा "बहुत अच्छी बात है, यहां आबादी करो, परन्तु इस स्थान के साथ मेरा भी कुछ नाम रहना चाहिये"। चौधरी का नाम झूंझा था, इसी से क़स्बे का नाम झुंजणूं दिया। झुंजणूं की भूमि ही में फतहपुर बसाया। उसी क़ायमखां के वंश के क़ायमखानी कहलाये। जब अकबर बादशाह ने मांडण कूंपावत को झुंजणूं बख़्शी तो फतहपुर भी उसी के साथ गया जो गोपाल सूजावत कछवाहे की जागीर में था। वहां क़ायमखानी भूमिये के तौर रहते और ठेका देते थे। पीछे

जहांगीर बादशाह के चाकर हुए, और पीछे क़ासमखां और अलमखां झूंझणूं वाले के चाकर रहे। दोहा—

पहली तो हिन्दू हुता, पाछे हुवा तुरक्क, ता पीछे गोले भये, तातें वडपण तुक्क।
भाये काम आवै नहीं, क्यामखानी गन्दे, वन्दी आद जुगाद के, सैदनासर हन्दे॥

बात पताई रावल साकायत की—वेगड़ा महमद गुजरात का बादशाह पताई रावल पर चढ़ आया[1]। बारह वर्ष तक पावागढ़ का घेरा रहा, फिर रावल के साले सइया वांकलिया ने बादशाह से साज़िश करली। सइया पर रावल का वड़ा भरोसा था और गढ़ की कुञ्जियां भी उसी के हाथ थी। उसने महमद से कहा कि जो मुझ को सब के ऊपर करदो तो गढ़ की कुञ्जी देता हूं। बादशाह ने (उसकी बात को स्वीकार) वचन दिया तब उसने कुञ्जियां देदीं। पताई रावल को खबर हुई कि गढ़ भिलगया है तब उसने अपनी राणियों और ज़नाने की दूसरी स्त्रियों को कहा कि जोहर करो। राणियां बोलीं 'हम भी राजपूतानियां हैं, गढ़ के नीचे लकड़ियां जला कर धधकती हुई ज्वाला तैयार करो, हम गढ़ पर चढ़ जावेंगी और ज्यों ज्यों तुम काम आते जाओगे त्यों त्यों हम भी आग में कूद कूद कर भस्म होती जावेंगी'। गढ़ के जाते ही राजपूत काम आने लगे, उस वक़्त सइया वांकलिया बादशाह को दिखलाने लगा कि यह अमुक राजपूत खेत पड़ा और उसकी स्त्री आग में कूदी। यह देख कर बादशाह कहने लगा "शाबाश इन राजपूत और राजपूतानियों को"। जब सब राजपूत जूझ जूझ कर काम आचुके और राजपूतानियां आग में ऊपर से कूद कूद कर जल मरीं, तब सइये वांकलिये को शाबासी देकर बादशाह गढ़ में आया और कहा

(१) जब हमीरदेव चौहान को मारकर सुलतान अलाउद्दीन ख़िल्जी ने रणथम्भोर लिया तो हमीर का पुत्र रामदेव गुजरात की ओर गया और पावागढ़ के पास का प्रदेश जीत चांपानेर में राज जमाया। रामदेव के पीछे चांगदेव, चाचिगदेव, सोमदेव, पाल्हणसिंह, जैतकरण, कुंपूरावल, वीरधवल, शिवराज, राघोदेव, त्र्यंबकभूप, गंगराजेश्वर, और राजाधिराज जयसिंहदेव क्रमवार चांपानेर की गद्दी पर बैठे। जयसिंहदेव पाताई रावल के नाम से प्रसिद्ध था। सं० १५३६ में गुजरात के सुलतान महमूद बेगड़ा ने चांपानेर लिया और डूंगरसिंह प्रधान के सहित राजा जयसिंहदेव क़ैद होकर क़त्ल किया गया। जयसिंहदेव का बेटा रायसिंह पहले ही मरगया था, उसके दो बेटे थे पृथ्वीराज और डूंगरसिंह। पृथ्वीराज ने छोटे उदयपुर में और डूंगरसिंह ने वाड़िये में अपना राज जमाया। नैणसी ने अपनी ख्यात में "क़िला

कि धन दौलत बतला दे ! उसने बताया। फिर जो जो राजपूत काम आये थे उनके मस्तक काट कर इकट्ठे किये और सइये का भी सिर उड़ा कर उन सब

फतह हुआ तिणरी वात" इस मद में तो ऐसे लिखा है कि सं० १५६२ श्रावण शुदि ११ को हुमायूं बादशाह चांपानेर आया, राव प्रतापसी चौहान जोहर कर काम आया।

इस ख्यात में चौहानों के मूल राजस्थान सांभर अजमेर के नरेशों का कुछ भी वृत्तान्त नहीं दिया है अतएव आधुनिक शोध के अनुसार उनका बहुत ही संक्षेप वर्णन कर देना उचित समझ कर चन्द सतरें लिखदी जाती हैं।

चौहान नाम इस वंश के मूल पुरुष चापमान या चाहमान का पर्याय है। राजस्थान के इतिहास में इस वंश की प्रसिद्धि का पता विक्रम की छठी शताब्दी के पीछे ही लगता है। वास्तव में ये कौन और कहां के थे इसका उत्तर निश्चित रूप से देने को कोई प्रमाणभूत साधन अबतक उपलब्ध नहीं हुआ है केवल इतना जाना जाता है कि इनकी प्राचीन राजधानी अहिछत्रपुर (नागोर) और इनकी पदवी सपादलक्षीय थी।

वर्त्तमान समय में तो चौहान, परमारों के सदृश्य, अपने को अग्निवंशी मानते और अर्बुदाचल पर वशिष्ठ ऋषि के अग्निकुण्ड में से अपने मूल पुरुष चाहमान का उत्पन्न होना कहते हैं, परन्तु यह भ्रान्ति पंदरवीं शताब्दी के पीछे बने हुए पृथ्वीराज रासे नाम के ग्रंथ से फैली है, नहीं तो प्राचीन शिलालेख, पृथ्वीराज के दरबारी कवि की लिखी हुई पृथ्वीराज विजय नामी पुस्तक व हमीर महाकाव्य में तो चौहानों को सूर्य्यवंशी या पुष्कर में सूर्य्य के योग से उत्पन्न होना लिखा है, और कर्नल टाड ने उनका गोत्रोचार दिया उससे वे सोमवंशी सिद्ध होते हैं, ऐसे ही कई दूसरे लेखों में भी उनको सोमवंशी लिखा है।

चापमान के उत्तराधिकारी वासुदेव को एक विद्याधर की सहायता से शाकम्भरी का आधिपत्य प्राप्त हुआ। वासुदेव के पीछे सामन्तराज, जयराज या अजयपाल, विग्रहराज या वीसलदेव क्रमशः सांभर की गद्दी पर बैठे। विग्रहराज के दो पुत्र चामुण्डराज और गोपेन्द्रराज थे। चामुण्ड का पुत्र दुर्लभराज गौड़ों से लड़ा और दुर्लभ का पुत्र गोविन्दराज या गूवक, मण्डोर के पड़िहार वंशी राजा नागभट्ट या नागावलोक का समकालीन था जिसका एक लेख सं० ८७२ वि० का मिला है। गूवक का पुत्र चन्द्रराज और चन्द्रराज का गूवक दूसरा हुआ, जिसने अपनी कन्या कलावती का विवाह स्वयम्वर द्वारा किया था। गूवक दूसरे का पुत्र चन्दनराज जिसने रुद्रेण तंवर राजा को युद्ध में परास्त कर मारा। इसकी राणी ने पुष्कर में एक सहस्त्र शिवलिङ्ग स्थापन किये। चन्दन या चन्द्र का पुत्र वाक्पतिराज या बप्पयराज बड़ा योद्धा था, १८८ लड़ाइयां जीतीं। इसके तीन पुत्र सिंहराज, लक्ष्मण या लाखण, और वत्सराज थे। सिंहराज सांभर का राजा हुआ, लाखण ने नाडूल में जुदा राज स्थापन किया और वत्सराज को दूसरी जागीर मिली। सिंहराज का राज समय सं० १०१० वि० के लगभग था। तंवरों ने लवण नामी राजा की सहायता लेकर उस पर चढ़ाई की परन्तु पराभव हुए। वह म्लेच्छों (मुसलमानों) से भी लड़ा था। सिंहराज के पुत्र विग्रहराज

[illegible] के ऊपर रख दिया। बादशाह बोला कि " मेरा क़ौल पूरा हुआ, इसने

[illegible] वीसलदेव दूसरा और दुर्लभराज थे। विग्रहराज सं० १०१२-१३ वि० में पाट बैठा, [illegible] देश विजय किया, गुजरात के प्रथम सोलङ्की राजा मूलराज को कंथाकोट में भगाया, अणहिलवाड़े के पास वीसलपुर का नगर बसाया और भड़ोंच में आसापूरा देवी का मंदिर बनवाया। उसका एक लेख सं० १०३० आषाढ़ शुदि १५ का शेखावाटी में हर्षनाथ के मंदिर में मिला है। दुर्लभराज दूसरा या दुःशल विग्रहराज का भाई। वाक्पतिराज गोविन्द का पुत्र, इसने आघाटपुर (आहाड़ मेवाड़ की पुरानी राजधानी) के गुहिल राजा अम्बाप्रसाद को मारा। इसके दो पुत्र चामुण्डराज और वीर्यराम।

वीर्यराम—सं० १०४० वि० में, इसके भाई चामुण्डराज ने नरवर में विष्णु का मन्दिर बनवाया। वीर्यराम के पुत्र–विग्रहराज और दुर्लभराज। दुर्लभराज तीसरा या वीरसिंह, मुसलमानों के मुक़ाबले में मारा गया। इसकी सहायता से मालवे के राजा उदयादित्य परमार ने गुजरात के सोलङ्की राजा करणदेव को जीता था। विग्रहराज या वीसलदेव तीसरा–वीसलदेव रासे में लिखा है कि वीसल ने भोज की कन्या राजमती से विवाह किया था। पृथ्वीराज (प्रथम) सं० ११६२ वि० में था। सातसौ सोलङ्की राजपूत पुष्कर लूटने को आये थे उनको युद्ध में मारे। राणी का नाम रासल्लदेवी जो जैन यति अभयदेव मलधारि की शिष्या थी। अजयराज या जयदेव या अजयदेव या अल्हण, पृथ्वीराज का पुत्र, सं० १२०० के लगभग हुआ। अजमेर नगर बसाकर राजधानी बनाया, एक गढ़ भी वहां तैयार कराया, चच्चिग, सिंधुल, और यशोराज नामी तीन राजाओं को युद्ध में मारे, मालवे के राजा के सेनापति सोल्हण को क़ैद कर अजमेर लाया। राणी का नाम सोमलदेवी जिसने अपने नाम का जुदा सिक्का चलाया था। अजयराज ने मुसलमानों से युद्ध कर उन्हें परास्त किये थे। पुत्र अर्णोराज। अर्णोराज या आनलदेव या अग्निपाल सं० १२०७–८ वि०। इसके दो राणियां थीं–मारवण सुधवा जिसके पेट से जगदेव और वीसलदेव उत्पन्न हुए; दूसरी काञ्चन देवी गुजरात के सोलङ्की राजा जयसिंह सिद्धराज की कन्या, जिससे सोमेश्वर ने जन्म लिया। सिंध देश की ओर से तुर्कों ने चढ़ाई की परन्तु हार खाकर भागे और इस फतह की यादगार में आनलदेव ने आनासागर तालाब अजमेर में बनवाया। गुजरात के सोलङ्की राजा कुमारपाल ने सं० १२०७ वि० के लगभग अर्णोराज पर चढ़ाई कर उसे पराजित किया था। उसके पुत्र जगदेव ने उसे राज के लोभ से मारडाला। जगदेव भी विशेष राजसुख भोगने न पाया था कि उसके भाई वीसलदेव ने राज उस से छीन लिया। वीसलदेव चौथा, चौहानों में यह राजा बड़ा प्रतापी और विद्वान् हुआ। सं० १२०८ वि० में तंवरों से दिल्ली का राज लिया और मुसलमानों से कई लड़ाइयां लड़ कर उन्हें देश से निकाल दिये। दिल्ली की लाट पर इसका एक लेख सं० १२२० वि० वैशाख शुदि १५ का है। अजमेर नगर में जो प्रासाद अब अढ़ाई दिन के झोंपड़े के नाम से प्रसिद्ध है वह वास्तव में वीसलदेव की बनवाई हुई नाटकशाला थी जिसमें उस नरेन्द्र का रचा हुआ हरिकेली नाम का नाटक, और राज कवि सोमेश्वर रचित ललित विग्रहराज नाटक शिलाओं पर खुदे हुए हैं।

जिसका अन्न खाया था उसका ही न हुआ तो हमारा क्या होगा "। बादशाह ने गढ़ लिया।

अमर गाङ्गेय, वीसलदेव का पुत्र, जब गद्दी बैठा तब बालक था इसलिये जगदेव के पुत्र पृथ्वीभट ने उससे राज छीन लिया। पृथ्वीभट या पृथ्वीराज दूसरा, इसका एक लेख सं० १२२४ वि० माघ शुदि ७ शनिवार का मिला है। देहान्त सं० १२२६ वि०।

सोमेश्वर–अर्णोराज का पुत्र सिंहराज का दोहिता। इसकी माता बाल्यावस्था में इसे लेकर शत्रुओं के भय से अपने पीहर चली गई थी। उसका विवाह त्रिपुर या चेदी के कलचूरि राजा की कन्या कर्पूरदेवी से हुआ था जिसके पेट से प्रसिद्ध पृथ्वीराज और हरीराज दो पुत्र उत्पन्न हुए। पृथ्वीभट के मरने पर वह अजमेर के राजसिंहासन पर बैठा। अजमेर में वैद्यनाथ और त्रिमूर्ति के विशाल देवल बनवाये; कोकनदेश के राजा मल्लिकार्जुन से युद्ध कर खड्ग प्रहार से उसकी भुजा काटी। सं० १२३६ वि० के लगभग देहान्त हुआ।

पृथ्वीराज चौहान तीसरा–दिल्ली अजमेर का अन्तिम महाराजाधिराज हुआ। उसके समय में चौहानों के विस्तीर्ण राज की सीमा उत्तर में लाहौर और दक्षिण में विन्ध्याचल तक थी, क़रीब २ सारा राजपूताना चौहानों के आधीन था। पृथ्वीराज ने चन्देल राजा परमर्दिदेव को जीता, प्रसिद्ध आल्हा ऊदल इसी राजा के सामन्त थे। सुलतान शिहाबुद्दीन ग़ोरी ने पृथ्वीराज पर चढ़ाई की, भिटण्डे का गढ़ लिया, परन्तु पृथ्वीराज से युद्ध होने पर-सं० १२४७ में शिकस्त खाकर घायल हुआ और भागकर पीछा गोर को चला गया। दूसरे साल फिर ताज़ा फौज लेकर आया, पृथ्वीराज भी १५० राजा व रावों के साथ असंख्य दल लेकर मुक़ाबले को गया, तराइन के मुक़ाम युद्ध हुआ और पृथ्वीराज पराजित होकर क़ैद होगया और उसके गले पर छुरा चलाया गया। उसके पुत्र गोविन्दराज को अजमेर का राज दिया, परन्तु गोविन्दराज के काका हरीराज ने उससे अजमेर लेलिया और गोविन्द रणथम्भोर में जा रहा। अन्त में कुतबुद्दीन ऐबक ने सं० १२५० में दिल्ली अजमेर हरीराज से छीनकर दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया, गोविन्दराज की सहायता कर लड़ाई में हरीराज को मारा। हरीराज का एक लेख सं० १२५१ का अजमेर इलाके के टांटोई गांव में मिला है। गोविन्दराज की सन्तान रणथम्भोर में राज करती रही। राजा हमीरदेव चौहान को सुलतान अलाउद्दीन खिलजी ने सं० १३५८ वि० में विजय कर मारा और रणथम्भोर लेलियां।

नैणसी अपनी ख्यात में एक जगह लिखता है कि " सं० ११२७ दिल्ली में तुरकाणा हुआ, चौहान रतनसी जोहर कर काम आया, गजनी से बादशाह सहावदी ने आकर दिल्ली ली।" यह लेख बिलकुल विश्वास के योग्य नहीं, किसी ने नैणसी को ऐसा कह दिया होगा वही उसने अपनी याददाश्त में दर्ज कर दिया।

———:o:———

प्रकरण तीसरा



सोलंकी वंश (चालुक्य या चौलुक्य)

सोलङ्कियों की शाखा—सोलङ्की, वाघेला, खालत, रहवर, वीरपुरा, ऊँगड़ा, वहैला, पीथापुरा, जोरूतिया, डहर सिंध में तुर्क होगये, रूभा तुर्क होगये ठट्टे की तर्फ हैं। भूहड़, सिंध में तुर्क होगये। सोलङ्कियों की उत्पत्ति पहले चौहानों के वर्णन में अग्नि कुण्ड से दी है।

सोलंकियों की वंशावली—आदि नारायण, जुगादि ब्रह्मा, ब्रह्मऋषि, धूमऋषि, चाच, वालग सुकर, अर्जुन, अजयपाल, देवपाल, राज (राजि) मूलराज।

सोलंकी पाटण (अणहिलवाडे) में आये जिसकी कथा—टोडे के स्वामी सोलङ्की राजा के दो पुत्र राज और बीज थे, जब उनका पिता मर गया तब दूसरे छिमात भाइयों ने उनसे राज छीन लिया और इन दोनों भाइयों को वहां से निकाल दिये। वे अपने थोड़े से साथ से चलकर कहीं आस पास जा ठहरे। बड़ा भाई बीज जन्म से ही अंधा और छोटा राज बालक था। भाइयों ने वहां उनकी कुछ भी पूछ न की, तब उन्होंने विचारा कि अब यहां रहने से तो कोई लाभ नहीं चलो द्वारिका की यात्रा ही करें। कई दिनों तक चलते चलते पाटण (अणहिलपुर) जाकर उतरे। वहां चावड़े राज करते थे। उसी अर्से में राजा की घोड़ियों को चरवादार न्हलाने के वास्ते तालाव पर लाये। इनका डेरा ताल की पाल पर ही था, जब साईस घोड़ियों पर चढ़े हुए इनके पास से निकले तो बीज एक घोड़ी की प्रशंसा करके कहने लगा कि इस नीली के क़दम बहुत अच्छे पड़ते हैं। यह सुन कर साईस ने उसकी ओर देखा और कहने लगे कि भाई! यह तो अंधा है, इसने घोड़ी का रंग कैसे पहचाना। इतने में घोड़ी ने पग धीमे कर दिये तो साईस ने उसके चाबुक फटकारा, चाबुक का शब्द सुनते ही बीज को क्रोध आया और साईस को गाली देकर कहने लगा कि अरे कमबख़्त तूने लाखीणे बछेरे की एक आंख फोड़ डाली। साईस बड़बड़ाने लगा कि यह अंधा क्या बकता है और घोड़ी को तालाव पर लेगया। उसी

घोड़ी ने रात को बच्चा दिया जिसकी सचमुच एक आंख फूटी हुई थी। तब तो सार्दूल ने अपने स्वामी को सारा हाल कहा और बोला कि तालाव की पाल पर दो भाई पांच च्यार आदमियों से ठहरे हैं, उनमें से अंधे भाई ने पहले से बछेरे की आंख फूट जाना बतला दिया था। पाटण के चावड़े राजा ने उनकी खबर मंगवाई, कहने लगा कि यदि ऐसे बुद्धिमान पुरुष हमारे पास रहें तो अवश्य रख लेवें। फिर सवार होकर राजा स्वयं उनके पास पहुंचा, मिला और पूछा कि तुम कौन हो, कहां रहते हो? बीज ने अपना सारा वृत्तान्त कह सुनाया कि हम टोडे के स्वामी के पुत्र सोलंकी राजपूत हैं, हमारे छिमात भाइयों ने राज छीन कर हम को अपनी धरती में से निकाल दिये हैं। क्योंकि मैं तो आंखों से अंधा और मेरा यह भाई बालक था, सो एक अर्से तक तो हम वहीं आसपास ठहरे रहे, अब यह भाई भी सयाना होगया है, सो किसी के पास जा रहेंगे। अभी तो द्वारिका की यात्रा को जाते हैं। चावड़े राजा ने बीज और राज को बड़े आदर से अपने पास रक्खे और बीज को कहा कि मैं अपनी कन्या आप को व्याहना चाहता हूं। बीज बोला मैं तो चक्षुहीन हूं सो व्याह करना नहीं चाहता, यदि आपकी यही इच्छा है तो मेरे भाई के साथ विवाह कर दीजिये। तब राज को चावड़े ने कन्या व्याह दी, दहेज में बहुतसा माल असवाव दिया और कई गांव जागीर में देकर उनको वहां रक्खे। चावड़ी के गर्भ रहा और पुत्र उत्पन्न हुआ, नाम मूलराज रक्खा। अब राज ने अपने भाई से कहा कि अपन द्वारिका की यात्रा को जाते जाते ही मार्ग में यहां ठहर गये सो यात्रा करनी चाहिये। दोनों भाई वहां से विदा होकर चले और चावड़ी को अपने पिता के ही घर रक्खी। जाड़ेचा लाखा (फूलाणी, कच्छ का स्वामि) के कान पर पहले घोड़ी और बछेरे की वात पड़ चुकी थी, जब उसे मालूम हुआ कि राज बीज इधर आते हैं तो उसने अपने आदमी उनके पास भेज कर उनको बुलवाये। जब दोनों भाई निकट पहुंचे तो जाड़ेचा राजा उनकी पेशवाई को आया और आदर सत्कार के साथ उन्हें अपने महलों में लेगया। फिर लाखा ने अपनी बहन का विवाह राज के साथ कर दिया और उनको वहीं रक्खे। साला बहनोई हर वक्त साथ रहें और बीज दूसरे स्थान में। लाखा की साहिबी में राज के दिन इतने आनन्द से कटते थे कि एक अर्से तक उसको अपने भाई की सुधि तक न आई। एक दिन बीज ने उसे कहलाया कि तूं तो अपने साले का होगया, अब तुझे हमारी याद क्यों

आवे, हम भी अब यहां रहना नहीं चाहते, पाटण जाकर मूलराज को गोद में खिलावेंगे, चावड़ी भोजन परोसेगी वही खावेंगे और वहीं रहेंगे। राज ने अपने उस आनन्द और आराम को छोड़ कर पाटण का जाना पसन्द न किया और बीज वहां से चल दिया, व मूलराज के साथ रहने लगा।

जाड़ेची के पेट से राज के राखाइच नामी पुत्र उत्पन्न हुआ। एक दिन साले बहनोई चौसर खेल रहे थे सो राज का पासा पड़ा और गोट मारते वक्त उसका एक टुकड़ा फटकर उछला और लाखा के जा लगा जिससे कुछ लोहू निकल आया। तब तो लाखा मारे क्रोध के लाल होगया, पास ही बर्छी पड़ा हुआ था, सम्भाल कर राज पर चलाया, घाव कारी लगा और उसके प्राण पखेरू तत्काल उड़गये। यह घटना देख लाखा हक्काबक्का होगया, बड़ा पश्चाताप करने लगा और विचारा कि मुझको ईश्वर ने यह क्या कुमति दी, परन्तु भावी प्रबल है। इसकी खबर लाखा की बहन को हुई, वह पति के संग चिता पर चढ़ने को तैय्यार होगई। लाखा बोला कि मैंने बहनोई को मारा है, तूं इसके साथ जलती है, भान्जा बालक है, वह भी तेरी हर करके मर जायगा। यह सब हत्या मेरे सिर पर चढ़ेंगी, अतः मेरा जीना ही धिक्कार है। ऐसा कह कटार खाकर मरने को उद्यत हुआ, तब तो लाखा के कुटम्बियों ने बड़ी हट से जाड़ेची को सती होने से रोका। अन्तमें उसने अपने भाई से कह दिया कि तूने मेरे पति को मारा है और मुझे सत करने से मना किया तो अब तू मुझे कभी अपना मुंह मत बतलाना। लाखा ने भी बहन का वचन अङ्गीकार किया और अपने पापमोचन के हेतु बहुत दान पुण्य करने लगा, कई नियम व व्रत लिये और नाना प्रकार के प्रायश्चित्त किये। भान्जे को सदा वह पास रखता और अत्यन्त प्यार करता था, किसी की मजाल नहीं कि राखाइच की आज्ञा उल्लंघन कर देवे। यहां तो यह बनाव बना, अब पाटण की बात सुनिये।

पाटण में चावड़ा सामन्तसिंह राज करता था वह मर गया। उस के च्यार पुत्र थे च्यारों ही योग्य और समान बल बुद्धि वाले। पिता के मरते ही च्यारों भाइयों में राज के वास्ते खटाखट चली यहांतक कि एक दूसरे के प्राण का ग्राहक होगया। पांच भले आदमियों ने मिलकर उनको समझाये और ऐसा प्रबन्ध विचारा कि छत्र चमरादि राज्यचिन्ह तो सिंहासन पर रक्खें, और च्यारों भाई आसपास राजारूप से बैठें, राज्यकार्य प्रधान कामदार करते

रहें। जो आय हो उसे च्यारों मिलकर बराबर बांटलें। राजपूत सर्दार जागीरदार, प्रधान, फौजदार, च्यारों ही को आकर जुहार करेंगे। भाइयों ने भी इस बात को स्वीकारा और इसीतरह काम चलने लगा। सोलङ्की बीज अपने भतीजे मूलराज के साथ पाटण ही में था। चावड़े च्यारों भाई प्रतिदिन तीसरे पहर नदी में स्नान करने जाया करते थे, एक दिन उन्होंने मिल कर बिचार किया कि अपन बाहर जावें तब राज्यचिन्ह की रखवाली किसके भरोसे पर छोड़ें, क्योंकि अपने को दो पहर वहां लग जाते हैं। अन्त में यही सलाह ठहरी कि भाञ्जे मूलराज को यह भार सौंपा जावे, सो जब वे सैर को जाते तब गद्दी मुलराज की रक्षा में छोड़ जाते और पीछे आकर उसे वहां से अलग कर देते थे। यह बात मूलराज के मनमें न भाई और वह अपने मन ही मन में कुढ़ने लगा। एक दिन उसके अंधे बाबा ने अपने भतीजे के शरीर पर हाथ फेर कर पूछा कि बेटा तू इन दिनों इतना दुर्बल क्यों है? मूलराज ने रोज़ गद्दी पर बिठाकर पीछा उठा देने का दुखड़ा अन्धे के आगे रोया और कहा इसी चिन्ता के मारे मैं गिरा जाता हूं। अन्धे ने कहा तूं ऐसा कर! आज जो वे तुझे गद्दी पर बिठाना चाहें तो मत बैठना, उस वक़्त वे कारण पूछेंगे, तो कहना कि मेरी आज्ञा तो कोई मानता ही नहीं, ऐसी गद्दी मेरे किस काम की। मूलराज ने वैसा ही किया, चावड़े बुद्धिहीन थे, अपने प्रधान मुतसद्दियों को बुलाकर आज्ञा देदी कि मूलराज का हुक्म माथे चढ़ाना। अब तो मूलराज की बन आई, मामा तो भाञ्जे के भरोसे निश्चिन्त होकर सुख विलास करने लग गये, राजकाज की खबर तक न पूछें, सर्दार सब उनसे अप्रसन्न हुए, मूलराज था आदमी चतुर, उसने धीरे धीरे खूब रीझ, मौज देकर सब राजपूत, सिपाह और प्रजा को अपने हाथ में कर लिये और अब राज लेने के विचार बांधने लगा। अपने अंधे बाबा के साथ इसकी सलाह करता रहता था। एक दिन उसकी मा ने कहीं छुपके से खड़ी होकर उनकी बातें सुन लीं, परन्तु किसी प्रकार से उसके पावों की आहट मूलू के कान पर जा पड़ी। वह उठ कर उधर धाया, अपनी माता को ओट में खड़े पाया। वह पुत्र को देखकर कहने लगी कि बेटा तूं और तेरे काका मेरे भाइयों को मारने का विचार क्यों कर रहे हो, उन्होंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है। तब तो मूलराज ने माता को कहा कि तुम्हें काकाजी बुलाते हैं। वह बोली मुझे तेरे काका से क्या काम, और लगी सीढ़ियां उतर कर जाने। उस वक़्त मूलराज ने सोचा कि

यदि यह चली गई तो बात फूट जावेगी और फिर धरती हाथ आने की नहीं। चट तलवार खींच कर उसका मस्तक उड़ा दिया[1] और पीछा काका के पास आया। अंधे ने पूछा कौन थी? कहा कि माता थी, परन्तु जाने नहीं दी है, काम तमाम कर दिया है। बीज बोला "बहुत खूब किया, मैं तेरी बुद्धि की प्रशंसा करता हूं, अब मुझे निश्चय होगया कि अवश्य तूं पाटण के राज सिंहासन पर बैठेगा और तेरा प्रताप बहुत बढ़ेगा।" फिर दोनों ने मिल कर लाश को वहीं खड्डा खोद कर गाड़ दी। दूसरे दिन मूलराज अपने पक्ष के राजपूतों को साथ लिये जहाँ मामाजी जल क्रीड़ा कर रहे थे वहां पहुंचा और सब को ठिकाने लगाया और पाटण का राजा बन बैठा।

मूलराज का लाखा (फूलाणी) को मारना—मूलराज पाटण का राज करता था और उसका भाई राखाइच केलाहू कोट में अपने मामा लाखा के पास रहता था। लाखा पिछली रात को जब सोकर उठता तो सदा ज़ोर ज़ोर से डाढें मारकर रोया करता था। उसकी साहबी का सारा दार मदार राखाइच पर था। उसको इस प्रकार रोते देखकर राखाइच को बड़ा आश्चर्य होता था। एक दिन उसने मामा से पूछा कि आप सदा फूट फूट कर पिछली रात को रोते हो सो ऐसा आपको कौनसा दुःख है? लाखा नें भाञ्जे को तो कुछ भी उत्तर न दिया, परन्तु अपनी नौका के मुखिया मल्लाह को बुलाकर समझाया कि कल प्रभात को तुम राखाइच को नाव पर चढ़ाकर समुद्र के अमुक तट पर उतार नाव पीछी ले आना। फिर भाञ्जे को बुला कर कहा कि कल नाव पर सवार होके दर्या की सैर कर आना। तदनुसार राखाइच प्रभात ही नौका पर चढ़ा, मल्लाहों ने स्वामि की आज्ञानुसार उधर ही नाव चलाई और नियत स्थान पर उसे उतार कर पीछे फिर गये। राखाइच तट पर इधर उधर फिरने लगा तो देखता क्या है कि एक पगडंडी मनुष्य के आने जाने की बनी है, उसी मार्ग से वह आगे चला। एक सुंदर विशाल महल उसको साम्हने

---

१ मेरुतुङ्ग कृत प्रबन्ध चिन्तामणि में लिखा है कि मूलराज के जन्मते समय उसकी माता लीलादेवी प्रसव वेदना से मरगई और बालक पेट चीर कर निकाला गया।

नज़र आया। निकट पहुंचते ही उस महल में से पांच सात अप्सराएं निकलीं और भाणेज ! भाणेज ! करती हुई उसके पास आईं। वह बड़ा चकित हुआ कि यह बात क्या है, उनसे पूछा कि तुम कौन हो और यह महल किसका है ? अप्सरा बोली यह महल लाखाजी का है और हम उनकी स्त्रियां हैं। आगे महल के भीतर जाकर देखा तो एक पलंग पर कोई मनुष्य गहरी नींद सोया हुआ है। पूछा यह कौन है ? कहा कि यह तुम्हारे मामा की देह है। राखाइच ने प्रश्न किया कि मामाजी रोया क्यों करते हैं ? उत्तर मिला कि जब लाखाजी सो जाते तब उनका जीवात्मा उस काया को त्यागकर यहां आता और इस देह में प्रवेश होकर रात भर हमारे साथ हंसता खेलता है, प्रभात होने के पूर्व ही पीछा उसी काया में चला जाता, इसीलिये जब लाखाजी जागते तो हमारे वियोग में डाढ़ें मार मार कर रोते हैं। यह विचित्र कहानी सुनकर उसने मन में विचार किया कि यह बात सत्य है। फिर पूछा कि यह तो तुमने कहा सो ठीक, परन्तु ऊपर जो यह दूसरा महल है वह किसका है ? तब एक अप्सरा बोली कि अभी तो इसका स्वामी कोई है नहीं, परन्तु जो पुरुष बापके वैर और स्वामि के काम में मालिक की आंखों के साम्हने उसके शत्रु से जूझ कर काम आवे वही इन महलों को पावे। रात को तो राखाइच वहीं रहा, प्रभात को जब जागा तो अपने को मामा के पास पाया। अब तो उस लोक में पहुंचने की उसके मनमें चटपटी लगी, लाखा का खासा घोड़ा महुवा था उसपर सवार होकर पाटण अपने भाई मूलराज के पास पहुंचा और उससे मिलकर लाखा का सारा भेद उसको बतलाया और कहा कि यदि बापका वैर लेना चाहता हो तो अभी अच्छा अवसर है। दीपमालिका के कारण लाखा ने अपने सब सर्दारों को घर जाने की छुट्टी दी है, तुम अमुक दिवस पहुंच जाना। इतना कह कर वह तो तुरन्त अश्वारूढ़ हो पीछा लौट आया और मूलराज प्रबल सेना सजकर चढ़ गया। लाखा उन दिनों चिरयात कोट में रहता था। घुड़साल में जाकर जब उसने अपने घोड़े पर हाथ फेरा तो हाथ के धूल लग गई, देखकर कहने लगा कि यह धूल तो पाटण की है, इस घोड़े पर कौन चढ कर गया ? साईस ने अर्ज़ की कि राखाइच सवार हुआ था। इतने में तो राखाइच भी मुजरे को आगया। उसकी ओर दृष्टिपात कर लाखा मुसकुराया और कहा भाञ्जे अच्छी प्रीति पाली। " राखाइच समझ गया और उसने सब

बात सत्य सत्य कहदी। उसी अर्से में ख़बर मिली कि पाटण का कटक पास आन पहुंचा है। लाखा भी युद्ध को तैय्यार होगया, राजपूत ने भी मामा के साथ पाटण की सेना से युद्ध कर स्वामि के काम और आपके बैर में अपना सिर दिया और मनवाञ्छित लोक में जा पहुंचा। लाखा भी मारा गया।[१]

सिद्धराव (सोलंकी) ने रुद्रमाल प्रासाद कराया जिसकी कहानी—राजा सिद्धराव रात को जब सोवे तो स्वप्न में क्या देखे कि पृथ्वी स्त्री का रूप धारण कर उसके पास आती और कहती है कि मुझ को एक उत्तम आभूषण दे! ऐसा स्वप्न राजा सदा देखता, तब एक दिन स्वप्नपाठक पंडितों को बुला कर उसकी व्याख्या पूछी। पंडितों ने कहा कि भूमि का भूषण प्रासाद है, आप कोई विशाल मन्दिर बनवाइये। राजा ने मन में ठाना कि एक ऐसा देवमंदिर बनवाऊं कि मृत्यु लोक (पृथ्वी) पर उसके जैसा दूसरा न निकले। उसने अपने राज्य के सब सूत्रधारों को बुलाये और उन्होंने भांति भांति के चित्र खींच कर राजा को बताये परन्तु एक भी चित्त पर न चढ़ा।

राजा के राज्य में खापरिया और कालिया नाम के दो नामी चोर रहते थे, वे दीपमालिका के दिन जूआ खेलने लगे। खापरिया ने सिद्धराव की सवारी का घोड़ा क्रोड़ीध्वज दांव पर लगाया, और कालिया ने वैसी ही कुछ चीज़ देनी बदी। कालिया जीता और खापरिया बाज़ी हारगया। कालिया बोला कि घोड़ा ला, तब दूसरे ने आगामी दीपमालिका पर लौटने का वचन दिया। समय आने पर खापरिया पाटण पहुंचा और मज़दूर का भेष धारण कर उस घोड़े के वास्ते प्रति दिन दूब का भारा लेजाने लगा। इस तरह उसने वहां अपनी जान पहचान बढ़ाई। थोड़े दिनों पीछे वह उस अश्व का हाथ साफ रखने वाला बना घोड़े की अच्छी चाकरी करता और उसको बहुत सुख देता था। राजा रोज़ घोड़े को देखने के लिये आवे, उसने खापरिया की सेवा से प्रसन्न होकर उसको क्रोड़ीध्वज का साईस बना दिया। सिद्धराव जब आवे तब सदा मंदिर की चर्चा करे कि कोई उत्तम कारीगर मिले तो देवालय बनवाऊं परन्तु कोई ऐसा मिलता नहीं।

---

१ मूलराज ने चावड़ों से पाटण का राज ज़रूर लिया और लाखा फूलाणी को युद्ध में मारा परन्तु यह अप्सरादि की कहानियां केवल इस शिक्षा के वास्ते बनाई गई हों कि अपना बैर लेते हुए भी क्षत्रिय धर्म के अनुसार स्वामि की सेवा में सीस कटाने वाला परम पद को प्राप्त होता है।

यह बात खापरिया सुना करता था। दीपमालिका निकट आई, तब घड़ी चारेक रात गये वह उस घोड़े को खोल कर उस पर सवार हुआ और नगर के कोट को कुदा कर उस (घोड़े) को ले उड़ा। यहां जब खबर पड़ी तो राजा के नौकरों ने पीछा करने की तय्यारी की परन्तु सिद्धराव ने उनको रोक दिये और कहा कि तुम उस घोड़े को नहीं पहुंच सकोगे। खापरिया पहरेक रात पिछली रहते आबू के पास जा उतरा, क्योंकि कालिया सिरोही के आगे उमरणी गांव में रहता था सो उसको वहां लेजा कर घोड़ा देना था। खापरिया ने विचारा कि अब पास तो पहुंच ही गया हूं, पिछला कुछ भय है नहीं, थोड़ी देर यहां विश्राम लेकर फिर चलूं। घोड़े पर से उतर कर बैठा ही था कि वहां की पृथ्वी फटने लगी, यह देख कर वह बड़े अचम्भे में आया कि यह क्या बात है। इतने में पृथ्वी में से एक देवालय प्रगट हुआ। पहले तो उसके तीन सुवर्ण के कलश निकले, फिर शिखर और पीछे मण्डप दिखलाई दिया, जिस में कई देव देवाङ्गना आकर नाटक खेलने लगे। यह चोर भी एक झरोके में जा बैठा, खूब राग रंग देखा, जब थोड़ीसी रात्रि रही, नाचना गानां बन्द हुआ और देवताओं ने अपने अपने स्थान पर जाने की तय्यारी की, परन्तु क्योंकि मृत्युलोक का मानवी उस में बैठा था इसलिये वह देवालय वहां से हटा नहीं। यह देख कर देवताओं ने कहा कि इस में कोई मनुष्य तो नहीं आन बैठा है। खोज की तो एक गोख में खापरिये को बैठा पाया। उससे पूछा कि तू कौन है और क्या चाहता है? खापरिये ने अपना सब वृत्तान्त कह सुनाया और उस मंदिर के विषय में उसने यह प्रश्न किया कि यह पीछा यहां कब प्रगट होवेगा। उत्तर मिला कि तीन दिन दीपमालिका की रात्रि तक वर्ष में एक बार प्रगट होता है, अब कल और परसों फिर निकलेगा। यह सुन कर खापरिया वहां से उठ गया और साथ ही मंदिर भी लुप्त होगया। अब उस चोर ने उमरणी का जाना तो छोड़ दिया और तुरन्त घोड़े पर पलाण रख पीछा पाटण को चला। मन में विचार बंधा कि मैंने सिद्ध-राव जयसिंहदेव का नमक साल भर तक खाया है, राजा को उत्तम देवसदन बनवाने की प्रबल उत्कण्ठा है सो यदि मैं राजा को यहां लाकर यह मंदिर बत-लाऊं तो उसका मनोरथ सफल हो और मैं उसके नमक का हक़ अदा करसकूं। ऐसा मन्दिर बनवाने से पृथ्वी पर उसका नाम अमर होजावेगा। थोड़ी ही देर में चोर पाटण पहुंच गया, घोड़े को ठाण में बांध आप सीधा सिद्धराज के मुजरे

को गया, राजा को भी उसे देख आश्चर्य हुआ और पूछा कि किसलिये गया था और पीछा कैसे आया ? उसने प्रथम तो जूवा खेलने और कोड़ीधज को हारने का हाल सविस्तर कहा और पीछे देवालय की हक़ीकत अर्ज़ की कि आज रात को मैंने आबू के पास एक देव भवन पृथ्वी में से निकलता देखा है, और क्योंकि आपकी उत्कट अभिलाषा है कि उत्तम प्रासाद बनवावें, इसलिये आपको वह देवालय दिखलाने की इच्छा से मैं पीछा लौट आया हूं। वह मंदिर आज फिर वहीं प्रगट होवेगा। राजा को भी चोर की बात पर विश्वास आगया, दोनों सवार होकर चले और आबू की तलहटी आन पहुंचे। घोड़े को कुछ दूरी पर बांध वे उसी स्थान पर जा बैठे जहां मंदिर प्रगट होने को था। नियत समय पर पृथ्वी फटने लगी और मंदिर निकला। राजा मार्ग के श्रम का मारा सोगया था, चोर ने जगाया और वह कौतुक दिखाया। देवी देवताओं ने आकर अखाड़ा जमाया और लगे मीठे मीठे सुरों के साथ बाजे बजने और नृत्य होने। राजा व चोर दोनों चुपके से उसी झरोखे में जा बैठे और आनन्द लूटने लगे। थोड़ीसी रात्रि शेष रही कि देवताओं ने देहरे को अन्तर्ध्यान करना चाहा, परन्तु वह तो वहां से खिसा नहीं, विचार हुआ कि इसका कारण क्या है, फिर कोई मनुष्य तो नहीं आन घुसा है, तब लगे सब इधर उधर खोज करने, आगे एक गोख में दो मनुष्यों को बैठे देखे। देवताओं ने इन्द्र से जाकर निवेदन किया कि एक मनुष्य तो कल वाला और एक दूसरा अमुक गोख में बैठे हैं, हमने उनको उठजाने के लिये बहुत कुछ कहा परन्तु वे स्थान नहीं छोड़ते हैं। इन्द्र आप वहां आया और उनसे पूछा कि तुम कौन हो और क्या चाहते हो ? राजा ने अपना नाम ठाम बतलाया; इन्द्र ने कहा कि रात्रि बीतना चाहती है अब तुम यहां से उठजाओ ! तब राजा बोला है कि सुरराज ! मैं भी ऐसा ही मंदिर बनवाना चाहता हूं सो मुझे बनाने वाले कारीगर का पता बतलाओ तो यहां से उठूं। तब देवेन्द्र ने राजा को ७ गोलियां देकर कहा कि जो कारीगर इन गोलियों को एक के ऊपर एक चढ़ा देवे वही ऐसा मंदिर बना सकेगा। गोलियां लेकर राजा व चोर वहां से उठगये और देवालय व देव देवाङ्गना सब वहीं लोप होगये। राजा चोर को लेकर पीछा राजधानी में आया, उसे तो वस्त्रालंकार सहित वह घोड़ा देकर विदा किया और आप देश देश के कारीगरों को बुला कर इकट्ठे करने लगा और जब सब ...

कोई गोली पर गोली न चढ़ा सका, सदा मुहूर्त निश्चय करे और निराश हो उसको आगे डिगावे। यह बात सारे विख्यात होगई कि कोई कारीगर राजा का मंदिर नहीं बना सका। एक सूत्रधार और उसका पुत्र (असुक गांव में) रहते थे उन्होंने विचार किया कि अपने भी पाटण चलें। उस वक्त पिताने पुत्र को कहा कि "बाट बाट," तब पुत्र टांकी हथोड़ा लेकर मार्ग को काटने लगा। पिता कहता है कि वेटा! "ब्याह न किया।" जब उसका कहीं विवाह कर दिया तो फिर वही शब्द कहे, परन्तु पुत्र उनका अभिप्राय वही समझा, तब दूसरी स्त्री परणाई। इस प्रकार च्यार विवाह उसके कर दिये। चौथी वधू बुद्धिमान वत्तीस लक्षणी थी उसने अपने पति को पूछा कि सुसराजी ने तुम्हें चार स्त्रियां क्यों परणाई? पति ने उत्तर दिया कि पिता कहता है कि "बाट बाट" और जब जब मैंने उसका अभिप्राय न समझा उसने मेरा विवाह कर दिया। बहू बोली अबकी वार जब तुम से बाट बाट कहें तो उत्तर देना कि अपने इस प्रकार देहरा बनावेंगे, इस तरह उसका चित्र खींचेंगे आदि; और यह भी कहा कि जब राजा वे गोलियां तुम्हारे संमुख धरे तो मैं ये सात छल्लें तुमको देती हूं, एक एक छल्ला बीच में देकर उस पर गोलियां रखते जाना। अब तो वे कारीगर राजा के पास आये, सिद्धराव ने गोलियां उनके आगे धरीं, यह कारीगर बीच में छल्ला रख कर गोली पर गोली चढ़ाता गया, सिद्धराव ने छल्ला धरने का कारण पूछा तो उत्तर दिया ये बीच बीच में थर दिये जावेंगे। राजा की समझ में बात आगई, कारीगर मंदिर बनाने लगे; सोलह वर्ष में कार्य्य सम्पूर्ण हुआ, कई हज़ार शिल्पी रोज़ उस पर काम करते थे। छन्द जयसिंहदेव सिद्धराव के, रावल भाट ने कहे—

थर सौ चवदहमाल, थंभ सत सहस निरंतर।
सै अठारह पूतली, जड़ी हीरा माणक वर॥
तीस सहस धजदण्ड, कणै सौव्रंन निहाले।
सतरह गय तुरिलाल, ...गुण रुद्र संभाले॥
एते देख अचरज हुवै, रोमंचे सुरनर अवै।
सुप्रसाद कीध जैसिंघ ने, टग मग चाहे चक्कवै॥ १॥
दिस गयंद गड़ियड़े, सीह दक्खिण गुंजारै।
कयौ कळस झळहळै, मंड उद्दंड संभारै॥

नाचै रंग पुत्तलिय, एक गावै इक वावै।
तिण पर तुरल झुलग्ग, रंग सबद्द ऊलावै ॥
पेखै पुरनर सयल खर, थम धसंत सुर उच्छलै।
तिण कारण सिधनर प्रमुण, दृष्य तेण थको डरै ॥ २ ॥
रत्तण पुंज सत हिये, राव माया के कारन्न।
भृत्य लोकनृराव, कहा इम ओपम काजन्न ॥
रहै मत्त संसार, न कोहिव अत्थन रावह।
छत्त चक्कवो राव, हुव तजें पित्थस रावह ॥
जिण राव धणेही भुवनपति, सिंघलला इम उच्चरै।
हथव..............सोढ्वि जलतो कर धरै ॥ ३ ॥
उंदर दरसण मरै, पैस भौं गहे भुयंगह।
हळ वहिमरै वढिल्ल, हरी जव चरै तुरगंह ॥
सूम संच धन मरै, वीर विद्रवे विवह पर।
पंडित पढ़ गुण मरै, मूढ भूचै रायांहर ॥
सुजाण राय गुज्जर धणी, करां वीनती कन्न सुव।
इम पढां गुणह पावै अवर, कहा परख जैसिंघ तुव ॥ ४ ॥
वीस तीस चालीस, साठ सित्तर आसि वहतर।
भट भाण समधिय रिद्ध, के कारण विवह पर ॥
वीस ढाल दस ढोल, तीस नेजा इक डंडह।
छत्र ढालते घटा, दिद्ध जैसिंह नरिंदह ॥
मारियो दलद्र दस लक्खदे, इम उपाय अंकुस कियो।
हड़हड़े भट्ट ताहरे हंस्यो, सिद्धराव पतोंढ़ियो ॥ ५ ॥

सं० १७१५ के वैशाख मास में महाराजा श्री जसवंतसिंहजी गुजरात के सूबेदार नियत किये गये, और सं० १७१७ के भाद्रपद में मुंहता नैणसी को (महाराजा ने) हजूर में बुलाया, तब भाद्रपद बदि ७ को उसका मुकाम सिद्धपुर में हुआ था। सिद्धपुर अच्छा नगर है जिसको सिद्धराव ने अपने नाम पर बसाया था, और पूर्व से १००० उदिच्य वेदिये ब्राह्मणों को बुला कर ५०० गांवों सहित सिद्धपुर उन्हें उदक में दिया, वे गांव शत्रुंजय के पास सीहोर के

थे। रूद्रमाल का विशाल प्रासाद बनवाया[1], जिसको बादशाह अलाउद्दीन (खिलजी) ने गिराया, तो भी उसका कितनाक भाग अबतक मौजूद है। नगर के बाहर पास ही पूर्व दिशा में सरस्वती नदी के तट पर प्राचीन माधव का मंदिर व घाट सिद्धराव का बनाया हुआ था। मंदिर को तो मुगलों ने नष्ट कर दिया और घाट पर किसी तुर्क का बनाया बंगला है। घाट पर सब लोग स्नान करते हैं। सिद्धपुर पाटण से १२ कोस की दूरी पर अब पाटण ही के ताल्लुक़ है। उसके साथ ५२ गांव लगते हैं। बस्ती २००० घर बनियों के, जिनमें १००० ओसवाल और दूसरे डीसावाल, पोरवाड़ आदि हैं। घर ७०० ब्राह्मणों के और मुसलमान वोहरों के एक हज़ार घर है। इलाक़े की आय रु० २५०००) साल की है। सिद्धपुर से एक मील सरस्वती नदी पर बिन्दुसर का बड़ा तीर्थ है वहां पूंजा साठिया के इलाक़े में पहाड़ों के मध्य कोटेश्वर महादेव हैं जो एक आम के वृक्ष की जड़ में से प्रकट हुए हैं। जल वहां अम्बाव के पहाड़ों से आता है।

सं० १०१७ वि० में मूलराज सोलंकी ने चावड़ों से राज लिया, ४५ वर्ष राज किया। उसका उत्तराधिकारी चंदगिरी वर्ष १०; उसके पाट कर्ण वर्ष ३० राजा रहा। कर्ण के पीछे जयसिंह सिद्धराज सं० ११५० में पाट बैठा ४६ वर्ष राज किया और ३ तीन वर्ष तक सिद्धराज की पादुका को सिंहासन पर रखकर सर्दार प्रधान व कामदारों ने काम चलाया। सिद्धराज के पीछे उसके भाई राणा त्रिभुवनपाल का पुत्र कुमारपाल गुजरात का स्वामी हुआ, जिसने ३० वर्ष १ महीना ७ दिन राज किया; उसके पीछे उसके छोटे भाई महिपालदेव ने १३ वर्ष २ महीने ७ दिन राज किया, महिपाल का पुत्र अजयपाल ३ वर्ष ६ महीने तक राजा रहा। उसका उत्तराधिकारी लघु मूलदेव ३ वर्ष ४ महीने ६ दिन तक गुजराज का अधिपति रहा। मूलदेव के पाट भीमदेव बैठा जिसने ६४ वर्ष ११ महीने ८ दिन राज किया। पीछे वाघेलों ने सं० १२५३ वि० में गुजरात ली।

कवित्त—मूलू पैंताली वरस, वरस दस कियो चंदगिर।
वलभ अढाई वरस, साढ बारह द्रोणगिर।
भीम वरस चालीस, वरस चालीस करणह।
एक घाट पंचास, राज जयसिंह वरणह।

---

(१) रुद्रमाल का शिवालय मूलराज ने बनवाना आरम्भ किया था।

कंवरपाल तीस तिहुं आगल वरस तीन मुलराजलह।
थिलसी भीम सत्तर सहस्स दरस साठ अगलीक चह ॥ [1]



वाघेले सोलंकी।

सोलंकियों के वाघेले राजा वीरधवल ने सं० १२४३ में पाटण का राज लिया, उसने वर्ष ४५ मास ३ दिन एक राज किया। वीरधवल का पुत्र वीसलदेव २५ वर्ष ४ मास और ३ दिन राज पर रहा। वीसल के पाट कर्ण गेहेला (घेला अथवा कम समझ) वैठा जिसने नागतिये (नागर) ब्राह्मण (माधव) की वेटी को अपने घर में डालली। वह ब्राह्मण बादशाह अलाउद्दीन (खिल्‌जी) के पास जाकर पुकारा और बादशाही सेना चढ़ा लाया। गुजरात तुर्कों ने लिया। बादशाह ने च्यार उमराव गुजरात में रक्खे—मुदाफरखान (मुज़फ्फरखां), तातारखां, अहमदखां, और मोहम्मदखां। अहमद ने अहमदाबाद बसाया, पहले वहां आसाल भील की आसल वस्ती थी (आशापल्ली या आशावली) [2]। फिर अलाउद्दीन ने अपने वेटे कुतबुद्दीन को अहमदाबाद बख़्शा, सत्तर खान बहत्तर उमरा साथ दिये, वह सिंहासन पर वैठा, २१ छत्र सिर पर धरे................., दिल्ली से लक्ष्मी की मूर्ति लाया और लक्ष टके खर्च कर उसे भद्र में स्थापन की। कुतबशाही नाम का रुपया पहले पहल चलाया जिसके समान कोई दूसरा रुपया नहीं था। गुजरात में जलालशाही आदि दूसरे सिक्के पीछे से चले हैं। कुतबुद्दीन के पाट सुरताण मोहम्मद वैठा, इसके समय में सं० १५१६ में प्रजा पर १८ कर लगे दाण, पूंछी, हलगत, भोम, भेट, तलार, सूंखड़ी, वधामणा, मलवा, वल, लांचा,

---

(१) ऊपर जो राजाओं के नाम और उनका राज्यत्व काल दिया है उस में और छन्द में दीहुई नामावली व समय में अन्तर है, छन्द की नामावली व काल ठीक है।

(२) ज़फरख़ां जो पीछे मुज़फ्फरशाह के लक़ब से गुजरात का पहला सुलतान हुआ, वास्तव में टांक जाति का हिन्दू था, उसको सुलतान अलाउद्दीन ने नहीं वरन मोहम्मदशाह तुग़लक ने गुजरात दी थी। सन् १३६६ ई० में ज़फरख़ां तख़्त पर वैठा, सुलतान अलाउद्दीन तो उससे ८० वर्ष पहले सं० १३१६ ई० में मरचुका था। ऐसे ही अहमदाबाद का बसाने वाला अहमदशाह सुलतान अलाउद्दीन का उमराव नहीं किन्तु ज़फरख़ां का वेटा था जो सं० १४४२ ई० में तख़्त पर वैठा था।

घोड़ा चारण, कवार की सूंखड़ी, पाघबराड़, ढोर चराई, वाड़ी की लाग, कोतवाली लाग, और क़ाज़ी की लाग। इक्कावन वर्ष राज किया। सं० १५६७ में सुरताण मुदाफ़र तख़्त पर बैठा, बड़ा नाम पाया। उसके तीन बेटे सिकंदर, मोहम्मद और बहादुर थे। सं० १५८१ में सिकंदरख़ां तख़्त पर आया, केवल दो मास १७ दिन राज किया, फिर उसका भाई मोहम्मद सुरताण हुआ, उसने भी ३ मास ५ दिन राज किया। सं० १५८२ में बहादुरशाह तख़्त पर बैठा, इसकी धाक खुरसाण (दिल्ली के घरों) तक पड़ती थी। सं० १५८६ (१५९१) फागुण सुदि १ को चित्तोड़गढ़ फतह किया। जब मुग़लों (हुमायूं) ने पठानों से दिल्ली पीछी ली तो सं० १५९२ में मुग़ल चांपानेर आये और श्रावण सुदि ११ को वह स्थान विजय किया। सं० १५९३ के ज्येष्ठ मास में अहमदाबाद गये, बहादुरशाह से लड़ाई हुई, वह आसोज वदि १४ को भाग कर दीव बन्दर चलागया। बहादुर ने खांट, बरसा, और मांडण, समीचा के धणी पाटण के भूमियों को उमराव बना कर १२ गांव तो मांडण को, और १२ ही बरसा को दिये थे। उन भूमियों तथा हिन्दू तुर्कों ने मिल कर मुग़लों को अहमदाबाद में से निकाले। बहादुर शाह को दीव में फरंगियों (पुर्तगीज़ों) ने मार कर समंदर में डाल दिया। सं० १५९३ फागुण सुदि ५ को बहादुर मारा गया, उमरा ने मिल कर महम्मद बेगड़ा को तख़्त पर बिठाया[1]। अहमदाबाद में यह बड़ा धर्मात्मा राजा हुआ। उसने ४ औषधालय खोले और वहां हकीमों को रक्खे जो सब लोगों को मुफ़्त दवा देते और रोगियों की चिकित्सा करते थे, ग़रीब रोगियों को भोजन वस्त्र भी दिये जाते थे। सुरताण जैसा खाना आप खाता वैसा ही फ़क़ीरों को खिलाता और शीतकाल में रजाइयां और बिस्तर बांटता था। सं० १६१० फागुण वदि १३ गुरुवार को पहर रात गये बुरहानख़ां ने मोहम्मदशाह बेगड़ा को मारा और ३५ बड़े बड़े उमरा भी मारे गये। भाटी सोरवान ने बुरहान को मार कर महमद का वैर लिया। महमद का बेटा अहमद तख़्त पर बैठा (यह अहमदशाह दूसरा हो जो महमूदशाह तीसरे के बाद तख़्त पर बैठा था) फिर सं० १६२९ में अकबर बादशाह ने गुजरात ली।

(१) बहादुरशाह के पीछे महमूद बेगड़ा सुलतान नहीं हुआ वह तो बहादुर से २५ वर्ष पहले मरचुका था; वह बहादुरशाह का भतीजा और लतीफख़ां का बेटा महमूदशाह था जो पहले बुरहानपुर में क़ैद था।

(दूसरी ख्यात ऐसे लिखी है):—सोलंकियों से वाघेलों ने धरती ली; सोलंकी वाघेला वाजे जाते रहा, वाघेले सोलंकियों के शामिल (शाखा) हैं। पाटण (अणहिलपुर) वाघेलों के अधिकार में रही जिसकी साखी का कवित्त—

वीसल वर भोगवी, वरस वीसह अट्ठारह।
अर्जुनदेव इकतीस, कोट पाटण उद्धारह॥
वीरमदे तेतीस, संव वाघेला मंडग।
वीस वरस लहु करन, विढ़े वैरियां विहंडण॥
देवराज प्रतापियो च्यारवरस, कहां लाख वंसावली।
वाघेल राज अणहल नगर, वरस सत्ताणव आगली॥

वाघेलांरे पाटण—१८ वर्ष राव वीसलदेव; ३१ वर्ष अर्जुनदेव; ३३ वर्ष वीरमदेव; २० वर्ष कर्णगैहलो; ४ वर्ष देवराज। सं० १३४० माधव ब्राह्मण प्रधान हुआ, उसकी वाघेलों से विगड़ गई, तब वह जाकर अलाउद्दीन बादशाह को लाया, एक एक मञ्जिल के लाख लाख टके देने किये। धरती तुर्कों ने ली। बादशाह अलाउद्दीन ने टांकों को वहां थाने पर रक्खे थे सो अलाउद्दीन को समुद्र में डाल कर ये टांक (गुजरात के) बादशाह बन बैठे। सुलतान कुतुब तातारखां ने ४५ वर्ष; फरैखान ने ३१ वर्ष; गदाधर (मुदाफर) ने ३ वर्ष; अहमदशाह, जिसने सं० १४३७ में अहमदाबाद बसाया, ३४ वर्ष; दाऊदखां, महंमद वेगड़ा ५८ वर्ष; मुदाफर (मुज़फ्फर) २५ वर्ष; सिकंदर २२ (केवल दो मास); मोहमद १२; बहादुर १०; मोहमद १५; मुदाफर ने १८ वर्ष बादशाहत की। फिर सं० १६२६ कार्तिक शुदि १५ को अकबर बादशाह ने गुजरात फतह की।

बांधोगढ़ के वाघेले—गढ़ बंधव का देश पहले करण डहरिये का था और नौलाख डहर कहलाता था। कर्ण डहरिया जब माता के गर्भ में था तो दिन पूरे होने पर उसकी माता कष्टी हुई, ज्योतिषियों ने कहा कि अभी लग्न अच्छा नहीं है यदि दो घड़ी उपरान्त बालक जन्मे तो वह महाराजा पृथ्वीपति होवे। कर्ण की माता ने समय टालने को अपने पांव ऊपर को बंधवा दिये। वह तो उस पीड़ा से मरगई परन्तु बालक जीता जागता जन्मा[1]। बड़ा होने पर

(१) बङ्गाल के सेनवंशी राजा लक्ष्मणसेन के जन्म विषय में भी ऐसी ही कथा कही जाती है।

गङ्गा जमना के बीच के देश का प्रतापी महाराजाधिराज हुआ। जब कर्ण ने यह सुना कि मेरी माता ने मेरे वास्ते इतना कष्ट सहकर प्राण त्यागे हैं तब उसने ८४ नये तालाव बनवा कर एक ही दिन में उन सब के जल से अपनी माता का तर्पण किया और दूसरे भी कई दान पुण्य किये। कर्ण की राजधानी कालिंजर प्रयागराज से ४० कोस पर थी। बाघेलों ने बसी हुई धरती लेकर बंधवगढ़ में राजधानी की।

वरसिंहदेव बाघेला गुजरात से गंगाजी की यात्रा को आया तब बंधवगढ़ की ठौड़ निर्बल लोधे राजपूत रहते थे। उसने यह स्थान भांपा और गंगा के निकट मनोहर भूमि देख कर उसे लेने को वरसिंह का मन ललचाया। लोधों को मार कर देश लिया और बंधवगढ़ बसाया[1]। वंशावली—१ राजा वरसिंहदेव; २ राजा वीरभाण; ३ राजा मणिभाण; ४ राजा रामचंद्र वीरभाण का बड़ा दातार हुआ, च्यार कोड़ पसाव का दान दिया। एक क्रोड़ नरहर महापात्र को, एक क्रोड़ चतुर्भुज दसोंधी को, एक क्रोड़ भैया मधुसूदन नरहर के पुत्र को, और एक क्रोड़ कलावन्त तानसेन को। ५ वीरभद्र रामचंद्र का; ६ दुर्योधन; ७ प्रतापादित्य। राजा विक्रमादित्य (रामचंद्र का पुत्र) मुकुंदपुरे में रहता था और राजा मानसिंह (कछवाहे) का जमाई था। बाबू इंद्रसिंह, राजा मानसिंह का दोहिता। विक्रमादित्य के पुत्र सरूपसिंह, और राजा अमरसिंह जिसके साथ सं० १६९० में राजा गजसिंह (जोधपुर) की कुमारी चांदजी का विवाह हुआ था। बंधवगढ़ से २० कोस इधर गांव रैयो बसता था। सं० १७०७ में अमरसिंह ने काल किया, उसके पुत्र राजा अनूपसिंह, फतहसिंह, और मंगदराय थे।

---

(१) अभी बघेले अपनी उत्पत्ति राजा व्याघ्रदेव से मानते और उसका समय सं० ६३७ वि० का बतला कर उसे जयसिंह सिद्धराज सोलंकी का पुत्र होना कहते हैं। यह ऊट पटांग बात है। नैणसी का कहा हुआ वरसिंघदेव ही शायद पीछे बाघदेव होगया हो। गुजरात के सोलङ्की राजा कुमारपाल की मौसी का विवाह धवल के साथ हुआ था। धवल के पुत्र अर्णोराज या आनाक को कुमारपाल ने व्याघ्रपल्ली गांव जागीर में दियां, वहां रहने से उसकी सन्तान बाघेला नाम से प्रसिद्ध हुई हो। सम्भव है कि क़रीब सौएक वर्ष तक आनाक की सन्तान गुजरात ही में रही हो और सं० १५०० वि० के लगभग वरसिंघदेव डाहल मण्डल में आकर आबाद हुआ हो।

डाहल मण्डल पहले कलचूरियों के अधिकार में था, राजा कर्ण डहरिया इसी वंश का था जिसने सोलङ्की राजा भीमदेव प्रथम से मिल कर राजाभोज परमार के समय में

मेवाड़ के चाकर देसूरी के सोलंकी।

सोलंकियों से (अणहिलपुर) पाटण का राज छूटा तब उनमें से भोजा देपावत नाम का सोलंकी सीरोही के गांव लास मूणावद में आरहा। सिरोही के राव लाखा (राव सहसमल का पुत्र) और सोलंकी भोजा के परस्पर शत्रुता होगई। राव लाखा नें पांच छः वार भोजा पर चढ़ाई की परन्तु प्रत्येक लड़ाई में लाखा हारता रहा, तब उसने ईडर के राजा को अपनी सहायता पर बुलाया। राजा ने लाखा से पूछा कि तुम इतनी लड़ाइयां भोजा से हारे इसका कारण क्या है? लाखा ने उत्तर दिया कि सोलंकी परा बांध कर अपने भालों को झुकाये हुए इस चपलता के साथ धावा करते हैं कि मेरे आदमियों के पग छूटजाते हैं। ईडर के राजा ने कहा कि इसबार अपने भी उसी तरह हमला करेंगे, वे दोनों लास पर चढ़ आये, युद्ध हुआ जिस में चौहान जीते, भोजा मारा गया, लास सिरोही के हाथ आई। भोजा के पुत्र परिवारादि ने आकर मेवाड़ के राणा की शरण ली, कुम्भलमेरु पहुंचें और राणा रायमल से मुजरा किया। उन दिनों में देसूरी का इलाक़ा मादड़ेचे चौहानों के अधिकार में था, वे राणा की आज्ञा पालन न करते थे। राणा व उसके कुंवर प्रथीराज ने सोलंकियों को वह स्थान देना विचारा। पहले तो सोलंकी रायमल व सामन्तसिंह ने यह अर्ज़ की कि ये चौहान हमारे सगे सम्बन्धीं हैं। राणा ने साफ कह दिया कि हमारे पास तुम्हें देने को दूसरी कोई ठौड़ नहीं, तब तो उन्होंनें भी आज्ञा मानी, देसूरी गये, मादड़ेचे आल्हण और उसके १४० आदमियों को मार कर देसूरी पर अधिकार कर लिया। गांव १४० देसूरी के पट्टे हैं।

वंशावली—१ भोजा देपावत, २ त्रिभुवन, ३ पाता, ४ रायमल, ५ सामन्तसिंह, ६ देवराज, वीरमदेव, ७ जसवंत, और दलपत। उन १४० गांवों में विभाग—१२ गांव आगरिया के, १२ बंसरोट के, १२ धामणिये के, १२ सेवंत्री के, १२ देसूरी के, ये पाटवी, १२ टोलाणा के, ८ गोडवाड के, १ आना, १ करणवास, १ वांसड़ा, १ मांडपुरा, १ केसूली, १ गाथी, १ गोढलम, १ चापडेरा।

धारानगरी पर चढ़ाई की थी। फारसी तवारीखों में बघेलखण्ड का पुराना नाम भाट या भटा देश भी मिलता है। सं० १४६४ ई० में देहली के बादशाह सिकंदर लोदी ने बघेल राजा भिरदेव पर चढ़ाई की जो भाट देश का राजा कहलाता था। अबुल्फज़ल भी राजा रामचंद्र बघेल को भाट देश का राजा लिखता है।

खैराड़े सोलंकी ।

फूलिया से १२ और मांडलगढ़ से ११ कोस जहाजपुर नामी क़सबे में राम कुम्भा खैराड़ा का निवास स्थान था, उसके गांव ६५ दाम ४१६१६५ या रु० १०४७५४॥।)५ की रेख के थे। मांडलगढ़ व नंदराय बाल्हणोत सोलंकियों का वतन, जो सदा से राणा के चाकर थे। जब अकबर बादशाह ने रणथम्भोर लेकर आगे चित्तोड़ की तर्फ़ कूच किया तब सोलङ्की भवानीदास और वल्लू, जो मांडलगढ़ में थे, गढ़ छोड़ कर चुपके से भाग गये और बादशाह ने गढ़ लिया। मांडलगढ़ वड़ी ठौड़, ऊपर जल बहुत, और पहले वहां सोलंकियों की बस्ती भी अच्छी थी, बहुत से महाजन गढ़ पर बसते और वहां जैन मत के कई मंदिर थे। सं० १७११ में बादशाह शाहजहां ने चित्तोड़गढ़ तुड़वाया और राणा के ४ परगने लिये जिन में एक मांडलगढ़ भी था, जो बादशाह ने राव रूपसिंह भारमलोत (राठोड़) को दिया। रूपसिंह अपनी वसी लेकर गढ़ पर जारहा। सं० १७१४ के जेठ मास में रूपसिंह काम आया[1] तब गढ़ छूटा। मांडलगढ़ से चित्तोड़ १७ कोस, बदनोर २८ कोस, अजमेर ४५ कोस, बेघम १० कोस, भैंसरोड़ १७ कोस, जहाजपुर ११ कोस, बूंदी २२ कोस, और सकरगढ़ १२ कोस है।

वंशावली—भवानीदास; उसका पुत्र वल्लू जिसके दो बेटे बणवीर और बीका; बणवीर का पुत्र नंदा, और बीका के बेटे साहबखान और सांईदास थे। सांईदास का बेटा राव मनोहर।

—:o:—

टोडे के सोलंकी ।

तोडा (टोडा) नागरचाल का (ढुंढाड़ में) सोलंकियों का मूलथान है, जहां जहां जितने सोलंकी हैं वे सब तोडे से गये हुए हैं। वहां के स्वामी राव कहलाते, ये कील्हणोत सोलंकी हैं। तोडरी (टोडा के पास एक गाव) सोलंकी

(१) राजपुरे गांव के पास औरंगज़ेब और दारा का युद्ध हुआ तब रूपसिंह दारा के पक्ष में औरंगज़ेब से लड़कर बड़ी वीरता के साथ मारा गया था।

महिल गोत्रियों का वतन फालपुर टोडरी के पर्गने का गांव माल पंवार का बसाया हुआ है, पहले उस स्थान के अधिपति सोलंकी थे। तोडरी का राव सुरताण महिल गोत्री सोलंकी था।

सोलंकियों की पीढ़ियां—आदि नारायण, कमल, ब्रह्मा, धूमरिष, वाच, वालग, सूकर, अर्जुन, अजयपाल, देवपाल, राजी, मूलराज द्रोणगिर, वल्लभराव, भीम, करण, सिद्धराव, हितपाल, कीर्तिपाल, वालपसाव, वाहड़, सांगा, गोयंदराव, कान्हड़ सोहिल तोडे का राव, दुर्जणसाल, हरराज, राव सुरताण, ऊदा, वैरा, ईसरदास, राव दलपत, राव अणदा, राव श्यामसिंह तोडरी वास, राव महासिंह[1]।

राव सुरताण हरराज का तोडरी छोड़ कर चित्तोड़ में राणा रायमल के पास आरहा और राणा ने वदनोर का पर्गना उसे जागीर में दिया था। उसकी पुत्री तारादेवी का विवाह राणा रायमल के पाटवी पुत्र पृथ्वीराज के साथ हुआ। पृथ्वीराज तो अपने पिता की विद्यमानता ही में विष प्रयोग से मरगया और राणा ने जयमल (दूसरे पुत्र) को टीकायत किया। जयमल का राव सुरताण पर कोप था, राव ने तो उसकी कृपा सम्पादन करने की पूरी कोशिश की परन्तु कुंवर ने एक न सुनी और कटक लेकर वदनोर पर चढ़ गया। राव सुरताण के साले रतना ने जयमल को मारा और आप भी मारा गया[2]।

इस प्रकार जयमल और रतना दोनों मारे गये, राणा की फौज पीछी फिरी आकड़सादे और सथाणे के बीच जयमल को दाग दिया गया। वदनोर के इलाक़े में पहले मेर गूजर रहते थे अब वहां जाट भी हैं जिन्हों ने मुझ से कहा कि हम राव सुरताण की वसी के हैं।

---

(१) गुज़रात के सोलंकियों की बात में नैणसी ने उनके मूल पुरुष राज बीज को टोडे से गये हुए लिखे हैं परन्तु यहां टोडे के सोलंकियों का गुजरात वालों की शाखा में होना पाया जाता है।

(२) इसका पूरा वृत्तान्त पृष्ठ ४४—४५ में देखो।

नाथावत सोलंकी ।

मूल में तो ये टोडे के सोलंकियों से मिलते हैं, पीछे इनके वंशज नैणवे में आरहे (बूंदी राज्य में) जहां पहले भोजावतों की ठाकुराई थी जिनको नाथावत राघोदास दूलावत ने मार कर निकाल दिये और भूमिया बंट छीन लिया। राघोदास का पुत्र नाहरखान वीर राजपूत हुआ उसको राव रत्नसिंह हाडा ने ६००००) रुपये का पट्टा दिया। इनकी बस्ती बूंदी के गांव डूंगोरी सूंहते में थी। बूंदी के दर्बार में नाथावतों का बड़ा जोर था। जब राव रत्नसिंह ने काल किया तब नाहरखान बादशाह शाहजहां का चाकर होगया और नैणवा जागीर में पाया। अभी नाहरखान का बेटा सूरसिंह नैणवे में है। नाहरखान के बनाये हुए महल बाग़ और बादशाह की दीहुई बहुतसी भूमि उसके अधिकार में है। सारे परगने में उसका भूमिया बंट का एक रुपये पीछे एक टका लगता है।[1]

---

(१) गुजरात के सोलंकियों की वंशावली प्राचीन शिलालेखादि से—नैणसी सोलंकी मात्र का मूल स्थान टोडा बतलाता, परन्तु वह स्वीकारने योग्य नहीं, क्योंकि कई प्रमाण ऐसे मिलते हैं जिनके आधार पर गुजरात के सोलंकियों को टोडे से निकले हुए नहीं वरन् लाट देश के सोलंकियों की शाखा होना कह सकते हैं। फार्बस साहब अपनी पुस्तक रासमाला में गुजरात के चौलुक्यों को कल्याणी से निकले बतलाता; मेरुतुंग (चवदवीं शताब्दी में हुआ एक जैनाचार्य) लिखता है कि वे कन्याकुब्ज की राजधानी कल्याणनगर से आये थे। कन्याकुब्ज से अभिप्राय कन्नौज से नहीं किन्तु कर्णाटक से है।

गुजरात के सोलंकियों का मूल पुरुष मूलराज प्रबन्ध चिन्तामणि के अनुसार सं० १०१५ में और विचारश्रेणी के अनुसार सं० १०१७ में सामन्तसिंह चावड़े से राजछीन कर गद्दी बैठा और सं० १०५२ में मरा।

चामुण्डराज, मूलराज का पुत्र, सं० १०६६ तक राज किया। बड़ा व्यभिचारी था, अतएव उसकी बहन ने उसे राजच्युत करा उसके पुत्र वल्लभराज को गद्दी बिठाया। पुत्र— वल्लभ, नागराज, दुर्लभराज। वल्लभराज-राज पर आने के थोड़े ही समय पीछे मालवे पर चढ़कर जाता था, मार्ग ही में मरगया।

दुर्लभराज-जिनेश्वरसुरि का शिष्य जैन मतावलम्बी; अपनी बहन का विवाह स्वयम्बर द्वारा नाडूल के चौहान राजा महेन्द्र के साथ किया। पुत्र नहीं, नागराज के पुत्र भीमदेव को गद्दी पर बिठाकर दुर्लभ व नागराज दोनों ने सन्यास लिया।

भीमदेव, सं० १०७८ में गद्दी बैठा। सुलतान महमूद ग़ज़नवी ने सोमनाथ का मंदिर लूटा, कर्ण कलचूरी व भीमदेव दोनों ने मिलकर मालवे पर चढ़ाई की, धारा नगरी लूटी

प्रकरण चौथा।

पड़िहार या प्रतिहार वंश।

पड़िहारों की शाखा नीलिया के पुत्र भाट खंगार की लिखाई हुई—पड़िहार, ईंदा, मलसिया, कालया, धासिया, बूलणा, लूलोरा मियां के वंशज, रामावट, बोथा मारवाड़ में पाटोदी के पास हैं, वारी मेवाड़ में राजपूत हैं और मारवाड़ में तुर्क हैं, धाधिया, कवरा बहुत राजपूत हैं जोधपुर में, खरवड मेवाड़ में बहुत हैं, फला सीरोही जालोरी में हैं, सिधका मेवाड़ और बीकानेर में हैं,

---

और शायद भोज राजा युद्ध में मारागया। आबू पर विमल वसही नामका ऋषभदेव का प्रसिद्ध मन्दिर बनवाने वाला विमलशाह पोढवार भीमदेव की ओर से दण्डनायक होकर आबू पर रहता था। पुत्र—क्षेमराज, कर्णदेव। अन्तिम अवस्था में वानप्रस्थ हो सरस्वती के तट पर तप करने सं० ११२० में चला गया, बड़ा बेटा क्षेमराज भी पिता की सेवा के लिये साथ रहा।

कर्णदेव या कर्णराज—आसावल (अहमदावाद) के भील कोलियों को जीते, गिरनार पर्वत पर नेमिनाथ का मन्दिर बनवाया। पुत्र जयसिंह।

सिद्धराव जयसिंह, सं० ११५० में गद्दी बैठा। सोरठ के राजा नवधण या खंगार को युद्ध में मारा, उसकी राणी राणकदेवी को साथ लाया, परन्तु वह मार्ग में बढ़वान के पास जीती अग्नि में जलकर मर गई। इस फतह की यादगार में सिद्धराज ने अपना "सिंह" संवत् चलाया जिसका पहला वर्ष सं० ११७० वि० में होता है। बारह वर्ष युद्ध कर मालवा जीता और वहां के परमार राजा यशोवर्मा को कैद कर लिया, अजमेर के चौहान राजा अरुणोराज पर विजय पाई। सिद्धपुर बसाया। एक पुत्री का विवाह चौहान राजा अरुणोराज से, और दूसरी का जेसलमेर के रावल जांजा विजयराज से किया। पुत्र नहीं।

कुमारपाल—देवपाल का पौत्र, जैन यति हेमचन्द्राचार्य का शिष्य। चौहान राजा अरुणोराज को सं० १२०७ में युद्ध में जीता, मालवे के राजा बल्लाल, कोकण के शिलार वंशी मल्लिकार्जुन और चन्द्रावती के परमार राजा यशोधवल (हेमचन्द्राचार्य विक्रमसिंह कहता) को युद्ध में जीते। बड़ा प्रतापी हुआ, अपना राज्य दूर दूर तक पहुंचाया, सं० १२३० में निस्सन्तान मरा।

अजयपाल—कुमारपाल के भाई महीपाल का पुत्र था, चौहान राजा सोमेश्वर को युद्ध में हराया। तीन वर्ष राज कर एक द्वारपाल के हाथ से मारा गया। जैनियों का परम विरोधी

चोहिल मेवाड़ में हैं, चैनिया फलोधी की तर्फ हैं, वोभ्करा, गंधरा मारवाड़ में भाट हैं, धनेरिया भूसलिया खीचींवाड़ में राजपूत हैं, वाफणा और चोपड़ा वनिये हैं, पेसवाल खोखरिया के रैवारी, गोढला, टाकसिया मेवाड़ में, चांदा के कुम्भार नींबाज वाले, माहप राजपूत मारवाड़ में वहुत, डूराणा राजपूत, सवर मारवाड़ में राजपूत, पूसोर और सासोर, जेठवे (पोरवंदर के राजा) पड़िहारों में मिलते हैं।

सिखरा ईंदा पड़िहार की बात--जेसलमेर के सोढों में कोटेचे राजपूत जिनकी वड़कुमारी पुत्री को व्याहने के वास्ते सोहिल पड़िहार आया। भली भांति विवाह कर पीछा फिरा, मार्गमें गोठ की और १६ वकरे मारे, उनकी सूंडियां चरवे में भर रक्खीं (कि कल नाश्ते को काम आवेंगी)। वहां से कूच हुआ, आगे एक तालाव पर ठहरे, साथ के राजपूत स्नान सेवा में लगे, कोटेची का सुखपाल भी ठहरा। दासी झारी भरलाई, उसने दातन किया और स्नान करके सिरामण (नाश्ता) मांगा। दासी बोली बाईजी! यहां और तो कुछ है नहीं चरवे में बकरों की सूंडियां तो हैं। कहा वेही ला! दासी परोसती गई और वह सूंडियां चट करती गई। अव साथ के ठाकुरों ने जलपान मंगाया। दासी से कहा कि वह चरू ला, दासी बोली कि चरू का क्या करोगे उसमें की चीज की तो चटनी होगई। सारे ठाकुर चुप साध रहे और वहां से चल पड़िहारे आये। वहां ठाकुर व उसके प्रधान ने मिलकर सलाह की कि इस रजपूताणी का भार हमसे न सहा

था। हेमचन्द्र के शिष्य रामचन्द्र को जीता आग में जला दिया, कई जैन साधुओं के प्राण लिये और उनके मन्दिर तुड़वा डाले।

मूलराज दूसरा—अजयपाल का पुत्र, माता नायकदेवी महोवा के चन्देल राजा परमर्दिदेव की पुत्री थी। अपने बालक पुत्र को गोद में बिठाकर सं० १२३४–३५ में सुलतान शहाबुद्दीन गोरी के मुक़ाबले को गई, गादरागढ़ में युद्ध हुआ, सुलतान के कई योद्धा मारे गये और सुलतान ज़ख्मी होकर हारा।

भीमदेव दूसरा, अजयपाल का छोटा भाई, सं० १२३५ में गद्दी बैठा। सुलतान कुतबुद्दीन ऐबक ने अणहिलपुर फतह किया, परन्तु उसके मरते ही भीमदेव ने पीछा लेलिया। मुसलमानों के साथ युद्ध करने से निर्बल पड़जाने के कारण भीमदेव के मुख्य मंत्री धोलके के राणा वीरधवल बाघेला ने स्वतंत्रता पकड़ी और उसका बल बढ़ता गया। सं० १२९८ में भीमदेव मरा और अन्तिम राजा त्रिभुवनपाल से सं० १३०० वि० के लगभग वीरधवल के पुत्र वीसलदेव बाघेला ने गुजरात का राज छीन लिया।

जावगा, इसलिये उसके पिता को पत्र लिखा कि हमें तुम्हारी बेटी नहीं चाहिये। वह पत्र ठकुरानी के हाथ आया, उसने भी अपनी सारी हक़ीकत पिता को लिख भेजी। तब कोटेचे ने अपनी लड़की को बुलवाली। यह बात मालाजी (राठोड़ मल्लिनाथ मेहवे के) ने सुनी कि अमुक राजपूत ने खाने के बदले अपनी स्त्री को त्यागदी हैं। तब रावल मालाजी ने कहा कि उस राजपूत ने बड़ी भूल की, ऐसी रजपूताणी के पुत्र बड़े बलवंड वीर योद्धा होते जो गढ़ों के किवाड़ तोड़ते, भूतों से लड़ते और जीते हुए सिंहों को पकड़ लाते। वेहलवे का राणा ईंदा उगमसी रावल मल्लिनाथ के पास चाकरी करता था, उसने रावल के मुंह से यह बात सुनी, तब अपने आदमी भेजकर कोटेचे को कहलाया कि तुम अपनी बेटी मुझे देदो। कोटेचे ने पुत्री को उसके यहां भेजदी। उगमसी उसको अपने घर लाया, बड़ा आनंद मनाया और सुख पूर्वक रहने लगा। कोटेची के सात पुत्र हुए—सिखरा, रायधवल, ऊदा, राजा, लखा आदि।

एक दिन रायधवल और ऊदा दोनों खेलते खेलते जंगल में चले गये और वहां एक बघेरा देखा। साथ में और भी बालक थे जिन्हों ने कहा कि यह कैसा जानवर है। तब ऊदा रायधवल ने जाकर उसके कान पकड़ लिये और उसे खींचते हुए अपने घर ले आये, वहां मेख गाडकर उसको बांध दिया। जब लोगों ने देखा कि यह तो नाहर है तब कहने लगे कि रावलजी ने जो वचन कहे थे वे सत्य निकले।

वहलवे और मेहवे के बीच झोटेलाव नाम का एक तालाब है जहां एक प्रबल भूत रहता था। सूर्यास्त होने के पीछे यदि कोई मनुष्य उस तालाब की ओर जा निकलता तो वह भूत उसको मार डालता था। एक दिन जगमाल (रावल मल्लिनाथ का पुत्र) को अपने पिता का वचन याद आगया और विचारा कि किसी वेर (उगमणावत की) परीक्षा करनी चाहिये। उजियाली चतुर्दशी (चातुर्मास्य में) शनि व आदित्यवार के दिन मेह की झड़ी लग रही थी उस वक़्त जगमाल ने बलाइयों को कहा कि झोटेलाव तालाब पर जाकर [illegible] दो भार लकड़ी के डाल आओ। बलाई लकड़ी डाल आये। च्यार घड़ी रात गये रावल जगमाल ने सिखरा को बुला कर कहा कि आज झोटेलाव तलाव के ऊपर सूले (कंवाव) सेंक कर पीछे घर जाना। और बांभी (बांभी और बलाई पर्याय वाची हैं ये लोग कमीन जाति के गिने जाते, बेगार करते, घोड़ों

के सईस रहते और मोटे कपड़े भी बुनते हैं) को हुक्म दिया कि एक बकरा ले आ। सिखरा ने बकरे के कान को चीर कर उसे साथ ले लिया और तालाव पर जाकर घोड़े से उतर उसको तो डुबकी देकर चरने के वास्ते छोड़ा, और आप दोहर बिछा कर वड़ तले बैठ गया, चकमक से आग भाड़ी और लकड़ियां सुलगाईं। फिर अपनी ढाल पर शस्त्र रख लंगोट लगा तालाव में स्नान के वास्ते घुसा, तव भूत भैंसा बनकर साम्हने आया परन्तु सिखरा कुछ न बोला। पीछा आकर बकरे को मारा, तव भूत विशाल विकराल रूप धर कर आया। रावल जगमाल ने पीछे से ४ सवार भेज उनको समझा दिया था कि छुपे हुए सब हाल देखते रहना, ये दूर खड़े हुए देख रहे थे। सिखरा ने भूतसे कहा कि तेरे रूप से मैं डरने वाला नहीं परन्तु मैं मनुष्य हूं इसलिये मैं इतना ऊंचा नहीं पहुंच सकता। तव भूत भी मनुष्य वनगया। सिखरा ने कहा कि आ, पहले सूले खाले पीछे अपन लड़ेंगे। भूत पास आन बैठा। बकरे की खाल निकाल टुकड़े किये, पिण्डे का मांस काटा और तर्कश में से लोहा निकाल उस पर वोटियां चढ़ाईं, सेंक व नमक लगा लगा कर भूत को भी देता गया और आप भी खाने लगा इतने में तो दूसरे भूत भी वहां आन बैठे। सिखरा ने उनको कहा कि लकड़ियां ले आओ। भूत लकड़ियां लाने लगे, इस तरह इसने बकरे का सारा मांस खिला कर पूरा किया, जब सिर रहगया तो उसको भूत के हवाले कर दिया। आप कपड़े पहन हथियार बांध घोड़े चढ़ लड़ने को तयार होगया। भूत को कहा कि बकरे के मुख को बंद करके उसके दांतों को ढकदे। भूत हाथी का रूप धर आया, खूब चोट चपेट हुई, सिखरा की तलवार के झटके से हाथी की सूंड कटगई तब तो उसने ऐसे ज़ोर से चीख़ मारी कि वहां का एक एक झाड़ व ठूंठ तक हिल गया। जो सवार खड़े देखते थे उनमें के दो तो मारे भय के वहीं मर गये और दो मूर्छा खाकर गिर पड़े। प्रभात को रावल ने फिर सवार भेजे, वे आकर क्या देखते हैं कि घोड़े तो कायजा किये हुए खड़े हैं पर सवारों का पता नहीं, इधर उधर खोज की तो दो तो मरे हुए पड़े थे और दो को सिसकते पाये जिनको उठा कर घर लाये। रावल मल्लिनाथजी ने ईश्वर का नाम लेकर उन पर हाथ फेरा, दस बारह दिन में वे होशियार हुए और सारी हक़ीकत कही। तब रावलजी ने सिखरा से पूछा कि भूत का साम्हना हुआ कि नहीं। सिखरा ने केवल इतना ही कहा कि मिला तो था परन्तु मुक़ाबला न हुआ।

ऊदा उगमणरावत–रावल मल्लिनाथजी की सेवा में मेहवे में था उन दिनों में एक बाघ गोपाल की पहाड़ी में रहता और बहुत बिगाड़ करता था. राजपूत बारी बारी से उस पहाड़ी की चौकी पर भेजे जाते थे। एक दिन ऊदा की बारी भी आई, उसने जाकर पहाड़ को घेरा, बाघ को पकड़ लाया और रावल के हुजुर्द किया। रावल ने उसकी बहुत प्रशंसा करके बाघ उसी को देदिया। ऊदा ने उसके गलमें एक घण्टी बांध कर छोड़ दिया और सब को कह सुनाया कि जो कोई इसे मारेगा उसके साथ मेरी शत्रुता होगी। बाघ स्वतन्त्रता के साथ फिरने और बड़ी हानि करने लगा परन्तु मारे कोई नहीं। एक बार घूमता घूमता वह भाद्राजण जा निकला, वहां के सिंधल राजपूतों ने उसे मार डाला। वैर बंधा और ईंदों व सिंधलों में लड़ाई हुई, २५ सिंधल मारे गये, भाद्राजण और चौरासी का मार्ग चलना बंद होगया। ऊदा का विवाह ईंहड़ सोलंकी की बेटी के साथ हुआ था, वह सिंधलों की चाकरी करता था। ऊदा की स्त्री भी व्याह होने के पीछे सात वर्ष तक पति के घर न आई, कारण मार्ग रुका हुआ था। एक दिन सिखरा ने वालसीसर पर गोठ की, सब ईंदे वहां जमा हुए, बकरे मारे, खूब नशे पत्ते जमाये। वहां किसी ने हंसी में पूछा कि "ऊदाजी कभी भाद्राजण भी जाओगे"। ऊदा बोला कि आज ही रात्रि को जाऊंगा। उसने अपनी काठण घोड़ी को जव के चून में गुड़ मिलाकर खिलाया. तब उसके भाई सिखराने पूछा कि आज घोड़ी को उड़दावा (गुड़ व आटा) क्यों देता है? कहा भाद्राजण जाऊंगा। सिखरा बोला कि जहां ऐसा बैर पड़ रहा है कि पग पग पर मांटी (मनुष्य) मारे जाते हैं, उस मार्ग से क्यों जाना? तब ऊदाने कहा कि तुमको शपथ है मुझे मत रोको। सांझ को ऊदा चढ़ चला, आधीरात को वहां पहुंचा, सासरे का द्वार खुलवा भीतर गया. सरगरे (डोम) ने जाकर ईंहड़दे (ऊदा की स्त्री) को जगाया, ढोलिया बिछादिया। ऊदा को नींद आगई और वह अपनी घोड़ी का कायजा खोलकर उसे बांधना भूलगया, उसी तरह बाहर खड़ी थी। इतने में ऊदा का साला जागा, घोड़ी देखी, जाना ऊदा की है उसे लेजाकर पायगाह में बांधना चाहा। उस वक्त ऊदा की भी आंख खुल गई, उसने जाना कि घोड़ी को कोई चोर लिये जाता है, भाद्राजण में चोर बहुत हैं, यह समझ कर तलवार खींच हाथ मारा और साले के दो टुकड़े कर दिये। आहट पाकर ऊदा की स्त्री भी जाग उठी देखा भाई मरा पड़ा है। पति से

कहा यह तुमने क्या किया। ऊदा की सास भी आगई सारी बात सुनकर बोली जो भविष्य था सो हुआ, तुम जाकर सोजाओ। अब तो फिर भी वैर बढ़ा। ऊदा तो पिछली रात को सवार होकर चल दिया और पीछे क्या बनाव बना।

आद्राजण के पास ही मेला सेपटा राजपूत रहता था। एक दिन मेला की नाइन ईहड़ सोलंकी के घर गई और वहां ऊदा की स्त्री को न्हलाई। पीछी जाकर मेले को कहने लगी कि ईहड़ की बेटी पद्मनी है और वह आपके योग्य है। तब तो उसके प्रेम की फांसी में मेला बंध गया, जाकर सोलंकियों से कहा कि जो तुम्हारी बहन मुझको दो तो मैं ऊदा से तुम्हारा वैर लेऊं। (सोलंकियों ने भी इसको स्वीकारा)। यह बात ऊदा की स्त्री के कान में पड़ी, तब उसने मेला को कहलाया कि "मेला! मेरा भर्तार व जेठ ऐसे नहीं हैं कि जिनकी स्त्रियां तू लेजावे, यदि उनको कुछ माल न समझ कर उनके विरुद्ध चलने का पराक्रम तुझ में हो तो इधर पांव रखना"। फिर एक ब्राह्मण के हाथ अपने जेठ को सब व्यवस्था कहलाई और उसे चिता दिया कि मेला उधर आता है आप उसकी सेवा यथोचित्त करना। मेला भी अपने कच्छी घोड़े पर सवार होकर चला और बालसीसर के तालाब पर जा उतरा। वहां बकरियां चराने वाले गडरिये आए अपनी छागलें (पानी भरने की छोटी मशकें) छोड़, तीर कमान पृथ्वी पर रख कर बैठे, तब मेला ने उन्हें पूछा कि एवड़ (बकरों का झुण्ड) कहां का है, क्या इनमें से बकरे बिकते हैं? उत्तर दिया जी! येबकरे उगमसी के हैं कोई पाहुना आवे तब मारे जाते हैं, बिकते विकते नहीं। मेलाने कहा, ठाकुरों! आज एक बकरा मुझको दो! गडरिये बोले लेलो। मेला कहता है कि बिना मोल दिये तो मैं न लूंगा, और अपनी थैली में से ६ फदिये (दुअन्नियां) निकाल कर देदिये। एक बड़ा बकरा टालकर लिया, काट कूट कर टुकड़े किये और मांस में बाजरा मिला कर बाजरिया बनाया, क्योंकि उसने सुना था कि सिखरा के यहां दो कुत्ते ज़बर्दस्त हैं जिनके आगे कोई चोर उसके घरमें नहीं घुस सकता है। फिर कुछ मांस आपने भी खाया और गडरियों को भी दिया। गडरियों से कहा कि मैं बीकमपुर जाता हूं। रात्रि को सिखराके गांव पहुंचा। कुत्ते दौड़कर पीछे पड़े सो बकरे की हड्डियां बांध लाया था वे उनके आगे फैंकदीं, वे तो उनको चबाने में लगे और आप घर में घुस कर जहां ऊदा सोता था वहां पहुंचा, शस्त्रों की बाढ़ियां उसके बिछोने के गिर्द काटकर रखदीं और सिखरा की स्त्री

की चोटी काटकर पीछा फिर गया। थोड़ी देर पीछे स्त्री जागी, सिरपर हाथ फेरा तो चोटी नहीं। उसने कहा कि मेला आया और मेरी चोटी काटकर लेगया। सिखरा तत्काल उठा, शस्त्रों के बन्ध भी कटे हुए पाये, बर्छी हाथ में ले अबलख घोड़े पर सवार हो दौड़ा। लौटते हुए मेला ने उन कुत्तों को काट डाले थे, और उसका अमल का पोता भी खुल कर गिर पड़ा था। सिखरा घोड़े के खोजों लगा, पोता नज़र आया उसे उठा लिया, आगे हड्डियां बिखरी हुईं और कुत्तों को कटे हुए पड़े देखे। ऊदा की घोड़ी की बछेरी सिखरा के साथ लगगई थी। मेला रात ही रात में चलकर प्रभात होते कोढणे के तालाब पर पहुंचा, अमल-पानी का समय था पोता संभाला तो पाया नहीं, तब घोड़े से उतर कर घासिया डाल सोरहा। सिखरा भी वहां आन पहुंचा, किसी आदमी को सोता देखा, घोड़े पर निगाह पड़ते ही उसने पहचान लिया कि है तो मेला, परन्तु सोता क्यों है? पास जाकर कपड़ा खींच जगाया और नाम पूछा, उसने उत्तर दिया कि मेरा नाम मेला सेपटा है। सिखरा कहने लगा, मेलाजी चौरासी को छेड़ा है, स्थल स्थल पर टोलियां खड़ी हैं ऊदा जैसे रजपूत को खिजाकर फिर निश्शङ्क कैसे सोते हो? मेला ने पूछा, आपका नाम क्या है? उसने कहा सिखरा। तब तो मेला चौंका, कहने लगा इस वक़्त मेरा तो अमल उतर रहा है। सिखरा ने कहा उठो अमल लो! मेलाने कहा मेरा तो अमल का पोता कहीं मार्ग में गिर पड़ा, मैं अपने ही पोते की अमल खाता हूं। सिखराने वह पोता निकाल कर मेला के हाथ दिया, छागल में जल भर लाया, अमलपानी कराया और कहा मेलाजी अब थोड़ा आराम करलो मैं तुम्हारे पांव दबा दूंगा। मेला सो रहा, थोड़ी देर पीछे जगा, आंखें छांट शस्त्र बांधे। सिखरा ने पूछा कि युद्ध किस प्रकार करोगे। कहा सवार होकर, फिर अपने घोड़े पर चढ़ चाबुक फटकारा वह तो हवा होगया और सिखरा देखता ही रहा। उसने घोड़ा साथ दिया, परन्तु मेले को न पहुंच सका। सिखरे के घोड़े के साथ जो बछेरी आई थी वह भागती भागती मेला के घोड़े से सौ क़दम आगे जाकर पीछी फिरने लगी, तब सिखरा ने विचारा कि मेरा घोड़ा तो पहुंच सकेगा नहीं, तुरन्त बछेरी को पकड़ कर उस पर चढ़ बैठा और मेला को जालिया। संमुख होकर बर्छी मारा, वह छाती के पार हुआ और मेला वहीं ढेर होगया। इतने में सिखरा का भाई ऊदा भी आन पहुंचा, देखा कि मेला मरा हुआ पड़ा है, भाई को कहा कि इसका अग्नि

संस्कार करना चाहिये। दाग से निवृत्त होकर ऊदा बोला कि मेला जैसा राजपूत रवड़ता हुआ जावे यह अच्छा नहीं, वह मेला की पाघ लेकर उसकी कोटड़ी गया और पुकार कर कहा "ठाकुरो! मेलोजी काम आये हैं, यह उनकी पाघ लो, सिखरा ने उन्हें मारा है, दाग देदिया गया है"। भीतर से मेला के पुत्र ने उत्तर दिया "ठाकुरां हमारे तुम्हारे कोई वैर नहीं, पिता अन्यायी था, जैसा किया वैसा फल पाया, आप भीतर पधारिये ऊदा ने कहा—"सिखरा की वेटी को हमने मेला के वेटे को दी, देव उठने पर ब्राह्मण के हाथ तिलक भेजदेंगे, ब्याह करने को सत्वर पधारना"। इसप्रकार वैर मिटा कर ऊदा पीछा आया और विवाह भी कर दिया।

सं० ११०० में नाहर राव पडिहार ने मंडोवर वसाया[1]

---

(१) मंडोर के प्राचीन राजाओं तथा पड़िहार वंश का ख्यात में कुछ भी वर्णन नहीं। शायद ऐसी ख्यातें लिखी जाने के समय पड़िहारों का कोई राज राजपूताने आदि में नहीं रहने से उनका इतिहास न लिखा गया हो। केवल पृथ्वीराज रासे या अन्य दन्तकथाओं के आधार पर यह प्रसिद्धि होगई कि पडिहार भी अग्निवंशी हैं। मैं यहां केवल उनकी वंशावली आदि बहुत ही संक्षेप रूप में पाठकों के अवलोकनार्थ देता हूं जैसी की पडिहारों के प्राचीन शिलालेखादि से जानी गई। पहले पडिहार अपने को अग्निवंशी नहीं मानते थे जोधपुर राज के घटियाले गांव से मिले हुए पडिहार राजा कक्क (कर्क) और उसके पुत्र बाउक के सं० ८६४ व ९१८ वि० के लेखों में पडिहारों की उत्पत्ति ऋषि हरिश्चन्द्र की क्षत्राणी पत्नी भद्रासे बतलाई है। भद्रा के पुत्र भोगभट्ट, कक्क, रज्जिल और दद्द ने अपने बाहुबल से मांडव्यपुर का गढ़ लेकर वहां अपनी राजधानी स्थापन की। कन्नौज के पडिहार महाराजा भोजदेव (सं० ९०० से ९४०) के लेख में दिया है कि ककुत्स्थ वंश में राम हुए जिनका छोटा भाई सौमित्री (लक्ष्मण) प्रतिहार था, उसका वंश प्रतिहार नाम से प्रसिद्ध हुआ। ऋषि हरिश्चन्द्र की ब्राह्मण स्त्री से ब्राह्मण प्रतिहार हुए। मारवाड़ में पुष्करणे ब्राह्मणों में प्रतिहार गोत्री हैं।

प्रतिहारों का मूलस्थान भीनमाल (मारवाड़ में) और मांडव्यपुर (मंडोर) था, भीनमाल के पड़िहार राजाओं ने विक्रम की नवीं शताब्दी में कन्नौज के महाराज्य को विजय किया और दो सौ वर्ष से कुछ अधिक समय तक उत्तरी भारत के बड़े विभाग पर शासन करते रहे।

मंडोर के पड़िहार राजा—कक्क, रज्जिल, नरभट रज्जिल का पुत्र, नागभट या नाहड़। पड़िहार राजा बाउक के लेखमें उसका (नाहड़ का) राजस्थान मेडंतक (मेड़ता) में होना

प्रकरण पांचवां



परमार या पंवार वंश

आबू पर वशिष्ठ ऋषि ने दैत्यों को वध करने के वास्ते च्यार कुल के क्षत्री उत्पन्न किये-चहुवाण, चौलुक्य, पड़िहार, और परमार । परमारों का गोत्रोंचार-आबूथान, अनल कुण्ड निकास, पञ्च प्रवर, वशिष्ठ गोत्र, माध्यंदिनी शाखा, सचियाय कुलदेवी ।

लिखा है। सम्भव है कि कन्नौज का महाराज्य भीनमाल के पढिहारों को मिला तब उन्होंने मंडोर अपने मेड़ते वाले भाइयों को देदी हो, जिससे फिर मेड़ता व मंडोर का राज एक होगया हो ।

तात-नागभट का पुत्र, अपने छोटे भाई को राज दे आप मांढव्य ऋषि के आश्रम में जाकर तपस्या करने लगा ।

भोज-तात का छोटा भाई, पुत्र यशोवर्धन राजा हुआ । यशोवर्धन का उत्तराधिकारी उसका पुत्र चंदुक था ।

शीलुक-चन्दुक का पुत्र, जिसने वल्लमण्डल के स्वामि भट्टिक देवराज (जेसलमेर का भाटी राजा, विक्रम की नवीं शतब्दी के मध्य में था) को जीतकर उसका छत्र छीना, त्रेता तीर्थ में नगर बसा कर पुष्करणी बनवाई आदि ।

झोट-शीलुक का पुत्र, अन्तिम अवस्था में त्यागी होकर गंगा तट पर भजन करने चला गया ।

भिल्लादित्य-झोट का पुत्र, मुद्गगिरि (मुंगेर) के पास गौड़ों पर विजय प्राप्त की । वह न्याय, व्याकरण व ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, कला कोशल में निपुण और कवि था । भट्टी वंश की राणी पद्मिनी से बाउक और दूसरी दुर्लभदेवी से कक्कुक नामी पुत्र हुए ।

बाउक-सं० ८६४ वि० में राज पर था । कक्कुक ने मरुमाड़ (मारवाड़), वल्ल मंडल (जेसलमेर का राज्य), तमणी व गुजरात के लोगों की प्रीति सम्पादन की, घटियाले में एक जैन मंदिर बनवाकर धनेश्वर गच्छवालों को सोंप दिया । कक्कुक के पीछे मंडोर के पढ़िहारों का कोई प्रामाणिक वृत्तान्त नहीं मिलता है ।

बूंदी के इतिहास वंश भास्कर में मिश्रण चारण सूरजमल ने ऐसे वंशावली दी है— माहरराज, राघवराज, धनराज, जीवराज अमायिकें जिसके १२ बेटे-लुल्लर, सूर, रामट,

परमारों की ३६ शाखा—पंवार, सोढा, सांखला, भाभा, भावल, पेस, पाणी सवल, वहिया, वाहल, छाहड़, मोटसी, हुंवड़, सीलोरा, जैपाल, कंगवा, कावा, ऊमट, धांधू, धुरिया, भाई, कछोड़िया, काला, कालमुहा, खैरा, खूंटा, ढल, ढेखल, जागा, ढुंढा, गूंगा, गैहलड़ा, कलीलिया, कूंकणा, पीथलिया, डोडा, वारड।

खींवा, मोधक, खुक्खर, चंद, मालदेव, धीर, खीर, डूंगर और सूबर। इनसे पड़िहारों की बारह शाखा चलीं। मोधक के बेटे ईंदा के वंशज ईंदा पड़िहार कहलाये, ईंदा के तुल्लर रुद्रपाल, हरपाल, ठाकुरसी, गोइंद, बुध, पृथ्वीराज, रूपाड़ जिसके १६ पुत्र और हमीर हुए। हमीर बड़ा लम्पट और दुराचारी था इसलिये उसके भाइयों ने राव चूंडा राठोड़ से मिलकर मंडोर का राज उसे दे दिया। मंडोर छूटने पर राणा हमीर बीरूटंका नगर में जा रहा। हमीर के बेटे कुंतल ने भिणाय लेकर वहां राजधानी की। कुंतल के बड़े बेटे बाघ राज ने बुढ़ापे में ईहड़देव सोलंकी की बेटी जयमती से विवाह किया। वह कुलटा अपने पति को छोड़ भोजा गूजर के घर में जा बैठी। पड़िहारों और गूजरों में लड़ाई हुई जिसमें २४ भाई बघड़ावत मारे गये। नाहरराज पड़िहार और उसके समकालीन राजाओं के वर्णन के छप्पय—

कारणउज्ज रट्ठोर, तपत जयचन्द भूप जहं।
चित्तऊड़ सीसोद, समरसिंह सुरावलतहं॥
तोंवर तपत अनंग, पाल दिल्लियपुर दुद्धर।
सोमेसर अजमेर, बंश चहुवान समुद्धर॥
चालुक्य भीम गुजरात धर, भोरा राय उपाख्यपति।
नरउर अधीस है जम नृपति, कूरम कुल मंडन सुमति॥
इत सुलक्ख परमार, तपत अव्बुव गिरि ऊपर।
बंवावद आनंद, राजकुल हड्ड दिवाकर॥
जद्दवपति जयसेन, दुर्ग रनथम्भ धराधन।
भट्टी जेसलमेर, जाति जद्दव कुलकरन॥
परमाल भूप चंदेल जब, थान महुव्वा पुरठयो।
तब प्रतिहार नाहर नृपति, मंडोवर पुर प्रतिभयो॥

यह वर्णन वंश भास्कर के रचयिता ने पृथ्वीराज रासे के आधार पर किया है जो ग़लत है, कारण कि प्रथम तो नाहरराज के पिता का नाम अजराज बतला कर उसकी बेटी पिंगला का विवाह चित्तोड़ के रावल तेजसिंह के साथ होना लिखा है। जब कि नाहरराव पृथ्वीराज के पिता सोमेश्वर का (सं० १२२६–३५) समकालीन था तो उसकी बहन का विवाह एकसौ वर्ष पीछे (सं० १३१९–२८) में होनेवाले रावल तेजसिंह के साथ कैसे हो सकता है? दूसरा दिल्ली में तंवर अनंगपाल विक्रम की ग्यारवीं शताब्दी में राज करता था।

वंशावली (नं० १)—आदि जुगादि, कमल, ब्रह्मा, मरीच, कश्यप, धूम्रऋषि, राजपाल, राजा पवारद (कुलका) धर्मांगद, धरणीवराह, धारगिर, धाहड़, धीरसेन, पोहपसेन, लखसेन, कुधसेन, कालसेन, इंद्र, चित्रांगद, गंधर्वसेन, वीर विक्रमादित्य, विक्रम चरित, राजा अजयभूपाल, महपाल, मधुर, चन्द, गोशाल, राजा सिंधल, राजा भोज, राजा उदैकर्ण, देवकर्ण, सत्त, सिवर, सालवाहन, हंस, हरिवंस, सिंघ, मधु, धूंजालक, तुधाकव, वाघ, उदयादित्य,

---

चित्तोड़ के रावल समरसिंह का समय सं० १३२८—५६ वि० का है। रणथम्भोर में यादव नहीं किन्तु चौहान ही उस वक्त अधिपति थे; आबू में धारा वर्ष पंवार राजा था; हाडे उस वक्त यमावदे में आये ही नहीं थे, वह प्रदेश अजमेर के चौहानों के आधीन था; भला फिर ये सब समकालीन कैसे हो सकते हैं।

कन्नौज के पड़िहार—

पड़िहार राजाओं में वत्सराज बड़ा प्रतापी हुआ। जोधपुर राज के बीलाड़ा परगने के गांव कुचकला में पड़िहार राजा नागभट का एक लेख सं० ८७२ चैत्र शुदि ५ का मिला जिस में वत्सराज की पदवी "महाराजाधिराज परमेश्वर" और नागभट की "परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर" लिखी है। जैनमत के हरिवंश पुराण में वत्सराज का समय शक सं० ७०५ दिया है। वत्सराज नागभट के छोटे भाई देवराज का पुत्र था, उसने गौड़ और बंगाल के राजाओं को जीते और जब मालवे पर चढ़ाई की तो दक्षिण के राठोड़ राजा ध्रुवराज ने अपने सामन्त गुजरात के राठोड़ राजा कर्कराज को मालवपति की सहायता के निमित्त भेजा। युद्ध हार कर वत्सराज मारवाड़ को लौट आया। उसकी राणी सुंदरीदेवी से नागभट उत्पन्न हुआ।

नागभट—कन्नौज का महाराज्य प्राप्त किया। आंध्र, सैंधव, विदर्भ, कलिंग, और बंगाल के राजाओं को जीते; आनर्त्त, मालव, किरात, तुरुष्क, वत्स, मत्स्य आदि देशों के पर्वतीय गढ़ लिये। सम्भव है कि लेखों का नागावलोक यह नागभट ही हो जो सं० ८७२ वि० में विद्यमान था। उसका पुत्र रामभद्र।

रामभद्र—सूर्य्य का उपासक, राणी अप्पादेवी से भोजदेव उत्पन्न हुआ।

भोजदेव—विरुद आदिवराह व मिहर। गुजरात के राठोड़ राजा ध्रुवराज या धारावर्ष से लड़ा। इसका राज राजपूताना, गुजरात, काठियावाड़, मालवा, मध्य हिन्दुस्तान और गौड़ादि दूर दूर देशों तक फैला हुआ था। इसके लेख सं० ९०० से ९३८ वि० तक, और चांदी व तांबे के सिक्के भी मिले हैं।

महेन्द्रपाल—भोजदेव का पुत्र, भगवती का भक्त। विरुद महेन्द्रायुध और निर्भयनरेंद्र। पुत्र भोजदेव और विनायकपाल। सं० ९५० से ९६४ वि० तक विद्यमान था। बाल रामायण

जयदेव, पीतलसिंह, राणा गुणराज, राणा लाखण, राणा जसपाल, रावत लखमसी, कान्हो, सांवण, रावत हमीर, हापो, महपो, राघवदास, करमचन्द, पञ्चायण, राजा मालदेव, सादूल, राजा रायसल, झूझारसिंह का भाई, बखतसिंह, ठाकुर जगरूपसिंह, ठाकुर सुरताणसिंह, जैतसिंह, केसरीसिंह, माधोसिंह।

वंशावली नं० (२)—पंवार, पुरुरवा, कलिंग, इन्द्र, गंधर्वसेन, वीर विक्रमादित्य, भरथरी (भर्तृहरी), वीकमचित्र, सालवाहन, सृतनख, गौदभ, गौपिण्ड, महिपिण्ड, राजा कीर्तन, हंसराजा, सिंधलसेन, भोज धार का धणी, राजा बंध, राजा उदैबंध, उदैबंध के पुत्र-राजा रिणधवल, आल आबू का स्वामी जिसके वंशज कूमट जालौर परगने में हैं। माधवदे सिंध में रातेवैर व्याहा था फिर पाटण आया, जगदेव सिद्धराज सोलंकी का चाकर कंकाली (देवी) को

और बाल भारतादि का रचयिता प्रसिद्ध कवि राजशेखर महेन्द्र का गुरु कन्नौज के पड़िहारों को रघुवंशी बतलाता है।

भोजदेव दूसरा, परम भागवत, थोड़ा ही राज किया।

महीपाल या क्षितिपाल—कवि राजशेखर इसको आर्य्यावर्त्त का महाराजाधिराज लिखता है। इसके लेख दानपत्र सं० ६७१ से ९८८ वि० तक मिले हैं। पुत्र देवपाल, विजयपाल।

देवपाल—सं० १००५ वि० में विद्यमान था।

विजयपाल—इसके समय का एक लेख अलवर राज्य के राजोर या राजपुर नगर में गुर्जर प्रतिहार महाराजाधिराज परमेश्वर मथनदेव का सं० १०१६ वि० का मिला है जो कन्नौज का सामन्त था। प्रोफेसर किलहार्न की राय में माचेड़ी के बड़गूजर गुर्जर प्रतिहार बंश के थे।

राज्यपाल—इसके समय में सुलतान महमूद ग़ज़नवी ने सं० १०७५ वि० में कन्नौज पर चढ़ाई की थी। कालिंजर के चन्देल राजा गण्डदेव के पुत्र विद्याधरदेव ने राज्यपाल को मारा।

त्रिलोचनपाल—सं० १०६३ में राज्य पर था, फिर थोड़े ही समय पीछे गाहड़वाल वंशी राजा चन्द्रदेव ने कन्नौज का राज पड़िहारों से छीन लिया।

अब तो केवल मध्य हिन्दुस्तान में नागोद या उचहरे में पड़िहारों का छोटासा राज है। वंशभास्कर का कर्ता सूरजमल मिश्रण लिखता है कि ईंदा पड़िहार बाघराव से पांचवीं पीढ़ी में होनेवाले भीम के पुत्र कृष्णराज ने उचहरे में जाकर राज स्थापन किया था।

अपना मस्तक दिया। माधवदे के पुत्र-सूर, सांवत। जगदेव के पुत्र-डाभस्रूपि जिसके वंशज खानेर के पास हैं। दूंगा, जगदेव के मस्तक देने के पीछे पैदा हुआ। गामा रामसेण तथा द्वारिका की तरफ। कितने-कहते हैं कि पहले इनका राज आरी आवडेछे में था। डाभस्रूपि का धोमस्रूपि (धूमस्रूपि), धूमस्रूपि का राजा धर्मदेव किराड़ू का स्वामी। धरणीवराह का भाई उत्पलराय किराड़ू छोड़कर ओसियां में जा बसा, सचियाय देवी प्रसन्न हुई नाणवा दिया, ओसियां में देवल करांया[1]। धरणीवराह का पुत्र बाहड़ जिसके घर में अप्सरा थी, उसके पेट से सोढा और सांखला दो पुत्र हुए[2]।

सांखला पंवार—सांखले व सोढे का दादा धरणीवराह पहले वाहड़मेर या जूना किराड़ू का स्वामी था और मारवाड़ के नवों कोट उसके आधीन थे। उसके पुत्र बाहड़ से वह स्थान छूटा[3]। पहले तो वह रायधणपुर (राधन-

---

(१) वसन्तगढ से मिले हुए सं० १०९९ वि० के परमारों के लेख से पाया जाता है कि उत्पलराज धरणीवराह का भाई नहीं किन्तु परदादा था जिसका समय विक्रम की दसवीं शताब्दी के आरम्भ में होना चाहिये।

(२) मिश्रण चारण सूरजमल कृत वंशभास्कर में परमारों की वंशावली दी है; जिसमें सोला सूरा तक २०३ नाम हैं और इस ख्यात में दिये हुए नामों में से दो च्यार नाम के सिवाय एक भी नाम उसमें नहीं मिलता। आजतक उपलब्ध हुए परमारों के प्राचीन शिलालेखादि में दी हुई वंशावली इन ख्यातों से नहीं मिलती है।

(३) पहले तो बाहड़ और पीछे छाहड़ नाम दिया है, परन्तु शुद्ध नाम बाहड़ ही प्रतीत होता है। बाहड़मेर सम्भवतः बाहड़ का बनाया हुआ हो।

राजपूताने में ऐसा प्रसिद्ध है कि परमार धरणीवराह के ६ भाई थे जिनको उसने अपना राज बांट दिया और उनकी ६ राजधानियों नवकोटी मारव ए कहलाई। इस विषय का छप्पय:—

मंडोवर सामन्त, हुओ अजमेर सिधुसुव।
गढ़ पूंगल गजमल, हुओ लोद्रवे भाण भुव॥
अल्ह पल्ह अर्बुद, भोज-राजा जालंधर।
जोगराज घर धाट, हुओ हांसू पारकर॥
नवकोट किराड़ू सं जुगत, थिर पंवार हर थपिया।
धरणीवराह घर भाइयां, कोट बांट जू जू किया॥

सुप्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता राय बहादुर पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा अपने "सिरोही के इतिहास" पृष्ठ १४५ की टिप्पणी में लिखते हैं कि "इस छप्पय में कुछ भी सत्यता पाई नहीं जाती, अनुमान होता है कि यह किसी ने पीछे से बनाया हो और बनानेवाले को परमारों

पुर) के पास गांव जाझवे में जारहा, पीछे उसका पुत्र सोढा सूमरों क. न गया, उन्होंने उसे राताकोट दिया, और फिर उसने जाम तमाइची से रातेक. से १४ कोस आगे ऊमरकोट पाया। वाहड़ का दूसरा वेटा वाघ मारवाड़ में आया और पड़िहारों ने उसे गांव वाघेरिये में टिकाया। वंशावली-गंधर्वसेन, अजय-पाल, अजवसी, वंधाइन, वंध, धरणीवराह। इसके पुत्र छाहड़ के अप्सरा के पेट से दो पुत्र हुए सोढा और सांखला। वाघ, जिसकी सन्तान सांखला कहलाई, उसकी दो स्थान में ठाकुराई हुई। वाघ छोटण व वाहड़मेर को छोड़ कर वाघेरिये में आया क्योंकि पड़िहार गोयंद की भूवा (फूफी) सुंदर का उससे कुछ सम्बन्ध था। पड़िहारों ने गोयंद को बहकाया और कहा कि वाघ का ढंग देखते ऐसा प्रतीत होता है कि वह तुम्हें मारकर इस प्रदेश का मालिक बन बैठेगा। तब गोयंद ने सेना भेजकर वहुत से सांखलों सहित उसे मरवा डाला। वाघ की स्त्री सगर्भा थी, मुंहता सुगुण उसको लेकर अजमेर चला आया। वहां उसके बैरिसिंह नामी पुत्र उत्पन्न हुआ। जब वह सयाना हुआ तो मुंहता ने उसे अजमेर के स्वामी (चौहान) से मिलाया। बैरिसिंह ने उसकी वहुत दिनों तक सेवा की और एक दिन अवसर पाकर उसे कहा कि पड़िहारों ने मेरे वाप को विना अपराध मारा है सो मुझे सैन्य की सहायता दो तो वाप का बैर लेऊं। राजा ने सेना दी। वैरिसिंह ने पयान करते समय माता की मानता मानी थी कि जो पड़िहारों पर फतह पाऊं तो कमल पूजा करूंगा। माता सचियाय ने स्वप्न में आकर आज्ञा दी कि कल काले वस्त्र पहने काली टोपी सिर पर धरे, एक गाड़ी में, जिसके काली खोली (गिलाफ) और काले ही वैल जुते होंगे, वैठा हुआ एक आदमी साम्हने मिलेगा और कहेगा कि इस मार्ग से मत जा, परन्तु तू उसे मार कर चला जाना। प्रभात होते ही वैरसी मुंधियाड़ (पड़िहारों का एक ठिकाना) पर चढ़ा, साम्हने उसी भेष का पुरुष मिला, उसको मार कर फिर मुंधियाड़ जा मारा और वहुत से पड़िहारों का प्राण लेकर

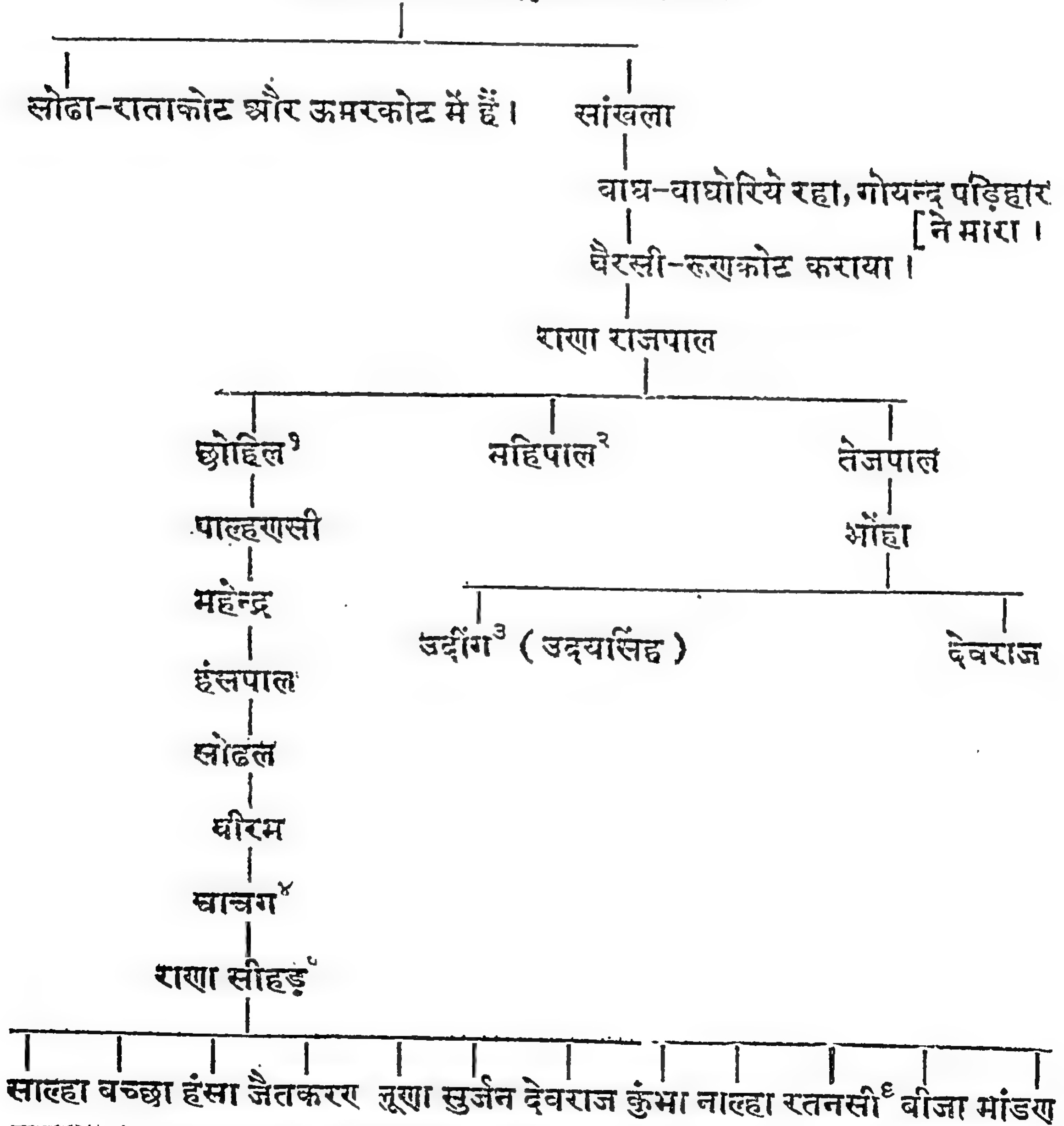
के इतिहास का ठीक ठीक ज्ञान न हो"। मैं भी उक्त पण्डितजी के कथन से सहमत हूं, क्योंकि नैणसी ही लिखता है कि धरणीवराह के पोते वाघ को मारवाड़ में पड़िहारों ने पनाह दी थी अतः स्पष्ट है कि उस वक्त मरुदश के बहुत से विभाग पर पड़िहारों का अधिकार था।

धरणी वराह गुजरात के सोलंकी राजा मूलराज का समकालीन और आबू के परमार कृष्णराज या कान्हडदेव का पुत्र था, इसका समय सं० १०३०-४० वि० के लगभग है।

बाप का वैर लिया। कार्य सिद्ध होने उपरान्त ओसियां आया और माता के मन्दिर का द्वार बन्द कर एकान्त में कमल पूजा करने को खड्ग उठाया, तब देवी ने हाथ पकड़ कर समझाया कि मैं तेरी सेवा से प्रसन्न हुई और तेरा मस्तक तुझे दिया, इसके बदले सुवर्ण का सिर बनवाकर चढ़ा देना। फिर अपने हाथ का शंख बैरसी को देकर फर्माया कि इस शंख को बजाकर सांखला प्रसिद्ध हो। वहां से आकर बैरसी रूणवाय में बसा, मुंधियाड़ में पड़िहारों का गढ़ गिराकर उसने रूणकोट बनवाया।

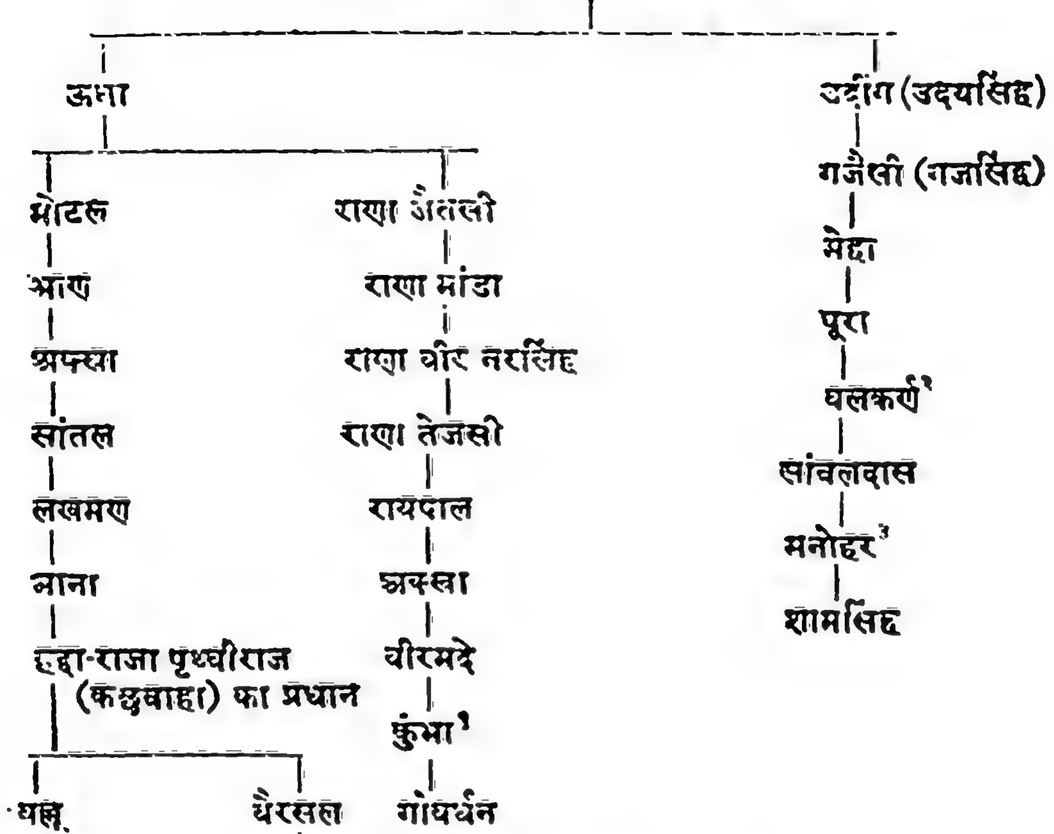
रूण के सांखले पंवारों का वंशवृक्ष।

धरणीवराह-बाहड़मेर का स्वामी।



(१) इसके वंशज रूणेचा कहलाये। (२) इसके वंशज जांगलवा कहलाये।

राणा सीहड़ के पुत्र साल्हा का वंश।



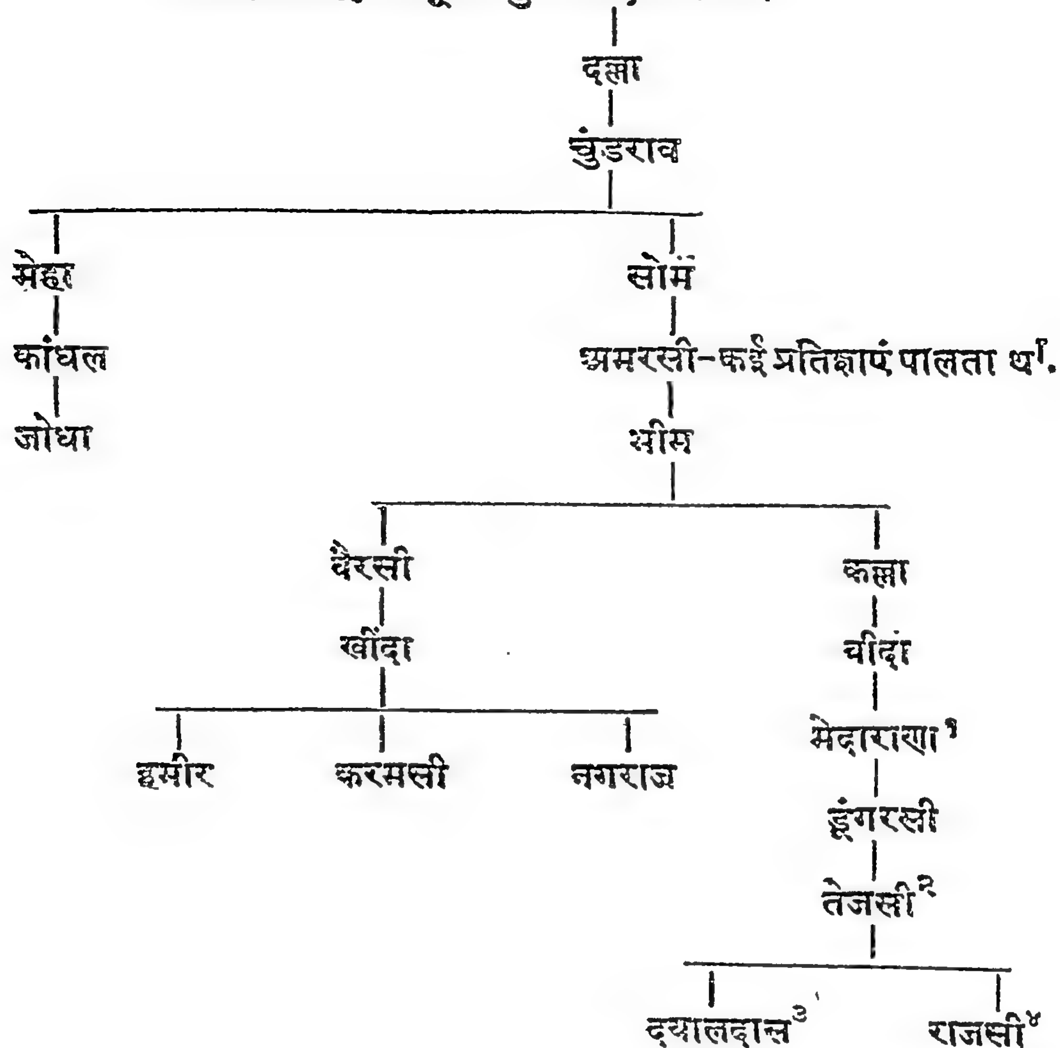
भोजराज-इसके वंशज सांवलर की तरफ हैं।

---

(३) पृथ्वीराज चौहान का सामंत, मेड़ता पट्टे था। (४) मांडू के बादशाह ने इस पर चढ़ाई की, लड़ाई हुई, बादशाह भागा और उसका नक़ारा निशान सांखलों ने छीन लिया, इसलिये वे "नांदेत निसाणेत" कहलाते हैं। (५) बहुत अच्छा राजपूत हुआ। उसकी कन्या पंगुली के पेट से आनल के पुत्र धारू ने जन्म लिया जो बड़ा वीर पुरुष था। सीहड़ ने मेर से लड़ाई की उसकी साखी का छप्पयः—

कोणो जो कोपियो, लूस अमणेर लियंतो।
दुजड़ां हथो हुक्काल, रोस रोहींसे रत्तो॥
गाल जाल वोरवो, भरम पहाड़ां भग्गो।
मचकोड़े मेवड़ो, वळै वधनोर विलग्गो॥
वधनोर गोल आडोवळो, तोडै जड़ां विलाइली।
सांखलै राण सुजड़ां हथै, भांजी सीहड़ भाइली॥

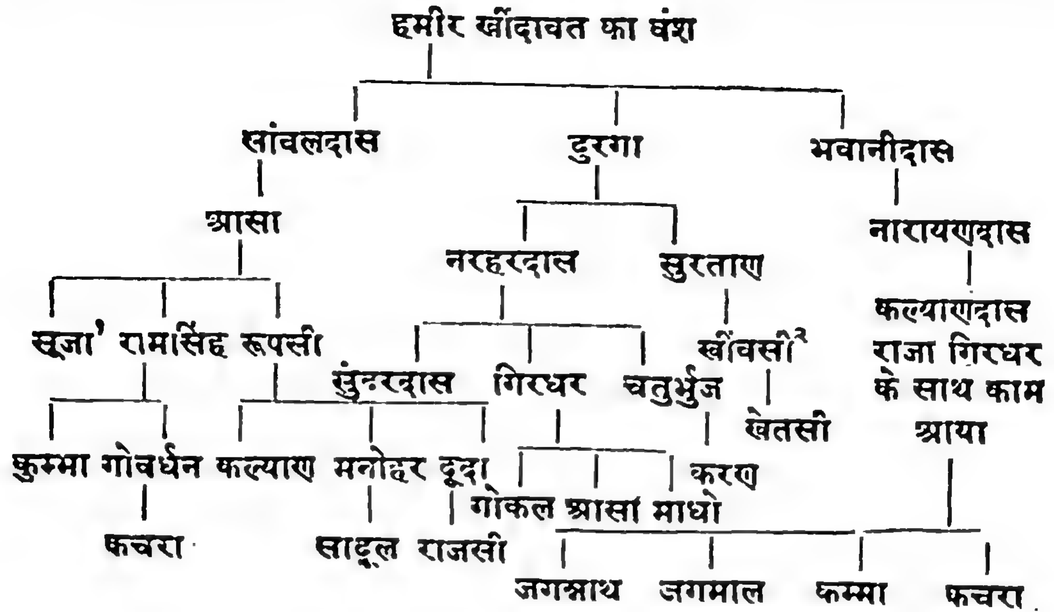
(६) इसकी संतान जोधपुर चाकर।



(१) बड़ा राजपूत हरदास महेसदासोत का नौकर था (२) बड़ा राजपूत, राजा मानसिंह (कछवाहा) का चाकर था। जब मानसिंह को नागोर मिली तब ८४ गांव से इसको रूण की जागीर दी थी। (३) राजा गजसिंह का नौकर, जोधपुर रहता था।

(१) राणा उदयसिंह का चाकर था, सोलंकी मल्ला वाला ताणां, गांव ८४ सहित उसको जागीर में दिया था। (२) इसके वंशज मेवाड़ में। (३) रु० १००००) का (मेवाड़ में) पट्टा था। (४) रु० १००००) का पट्टा था, राणा जगत्सिंह (प्रथम) का बड़ा विश्वासपात्र सेवक था। राणा मोकल ने राजपाल के यहां विवाह किया था और उस राणी के पेट से राणा कुंभा ने जन्म लिया था। राजसी का दादा

हमीर खींदावत का वंश



जांगलू के सांखले पंवार ।

सांखले महिपाल का पुत्र रायसी रूण को छोड़ कर जांगलू आया। चौहान पृथ्वीराज की राणी अजादे (अजयदेवी) दहियाणी ने यह स्थान बसाया था, वहां रायसी गुढा बांध कर रहने लगा। चातुर्मास आने पर ढाक पलास के पत्तों से छाये हुए झोंपड़े बनाये। यह गुढा जांगलू के गढ़ के पास ही था सो रूण के लोग उसे उजाड़ने को आते और सांखलों की स्त्रियां जब जल भरने आतीं तो दहियों के लड़कों की टोलियां उन स्त्रियों के बेहड़ों (पानी के बर्तन) पर गिलोले चलाते, और जवान अबलाओं को देख कर खंखारते व ठट्ठा मसखरी करते थे।

करमसी बड़ा हरिभक्त हुआ। इसी विवाह के प्रसंग से सांखले और उनके दधिवाड़िये चारण मेवाड़ में गये।

(१) उदैसिंह गोपालदासोत का नौकर, उजैण काम आया। (२) खींवसर में गोपालदास के पास रहता था, मेरियावास जागीर में था। (३) तीनों। पट्टे।

ये सब दुखड़े गुढे के लोग रायसी के आगे जाकर रोते तब वह यही कह कर आश्वासना देता था कि भाइयों, अपनी दशा अभी ऐसी ही है, समय देख कर चलना चाहिये, परन्तु अन्तर में सदा वह उस धरती के लेने के प्रयत्न सोचा करता था। जांगलू में एक ब्राह्मण केशव उपाध्याय रहता था, उसकी अभिलाषा जांगलू के कोट के दर्वाज़े के वाहर एक तलाई वनवाने की थी। कई वार उसके वास्ते उसने दहियों से आज्ञा मांगी परन्तु उन्होंने मन्जूरी नहीं दी। केशव एक शहवेधी आदमी था और वह दहियों से चिढ़ा हुआ था। अवसर पाकर सांखलों ने चालीस पचास नारियल इकट्ठे दहियों के पास सम्वन्ध के निमित्त भेजे और उन्होंने भी स्वीकार कर लिये। एक ही दिन सब के लग्न ठहराये और दहियों के दुलहा व्याहने आये। उनके खान पान में धतूरा मिलाया गया। भोजन करते और मदिरा पीते ही सब पर गहरा नशा छागया और वे वेसुध होगये, तब सांखलों ने उन्हें सहज ही में मार गिराया। केशव उपाध्याय भी साथ था, जब उसको मारने लगे तो वोला कि मुझे मत मारो, उवारो, मैं तुम्हारे बड़ा काम आऊंगा। पूछा कि भला क्या काम आओगे? वह बोला कि मुझे तुम गुरुपद दो और गढ़ के पास तलाई बनाने दो तो कहूं। उन्होंने उसकी मांग को स्वीकारा, कौल वचन और सौगन्ध शपथ हुए, तब केशव ने कहा कि इनको तो मारे, परन्तु गढ़ में कैसे घुसने पाओगे? उसका उपाय मैं वतलाता हूं। पचास साठ रथ जो यहां हैं जुतवालो, और प्रत्येक रथ में पांच पांच शस्त्रवन्द राजपूत बिठाओ, इस काम में विलम्ब मत करो और रात ही में वहां पहुंचो। गढ़ के कपाट मैं खुलवा दूंगा। तदनुसार रथ तयार हुए। केशव ने गढ़ की पौली पर आकर द्वारपाल का नाम ले उसको पुकारा और कहा कि "मुहूर्त का समय टलता है, रथ बाहर खड़े हैं, शीघ्र द्वार खोल कि भीतर आवें"। द्वारपाल ने द्वार उघाड़ दिया, तब तत्काल छिपे हुए राजपूत शस्त्र सम्भाल कर बाहर कूद पड़े, जितने मनुष्य दहियों के गढ़ में थे सबको सांखलों ने यमलोक में पहुंचाये और जांगलू में राणा रायसी की आण दुहाई फिरगई।

वंशावली—१ राणा रायसी, २ अणखसी, ३ खींवसी (क्षेमसिंह) ४ करमसी, जिसको खरला राजपूतों ने छल से अपनी अन्धी कन्या भारमली को व्याह दिया, परन्तु पाणिग्रहण होते ही उस कन्या के नेत्र खुलगये और दीखने लगा। इन खरलों की ठाकुराई पहले छोडले रिणधीरसर के बाहरोट

(बाहरी विभाग) में थी जो पूंगल से दस और वीकमपुर से १५ कोस है। करमसी का पुत्र राणा ५ राजसी, राजसी का ६ सूंजा, सूंजा का ७ ऊदा और ऊदा का पुनपाल व जयसिंह दे। ८ पुनपाल जांगलू में टीके बैठा और जयसिंह दे जेसलमेर गया। पुनपाल का पुत्र ९ माणकराव, और माणकराव का बेटा १० नापा जांगलू का स्वामी हुआ। बिलोचों ने उसे आ दबाया, वह जोधपुर राव जोधा के पास गया और वहां से कुंवर बीका को लाकर जांगलू उसके सुपुर्द करदी और आप उसका सेवक होकर रहा, तब से बीकानेर में सांखले बड़े विश्वासपात्र गिने जाते हैं। आज भी गढ़ की कुंजियां सांखलों के पास रहती हैं। सांखला नापा (नरपाल) का कवित्तः—

रवि अंगीरी रास, सिंह जाय कोरी सुतो।
पड़िया धोमारिक्ख, मास आषाढ निरत्तौ॥
ऊवाणो ईखियो, इसो काकड़ा तणो उर।
असुरां (रो) गुरनष्ट, गोक आवियो सुरांगुर॥
दै दिये दिवारै दानविध, विरदे मोकल राव हुवो।
तिणवार हुवो नरपाल तूं, माणकराउत मालवो॥

राणा राजसी के पुत्र राणा अभा (अभयसिंह) को मारकर सूंजा ने जांगलू लेली थी[1]। अभा के पुत्र गोपालदे को उसके भाई ऊदा ने मारा, तब गोपाल की स्त्री जो मांगलिया कीलू करणोत की बेटी थी, सगर्भा थी। चारण धरमा वीठू उसे ले निकला। पीहर में मांगलियाणी के महिराज उत्पन्न हुआ। गोपाल के जसहड़ और खावड़ियाणी दो और स्त्रियां थीं जिनके उदर से खींवराज और वीरम ने जन्म लिया। जब महिराज १४-१५ वर्ष का हुआ तब अपने भाइयों और दूसरे राजपूतों को इकट्ठे कर जांगलू पर चढ़ दौड़ा और ऊदा सूंजावत को मार कर उसकी लाश ठाकरशी के कुए में डाल दी, उसके बहुत से साथियों को काटे अर्थात् इतने आदमी मारे गये कि उनके तनों से निकली हुई रक्तधारा बहकर गढ़ के दरवाज़े के बाहर तक पहुंची। पहले जब सांखलों ने दहियों को मारे थे तब भी इतना ही रक्तपात हुआ था। महराज उज्वल क्षत्री था, वह जांगलू में न रहा, माणकराव के बेटों को वहां छोड़कर आप जोगी के तालाव से दो कोस

(१) बीकानेर के राजा जांगल देश के धनी कहलाते थे।

पूर्व और चण्डासर से एक कोस पिहलाप गांव में जा बसा। वहां उसके बनवाये हुए महिराजाणा, लूंभासर और हरभूसर नामी तीन तालाब हैं। कई एक दिन पिहलाप में रह कर फिर राव चूंडा से मिल नागोर के गांव भूंडेल में जारहा। जब (राव चूंडा के पुत्र) गोगादेव ने दल्ला जोइया को मारा तब महराज का पुत्र आल्हणसी गोगादेव के साथ था। फिर धीरदे जोइया और राणंगदे (रणसिंह देव) भाटी ने पद्रोलाई की तलाई पर गोगादेव को मारा तब आल्हण भी उसके साथ काम आया। लूंभा की सन्तान मारवाड़ में चीधीड़स में है; कुम्भा और जोधा के वंशज और रणधीर वहगटी में हैं।

राव चूंडा वीरमोत ने तुर्कों को मार कर नागोर लिया और वहीं रहने लगा, तब से महराज सांखला भी नागोर के गांव भूंडेल में रहता था। एक दिन राव चूंडा का बेटा अरड़कमल आखेट करता हुआ महराज के गांव आ उतरा, महाराज ने उसे गोठ दी। वह जानता था कि भाटी सादा राणंगदेवोत ओदीठ के मोहिलों के यहां विवाह करने को आवेगा। अरड़कमल को इस बात की खबर न थी। महराज के मुंह से अकस्मात ये शब्द निकल पड़े-"बाघण पूलन वीसरे, ज्यूं विसधर काळोह। आल्हणसी नहं वीसरे, महरज मूंछाळोह"। अरड़कमल ने पूछा कि तुमने यह क्या कहा? उत्तर दिया कि कुछ भी नहीं। तब तो कुंवर आग्रह पूर्वक फिर पूछा। महराज बोला कि आप तो बड़े सर्दार हो, आपको अपने दावे की चिन्ता नहीं रहती; मैं गृहस्थ, मेरा पेट छोटा, अतः एक बात याद आगई। अरड़कमल ने फिर प्रश्न किया कि वह बात क्या है? तब वह कहने लगा कि राठोड़ गोगादेव को जब जोइयों ने मारा तब राव राणंगदे भाटी ने गोगादेव से बड़ी ठगाई की थी, सो मरते वक्त गोगादे के मुंह से ये शब्द निकले थे—" मेरा दावा जोइयों से नहीं क्योंकि मेरे तीन सर्दार मारे गये और जोइयों के सात, यदि कोई राठोड़ मेरा वैर मांगे तो राव राणंगदे पास मांगना"! उस वक्त मेरा बेटा आल्हणसी गोगादेव के साथ काम आया था, वह बात मुझको याद आगई। अरड़कमल कहता है कि अभी उस बात के याद आने का क्या प्रसंग था? महराज बोला—राव राणंगदे का पाटवी पुत्र सादा ओदीठ के मोहिलों के यहां ब्याहने को दो दिन में आवेगा। अरड़कमल ने अपने जासूस भेजे और आप २०० सवारों से चढ़ चला। मार्ग में ४ सिंह मिले, इस शकुन का फल पूछने को कूचेर गांव में गहलोत गोदा के पास गया। वहीं जासूसों ने आकर

खबर दी और कुंवर आगे बढ़ा। सादा (सादूल) भी विवाह करके लौटता था, राठौड़ों ने नागोर बीकानेर के बीच गांव साधीसर जसरासर में उसे जा लिया। एक बार तो सादा अपने घोड़े मोर का पराक्रम उनको दिखलाने के वास्ते घोड़े को दपट कर उनके बीच में से निकल गया, परन्तु फिर पीछा लौटा, लड़ाई की और मारा गया। जेठी पाहू राव राणंगदे का बड़ा विश्वस्त राजपूत था, वह अकेला ही जारहा था, उसको पड़िहार उगमसी के पुत्र दो ईंदों ने जा पकड़ा, परन्तु वह उन दोनों को मार कर निकल गया, उसको यह खबर न हुई कि सादा मारा गया है। जब वह पूंगल पहुंचा तो राव राणंगदे ने उसे बहुत उपालम्भ दिया। भाटी महराज को मारने की बात देखने लगे, परन्तु वह बड़ा शकुनी था, उसको आपत्ति का ज्ञान पहले से होजाता इसलिये दांव में नहीं आता था। एक बार उसका नौकर एक राखसिया राजपूत भाटियों के पास जाकर कहने लगा कि मैं महराज को मरवा देता हूं। फटक जोड़ कर भाटी उस राजपूत के साथ हो लिये। राव राणंगदे और पाहू जेठी अपने डेरों के गिर्द गहरी खाई खुदवा कर उसे पानी से भरवा देते थे। इस तरह वे गांव भूंडेल के पास पहुंचे, यह समाचार सुनते ही महराज ने अपने एक राखसिये रजपूत सोमा का घोड़े चढ़ा कर राव चूंडा के पास नागोर भेजा और कहलाया कि मेरी सहायता कीजिये, और नातरे (नियोग) देने स्वीकारे। राव चूंडा बाहर चढ़ कर आया और नागोर से २० कोस जांभ बाघोड़े का गुढ़ा लूटने लगा। राव चूंडा के पहुंचने के पूर्व ही राव राणंगदे महराज को मार कर पीछा फिर गया था। जांभ ने राव चूंडा से कहा कि जो मेरा गुढ़ा न लूटो तो मैं राव राणंगदे को बतादूं, वह इन मोरों पर है। जांभ को आगे किये हुए राव चूंडा वहां से दस कोस जहां राणंगदे उतरा हुआ था जा पहुंचा। भाटियों ने जाना कि कोई सौदागरों के घोड़े हैं, ये तो कटकटाते हुए साम्हने जा खड़े हुए, और राव चूंडा ने ललकार कर कहा कि "राव राणंगदे! राव गोगादेव को मांगता हूं;" और इसके साथ ही राणंगदे और पाहू जेठी दोनों के मस्तक उड़ा दिये।

राव राणंगदे का बेटा केलण मुलतान की सेना साथ ले अपने बाप का बैर लेने को राव चूंडा पर चढ़ आया और उसको मारा[1]। इस सेना के साथ देव·

---

(१) टाड राजस्थान में केलण को जेसलमे [illegible] पुत्र लिखा है जिसकी सलाह के अनुसार राणंगदे के पुत्र तन्नू आर मा[illegible]

राज भी था इसलिये राव कान्हा चूंडावत जांगलू गया और इतने सांखलों को मारे—दोहा—" सधर हुवा भड़ सांखला, ज्यों भाजै काफ़ाल। बीर रतन ऊदो बिजो, वछो नै पुनपाल "॥ जांगलवे सांखलों के वारहट चारण वीठू और रूणेचा सांखलों के दधिवाड़िया चारण थे, जांगलवों के ब्राह्मण उपाध्याय, कुम्भार गिरधर व सूत्रधार वोहिल थे।

महराज के मारे जाने पर उसका पुत्र हरभम भूंडेल छोड़ कर फलोधी के गांव चारवू से तीन कोस और सिरड़ से ५ कोस 'हरभम जाल' नामी स्थान में जा रहा। वहां रामदेव पीर (राठोड़) और हरभम का मिलाप हुआ। जिस वालनाथ योगी ने रामदेव पीर के सिर पर पञ्जा धरा था, हरभम भी उसी का शिष्य हुआ, वह शस्त्र त्याग कर साधू वन गया और गांव लोलटे में आ टिका। हरभम पीर वड़ा करामाती हुआ, पीर रामदेव ने देहरे में गोर ली तब कहा कि मेरी गोर के साथ एक गोर हरभम की भी सिवा रखी जावे, आज के आठवें दिन हरभम स्वयं आन कर गोर पहनेगा। फिर हरभू ने वहां आकर गोर ली[1]।

जब राव जोधा पर आफत आई और वह भटकता भटकता हरभम के पास आया तो हरभम ने उसको भोज दिया और यह आशिर्वाद दिया कि जब तक तेरे पेट में ये मूंग रहें उतने समय में तेरा घोड़ा जितनी धरती में फिरेगा वह भूमि तेरी सन्तान के अधिकार में सदा वनी रहेगी। राव जोधा के दिन फिरे, राज पीछा हाथ आया और उसने वहगटी गांव हरभम को शासन में दिया जहां अब तक उसकी सन्तान निवास करती है।

राणा नापा के पीछे की वंशावली। नापा तक जांगलू सांखलों के रही। रायपाल नापा का; सुर्जन रायपाल का; अखैराज सुर्जन का; ईसरदास अखैराज

खां) की सहायता से अपनी वेटी व्याहने के वहाने से छल के साथ राव चूंडा को नागोर में मारा था।

(१) गोर या गोंल एक छल्ला होता है, और जैसे साम्प्रदायिक सेवक अपने गुरु से कण्ठी बंधवाते और उसके नियम पालते हैं उसी प्रकार राजपूताने में प्रायः शूद्र वर्ण के लोग भैरव व पीर आदि के उपासक अपने २ देहरों या थानों में जाकर वह छल्ला पहनते हैं। यदि किसी कारण से छल्ला उनकी अंगुली से अलग होजावे तो जब तक नियमानुसार देहरे जाकर दूसरा छल्ला न पहन लें तब तक मौन धारण किये रहते और कुछ खाते पीते भी नहीं हैं ५०० सवारों से चढ़

का; ईसरदास के ४ बेटे—गोइंददास, रामदास, केशोदास, नरसिंहदास। सांख-ला महेश कल्लावत बीकानेर में बड़ा राजपूत हुआ। राजा रायसिंह की लड़ाई उसके पुत्र दलपत के साथ गांव सरणिये में हुई जिसमें महेश मारा गया; उसके वंश का पता नहीं चलता है।

पुनपाल के पोतरे (वंशज)--(क्रमशः)—पुनपाल; सामा; भोजा जिसके पुत्र अभा, चाटला पट्टे, कुंवर भोपत के साथ था, हणूतराव, मांडण का नौकर चाठले काम आया। भोजा; लूणा के साथ काम आया। तेजसी, देवीदास जैतावत के साथ मेड़ते में काम आया। तेजसी के पुत्र मानसिंह, जोधा और गोइंददास थे। पुनपाल के दूसरे बेटे सांडा का पुत्र कीता था।

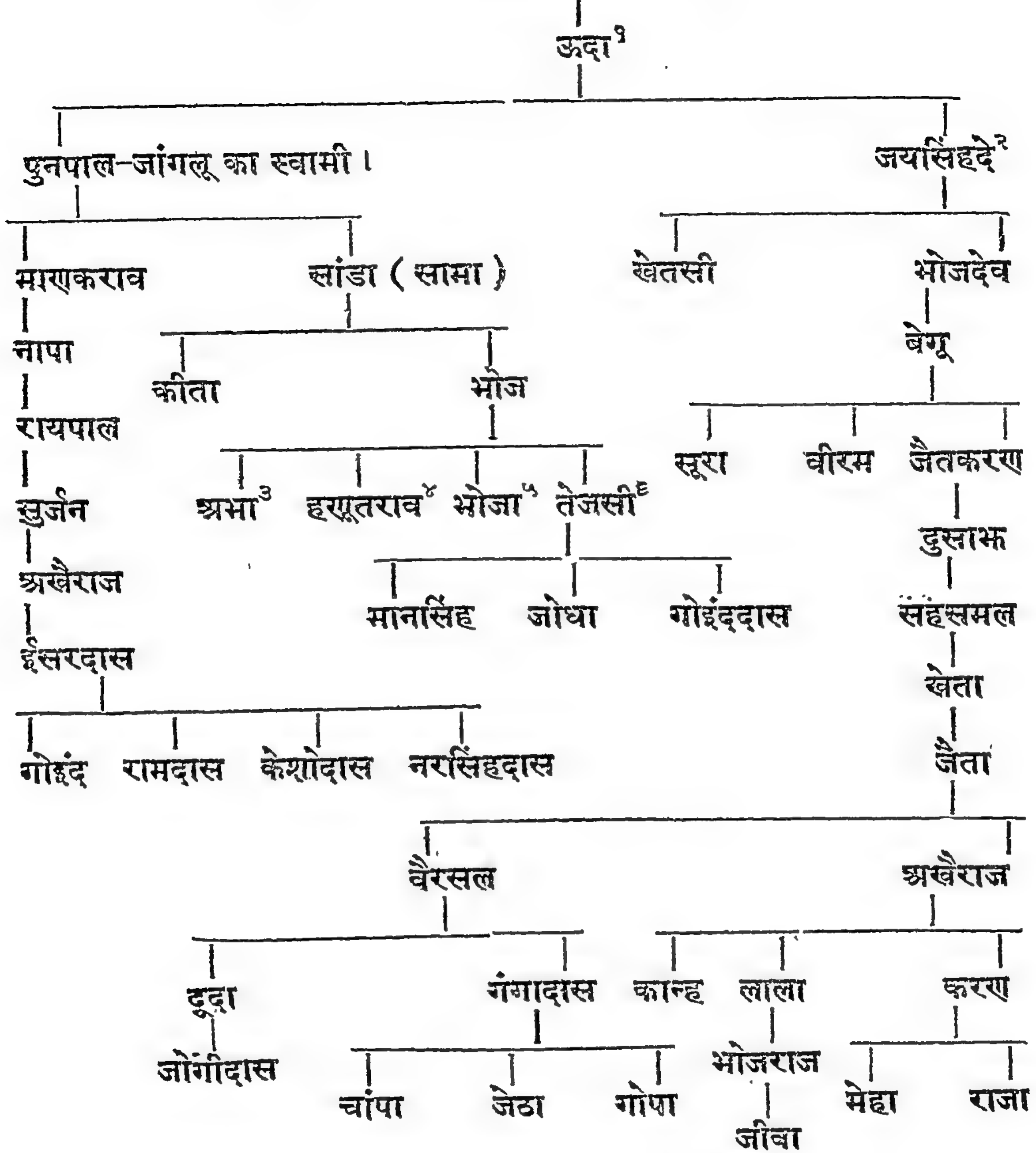
जांगलू के सांखलों का वंशवृक्ष।

बैरसी का पुत्र राणा राजपाल, राजपाल का पुत्र राणा महिपाल, महिपाल का पुत्र राणा रायसी, रायसी का पुत्र राणा अणखसी,* अणखसी का पुत्र राणा खींवसी, खींवसी का पुत्र राणा कंवरसी × और कंवरसी का पुत्र राणा राजसी राजसी के तीन पुत्र थे—करमसी, मूंजा और राणा अभा। करमसी बड़ा हरि-भक्त था।

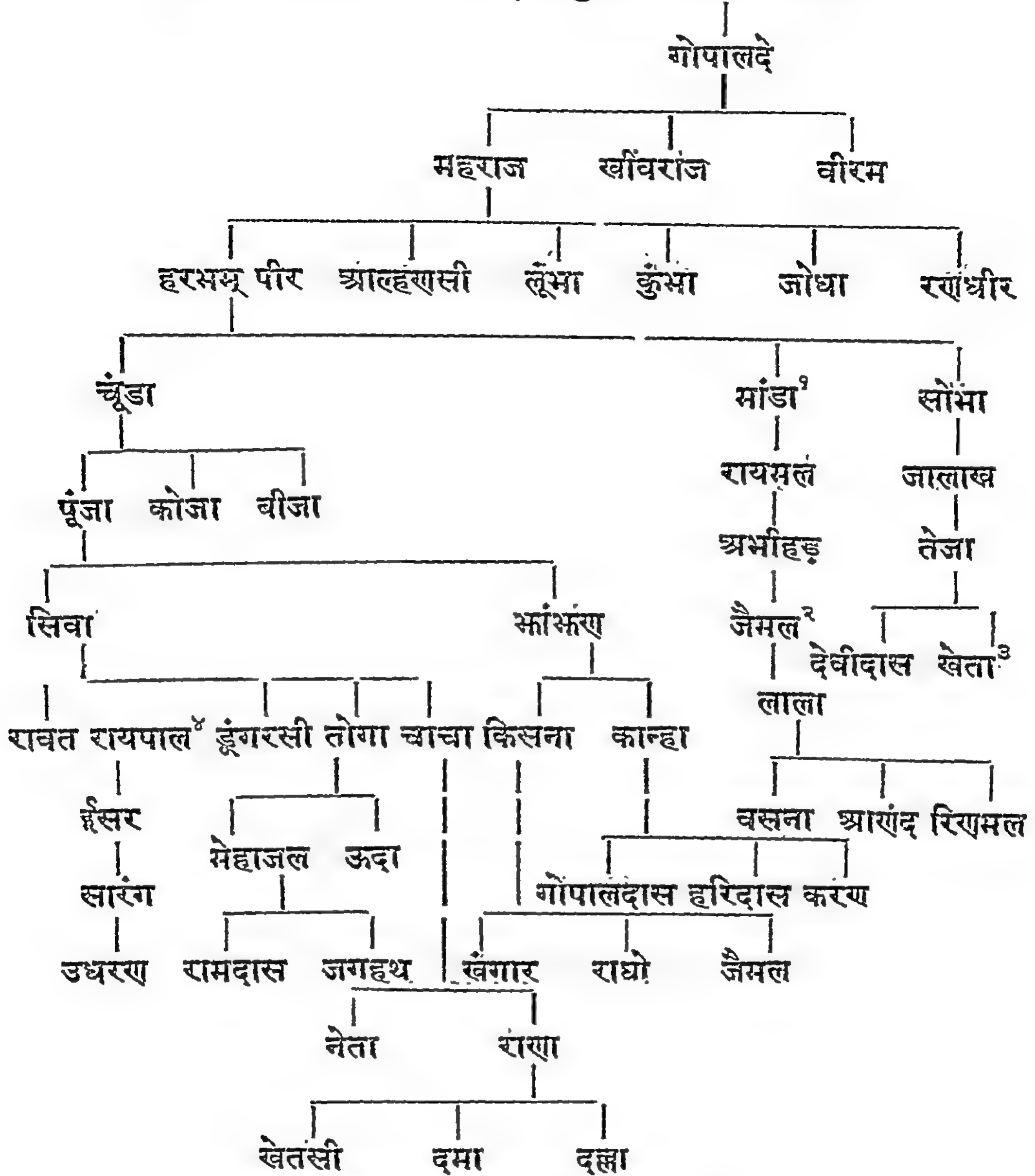
(*) अणखसी ने जांगलू से २१ मील 'अणखसीसर' नाम का गांव बसाया, वहां ४ देवलियों पर सं० १३४० वि० के लेख हैं उनमें अणखसी के पुत्र आसल और उसकी दो स्त्रियां रोहिणी और पूसा के नाम हैं। नैणसी ने आसल का नाम नहीं दिया, वह अणखसी का दूसरा पुत्र होगा। (बंगाल ए. सोसाइटी का जर्नल जिल्द १६ पृष्ठ २५५-५६)।

(×) कंवरसी के समय का एक लेख संस्कृत में नरसिंहसर (जांगलू के पास) में सं० १३८१ वि० का मिला जिसमें जंगलकूप के स्वामी सांखला कुमारसिंह (नैणसी का कंवरसी) की पुत्री दुलहादेवी के एक तालाब बनवाने का उल्लेख है। दुलहादेवी का विवाह जेसलमेर के रावल कर्णदेव के साथ हुआ था। कुमारसिंह के पिता का नाम खेमसिंह दिया है जो नैणसी का खींवसी है (वही पृष्ठ २५५-५६)।

राणा राजसी के पुत्र सूंजा का वंश।



(१) जांगलू का स्वामी था, इसको महराज ने मारा। (२) इसकी बहिन जेसलमेर के रावल करण के साथ व्याही गई थी इस प्रसंग से जयसिंहदे का पुत्र खेतसी वहां गया और एक गांव सावा, जेसलमेर से १२ कोस, पट्टे में पाया, जहां अब वह रहता है। (३) कुंवर भोपत के साथ, चाटला पट्टे। (४) मांडण के पास रहता था, चाटले गांव में काम आया। (५) लूणा के साथ काम आया। (६) देवीदास जैतावत के साथ मेड़ते की लड़ाई में मारा गया।



सोढा परमारों का वंश वृक्ष।

सोढो में दो शाखें हैं। बड़ी शाख ऊमर कोट की और छोटी शाख पारकर की है।

---

(१) टीकायत, बूढ़ा होने पर चूंडा को टीका दिया। (२) गांव बहगटी में है। (३) बहगटी में है (४) आफत का मारा रहता था, वीकूं के केहर करमसीहोत ने मारा।

सोढों में दो शाखें हैं—बड़ी शाखा ऊमरकोट की और छोटी पारकर की है।

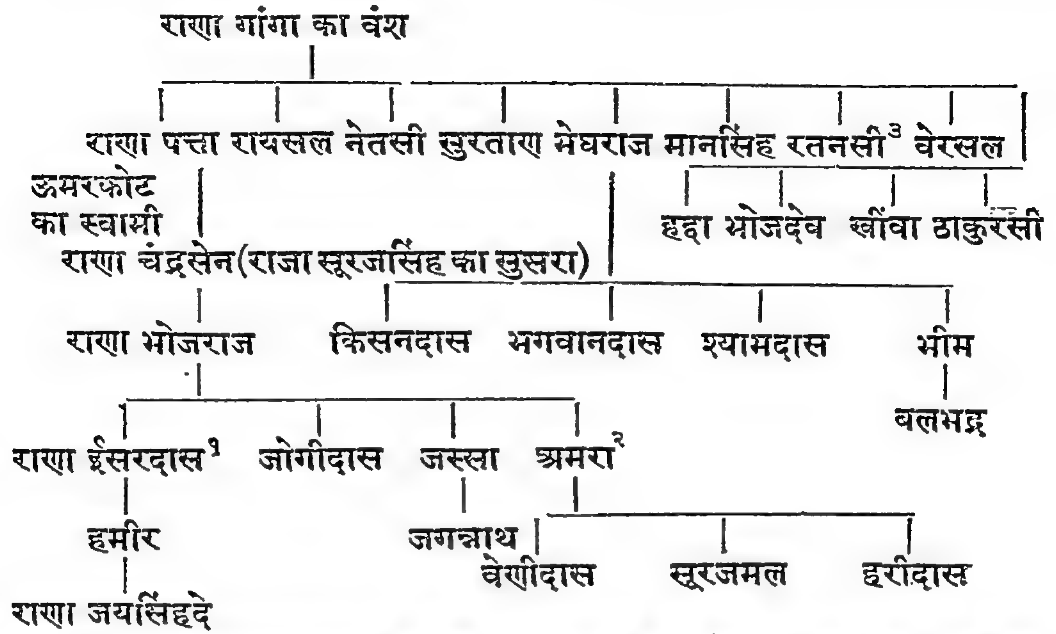
ऊमरकोट के सोढों की वंशावली—धरणी वराह के दो पुत्र, सोढा और सांखला। सोढा का पुत्र चाचगदे; चाचगदे का पुत्र राजदे; राजदे का पुत्र जयब्रह्म, जयब्रह्म का पुत्र जसहड़; जसहड़ का पुत्र सोमेश्वर; सोमेश्वर का पुत्र धारावर्ष; धारावर्ष के दो पुत्र—दुर्जनसाल और आसराव। दुर्जनसाल ऊमरकोट में और आसराव पारकर में रहा।

धारावर्ष के पुत्र दुर्जनसाल का वंश

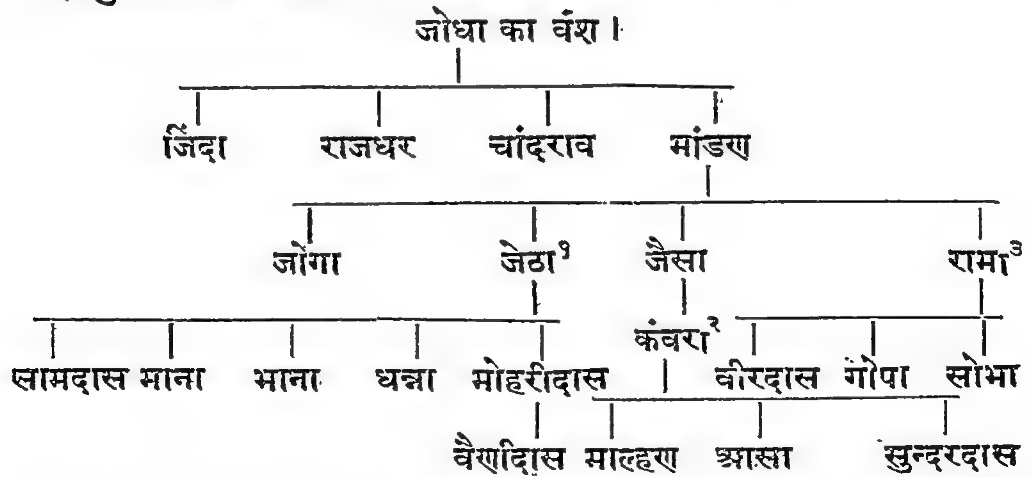
- खींवराज
  - राणा अवतारदे
    - राणा थिरा
      - राणा हमीर
        - राणा वैरसी
          - राजधर
          - मांडण
        - वरजांग
        - वीसा
          - राणा तेजसी
            - देवीदास
            - कान्हा
            - खेतसी
            - वलराज
            - वीदा
            - सावंत
            - राणा चांपा
              - राणा गांगा
              - ऊमरकोट का स्वामी सूरजमल
            - रायमल
            - महिकर्ण
            - नरा
            - रिणमल
            - मेरा[3]
        - ऊदा
      - रत्ता
      - गूजर
      - वीरधवल
    - कीता जेसलमेर में है।
    - गज्जू[1]
    - वीरधवल
    - वीरमदे[2]
  - घोघा
  - सत्ता
- केलण इसका परिवार बहुत है।
- संग्रामसी इसका भी परिवार बहुत है।
- नागड़
- भाण

(१) इसकी संतान जेसलमेर में है। (२) इसकी संतान जोधपुर आंबेर में है।

(३) छप्पै—देवीदास हुरंग, सुपह कानो राजेसर।
खड़गहथो खेतसी, अनै बलराज उनैकर॥
चांपो ने रायमल्ल, रूप रायां छज रायण।
वीदोने सामंत, वैर वस्र वार विचक्खण॥
महिकरण नरो रिणमल मुदै, मेरो गुण सागर सुमत।
तेगियो तिलक तेजलज, बारै बेटा विरदपत॥



राणा अवतारदे के पुत्र गज्जू का वंश—गज्जू का पुत्र मेला, मेला का पुत्र डूंगरसी, डूंगरसी का पुत्र खरहथ, खरहथ का पुत्र सहसा, सहसा के दो पुत्र-जोधा और सारा।



---

(१) ईसरदास को जेसलमेर के रावल सबलसिंह ने सं० १७१० में निकाल दिया। (२) मेहवे रावल भारमल के पास नौकर था। गांव भूका पट्टे में था। (३) (जेसलमेर) के रावल मनोहरदास का सुसरा था। इसकी पुत्री मनोहरदास की राणी सं० १७२२ में मथुरा में सती हुई।

(१) देवराज की जागीर में बुड़किया कनोड़िया गांव बसाये। (२) पोकरण के जालीवाड़े तथा ड्रेंग में रहता है। (३) गांव ड्रेंग में रहता है।

राणा धवलदेव के तीसरे पुत्र वीरमदे का वंश।

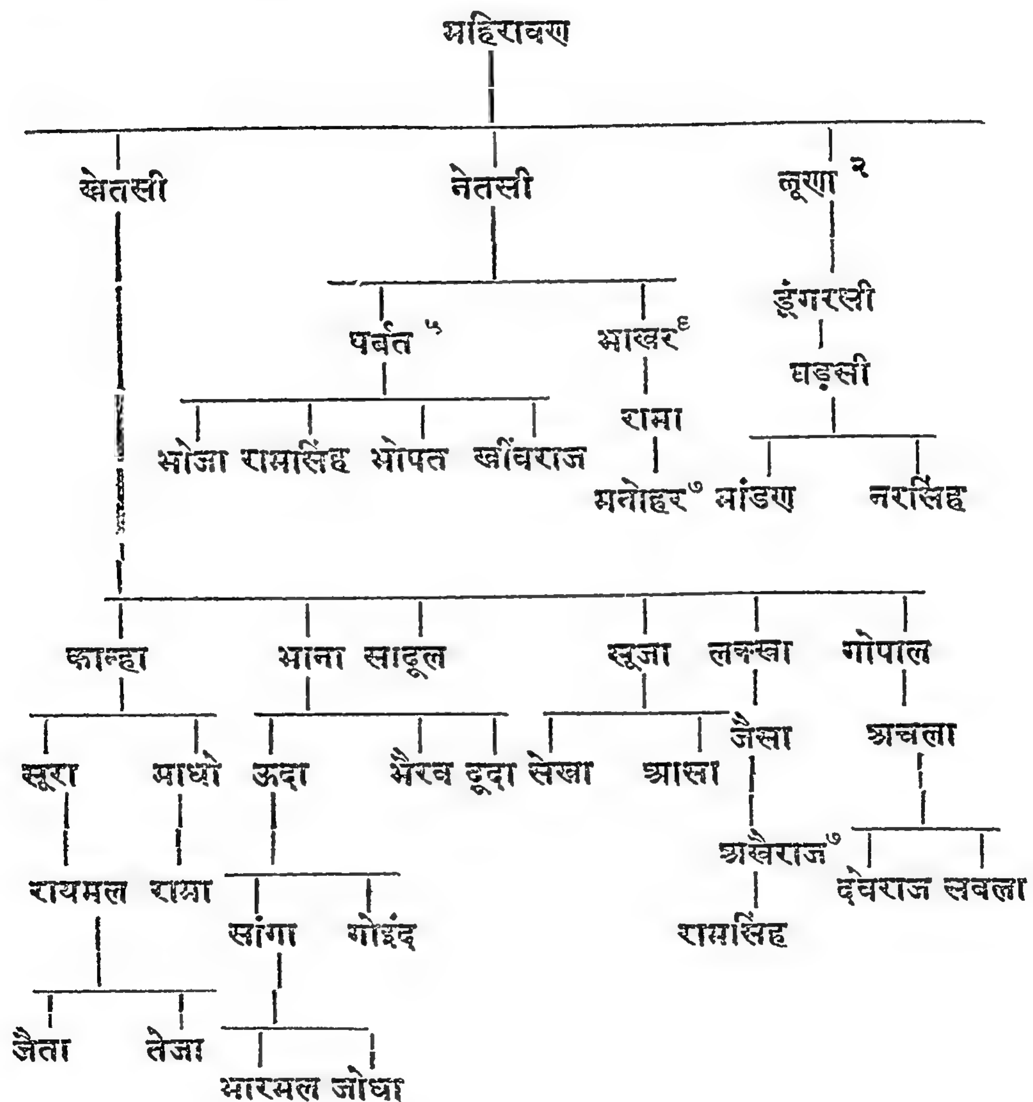
- लाखसी
  - सत्ता
    - कुम्भा
      - सहसा
        - सामा
          - महराज
          - गोवर्धन
          - लाडखान
          - सुंदर
  - देवराज
    - सादा
      - बन्ना
        - सहसमल[1]
          - अडूआल[2]
            - दूदा
              - माण
                - अमरा
                - दयालदास
                - भगवान
                  - दला[7]
              - वेणीदास
                - गोपालदास
            - महेश
              - नेतसी
                - ईसरदास[5]
                  - गोरधन
                    - खींवराज
                - नरहरदास
                  - रामसिंह
                    - कला
                    - गोकल
                  - जीवा
              - पत्ता
              - हरीदास
              - जैता
              - भोज
      - भीमराज
        - सायर
          - जगमाल
            - कंवरा[3]
        - मांडण
          - सूरा
            - जगन्नाथ[4]
    - सत्ता
      - पीथमराव
        - पर्वत
          - सूरज
            - जैसल
              - अर्जुन
                - माना
                  - वरजांगदे[6]
- रतनसी
- कालदेव
- उगमसी
- सत्ता

---

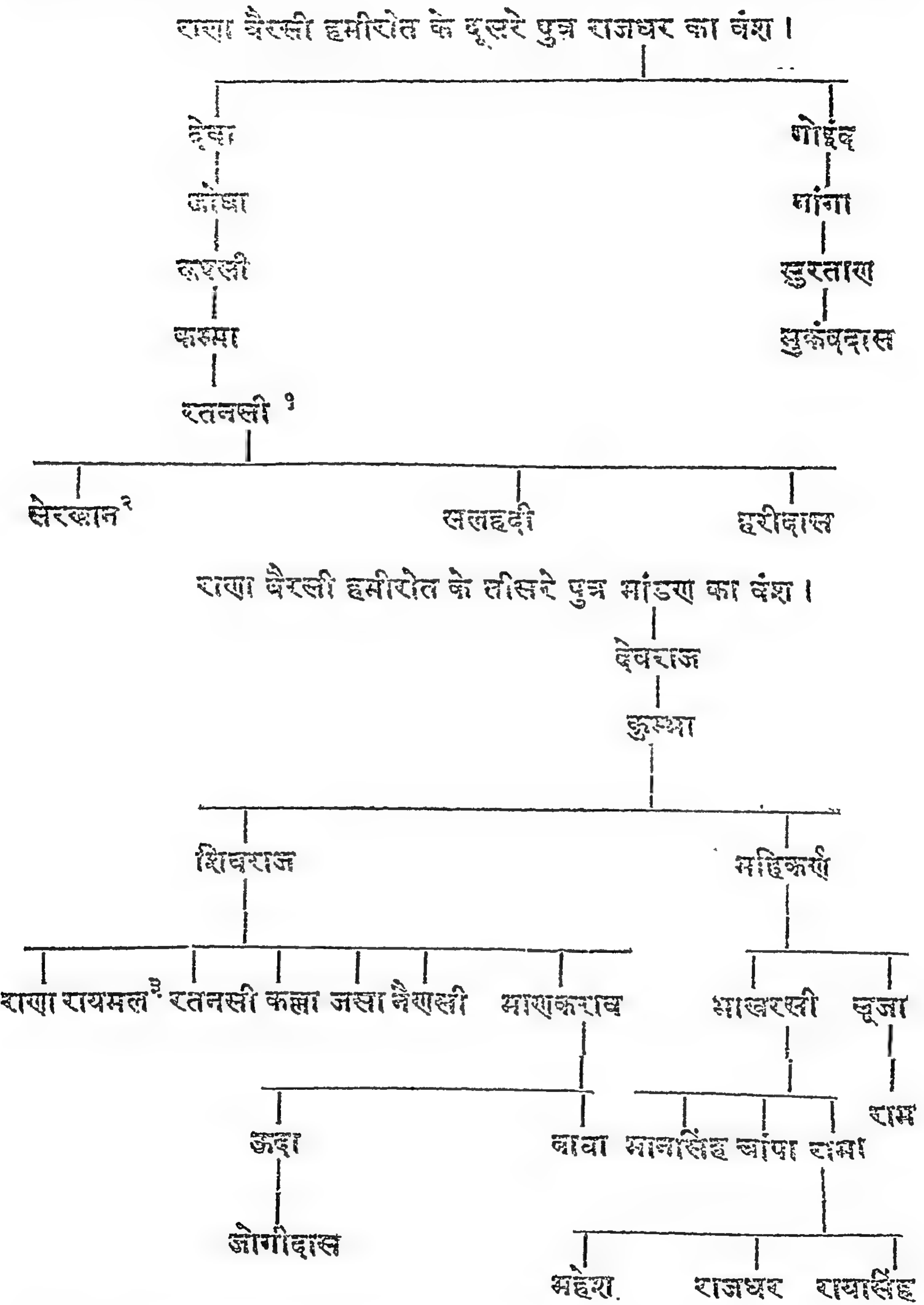
(१) भाइयों ने मारा। (२) राणी लछमीं इसकी मासी थी, इस प्रसंग से वह मारवाड़ में आया। (३) दैतीवाड़े रहता है। (४) अजमेर के गांव भामोलाव में रहता है। (५) सोजत का गांव खारिया, पट्टे में था। (६) गांव घुरे मंडले में है। (७) जालोर का गांव पट्टे में था

राणा हमीर थिरावत के चौथे पुत्र ऊदा का वंश।

ऊदा का पुत्र कूंपा; कूंपा का पुत्र वैरसल; वैरसल का पुत्र महिरावण; महिरावण का पुत्र खेतसी गोवल में रहता है। दूसरे पुत्र; नेतसी और लूणा।

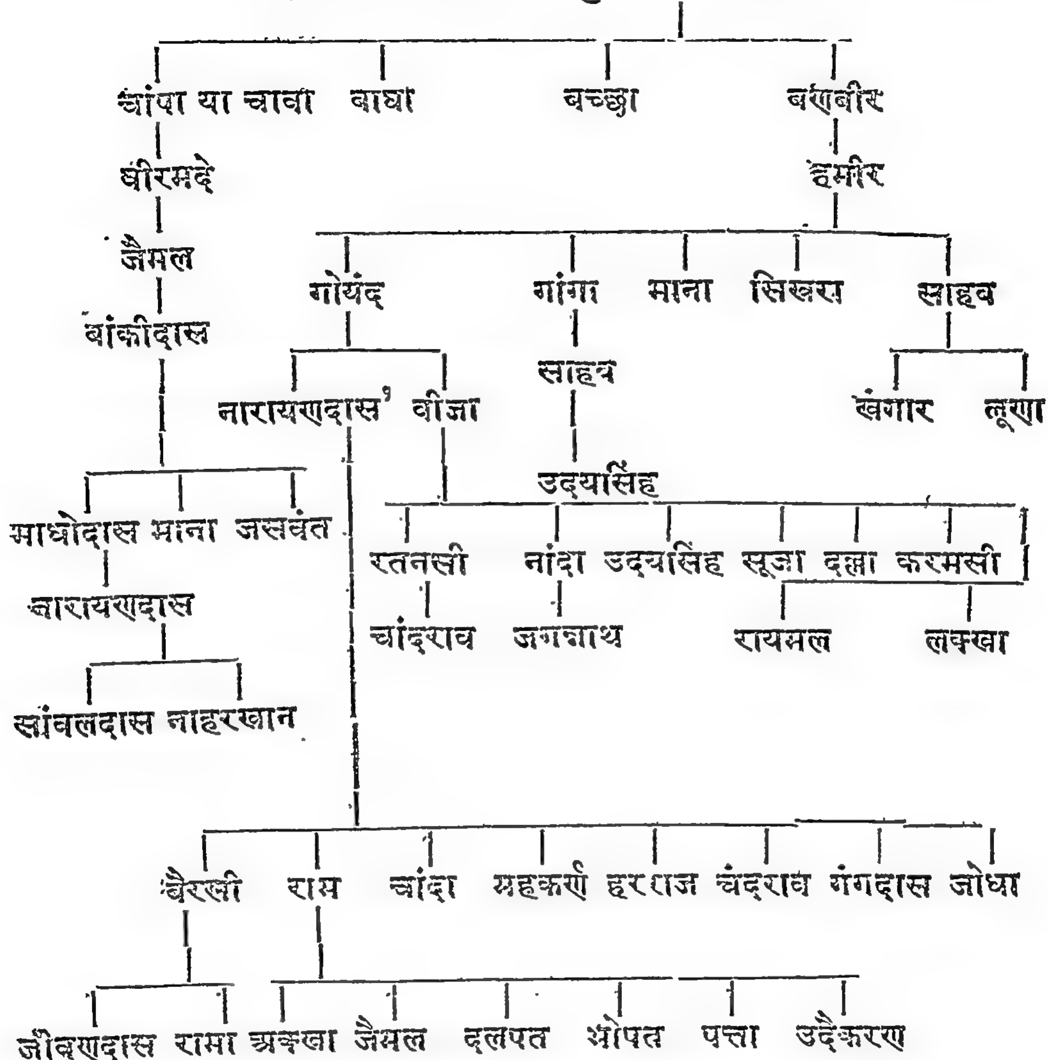


(१) इसके वंशज मेहवे के गांव गोवल और ऊमरकोट के गांव समंद में हैं (२) ऊमरकोट में है। (३) वोहरावास में रहता है। (४) गोवल में रहता है। (५) गोवल में रहता है। (६) वाहड़मेर काम आया। (७) हरीदास का नौकर, उज्जैन में काम आया। (७) गोवल में रहता है।

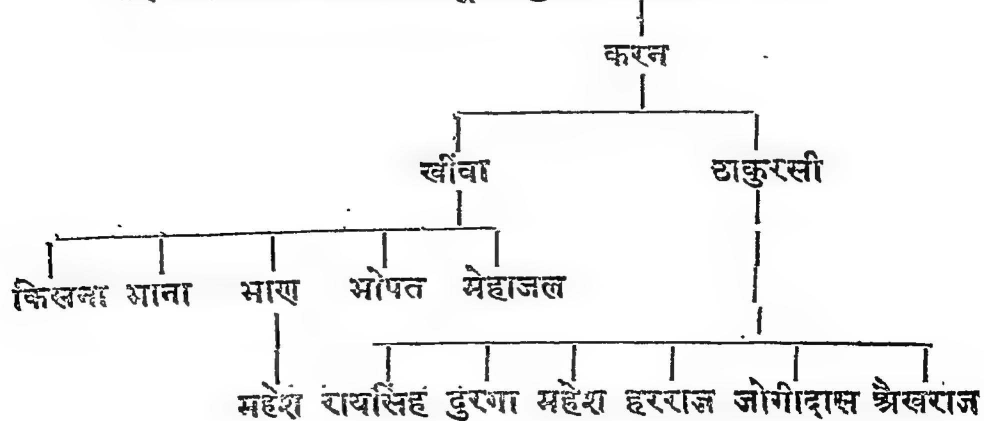


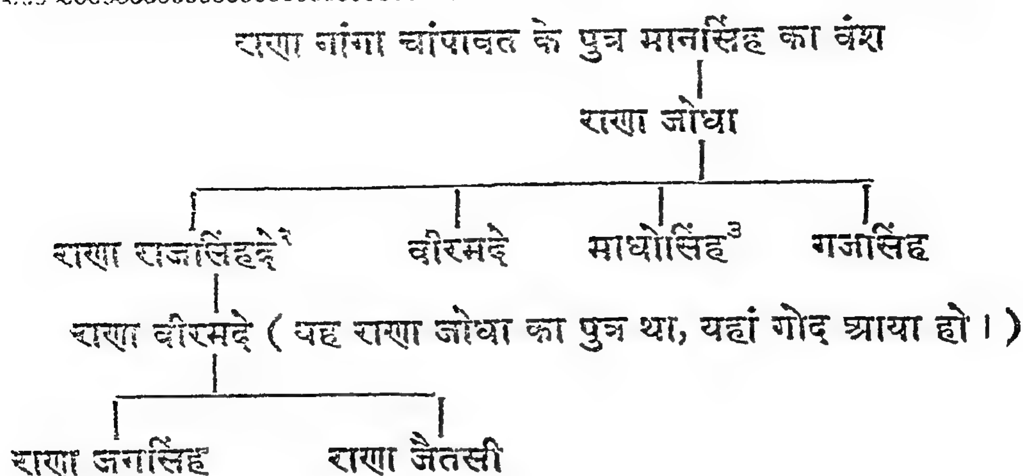
(१) इसके बेटे आंबेर में चाकर हैं। (२) जयपुर राज्य में नारायणे के पास गांव मोरड़ा पट्टे में था। (३) (गांव) कांगणी के रणखेत में लड़ने वाला।

राणा तेजसी वीसावत के पुत्र कान्हा का वंश



राणा चांपा तेजसीहोत के दूसरे पुत्र सूरजमल का वंश





पारकर के सोढा पंवार।

पारकर का नगर छोटी सी पहाड़ी पर मैदान में बसा है, वहां चन्दन सोढा का कराया हुआ पक्का गढ़ और एक बावड़ी है। गढ़ के नीचे बस्ती में महाजन बहुत हैं। पहले तो पारकर एक बड़ा क़स्बा था परन्तु अब तो जैतारण (मारवाड़ राज में एक क़स्बा) जैसा रह गया है। वहां १४ चेढी गांव लगते थे, अर्थात् ७८४० । एक चेढी में ५६० गांवों की संख्या होती है। पारकर से ५ कोस पश्चिम में कालीझर का बड़ा पहाड़ पांच कोस लम्बा है, जहां जल की बहुतायत और वृक्षावली सघन है। आपत्काल में रक्षा का अच्छा स्थान है। नगर से सौ एक क़दम के अन्तर पर एक तालाव और ६ तथा ७ अच्छी वावड़ियां हैं, जल दस बारह पुरुस नीचे निकलता है। पहले तो गांव बहुत से बसते थे अब केवल १४० गांव आबाद हैं, जिनमें एक सौ तो पारकर के स्वामी के और ४० सोढा राम की मऊ के ताल्लुक़ हैं। पारकर की भूमि ऊमरकोट, छहोटण और सूराचन्द जैसी इकशाखी और खेती बाजरे मूंग मोठ तिल की होती है। कूवों में जल मीठा वीस पुरुस नीचे है। दूसरी ओर कच्छ की तरफ़ भूमि काली होने से ज्वार और गेहूं पैदा होते हैं।

---

(१) नागोर के गांव मेड़ुआ में रहता है। (२) इसको जेसलमेर के रावल सबलसिंह ने राणा ईसरदास की जगह ऊमरकोट का टीका दिया। (३) इसको भाटी केसरीसिंह अचलदासोत ने भाटी सुंदरदास के बैर में मारा।

सीमा--एक तरफ कच्छ की राजधानी भुजनगर कोस ५० जिसमें ४० कोस तक पारकर की हद है और १० कोस कच्छ की। गांव राणी पारकर का। ऊमरकोट कोस ८० मध्ये ५० कोस सीमा पारकर की और ३० कोस ऊमरकोट की है। सूराचन्द चौहानों का कोस ४२ में, ३० कोस तक पारकर का राज है और १२ कोस सूराचन्द का। छहोटण कोस ६० मध्ये ४० कोस सीमा पारकर की और आगे २० कोस छहोटण की है। दक्षिण में वावसूई चौहानों की कोस ५० जिसमें से २७ कोस तक पारकर की हद है और २३ कोस वावसूई की।

वंशावली—सोढा राणा से छठी पीढी में धारावर्ष हुआ जिसका पुत्र आसाराव पारकर का राज पाया और दूसरा पुत्र दुर्जनसाल ऊमरकोट का स्वामी हुआ। आसाराव के पीछे इतने राणा क्रमवार गद्दी बैठे-देवराज, ललखा, देपा (देवपाल), खंगार, भीम, वैरसल, आखरसी बड़ा दातार हुआ, गांगा, अक्खा, अक्खा का भाई चांदा, माणकराव, लूणा और देपा (देवपाल दूसरा) विद्यमान। चांदा या चांदन बड़ा दातार हुआ, भाट वालव को कोट पसाव दान दिया।

भायला पंवार।

इनका वतन गांव रोहीसी एक पहाड़ी के नीचे और सिवाणा भी है।

वंशावली—महाऋषि ऋषभेश्वर साचर, उत्तमऋषि, पद्मसिंह, सजन भायल बड़ा वीर राजपूत हुआ। चांपा सिंधल की स्त्री अपने पति को त्यागकर सजन के घर में आन बैठी। जब चांपा उसकी खोज करता हुआ आया तो देखा कि देवड़ी और सजन ऊपर के अवास में सोये हुए हैं। उसने चुपके से जाकर देवड़ी की चोटी काटली और एक छुरी के साथ उसको सजन की छाती पर रखकर चला गया। प्रभात होते जब यह घटना सजन के जान में आई तो उसने पीछा कर चांपा को जा लिया, दोनों ने अमल के मावे चढ़ाये और अपने अपने खड्ग खींचकर एक दूसरे पर वार करने लगे, अन्त में दोनों घायल होकर गिरे और मर गए। देवड़ी ने दोनों के साथ सत किया। सजन राव सांतल चौहान

का दोहिता था, सिवाने में उसकी गिड़ी (गढ़ी ?) है, वह सुलतान अलाउद्दीन खिलजी से मिलकर उसको सिवाने पर चढ़ा लाया था।

राणा रावल रतन का राव, सांतल सोम का दोहिता, इसने सुलतान अलाउद्दीन से मिलकर सिवाने का गढ़ लिया, बादशाह ने पहले तो सिवाना उसको दे दिया परन्तु पीछे उसे मरवा डाला। रावल के पीछे क्रमवार इतने राणा हुए सिलार, जयसिंह, वीका, वीरम, रतनसी, भुजबल। सांकर (शङ्कर)। सांदूल गांव मोड़ी पट्टे, इसका एक पुत्र रायसिंह और दूसरा पुत्र दुर्गा था जो रवड़ेते में काम आया। दुर्गा का बेटा जैता, जैता के पुत्र रामसिंह और रायसिंह। सांकर का तीसरा पुत्र वणवीर राव चन्द्रसेन (राठोड़) के साथ था, जब गांव थलूंडे में सोनगिरे चौहानों ने राव चन्द्रसेन को घेरा तो वणवीर उनसे लड़कर मारा गया। सांकर का चौथा पुत्र वैरसल घुघरोट की लड़ाई में जालौर के सोनगिरों के युद्ध में काम आया। सांकर का पांचवा पुत्र डूंगरसी।*

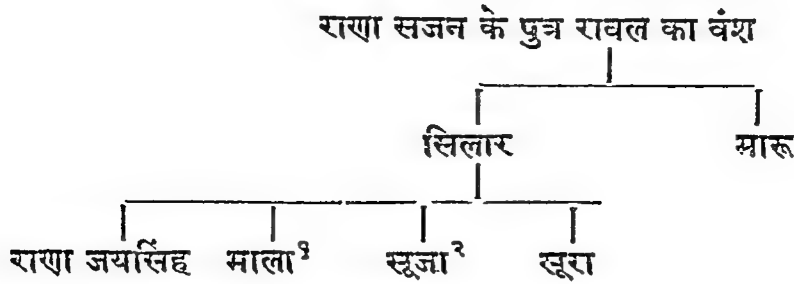
(*) आबू चंद्रावती, मालवा व बागड़ आदि के मुख्य पंवार कुलों का इस ख्यात में कुछ भी वर्णन नहीं है अतएव शिलालेखादि के आधार से उनकी वंशावली मात्र यहां दी जाती है।

सम्भव है कि पहले परमार उत्तर में हों परन्तु वहां मुसलमानों का अधिकार बढ़ने पर सातवीं शताब्दी के लगभग राजपूताने में आए हों। आबू के परमारों की प्राचीन राजधानी चन्द्रावती थी जो आबू रोड स्टेशन से च्यारेक मील दक्षिण में है।

वंशावली—पहला राजा धूमराज। धूमराज के वंश में सिन्धुराज सं० १००० वि० के लगभग हुआ। उत्पलराज या उपेन्द्र; आरण्यराज; कृष्णराज; धरणीवराह सं० १०४० वि० के लगभग; महीपाल या देवराज सं० १०५६; धंधुक सं० १०८८; ध्रुवभट; रामदेव; विक्रमसिंह; यशोधवल सं० १२०२; धारावर्ष सं० १२२०–७६; इसका भाई प्रल्हादनदेव था जिसने पालनपुर का नगर बसाया; सोमसिंह सं० १२९३; कृष्णराज और प्रतापसिंह।

मालवे के पंवार—

उपेन्द्र या उत्पलराज चंद्रावती के राजा ने मौर्य्यों से विक्रम की दसवीं शताब्दी में मालवा लिया हो, फिर क्रमवार इतने राजा मालवे की गद्दी पर बैठे—कृष्णराज, वैरिसिंह, सीयक, वाक्पतिराज, वैरिसिंह दूसरा या वज्रट, सीयक या श्रीहर्ष दूसरा वा सिंहभट सं० १०२८, मुंजराज या वाक्पतिराज दूसरा सं० १०५२, सिन्धुराज, भोजराज या प्रसिद्ध राजा भोज सं० ११1०



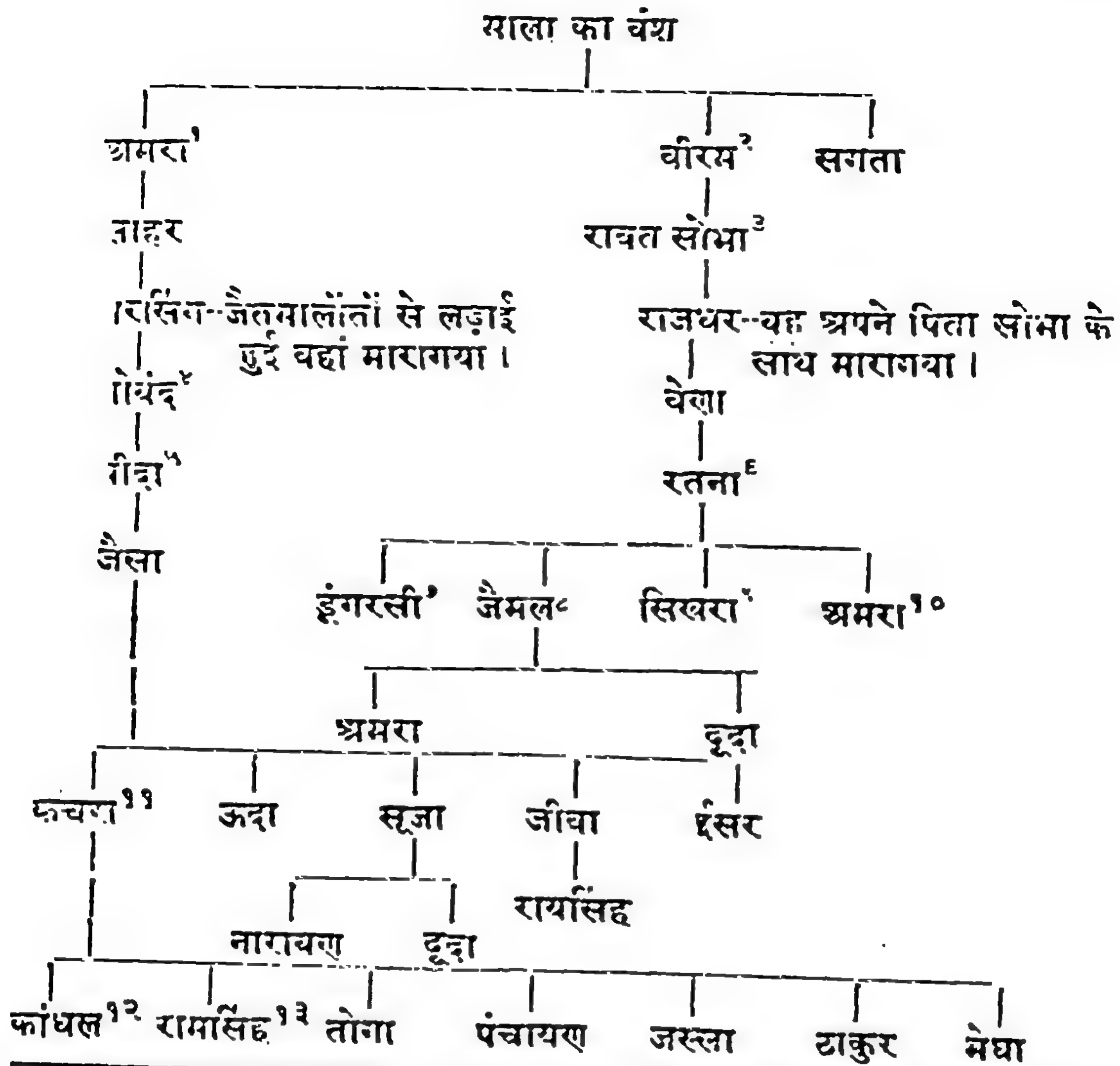
(१) पोहरावे खोहरे में भाइयों ने मारा। (२) यह गांव पीपलोण में रहता था।

के लगभग तक, जयसिंहदेव सं० ११**१२**, उदयादित्य सं० ११**१६**–४३, लक्ष्मदेव, नरवर्म लक्ष्मदेव का भाई सं० ११६०, यशोवर्म सं० ११९१, जयवर्म सं० १२००, अजयवर्म जयवर्म का भाई, विन्ध्यवर्म, सुभटवर्म या सोहड़, अर्जुनवर्म सं० १२६७–७३, देवपालदेव सं० १२७२–६०। इसके वक्त में सुलतान शमशुद्दीन अलतिमश ने सं० १२८८ में मालवा फतह किया। महाकाल के मन्दिर को नींव से खुदवाकर नष्ट कर दिया और शिवलिङ्ग व राजा विक्रमादित्य की पीतल की मूर्ति को देहली लेजाकर जामे मसजिद के पास गड़वा दिया। देवपाल के पीछे जयसिंहदेव और महलकदेव दो नाम और मिलते हैं। महलकदेव पर सुलतान अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति ऐनुलमुल्क ने सं० १३६२ वि० के लगभग चढ़ाई कर मालवा फतह किया और देहली की बादशाहत में मिला दिया।

जालोर के परमार–वाक्पतिराज; चन्दन; देवराज; अपराजित; विज्जल; धारावर्ष; और वीसल। वीसल की राणी ने सं० ११७४ में सिन्धुराजेश्वर के मन्दिर पर सुवर्ण कलश चढाया था। जालोर के परमार आबू के परमारों के वंशज हों। सं० १२३०–४० के आस-पास चौहान राव कीर्तिपाल या कीतू ने परमार राजा कुंतपाल से जालोर लिया था। वीसल और कुंतपाल के बीच में होने वाले राजाओं के नाम नहीं मिले हैं।

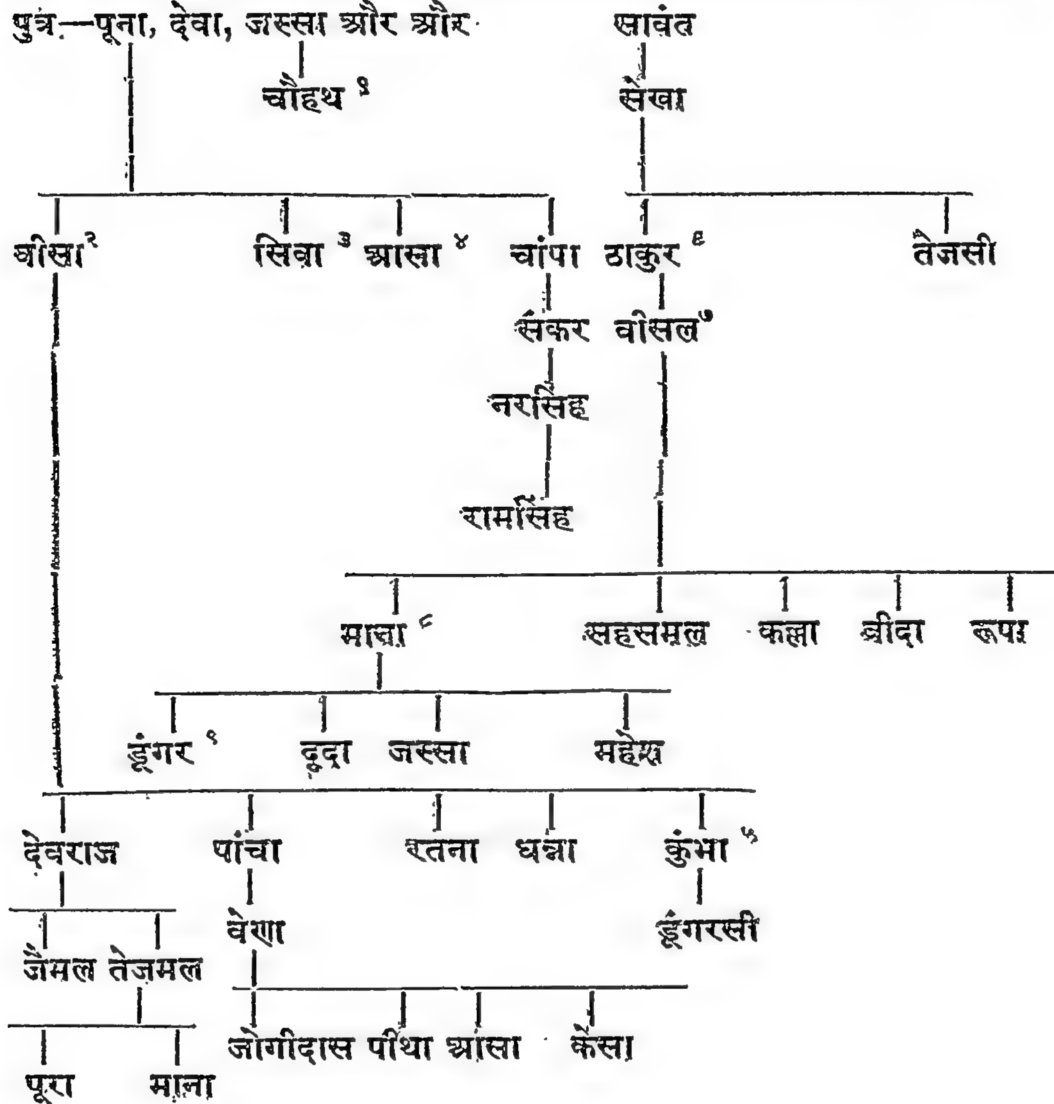
वागड़ के परमार–मालवे के राजा वेरसिंह दूसरे के छोटे भाई डम्बरसिंह को वागड़ का प्रदेश जागीर में मिला था उसके वंशज एक अर्से तक वहां राज करते रहे हों राजधानी उनकी अर्थूणा थी जो अब बांसवाड़े के राज में है। डम्बरसिंह; कंकदेव; चण्डप; सत्यराज; मण्डलीक या मण्डन; चामुण्ड राज सं० ११३६ और विजयराज सं० ११६६ वि०।

अब तो केवल ऊमटवाड़े--मध्य हिन्दूस्तान में––राजगढ़, नरसिंहगढ़ के ऊमट परमारों के दो छोटे से राज्य रह गये हैं।



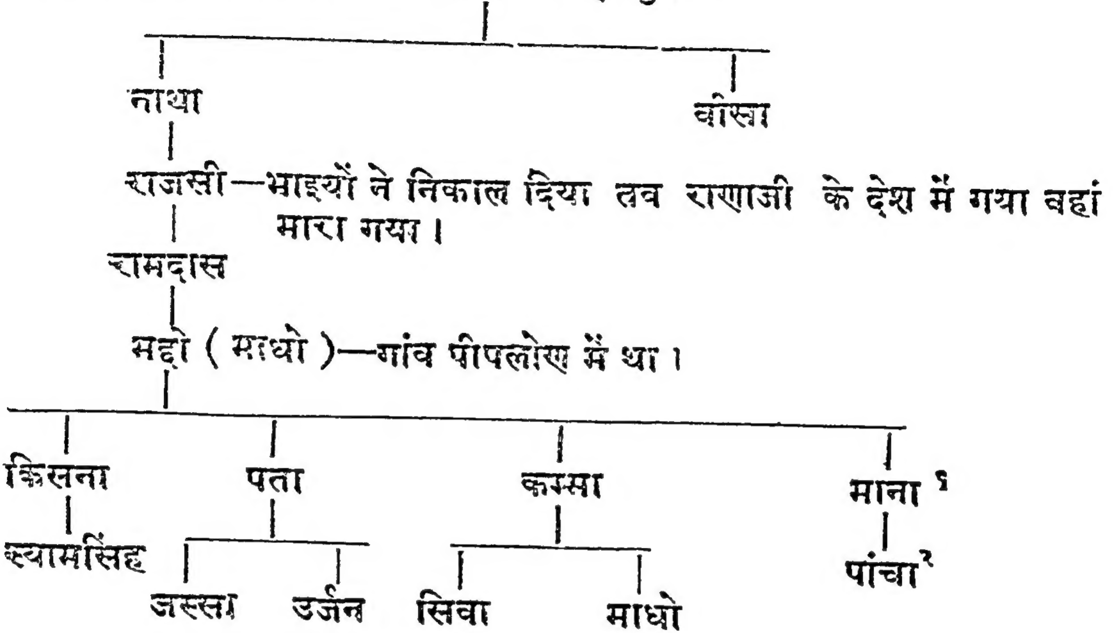
(१) अपने पिता माला के साथ मारा गया। (२) गांव घुघरोट में भाइयों ने मारा। (३) गांव घुघरोट में कुंडल के पंवारों ने मारा। (४) मादड़ी में सिरोही वाले जैतमालोतों पर चढ आये वहां मारा गया। (५) जालौर का खान घुघरोट पर चढ़ आया वहां मारा गया। (६) घुघरोट पट्टे थी, नारायण के बेटों को मारे थे उनके वैर में करण पांथायत ने इसको मारा। राजा भीम राणावत को जब जालोर जागीर में था, उस वक्त रतना वहां जारहा था, वहां पर करण ने इसको मारा। (७) सं० १६८० में सेवटे (राजपूत) ने मारा। (८) इसको सुंदरदास मुहणोत ने मारा। (९) सं० १६८२ में बुरहानपुर में मरा। (१०) तिमरणी की मुहिम में चोरी की तब राजा गजसिंह (राठोड़) ने इसका सिर कटवा दिया। (११) गांव अरजीयाणा में रहता है। (१२) अरजीयाणे में रहता है। (१३) गांव मूठली में रहता है।

रावल सजनावत के दूसरे पुत्र मारू का वंश—मारू का पुत्र वैरसल; वैरसल का पुत्र करण; करण का पुत्र त्रिमणा (त्रिभुवन) त्रिमणा के पुत्र—पूना, देवा, जस्सा और और सावंत

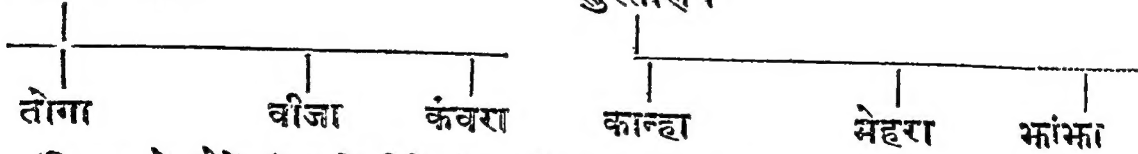


(१) गांव कुंडल में रहता था। (२) जालौर में मारागया। (३) गांव कुंडल में भायलों ने चूक कर मारा। (४) भायलों ने चूक कर मारा। (५) गांव धाण में सेवटों की लड़ाई में काम आया। (६) इसको उद्धरण गहलोत ने मारा। (७) दहियों ने मारा। (८) महाराज जसवंतसिंह के पास नौकर, बुरहानपुर में मरा। (९) गांव भागवे में महेश के पुत्र राघोदास ने मारा।

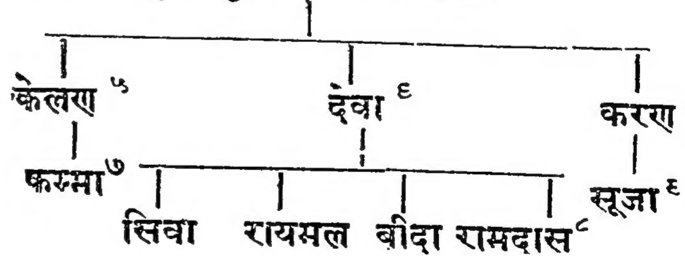
सिलार रावलोत के दूसरे पुत्र सूजा का वंश—सूजा का पुत्र कुंभा और कुंभा का पुत्र वीरम था जो चांपा चौहान की स्त्री सेवती को लेआया था, उसी कसले में मारा गया । वीरम के दो पुत्र—



सिलार रावलोत के तीसरे पुत्र सूरा का वंश—सूरा का पुत्र आपमल; आपमल का पुत्र बीका; वीका का पुत्र सांवतसी; सांवतसी का पुत्र भद्दा; भद्दा का पुत्र वीका; वीका का पुत्र भारमल [3]; भारमल के दो पुत्र सूजा [4] और सुरताण ।



सिलार के पोते कुंभा के बेटे वीरम के दूसरे पुत्र वीसा का वंश ।



---

(१) इसको मुहणोत सुंदरदास ने मारा । (२) कल्याणदास के साथ काम आया । (३) पांचले पर फौज आई वहां लड़कर मारा गया । (४) गांव भागवे में रहता है । (५) राव मालदेव का चाकर, गांव भूंडू पट्टे में था, उसको

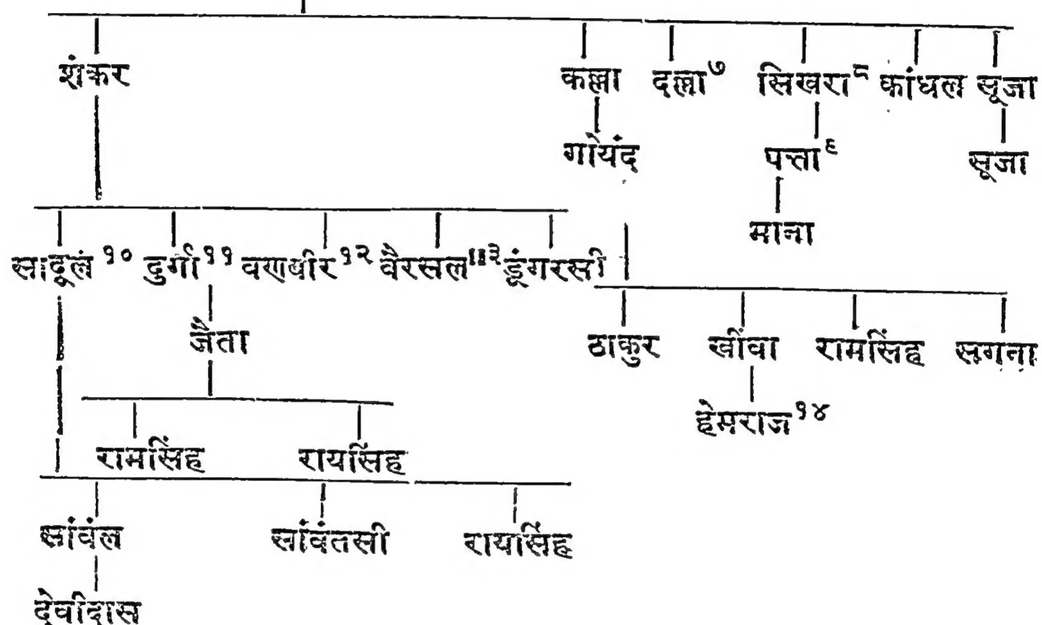
सिलार के पोते लगता मालावत का का वंश—लगता का पुत्र भागमल; भागमल का पुत्र मेहा; मेहा का पुत्र रामदास[1] इसके ५ पुत्र (१) सेखा (२) लखा (३) कल्ला (४) सादूल[2] (५) ऊदा[3]।

सेखा — परबत[4] — वीरम

लखा — पीथा[5]

कल्ला — सूरा[6]

राणा भुजबल रतनसीहोत का वंश।



छोड़कर जालौर गया। जालौर पर राव मालदेव ने फौज भेजी तब वहां पौल पर हात का छापा देकर लड़ मरा। (६) इसके तीन बेटों को कम्माने मारा। (७) (भाइयों की) परस्पर की लड़ाई में मारा गया। (८) पत्ता नंगावत के साथ नाडोल में काम आया। (९) कम्मा ने मारा।

(१) राव चंद्रसेन के आपत् काल में रामदास राठोड़ की सेवा में गढ़ पर रहा। (२) भाखरसी दासावत के पास नौकर। (३) बालक ही मर गया। (४) अजमेर में देवीदास की सेवा में लड़कर मारागया। (५) गांव मीठोड़े में रहता है। (६) भाखरसी के पुत्र कल्याणदास के पास था। (७) गांव मोड़ी में काम आया। (८) जालौर काम आया। (९) आसकरण ने उग्रसेन को मारा वहां काम आया। (१०) गांव मोड़ी पट्टे (११) गांव खबड़ेते में काम आया। (१२) राव चंद्रसेन पर राव सोनिगरा गांव थलूंडे आन पड़ा वहां काम आया। (१३) घुघरोट पर जालौर वाले चढ़ आए, वहां लड़कर मारा गया। (१४) गुढ़े पर तुर्क आए उनके साथ लड़कर मारा गया।

देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला

जोधपुर के प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता स्व० मुंशी देवीप्रसाद जी ने कई सहस्र रुपयों का दान काशी नागरीप्रचारिणी सभा को इसलिये दिया था कि उसके सूद से तथा उससे प्रकाशित पुस्तकों की बिक्री से जो आय हो, उससे सभा हिंदी में इतिहास संबंधी उत्तम उत्तम पुस्तकें प्रकाशित करे। तदनुसार इसमें अब तक ये पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) **चीनी यात्री फाहियान का यात्रा विवरण**—चीनी भाषा के मूल ग्रंथ के आधार पर यह ग्रंथ लिखा गया है। गांधार, तक्षशिला, पंजाब, मथुरा, श्रावस्ती, कपिलवस्तु, रामस्तूप, पाटलिपुत्र, राजगृह, शतपरणी गुफा, गया, वाराणसी, ताम्रलिप्त आदि स्थानों का इसमें पूरा पूरा वर्णन है। अँग्रेज़ी अनुवादकों ने जो जो भूलें की हैं, वे भी सुधार दी गई हैं। साथ ही फाहियान की यात्रा का रंगीन नकशा भी है। मूल्य १॥)

(२) **चीनी यात्री सुंगयुन का यात्रा-विवरण**—इस पुस्तक के उपक्रम में समस्त चीनी यात्रियों का विवरण संक्षेप में दिया गया है। इसमें स्थान स्थान पर बहुत ही उपयोगी और महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ दी गई हैं। उन पाँच प्रधान जातकों की कथा भी संक्षेप में दे दी गई है, जिनके घटना-स्थलों का उल्लेख इस यात्रा-विवरण में आया है। इतिहास-प्रेमियों के लिये यह बहुत काम की चीज़ है। मूल्य १)

(३) **सुलेमान सौदागर**—भारतवर्ष और चीन देश के विषय में मुसलमानों की लिखी जो पुस्तकें पाई जाती हैं, उनमें से सब से अधिक प्राचीन सुलेमान नामक एक मुसलमान सौदागर का यात्रा-विवरण है, जो सन् ८५१ से पहले भारत आया था। उसी का मूल अरबी से यह अनुवाद कराके सभा ने प्रकाशित किया है। इसकी मूल प्रति बहुत परिश्रम करके तथा बहुत कुछ धन व्यय करके प्राप्त की गई थी। इस ग्रंथ में भारत तथा चीन का विवरण ईसवी नवीं शताब्दी के पूर्वार्ध का है। यह अनुवाद बहुत ही खोज और परिश्रम से किया गया है और इसमें मार्को पोलो तथा इब्न बतूता के यात्रा-विवरणों से भी बहुत सहायता ली गई है। मूल्य १)

(४) **अशोक की धर्म-लिपियाँ, पहला भाग**—भारतवर्ष के आज से २५०० वर्ष पूर्व के इतिहास की जानकारी के लिये प्रियदर्शी राजा अशोक के शिलालेख बहुत महत्व के हैं। इन शिलालेखों से उस समय की राज्य-व्यवस्था, राजनीति, राज्य-विस्तार, धर्म्म, विचार,

भाषा तथा लोगों के रहन-सहन आदि का बहुत अच्छा पता लगता है। इस पुस्तक में उसी सम्राट् अशोक के प्रधान शिलालेखों की प्रतिलिपि, संस्कृत तथा हिंदी अनुवाद और स्थान स्थान पर अनेक बहुमूल्य टिप्पणियाँ दी गई हैं। अशोक की धर्म्मलिपियों का ऐसा अच्छा दूसरा संस्करण अभी कहीं नहीं निकला। प्रत्येक इतिहास-प्रेमी और विद्यानुरागी को इसकी एक प्रति अवश्य अपने पास रखनी चाहिए। मूल्य ३)

(५) **हुमायूँनामा**—प्रसिद्ध मुगल सम्राट् हुमायूँ की सौतेली बहन गुलबदन बेगम ने फ़ारसी भाषा में हुमायूँ की एक जीवनी लिखी थी जो "हुमायूँ नामा" नाम से प्रसिद्ध है। यह पुस्तक उसी का अनुवाद है। इसमें राजनीतिक घटनाओं, युद्धों और विजयों आदि का तो बहुत थोड़ा वर्णन है, पर गार्हस्थ्य जीवन की बातें बहुत विस्तार से दी गई हैं। इस पुस्तक की गणना बहुत उच्च कोटि की पुस्तकों में की जाती है। स्थान स्थान पर अनेक उपयोगी टिप्पणियों से पुस्तक का महत्व और भी बढ़ गया है। आरंभ में गुलबदन बेगम की संक्षिप्त जीवनी भी दी गई है। मूल्य १॥)

(६) **प्राचीन मुद्रा**—जिन प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता श्रीयुक्त राखालदास बंद्योपाध्याय के बनाए हुए करुणा और शशांक नामक उपन्यास हैं, उन्हीं के "प्राचीन मुद्रा" नामक बँगला ग्रंथ का यह हिंदी अनुवाद है। हिंदी में अपने विषय की यह सब से पहली पुस्तक है। इसमें भारत के सब से प्राचीन सिक्कों, विदेशी सिक्कों के अनुकरण पर बने हुए सिक्कों, सौराष्ट्र तथा मालव के सिक्कों, और दक्षिणापथ तथा उत्तरापथ के पुराने सिक्कों का पूरा पूरा विवरण दिया गया है और यह बतलाया गया है कि उनसे क्या क्या ऐतिहासिक बातें ज्ञात अथवा सिद्ध होती हैं। आरंभ में रायबहादुर पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा का लिखा प्राक्कथन और अंत में सैकड़ों सिक्कों के चित्रों के प्रायः २० प्लेट हैं। मूल्य केवल ३)

एक कार्ड भेजकर सभा द्वारा प्रकाशित समस्त पुस्तकों का नया बड़ा सूचीपत्र मँगा देखिए।

प्रकाशन मंत्री,
नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी।
